जमनालाल बजाज-सेवा-ट्रस्ट-ग्रंथ-माला—'

विनोबा के पत्र

—बजाज-परिवार के नाम—

●

भूमिका

शिवाजी भावे

●

संपादक

रामकृष्ण बजाज

१९६२

मुख्य विक्रेता

सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली

जमनालाल बजाज-सेवा-ट्रस्ट, वर्धा
की ओर से
मार्तण्ड उपाध्याय
द्वारा प्रकाशित

पहली बार १९६७

मूल्य
सजिल्द . चार रुपये

संपादक का निवेदन

जमनालाल बजाज-सेवा-ट्रस्ट माला का यह छठा पुष्प पाठको की सेवा मे रखते हुए हमे बडे हर्ष का अनुभव हो रहा है।

जो पाठक पूज्य बापूजी, विनोबाजी और पिताजी (जमनालालजी बजाज) के सबधो को जानते है तथा उनके पत्र-व्यवहार से परिचित है, उन्हे ज्ञात है कि किस प्रकार पिताजी के हृदय मे बापू ने पिता के रूप मे और विनोबाजी ने गुरु के रूप मे प्रतिष्ठा पाई थी। बापू के उस रूप के दर्शन 'बापू के पत्र' नामक पुस्तक मे मिलते है। उसी प्रसग की दूसरी पुस्तक तैयार हो रही है।

प्रस्तुत पुस्तक से पता चलता है कि किन सकल्पो एव साधना के द्वारा पिताजी ने विनोबाजी को गुरु के रूप मे प्राप्त किया और किस प्रकार अपने परिवार के लोगो को विनोबाजी के सपर्क मे लाकर उनका मार्ग-दर्शन प्राप्त कराते रहे, उनकी शिक्षा मे नवीन चेतना और नवीन प्रेरणा लाने का प्रयत्न करते रहे।

पुस्तक तीन खडो मे विभक्त है—

१. पत्र-व्यवहार २ डायरी के अश और ३ सस्मरण

पहले खड मे विनोबाजी का बजाज-परिवार के साथ हुआ पत्र-व्यवहार है। दूसरे मे पिताजी की डायरी मे से विनोबाजी-सबधी अशो का सकलन है। तीसरे मे बजाज-परिवार के छोटे-बडे सदस्यो द्वारा लिखित विनोबाजी से सबधित सस्मरण है।

कुछ छूटे हुए पत्र, पिताजी के जीवन की प्रमुख घटनाए तथा सस्मरण और लेखको के परिचय परिशिष्ट मे दे दिये गए है।

इस सपूर्ण सामग्री का चयन इस दृष्टि से किया गया है कि विनोबाजी

के उज्ज्वल व्यक्तित्व के कुछ पहलू पाठकों के सम्मुख सहज रूप में उपस्थित हो जाय।

आदर्श गृह की खोज पिताजी के बचपन की साध थी। जीवन को व्यक्ति के संकीर्ण दायरे से निकालकर सार्वजनिक कैसे बनायें? जो जन्म मिला है, उसे कैसे सार्थक करें? बापू और विनोबाजी के मार्ग-दर्शन में पिताजी इन तथा ऐसे ही अन्य प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करते रहे और उनसे स्वतः लाभ प्राप्त करने के साथ-साथ अपने आसपास के समाज को भी उन विचारों तथा अनुभवों से लाभान्वित करते रहे।

पूज्य शिवाजी भावे ने अपनी व्यस्तता में से समय निकालकर इस ग्रंथ की भूमिका लिखने की कृपा की, हम उनके कृतज्ञ हैं। साथ ही हम उन स्नेही बंधुओं के भी आभारी हैं, जिन्होंने इस पुस्तक की तैयारी में हमारी सहायता की।

—रामकृष्ण बजाज

भूमिका

बीज मिट्टी मे छिप जाता है, तभी वह वृक्ष के रूप मे धीरे-धीरे विकसित होता है। वृक्ष के पीछे छिपकर धीरे-धीरे कलिका की मधुरता खुलती जाती है। कलिका के पीछे छिपा रहता है तभी फूल आगे आकर डोलने लगता है। फूल के पीछे रहकर ही धीरे-धीरे रसभरा फल वृक्ष पर उच्च स्थल प्राप्त करके अपने आत्मवैभव की परिसीमा मे सबको मुग्ध कर देता है। ओहो, छिपने मे कैसा मजा है ! इस मजे को वही जानता है, जो छिपने का गूढ रहस्य सचमुच समझता है। छिपते-छिपते अतरतम सत्य का रहस्य जीवन में केंद्रित होने लगता है, वही वैराग्य है। अरे, वैराग्य क्या उदासी है ? नही, बिलकुल नही। यह अतर्मुख अवस्था ही वैराग्य है। इसी अवस्था में **'य इम परम गुह्य'**—भगवान का परम गुह्य—प्राप्त होता है। क्या छिपने मे भय है ? नही-नही, कदापि नही ! वह तो बिलकुल निर्भय अवस्था है। उस अवस्था मे नवनवोन्मेपशाली सत्य की सुवर्ण कुजी हाथ लगती है। सत्य का सारा-का-सारा सार—अनत आनदमय खजाना—हाथ मे आता है। फिर क्या देखना है ! इसलिए ऐ जीव, सारी प्रकटता (बाह्य दृष्टि) छोड दे और मधुरता की मधुरता अदर-ही-अदर प्राप्त करता जा।

पूज्य विनोवाजी के अतर्मुख साधनामय जीवन का अमृतसदेश कैलासवासी पूज्य जमनालालजी जैसे महाभक्तो के सिवा कौन प्राप्त कर सकता था ! आज पूज्य विनोवाजी के पीछे हजारो लोग दौडते हुए दिखाई देते है, क्यो ? उनकी विख्याति के कारण ही न ? कुछ लोग ऐसा सवाल पूछते है। सवाल की भूमिका भले ही पूर्ण सत्य न हो, लेकिन इसमे शक नही कि यहा शक की गुजाइश है। लेकिन जव पूज्य विनोवाजी विलकुल अप्रकट थे तव स्व० जमनालालजी ने उन्हे पहचाना। वह तो सशयातीत वात थी। पहचाना ही नही, अपितु अपना सपूर्ण हृदय समर्पित किया।

अपने लाडले बच्चो को, एक के पीछे एक, उन्हीकी शिक्षा-दीक्षा में वह सौंपते गए। कितनी भी विरोधी टीका होती रही, हितैषियो का कितना

भी हितोपदेश मिलता रहा, तो भी उन्होंने उसकी ओर तनिक भी ध्यान नही दिया। ध्यान नही दिया, इसलिए नहीं कि वह व्यवहार कुछ कम समझते थे, बल्कि इसलिए कि उनकी पूज्य विनोबाजी की अध्यात्म-शिक्षा मे पूरी श्रद्धा थी।

बी० ए० पास करने के बाद नरेन्द्रनाथ (स्वामी विवेकानंद) रामकृष्ण परमहंस के पास गये थे तो रामकृष्ण परमहंस ने पूछा "और भी परीक्षा पास करेगा न ?" तब नरेन्द्रनाथ ने जवाब दिया, "महाराज, अबतक जो कुछ पढा हू, वह सब कैसे भूल जाऊ इसकी कोई तरकीब हो तो बताइये।' इसी तरह जगत की सारी उपाधिया पूज्य विनोबाजी के अध्यात्मज्ञान के सामने तृणवत् है, ऐसा जमनालालजी ने माना था और वह यह स्पष्ट रूप से मानते थे कि आजकल की शिक्षा मे आध्यात्मिक ज्ञान तो छोड ही दीजिये, बल्कि जो विषय पढाये जाते है, वे भी बिलकुल रूखे और केवल परीक्षा पास करने की दृष्टि से ही पढाये जाते है। विद्यार्थियो के ऊपर तो शिक्षा का एक भारी बोझ ही लादा जाता है। लेकिन विद्या का ध्येय तो बोझ से पूर्ण मुक्ति—'सा विद्या या विमुक्तये' होना चाहिए।

उन दिनो मे तो कोई-कोई ऐसा भी कहनेवाले थे कि देखो, विनोबाजी के आश्रम मे विद्यार्थी या तो कबीर जैसे सत होगे या गवार, बुद्धू, बैल और न जाने क्या-क्या होगे ! कबीर बनना तो एकाध जन सकता है, बाकी तो अवश्य बेवकूफ बनेगे—ऐसा ही कुछ उस समय पूज्य विनोबाजी की आश्रम-शिक्षा के बारे मे लोगो का, खास करके बडे गिने जानेवाले लोगो का, ख्याल था। लेकिन जमनालालजी व्यवहार-ज्ञान मे किसीसे तनिक भी कम न होते हुए भी विचलित नही हुए और अपने बच्चो को बार-बार पूज्य विनोबाजी के पास सत्सग का लाभ उठाने के लिए प्रेरित करते रहे। फलस्वरूप इस किताब (पत्र-पोथी) के मध्यदल मे जमनालालजी की डायरी के कुछ अश दिये गए है। उसमे वाचक देखेंगे कि जमनालालजी ने सिर्फ अपने बच्चो को पूज्य विनोबाजी की अध्यात्म-शिक्षा मे रहने का प्रोत्साहन दिया, इतना ही नही, बल्कि उन्होंने खुद जेल मे और बाहर बिलकुल एक जिज्ञासु विद्यार्थी की हैसियत से पूज्य विनोबाजी का सत्सग प्राप्त किया और उनके ग्रथो का परिशीलन किया।

जमनालालजी की पुत्र-पुत्रिया भोली-भाली थी और ऐसे ही भोलेपन से उन्होने आश्रम-शिक्षा को स्वीकार किया, ऐसी भी बात नही है। इस पत्रपोथी के अत्यदल मे कमला नेवटिया के लेख मे वाचक देखेगे कि जो बात जैसी लगी, वैसी स्पष्टरूप से कहने मे उन्होने किसी प्रकार की हिचक नही की। कमला नेवटिया के बाद के कमलनयन बजाज के लेख मे भी वाचक देखेगे कि कमलनयन बजाज किस तरह से पूज्य विनोबाजी के साथ तर्क करते जाते थे। श्रद्धा होते हुए भी तर्क करने मे वह जरा भी कमी नही रखते थे। यहा एक प्रसग याद आता है। शायद रामायण के वर्ग मे या प्रार्थना-प्रवचन मे पूज्य विनोबाजी ने इस आशय का वाक्य कहा—"रामचद्रजी बरसो तक अरण्य मे घूमते रहे, हवा, वर्षा, धूप सेवन करते रहे, इसी कारण उनका रग श्यामल हुआ।" तुरत कमलनयन ने पूछा "फिर लक्ष्मणजी का रग गोरा क्यो रहा ? वह भी रामचद्रजी के साथ थे।" यह प्रश्न पूछते ही पूज्य विनोबाजी और सारा श्रोतृवृद एकदम हँस पडा। प्रश्न का जवाब मुक्त-हास्य मे मिल गया। गुरु-शिष्यो के ऐसे मनोहर वार्त्ता-प्रसगो की कोई गिनती ही नही थी। ऐसे वार्त्तालापो का इस पत्रपोथी मे नाम-निशान भी नही मिलेगा। उफना हुआ दूध थोडा-सा ही तो होता है। सारा-का-सारा दूध बर्तन मे ही रह जाता है। इस किताब की ऐसी ही स्थिति है।

उपरोक्त बात से ऐसी कल्पना करना ठीक नही होगा कि पूज्य विनोबाजी के ये बजाज-शिष्य तर्क-प्रधान ही थे उनमे श्रद्धा कम थी। सचमुच वे इतने नम्र थे कि शायद ही इतनी नम्रता कही प्रकट हुई हो। इस किताब के प्रथम दल मे मदालसा अग्रवाल के नाम बहुत-से पत्र दीख पडेगे। इतने पत्र मदालसाजी की परम नम्रता के सिवा लिखे जाना असभव था।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिन.॥

भगवद्वाक्य हमेशा ही इस कथन की पुष्टि करता आया है। इन पत्रो मे मदालसाजी की भक्ति-नम्र व्याकुलता—या कमजोरी भी कुछ कह सकते है—प्रतीत होगी, लेकिन क्या किया जाय ! व्याकुलता से ही तो भक्तिशास्त्र का उद्यान हमेशा हरा-भरा रहता है। पूज्य विनोबाजी को मदालसाजी ने

'वावा' नाम दिया था। आज सारा भारत उसी नाम से अपनी भक्ति प्रकट करता है।

लेकिन भक्ति की चरम सीमा—वजाज-परिवार की पूज्य विनोबाजी के प्रति जो भक्ति थी, उसकी चरम सीमा—इस किताव के तीसरे खड के अग्रिम लेख मे वाचक देख सकेगे। जहा जमनालालजी और उनका सपूर्ण परिवार पूज्य विनोबाजी को गुरुतुल्य मानता रहा, वहा जानकीदेवी वजाज (पूज्य माताजी) ने हमेशा पूज्य विनोबाजी को छोटे भाई के रूप मे देखा और वैसा उनका साम्य-विनोद का वर्ताव भी हमेशा पूज्य विनोवाजी के साथ रहा।

वजाज-परिवार का अहोभाग्य था कि उसको जमनालालजी जैसा सर्वश्रेष्ठ महाभक्त पारसमणि प्राप्त हुआ। इस पारसमणि का लाभ उठाकर वजाज-परिवार ने अपने जीवन का सेवा के सोने मे परिवर्तन किया। आज पूज्य माताजी (जानकीदेवी), राधाकृष्णजी वजाज, श्रीमन्नारायण अग्रवाल ये वजाज-परिवार के सेवाकार्य के अध्वर्यु भारत के प्रथम पक्ति के निष्काम सेवाकार्य करनेवालो मे हमेशा आगे ही रहेगे, ऐसी योग्यता रखते है। कमला नेवटिया, कमलनयन वजाज, रामकृष्ण वजाज, मदालसा अग्रवाल, उमा, अनसूया वजाज और अन्य परिवार सेवाकार्य में किसीसे पीछे पडनेवाले नही है। परिवार के छोटे वच्चो को भी सेवा की कुछ-न-कुछ शिक्षा मिली है। इस किताव के अतिम भाग मे लिखे हुए छोटे वच्चो के सस्मरण वडे रोचक और कौतुकास्पद है।

'स्वसुखनिरभिलाषः खिद्यसे लोकहेतोः
प्रतिदिनमथवा ते वृत्तिरेवविधेव।'

जमनालालजी का यह आदर्श सामने रखकर सारा वजाज-परिवार अपनी-अपनी शक्ति और रुचि के अनुसार हमेशा अपने उद्योग के साथ सेवा का चितन करता रहता है। जगत मे दो मुख्य परपराए है—एक पितृ-परम्परा, दूसरी गुरुपरपरा। दोनो उज्ज्वल परपराओ का लाभ वजाज-परिवार ने उठाया और सेवाशीलता प्राप्त की। इस त्रिदल पत्रपोथी मे पद-पद पर इसका दर्शन वाचक कर सकेगे।

इसके अलावा सरल और निर्मल, वडे और छोटे, श्रेप्ठ और सामान्य

ऐसे अनेक प्रसग और व्यक्तियो की अस्फुट छाया इस पोथी मे दीख पडेंगी। यह किताब दूर से सुनाई देनेवाला एक स्वप्नगीत है। अपरिचित वाचक इस सगीत की सगति का अर्थ समझने मे असफल ही रहेगे। लेकिन वे इतना तो जरूर समझेगे कि पूज्य विनोबाजी—बापूजी का आत्मज्ञान और जमनालालजी और परिवार की आत्मीयता का यह सगम-स्थान है। इसमे इधर-उधर थोडा-सा भी गोता लगाकर अगर वाचको को—आत्मज्ञान तो खैर, दूर की बात कही जाती है—लेकिन कुछ आत्मीयता का लाभ हुआ तो यह समझने में आपत्ति नही कि श्री रामकृष्ण बजाज द्वारा बडे परिश्रम से प्रकट किये हुए इस त्रिदल पत्रपोथी का कार्य जैसा सुचारु रूप से सम्पन्न हुआ है, वैसा ही सफल हुआ है।

महादेव मदिर,
धूलिया (महाराष्ट्र)

—शिवाजी न० भावे

विषय-सूची

विनोबा के पत्र

पहला खण्ड

पत्र-व्यवहार

जमनालाल बजाज और उनके परिवार के सदस्यो के नाम

१. जमनालाल बजाज के नाम

१ :

सत्याग्रहाश्रम,
वर्धा, १६-६-२८

श्री जमनालालजी,

साबरमती-आश्रम में ब्रह्मचर्य के सबध म जो नियम बने है, उस विषय मे यहा भी सहज भाव से चर्चा होती रहती है। यहा भी वही नियम रहे, ऐसा सहज ही लगता है तथा सस्था के व व्यक्ति के तेज की रक्षा भी उसी-मे है, यह स्पष्ट है। नियम बनाने से कुछ लोग चले जायगे, यह भी दिखाई देता है। तथापि नियमो का पालन करने में ही कल्याण होनेवाला है, इसलिए नियम होना ही चाहिए, ऐसा लगता है। आपका भी विचार जानने की इच्छा है। आपकी राय जानने मे आपकी स्थिति ज़रा कठिन हो जाती है। पर विद्यालय की दृष्टि से आपके विचार जानना आवश्यक भी है।

आपका स्वास्थ्य अब कैसा है ? यहा कब आने का इरादा है ?

विनोबा के प्रणाम

२ ·

वर्धा, ७-८-३२

श्री जमनालालजी,

वहा से यहा आया तबसे आपका 'मेंडेट' तोडने का प्रसग नही आया। मेरी तबीयत वहा जैसी ही ठीक है। काम सदा की भाति चल रहा है।

भिन्न-भिन्न आश्रमो की कल्पना साथियो को पसद आई है। पर अमल मे लाने में काफी अड़चने आने की आशका है। फिलहाल तो नीचे लिखे अनुसार योजना कर रहा हू।

१ पुलगाव—मनोहरजी

२. देवली—मोघेजी (केशवराव)

३ भिवापुर—तुकाराम बुआ
४ जुनोना—वल्लभस्वामी
५ शिदी—छोटेलालजी
६ रोहिणी—हीरालालजी
७ जामनी—रामदास बुवा (बहुत करके)
८ वर्धा—साथी लोग है ही ।

स्थान तीन और होने चाहिए। गोपालरावजी फिलहाल घूमेगे । इसी प्रकार वालुजकरजी भी ।

बालक-बालिकाओ की शिक्षा नाना कुलकर्णी ने शुरू कर दी है । इस विषम काल मे यथा-सभव सतोषदायक योजना यह है । कमलनयन आदि के बारे में आपसे बातचीत होगी ही । मै उसकी जिम्मेदारी लू तो आपको आनद होगा और निश्चितता भी आयेगी, यह मुझे मालूम है । मुझे यह स्वीकार करने मे अडचन भी नही है । लेकिन कमलनयन अब समझदार हो गया है और हम उसे केवल सलाह दे सकते है ।

कान के दर्द के बारे मे जो करना जरूरी हो, उस ओर जरूर ध्यान दे । जिस-जिससे पत्र-व्यवहार जारी रखना जरूरी है, उनसे जारी रखा है । पत्र लिखने मे हाथ मे खिचाव नही है । बापू को अभीतक पत्र नही लिखा है । लिखने का विचार है ।

मैने पिताजी को पत्र भेजे थे । लेकिन वे कुछ अर्से से इन दिनो आबू रहने चले गये है, इसलिए मेरे पत्र उन्हे नही मिले। अब आबू के पते पर उन्हे सविस्तर लिखा है ।

मदालसा रोज मेरे पास आती है । रामायण का अभ्यास चला है । सुबह के वक्त आने-जाने मे तीन मील का घूमना हो जाता है, यह अच्छा है । शाम को गाव के कुछ लोग आते है । उन्हे गीता के बारे मे तथा कुछ और कहता हू ।

सारे साथियो को बाहर भेज दिया है । अपने पास किसीको नही रखा है । कुदर और यशवत दोनो को हाथ मे लिया है । बीच-बीच मे कोई-न-कोई आता रहता है ।

'गीता-प्रवचन' की कापियो की ओर ध्यान देने का बिलकुल समय

नही मिलता। खास देखने के उद्देश्य से कापियां को पास रख लिया है।
'गीताई' की पहली आवृत्ति समाप्त हो गई है। दूसरी की तैयारी कर रहे हैं। प्रभाकर को प्रूफ देखने के लिए दिये है। छपना अभी शुरू नही हुआ।

मेहनत-मशक्कत जितनी हो सकती है, उतनी करता हू। बाकी तो सब भगवान पर है।

धूलिया में जो प्रेम-सम्बन्ध स्थापित हो गया वह जन्मभर के लिए बध गया।

विनोबा के प्रणाम

३

वर्धा, ९-११-३२

श्री जमनालालजी,

आपके जन्म-दिन का स्मरण करके प्रातःकाल की प्रार्थना के बाद यह लिख रहा हू। आज की मेरी प्रार्थना मानो धूलिया-जेल में हुई।

आपके स्वास्थ्य की मैं चिंता करना नही चाहता। मेरे लिए सब प्रकार की चिंता करनेवाला सर्वत्र विद्यमान है।

आपकी ओर से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष मिली हुई सूचनाओ पर, अपनी मनोवृत्ति के अनुसार, यथासभव अमल करता हू। लोगो के साथ पहले की अपेक्षा अधिक परिचय रखता हू। पत्र भी थोडे-बहुत लिखा करता हू और हजामत भी नियमित बनाने की कोशिश करता हू।

कमलनयन की शिक्षा का सवाल है। उस विषय में आपकी सूचना के अनुसार जिम्मेदारी उठाने की मेरी इच्छा होना स्वाभाविक है, लेकिन डेढ सौ पौंड का बोझ उठाने में मैं कामयाब हो सकूगा या नही, यह तो भगवान जाने। उनके मन की सरलता और वृत्ति की सद्भावना मुझे मधुर प्रतीत हुई है, लेकिन सयम की और विचारो की भी कमी देखता हू।

प्रह्लाद और रामदास दोनो बच्चे मनोहरजी को अच्छे मिले है। पूर्व-जन्मो के किसी पुण्य से मनोहरजी की पावन सगति उन्हे मिली है। श्री रामेश्वरजी के पुत्र श्रीराम की व्यवस्था जमा रहा हू। पांचनीस के साथ मेरा पत्र-व्यवहार हो रहा है।

मदालसा को भगवान ने अगणतता दी है। भगवान की इस भेट को भी

कल्याण-कारक बनाया जा सकेगा, यदि वैसी दृष्टि होगी। उस बच्ची मे निग्रह अभी थोडा कम प्रतीत होता है, लेकिन हरि-प्रेम है, और जिसमे हरि-प्रेम है, उसके विषय मे मुझे जो ममता महसूस होती है, उसका वर्णन नही किया जा सकता। मै वर्धा मे जिस दिन रहा करू, उस दिन सवेरे ७ से ८ का समय मैंने उसे दिया है। फिलहाल जो मुझे प्रिय है, वही 'ज्ञानेश्वरी' शुरू की है। उस वक्त ओम् और वत्सला भी आती है।

मेरा स्वास्थ्य सदा की भाति उत्तम है। आरोग्यवान् और दुर्बल। बीच मे पवनार मे प्रात काल नदी पर स्नान करने का प्रयोग किया। इसलिए दो दिन जरा जुकाम हो गया था। उसका बिना मतलब विज्ञापन हो गया, और आपका सदेश पल्ले पडा।

लिखने को कुछ खास नही था, फिर भी चार पक्तिया लिखने की च्छा हुई सो लिख डाली है।

विनोबा के प्रणाम

· ४ :

वर्धा, १८-११-३३

पूज्य विनोबाजी,

कल आते समय चि कमला से मालूम हुआ कि चि. मदालसा की भी इच्छा कुछ रोज यहा पहाड पर, अपनी मा के साथ, रहने की है। मैंने उससे पूछा तो उसने कहा कि विनोबाजी की अनुमति प्राप्त नही की है। अगर वह आना चाहे और आप भेजना चाहो तो उसे श्री चिरजीलाल बड-जाते के साथ भिजवा सकते है। अमरावती से एक ही बार सुबह सात बजे के अन्दाज मे चिकलदा के लिए मोटर निकलती है, और वह यहा ११॥ के करीब आती है। यहा की आबहवा ठीक मालूम देती है। मुझे तो एक ही रात मे अच्छी शाति व दिमाग मे हलकापन मालूम देने लगा है। मदालसा अगर आना चाहे और सोमवार को यहा पहुच जाय तो ठीक रहेगा, ऐसी उसकी मा की इच्छा है।

जमनालाल बजाज का प्रणाम

५ :

वर्धा, ८-८-३४

श्री जमनालालजी,

आप यहा से शरीर से गये है, फिर भी मन से यहा की चिताओ मे अभी घिरे हुए है, ऐसा स्वामी के कल के पत्र से मालूम पडता है ।

कन्याश्रम के बारे मे निश्चित निर्णय अभी नही कर सका हू । लेकिन जो भी निर्णय होगा, धर्म-रूप ही होगा । चाहे सस्था का रूपातर करना पडे, चाहे देहातर, मगर जो शुभ, कल्याण-कारक और आवश्यक होगा वही करेगे । इसलिए इस विपय मे आप पूर्ण-रूप से निश्चित रह सकेगे तो अच्छा होगा । सस्था मे जरा दिक्कत पैदा हुई कि उसे भग कर दे, ऐसी मेरी वृत्ति नही है । बापूजी की तो कतई नही है । लेकिन भग करना ही धर्म हो जाय तो फिर उसे भग कर देने की भी वृत्ति रखनी ही चाहिए, नही तो सेवा करने की इच्छा होते हुए अ-सेवा हो जायगी । सस्था हमने आसक्ति से शुरू नही की है । जिस हेतु से शुरू की है, उस हेतु के सरक्षण के लिए जो करना उचित होगा, वह करेगे ।

स्त्रियो की उन्नति के बिना हिन्दुस्तान की सारी उन्नति रुकी हुई है, इसमे जरा भी शका नही है । यह मै निश्चित रूप से मानता हू कि उसके लिए प्रयत्न करना अत्यन्त आवश्यक है । स्त्रियो की सेवा मे ही भविष्य मे मेरा उपयोग हो यह भी ईश्वर की इच्छा हो सकती है । धूलिया-जेल मे किसे कल्पना थी कि स्त्रियो की सेवा करने का अवसर मुझे मिलेगा ? लेकिन ईश्वर की वैसी मर्जी थी । जो कुछ हो ईश्वर की इच्छा से हो, मेरी च्छा से न हो । ईश्वर की इच्छा को मान लेने के लिए मै तैयार रहू तो मेरा कर्त्तव्य पूरा हो जाता है । यही आपका कर्तव्य है, और यही औरो का ।

आपका कल का पत्र अभी मिला । आपका यह कहना सही है कि किसी विशेष स्त्री के मिले बिना स्त्रियो की सस्था चलना कठिन है । मै इसका अधिक सूक्ष्म अर्थ करता हू । विशेष स्त्री हम कहा से पावेगे ? ऐसी कोई होगी तो वह स्वय ही काम क्यो शुरू नही करेगी ? इसलिए स्त्रियो की सेवा याने ब्रह्मचर्य, यह समीकरण मै अपने मन मे समझा हू । उसी पर आघात हो तो कितनी ही बडी सस्था चलाकर भी क्या सेवा होगी ?

भक्त मीराबाई एक बार वृन्दावन गई थी। वहा एक सन्यासी आये हुए थे। उनके पास हजारो लोग उपदेश-श्रवण के लिए जाते थे। मीराबाई को भी श्रवण की आतुरता थी ही। इसलिए उन्हे वहा जाने की इच्छा हुई, लेकिन सन्यासी बाबा का स्त्रियो के दर्शन न करने का नियम था। मीराबाई को यह बुरा लगा। उन्होने उन सन्यासीजी को पत्र लिखा—

"हुं तो जाणती हती
के ब्रजमा पुरुष छे एक।
ब्रजमां वसीने तमे पुरुष रह्या छो,
तेमां भलो तमारो विवेक"।[१]

इस सिखावन के अनुसार अगर हम चल सके, जगत के एक ही पुरुष को पहचान सके, तो सस्था का सचालन न करके भी हम स्त्रियो की सेवा कर सकेगे, ऐसी मेरी श्रद्धा है। आपकी भी है, ऐसा मै मानता हू। इसलिए यहा की परिस्थिति के सबध मे पूर्ण रूप से निश्चित रहकर आप पूरे अर्थ मे आराम—शरीर से एव मन से भी—लेंगे तो वह योग्य होगा। ऐसा कर सकेगे तो बापू को भी यहा आराम मिलेगा।

बापू के इस समय के उपवास ईश्वर की कृपा से निर्विघ्न ही नही, बल्कि आनन्दमय होगे, ऐसा प्रतीत होता है।

विनोबा के प्रणाम

६

वर्धा, १७-८-३४

श्री जमनालालजी,

कल आपका विना कारण स्मरण हो रहा था। 'बिना कारण' कहने का कारण यह है कि आपका ईश्वर पर विश्वास होने की वजह से स्मरण करने की कोई आवश्यकता नही थी। इसलिए फिर कुछ समय भजन मे बिताया। हालाकि आपका स्मरण हो रहा था, तब भी चिता ज़रा भी नही थी।

जानकी बहन ने सगुण भक्ति साध ली है। मेरे नसीब मे तो सदा

---

[१] "मैं तो समझती थी कि ब्रज में पुरुष एक ही है। पर ब्रज में बसकर भी तुम पुरुष बने रहे, यह कैसा तुम्हारा विवेक है?"

निर्गुण भक्ति ही लिखी है ।

विनोबा के प्रणाम

७

बम्बई से वर्धा जाते हुए
ट्रेन मे, २२-८-३४

श्री जमनालालजी,

यह मैं ट्रेन मे लिख रहा हू । इस बार मेरा आना आवश्यक है, ऐसा मुझे लगता ही नही था । लेकिन कमलनयन की इच्छा, महादेवभाई की सिफारिश और बापू की सलाह का खयाल करके मैंने आना उचित समझा।[1] मुख्यतया कमलनयन की इच्छा का मैंने अधिक खयाल किया और उसके लिए मुझे पछतावा नही है । मेरे आने से जानकीबाई को सतोष हुआ, उसमें मुझे सतोष है। जानकीबाई के प्रति अनेक कारणो से मुझे आदर है । यह सही है कि उनमे निर्णय-शक्ति कम है, लेकिन उनकी बुद्धि 'आपरेशन' करने लायक है, ऐसा मुझे नही लगता । कुछ बातो मे वह जैसा सूक्ष्म विचार कर सकती है, उसे देखकर उनकी बुद्धिमत्ता के सबध मे अनुकूल धारणा पैदा होती है । उदाहरण के रूप मे, दु ख का उद्गार प्रकट करने मे उनका जो गुण दिखाई दिया और सबकुछ सहन करके दु ख का उद्गार बिल्कुल ही प्रकट न होने देने मे जो हानि है, वह दिखाई, उसमे भी कुछ अर्थ था। "हे मा, अरे मा" आदि चिल्लानेवाला इन्सान जिस प्रकार से आस-पास के लोगो को चिता मे डालता है, उसी प्रकार सब दु खो को दवा देनेवाला भी आस-पास के वातावरण मे चिता पैदा कर सकता है । मेरा मतलब यह नही कि दु ख को चिल्लाकर प्रकट किया जाय । किंतु 'अति सर्वत्र वर्जयेत्' इतना ही भावार्थ लिया जाय । परतु जानकीबाई की जो दलील मुझे कुतूहलजनक जान पडी, उसके दृष्टान्त के रूप मे मै इसे ले रहा हू ।

इस आपरेशन के समय, सभव हो तो, बापू उपस्थित रहे, ऐसा उन्होने चाहा था । मगर इस इच्छा को बाद मे उन्होने विचारपूर्वक छोड दिया ।

---

[1] जमनालालजी के कान के आपरेशन के समय का जिक्र है । यह आपरेशन घातक भी हो सकता था । इस कारण उनके आपरेशन के समय विनोबाजी वर्धा से बबई गये थे । —स०

किन्तु उनकी उस माग मे भी एक मधुर हेतु था। बापू की उपस्थिति मे आपरेशन निर्विघ्न रूप से सपन्न होगा, इस खयाल से उन्होने यह नही कहा था। बापू के आशीर्वादो पर उनकी श्रद्धा थी ही। लेकिन यदि कही आपरेशन के समय आपके प्राण चले गये तो? ऐसी स्थिति मे बापू पास मे हो तो अत समय मे आपको उनके दर्शन होगे, यह उनकी कल्पना थी। ये कल्पनाए किसीको पागलपन-भरी भी लग सकती है, लेकिन मुझे वे पावन और मूल्यवान मालूम देती है, यह मै स्वीकार करता हू।

कवि ने कहा है **'अति स्नेहः पाप शंकी'**। अति स्नेह के कारण ऊट-पटाग शकाए आने लगती है। विना कारण दहशत होने लगती है। कुछ ऐसी ही जानकीबाई की स्थिति है। इसलिए उनकी वातो का अक्षरार्थ छोडकर और भावार्थ लेकर उनको सतोष देने का प्रयत्न करना उचित है।

नर्स से गलती हो जाय तो गुस्सा नही आता, घरवालो से गलती हो जाय तो गुस्सा आता है। यह विश्लेषण भी विचारणीय है। मेरे पिताजी मुझे खूब मारते थे। एक दिन विचार करके मारना उन्होने बिल्कुल छोड दिया। पहले दिन मुझे आश्चर्य हुआ कि मुझे मार कैसे नही पडी? क्योकि मार खाना तो हमारी रोज की खुराक थी। पर दूसरे दिन भी जब मार नही पडी तब मै समझा कि अब तरीका बदला है। और वही बात थी। वह मारते भी थे तो विचारपूर्वक, और मारना छोडा भी तो विचारपूर्वक। अगर मै बाहर के किसी आदमी को कहता कि वह मुझे मारते थे तो कोई भी सच न मानता, क्योकि सारी दुनिया के साथ उनका व्यवहार प्रेम और दयालुता का होता था। वह मुझे मारते थे तो वह भी प्रेमपूर्वक और दयापूर्वक, ऐसा ही मै उस समय समझता भी था। लेकिन यह समझते हुए भी मुझपर उस मार का अनुकूल असर नही होता था। मुझपर गुस्सा करने का उनको पूरा हक था, ऐसा मै आज मानता हू और उस समय भी मानता था। लेकिन इस हक का उन्होने इस्तेमाल न किया होता तो अधिक परिणाम होता, ऐसा मुझे लगता है। ये बाते जरूर मेरे विरोध मे जाती थी कि मेरा स्वभाव लापरवाही का और आग्रही था। इसलिए जो विचार मैने पिताजी के बारे मे पेश किये है, उन्हें पेश करने का मुझे वस्तुत कोई भी अधिकार नही है।

यह सब लिखने का कोई खास उद्देश्य नही है। ट्रेन मे समय मिल गया

तो उसे काम मे ले लिया है, बस। अब यह समाप्त करके कातने लगूगा।

तकली कातने मे मुझे ऐसी अनोखी स्फूर्ति और शाति मालूम होती है कि मेरे मानसिक शब्दकोप मे माता, गीता और तकली ये तीन शब्द अक्षरश समानार्थक बन गये है। 'आई' (मा) इस शब्द मे मेरे घर की सारी कमाई सचित हो जाती है। 'गीता' शब्द मे, वेदो से लेकर सत-परपरा तक जितना अध्ययन किया, वह सब आ जाता है। और 'तकली' मे बापू-जैसो की सगति का सार उतर आता है।

विनोबा के प्रणाम

: ८ :

वर्धा, २१-११-३४

श्री जमनालालजी,

जन्म-दिन का पत्र मिला। आपके हाथ से आजतक जितनी सेवा हुई है, उससे कही अधिक सेवा भगवान को आपसे लेनी है, ऐसी मेरी श्रद्धा है। पिछले साल आपको जो शारीरिक यातनाए भोगनी पडी, उन्हे आगे की सेवा का मै पूर्व-चिह्न समझता हू। भगवान की दया अद्भुत है। उसका यथार्थ ज्ञान किसे हो सकता है? किन्तु हमे उस ज्ञान की आवश्यकता भी नहीं है। श्रद्धा ही पर्याप्त है।

विनोबा के प्रणाम

९

अनतपुर, १०-२-३५

श्री जमनालालजी,

आपका पत्र मिला। ता १४ अथवा १५ को वर्धा पहुचने का खयाल है। यहा का सूक्ष्म निरीक्षण जेठालालभाई की सूचना और निदर्शन के अनुसार कर रहा हू। जो योग्य प्रतीत हुई वे सूचनाए दी है और दे रहा हू। सब सूचनाओ का सार अत मे लिखकर रखनेवाला हू।

इस महीने के अततक बहुत करके वर्धा मे ही रहना होगा। बीच मे तालुका के एक-दो केद्रो मे जाना होगा। मार्च के पहले सप्ताह मे येवळे की ओर लौटना होगा।

मेरा कार्यक्रम आपने पूछा, इसलिए लिख रहा हू । बाकी मेरी इच्छा कहे या वासना कहे या विचार कहे, तो वे मुझे दो ही बाते करने की प्रेरणा देती है । एक, भगवान का नाम लेना, दूसरे, दिन भर कातना । इसके सिवा तीसरी प्रेरणा मुझे होती ही नही । पढना, लिखना, चर्चा, व्याख्यान इत्यादि सबकी कीमत मुझे अक्षरश शून्य प्रतीत होती है । नाम-स्मरण और कातना, इन दोनो का अर्थ मुझे अपने लिए एक ही मालूम देता है । इसलिए मै इन दोनो को मिलाकर एक समझता हू । इस १ पर ० रक्खे तो १०, १०० इत्यादि होगे । लेकिन १ की मदद न हो तो सारे ० (शून्य) बेकाम हो जायगे ।

१ की चिंता मै करू । ० (शून्य) की चिन्ता करने के लिए सारी दुनिया समर्थ है । इसलिए मेरा नित्य का कार्यक्रम (आश्रम मे) दिन भर कातना और रात मे चितन करना, इतना ही रहता है, और यही आगे भी रहेगा, ऐसा लगता है । इस विषय मे आपको शायद मदालसा से जानकारी मिली होगी ।

पिछले दिनो मैने दोनो वक्त की प्रार्थना के दरम्यान मौन शुरू किया । वह आश्रम तक ही लागू था, बाहर नही । आगे चलकर उसे बाहर भी लागू किया । वैसा ही इस कार्यक्रम का होगा, ऐसा भविष्य दिखाई देता है । इस तरह से पहले मर्यादित नियम का 'प्रयोग' और बाद मे व्यापक नियम का 'योग', ऐसी मेरी वृत्ति है । इस प्रकार धीरे-धीरे आगे बढने का विचार है । भीति अथवा आसक्ति का तो पता ही नही है ।

उपरोक्त मुख्य कार्यक्रम के अविरोध से सध सके तो फिलहाल निम्न कार्य करने है—

१ महाराष्ट्र-धर्म (साप्ताहिक) के लेखो का चुनाव मैने अधिकतर कर लिया है । वह पूरा करके छापने के लिए देना ।

२ महादेवभाई का गीता का भाषातर ठीक करके देना ।

३ खानदेश (पूर्व और पश्चिम) में दिये गए व्याख्यान और उन्हीके साथ जेल की चर्चा इत्यादि सकलित करके प्रकाशित हो, ऐसी साने गुरुजी की इच्छा है । इसके लिए मैंने सम्मति दी है । इस प्रवास मे वह साथ मे थे ही । उनका लेखन पूरा हो जाने पर वह वर्धा आकर मुझे पढकर सुनावेगे । उसमे

सशोधन आदि कर देना ।

४ गीता के प्रवचन ध्यानपूर्वक बारीकी से जाचना ।

यह अन्तिम काम जरा फुर्सत से होगा ।

पहला सात दिन मे होगा । दूसरा एक महीना लेगा । तीसरा सभवत तीन सप्ताह मे हो सकेगा । चौथा जल्दी नही किया जा सकेगा ।

साथ मे सत्यदेवजी का दिया हुआ शृगार-प्रकरण नत्थी किया है । इस सबध मे आप जो कुछ कर सकेगे वह आप करेगे ही ।

मेरा स्वास्थ्य आश्रम मे और बाहर समान ही रहता है । निरतर उत्साहपूर्वक काम हो पाता है, यह स्वास्थ्य की मेहरबानी है । नीद जाडे भर खुले मे ली । काठ के बुत की भाति सोता हू और चैतन्य की तरह काम करने की इच्छा और प्रयत्न रखता हू ।

आपका सदा स्मरण होता है । आपके स्वास्थ्य की ओर ध्यान जाता है, लेकिन क्योकि बापू ख्याल रखते है, इसलिए मै बीच मे दखल नही देता ।

जानकीबाई को प्रणाम ।

विनोबा के प्रणाम

१०

वर्धा, २८-२-३५

श्री जमनालालजी,

यह मै सायकालीन प्रार्थना के बाद लिख रहा हू । कल सुबह आपके साथ बातचीत हो जाने के बाद आपटे गुरुजी का पत्र मिला । उसमे मेरे आने की तारीख पूछी थी । वास्तव मे मार्च का पहला सप्ताह उन्हे देने का तय हुआ था । उसके अनुसार उनके पत्र मे कार्यक्रम लिखकर आयगा, इसीकी मै राह देख रहा था । लेकिन अभी कार्यक्रम तय होना बाकी था । इस वजह से उन्हे ऐसा सूचित किया है कि अप्रैल के दूसरे सप्ताह मे बाळु-भाई की ओर से सीधे उनकी ओर आयेगे । मार्च के पहले सप्ताह मे आने का तय हुआ था । उस समय यह खयाल नही था कि अप्रैल मे मुझे खानदेश जाना पडेगा । खानदेश की बात बाद मे निकली, नही तो येवळ और

खानदेश दोनो का एक साथ ही तय हो सकता था, क्योकि उसमे पैसे की और मेरे समय—जिसे मै त्रिभुवन से भी अधिक मूल्यवान समझता हू—की बचत स्पष्ट थी। लेकिन अब सब ठीक हो गया। आपकी सूचना के अनुसार तारीख १० से १५ तक का समय यहा देना होगा, यह तय रहा। तबतक तालुका के केन्द्रो मे घूम आऊगा।

इस तरह आपके कहे मुताबिक, यद्यपि मै यहा रहूगा, फिर भी मेरी प्रार्थना यही रहेगी कि, भगवान करे, मुझे किसी सभा मे भाग न लेना पडे। सभा में कहने या सुझाने योग्य मेरे पास खास कुछ नही है, न वृत्ति है। मेरे लिए सभा का उपयोग बहुत ही कम होता है, ऐसा मेरा अनुभव है। सभा मे मै बहुधा शून्य भाव से बैठता हू। कभी-कभी तो गीता के या वेद के या इसी तरह के एकाध वचन का या विचार का चितन करता रहता हू। सभा मे चलनेवाली सारी कार्रवाई निरुपयोगी होती हो, सो बात नही है। उसमे सीखने योग्य भी बहुत कुछ रहता है, लेकिन मेरे हाथ से कौन-सी सेवा हो सकेगी, इसकी मुझे पूरी कल्पना है और उस सेवा मे मेरी शक्ति और बुद्धि के अनुसार अक्षरश चौबीसो घटे व्यतीत हो, इसके अतिरिक्त और कोई विचार ही मुझे नही सूझता। इसलिए सभाओ मे मुझे केवल सकोचवश समय काटना पडता है।

यह सब लिखने मे समय जा ही रहा है। पर आपकी और हमारी फिलहाल 'भाऊ-भाऊ शेजारी आणि भेट नाही ससारी' (यानी 'भाई-भाई पास-पास, मिलने की जग मे नही आस') ऐसी हालत हो गई है, इसलिए लिखना पडता है।

अपनी दिनचर्या का सक्षिप्त सार आपकी जानकारी के लिए यहा दे रहा हू :

घूमना—२ घटे
देहकृत्य—३ घटे
निद्रा—७ घटे
} (इसमे मुलाकाते, चर्चा आदि हो सकती है।) =१२ घटे

शरीरश्रम—६॥ घटे
तकली—॥ घटा
प्रार्थना—१ घटा
} (२० न का सूत ८ लटी) = ८ घटे

लेखन-वाचन १॥ घटा		
पत्र-व्यवहार १॥ घटा	} ४ घटे	
ध्यान-चिंतन १ घटा		
अध्यापन ६ घटा	=६ घटे	
	कुल ३० घटे	

भगवान ने २४ घटे दिये, उसके चरखे ने ३० किये।

विनोबा के प्रणाम

११

खानगी

भिवापुर, ५-१२-३५

श्री जमनालालजी,

श्री पोतनीस के साथ अनेक विषयो पर बहुत बाते की। मुख्य बात विवाह के बारे मे उनकी मनोभूमिका जान लेना और उस सबध में अपने विचार सूचित करना था। विवाह-सबधी चर्चा का जो निष्कर्ष निकला वह उन्होंने मुझे लिखकर दिया है। उसकी नकल साथ मे है।[1]

उनके साथ बात करते हुए किसी भी व्यक्ति का उल्लेख मैंने नही किया। लडकी के माता-पिता के विचार जाने बगैर इस प्रकार से उल्लेख करना मुझे ठीक नही लगा। अब लडकी के पिता को पोतनीस के विचारो की नकल भेज दूगा। आपको पोतनीस के साथ का सबध उत्तम लगता है, यह आपने मुझसे पहले ही कह दिया है। आपकी भी सम्मति उसके साथ सूचित करूगा। सम्मति आ जायगी तो फिर पोतनीस से पूछा जा सकेगा।

ऐसे सवालो के सबध मे पहले से ही किसीके साथ चर्चा करना मुझे नापसद है। इसलिए मेरा यह पत्र व्यक्तिगत समझा जाय। आपकी जानकारी के लिए लिखा है।

साथ के पत्र के अक १ की भाषा कुछ कठिन है। किन्तु जिस परिभाषा मे चर्चा हुई उसी परिभाषा मे वह लिखा है।

विनोबा के प्रणाम

---

[1] श्री पोतनीस का पत्र नीचे लिखे अनुसार है—

पूज्य विनोबाजी,

(१) विवाह के बारे में मेरी मनोवृत्ति तटस्थ रही तो अपरिनिष्ठि त

· १२

अहमदाबाद, २१-१-३६

श्री जमनालालजी,

चि राधाकिसन के विवाह का आमन्त्रण-पत्र मिला। मेरी शारीरिक उपस्थिति अनिवार्य प्रतीत न होने के कारण मैंने सकल्पित कार्यक्रम मे परिवर्तन करने की इच्छा नही की, तथापि मानसिक रूप मे मेरी उपस्थिति इस अवसर पर वहा रहेगी, यह आप जानते ही है।

चि राधाकिसन को आशीर्वाद।

विनोबा के प्रणाम

१३ :

पवनार, २९-११-३९

श्री जमनालालजी,

जन्म-दिन का पत्र मिला। गत वर्ष इस समय आप पवनार मे थे, उसकी याद हो आई। ऐसा लगता है मानो समय बहुत तेजी से बीत रहा है।

आपका जो शारीरिक इलाज हो रहा है, उसकी सफलता के लिए

अवस्था में अविवाहित रहने की मर्यादा समझकर और जिस परिस्थिति में मुझे कार्य करना है, उसका विचार करके मेरा विवाह के लिए तैयार होना अनुचित नहीं है, यह मैं स्वीकार करता हूं, और इस संबंध में जो उचित हो वह करने का मैं आपको अधिकार देता हूं।

(२) सामान्यतः संयमी जीवन बिताने की मेरी वृत्ति रहेगी और मेरी तरफ से पत्नी पर किसी भी प्रकार का आक्रमण न हो, इसका मैं ध्यान रखूंगा।

(३) समभाव, प्रेम और परस्पर सहयोग को मैं गृहस्थ-जीवन का मुख्य सूत्र मानूंगा।

(४) यह मैं मानकर चलता हू कि गरीबो की सेवा और गरीबी का जीवन आनन्दपूर्वक स्वीकार करने को पत्नी की तैयारी है।

भिवापुर, ४-१२-३५ आपका विनीत,

दत्तात्रेय पोतनीस

आपको मानसिक निश्चितता रखना आवश्यक है। ऐसा हो सका तो आरोग्य-प्राप्ति के साथ-साथ शान्ति की भी कुंजी हाथ लगना सम्भव है।

मेरा ठीक चल रहा है।

विनोबा के प्रणाम

२. जानकीदेवी बजाज के नाम

: १४ .

भिवापुर, १८-१-३२

श्री जानकीबाई,

मै कल अचानक ही यहा आया। मेरा कार्यक्रम जल्दी ही तय होने से मुझे फिर यहा आना ही चाहिए था, पर बीच मे रामदेव से मिलने के लिए और यशवत के नतीजे के लिए थोडा ठहर गया था।

मदालसा के शिक्षण की चिन्ता न करे। उस सबध मे मैंने योजना बनाई है। बाळकोबा उसका वर्ग लेगे और यथासभव थोडी देर सितार भी सिखायगे। सस्कृत भी चालू है ही। कन्याशाला मे उसका रहना ही उचित है, यह मेरी निश्चित राय है।

मै यहा कितने दिन रहूगा, यह पता नही। बाकी यहा व्यवस्था तो ऐसी रखी है कि वहा से डाक, चिट्ठिया, 'गीताई' के प्रूफ आदि लेकर कुदर यहा रोज शाम को आयगा और सुबह मेरी डाक आदि लेकर जायगा। बालको की इस सेवा के लिए मै उनको बदले मे क्या दू ?

इस तरह से मेरे साथ रोज का सबध रखा जा सकता है। मेरी इच्छा है कि मेरे द्वारा आप लोगो की सेवा आपकी शर्तो के मुताबिक ही हो।

कमलनयन, ओम्, रामकृष्ण की ओर आप ध्यान दे ही रही है।

विनोबा के प्रणाम

. १५

भिवापुर, २४-८-३२

श्री जानकीबाई,

आपकी और रामेश्वरजी की चिट्ठी मिली। जमनालालजी को मैंने आज सुबह पत्र लिखा है। तार देने की जरूरत नही थी। तार मे और पत्र मे एक ही दिन का अतर रहता। पत्र आज मेल से रवाना हो ही जायगा।

इसके अलावा सुपरिंटेडेट को भी मै पत्र लिखनेवाला हू। बाकी

जमनालालजी की चिंता करने का मुझे कोई कारण नही दिखाई देता । परमात्मा सारी चिंता कर रहा है, और वह खुद भी वजन कम न हो, इसका ध्यान रखने ही वाले है । वजन १७० पौंड तक कम हुआ है, उसमे कोई भी हर्ज नही । चार पौड और कम हुआ उसकी भी मुझे विशेष चिंता नही होती । जमनालालजी जान-बूझकर लापरवाही नही करेगे ।

विनोबा के प्रणाम

: १६ :

सुरगाव, २८-८-३२

श्री जानकीबाई,

जमनालालजी की तबीयत ठीक है। इस संबंध मे जेलर का पत्र कल मुझे मिला है । वह मैं आपको भेज रहा हू । वह आपसे शायद ठीक तरह से पढा नही जा सकेगा । लेकिन कृष्णदास गाधी उसे पढ सकेगा । इसी प्रकार धूलिया-जेल से हाल मे छूटकर आये हुए श्री मोडक का मुझे सविस्तर पत्र मिला है । उसमें भी लिखा है कि जमनालालजी की तबीयत अच्छी है । मेरे आने के बाद भी उनका वजन कुछ कम हुआ है । इसका कारण शायद यह हो कि वहा गरमी ज्यादा पडती है । ऐसा जेलर का कहना है । जो हो, मेरा पत्र उन्हे मिला है । इसलिए इस संबंध मे वह अधिक ध्यान देगे, ऐसा मेरा मानना है ।

विनोबा के प्रणाम

: १७ :

पवनार, १०-९-३२

श्री जानकीबाई,

यह चिट्ठी लानेवाले सज्जन श्री मोगे हमारे साथ जेल मे थे । वह खानदेश मे स्त्रियो का सम्मेलन कर रहे है । उसके लिए मदालसा को ले जाने के लिए वह आये है । जमनालालजी ने उनको वैसा सुझाया था । आपकी हाल की परिस्थिति मे आप मदालसा को भेज सकेगी या नही, यह आप देख ले और उन्हे वैसा सूचित करे ।

विनोबा

· १८ ·

नालवाडी, ४-३-३८

श्री जानकीबाई,

आपने तार देकर मुझे बुलाया। तुम तीनो[१] वहा हो और तीनो के लिए मुझे श्रद्धा है। इसलिए स्वाभाविक रूप से आने का विचार भी हो रहा था, लेकिन आखिर न आने का ही तय किया। वहा आकर भी मै आपको क्या शाति दे सकनेवाला था ? मेरी मनोवृत्ति जरा और तरह की है। ससार को मिथ्या मानकर वैठा हुआ, मै एक रसहीन आदमी, वहा के नैसर्गिक आनन्द मे, शायद नमक की डली बन गया होता। रविबाबू ने एक गीत लिखा है। उसमे कहा है

"एकला चलो, एकला चलो,
ओरे ओरे ओ अभागा।"

'ऐ अभागे! तू अकेला ही चल!' यह गीत मै हमेशा अपने ऊपर लागू करता हू, लेकिन 'अरे अभागे' नही कहता, 'अरे भाग्यवान' कहता हू।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है।

विनोबा

---

[१] जानकीदेवी, महादेवीताई और मदालसा

३. राधाकृष्ण बजाज के नाम

१९

सत्याग्रहाश्रम, (वर्धा) २५-१२-२७

चि० राधाकिसन,

तुम्हारे पत्र मिले। तुमने खादी-भडार का काम हाथ मे ले लिया, यह अच्छा हुआ।

विवाह करने की आवश्यकता महसूस होती हो तो विवाह करने मे कुछ भी हर्ज नही है। आवश्यकता के बारे मे डाक्टर को प्रमाण न मानकर अपनी स्वत की आत्मा को ही प्रमाण मानना। अत -परीक्षण करने पर विवाह करने से चित्त को अधिक स्थिरता व सयम मिलेगा, ऐसा लगता हो तो विवाह अवश्य करना।

विवाह करना हो या न करना हो—दोनो बाते सयम के लिए ही होनी चाहिए। सयम का लाभ ज्यादा हो, इसके लिए ईश्वर-भक्ति की ओर मन लगाना चाहिए और हाथ से कर्म करते रहना चाहिए।

रोज 'ज्ञानेश्वरी' का एक पृष्ठ मनन करना चाहिए।

तुम्हारे सविस्तर पत्र से तुम्हारी मन -स्थिति की कुछ कल्पना हुई। समय-समय पर इसी प्रकार लिखते रहा करो।

(हिन्दी में) विनोबा के आशीर्वाद

२०

फैजपुर, ७-१०-३६

श्री राधाकिसन,

यहाकी सारी परिस्थिति को देखते हुए ऐसा टिकाऊ रेचा (चर्खी) जिसमें बिनौले न टूटें और आठ घटे मे कम-से-कम चौबीस रतल कपास ओटी जा सके, और जिसकी कीमत दो रुपये के अदर-अदर हो, मिल सके तो, यहाके लोगो के लिए जल्दी ही उपयोगी हो सकेगा, ऐसा मुझे लगता है। क्या ऐसी कुछ चरखिया तैयार है? अथवा तैयार की जा सकेगी?

ऐसा मालूम होता है कि 'वृत्त'[1] के बारे मे साथियो ने पूरा फैसला नही किया है। जबतक फैसला न हो तबतक उसे छपवाने की दिक्कत हो तो हस्तलिखित भी निकाला जा सकता है, यद्यपि हस्तलिखित पढा नही जाता, ऐसा मेरा अनुभव है।

विनोबा

: २१ :

फैजपुर, ८-१०-३६

चि० राधाकिसन,

सावरमती की 'चर्खी' के विषय मे बहुत-कुछ सुना तो है। उसके प्रचार से जीन (प्रेस) बद किये जा सके तब तो वह एक आवश्यक परिणाम ही मानना होगा। यह भी दूर की ही बात है। पर अगर वह चर्खी सफल हो जाय तब तो वह दूर की नही रहेगी।

तब भी हमे एक छोटी चर्खी की जरूरत तो रहेगी ही। मेरे दिमाग मे जैसे तकली बस गई है, वैसे ही तकली-कुटुम्ब को शोभा देनेवाली 'चर्खी' मिल जाय तो वह बहुत ही उपयोगी होगी। मै अभी अपने बचपन मे हू। बच्चे को जैसे छोटी-सी कटोरी, छोटी-सी थाली, छोटी-सी रोटी और छोटा-सा लड्डू पसन्द आता है, वैसे ही मुझे सब-कुछ छोटा ही अच्छा लगता है। गीता भी मुझे छोटी-सी मिल गई है। तकली भी वैसी ही है। उसी प्रकार मेरे लिए धुनकी, चर्खी आदि चाहिए। तुकाराम ने भगवान की प्रार्थना की है, "भगवन्! पहले सत तुम्हारा ध्यान करते थे, उनके लिए तुम कैसे छोटे बने थे? वैसे ही मेरे लिए छोटे बनो।"

भाव बळें कैसा झालासी लहान।
मागें संतीं ध्यान वर्णियेलें॥

तुम्हारे प्रयोगो की ओर मेरा ध्यान रहेगा ही। लेकिन मेरी यह एक माग ध्यान मे रख लेना।

रामेश्वरजी की ओर से जो पैसे आनेवाले थे, वे आ गये हो और उनकी व्यवस्था हो गई हो तो सूचित करना, ताकि उन्हे उपयोग मे लेना शुरू

---

[1] 'आश्रम-वृत्त' नामक समाचार-पत्र

करदे । दो जनो को दिक्कत है और मैंने उन्हे आश्वासन दे रखा है । अवश्य ही वह आश्वासन मेरे तरीके का अर्थात्—अनेक शर्तो से युक्त है ।

मैं फिलहाल दूध-दही ३।।। रतल, किशमिश-खजूर १५ तोला, मोसबी ४, पानी १ रतल (उबला हुआ) और थोडा नमक या सोडा लेता हू । चार समय मे इतना जमाया है । ठीक चला है ।

फिटर का काम जाननेवाला इस समय कोई ध्यान मे नही है । वासुदेव बर्वे नाम का एक युवक विद्यार्थी है, जो केवल बढई का काम सीखना चाहता है । शरीर से मजबूत है और २४ वर्ष की अवस्था का है । चार आने तक मजदूरी मिले तो वह रह सकेगा । छ महीने बढई का फुटकर काम भी सीखा हुआ है । गुजाइश है ?

विनोबा

२२

फैजपुर, ११-१०-३६

श्री राधाकिसनजी,

कल का पत्र मिला । तुम्हारे पिछले दो पत्रो मे से एक का मैंने उत्तर दिया है । वह तुमको नही मिला ऐसा दीखता है । आश्रम मे तलाश की जाय । अनेको के पत्र एक ही लिफाफे मे डालता हू । इसलिए कुछ गडबड होती होगी ।

पहले कल के पत्र के सम्बन्ध मे—

'वृत्त' की रजिस्ट्री करना आवश्यक है, अगर ऐसी कानूनी राय है तो रजिस्ट्री करा ली जाय । प्रकाशक तुम या गोपालराव रहे, सम्पादक दत्तात्रेय ।

तुकारामजी का मुझसे थोडा ही परिचय रहा है । तुम्हीसे जो कुछ है वह है । ऐसा मालूम होता है कि तुमने उसको पहले कर्ज दिया है । अधिक देने का प्रयोग कर देखने मे हर्ज नही है । लेकिन २०० रुपये क्यो खर्च होगे यह समझ मे नही आता है ।

कुमार स्वामी को आश्रम मे रखना स्वीकार किया ही नही था । उनको 'ग्राम सेवा मडल' के ही किसीने रख लिया था । ऐसे लडके एकाएक 'ग्राम

सेवा मडल' के लिए उपयोगी हो जाय, ऐसी बहुत ही कम सभावना होती है। भटकते हुओ को आश्रय देने का प्रयोग करना हो तो आश्रम भले ही करे। लेकिन भला लडका होते हुए भी आश्रम मे कुमार स्वामी को कुछ लाभ होगा ऐसा नही लगता। वह अपने ही प्रान्त मे जाय तो ठीक रहेगा। 'ग्राम उद्योग सघ' के प्रशिक्षण वर्ग मे जाने की बात वह कुछ दिन पहले करता था। वहा भी जाय तो हर्ज नही है। बुनाई-काम की सस्था के सबध मे मै निश्चिन्त हू। मुझे लगता है कि उस सबध मे मैने तुमको कुछ नही लिखा होगा। सरजाम उत्तम चलाना ही तुम्हारा पहला काम है। बुद्धसेन कहता है कि वह बुनाई का काम देखेगा। यह मेरे लिए पर्याप्त है। सरजाम का काम पूरा करके तुम्हारे पास समय बचे तो तुम्हारी नजर उस ओर सहज ही जायगी। पर मेरे लिए तो बुनाई-काम की अपेक्षा मनुष्य का निर्माण हो इसका महत्व अधिक है, और बुद्धि ने वह काम हाथ मे लिया है, इसमें मै उसका विकास देखता हू। मेरे लिए मनुष्य प्रधान है, कार्य गौण। कार्य मनुष्य के विकास के लिए उपयुक्त साधन है। लोगो की नज़र मे कार्य प्रधान, मनुष्य गौण है, और कार्य करने का साधन है। यहा यह दृष्टि-भेद है।

अब पिछले पत्र के मुद्दो के सबध मे—

सरजाम कार्यालय के लिए दस हजार की योजना देना मुझे कठिन नही लगता। सामान्यत छोटी योजनाए मुझे पसन्द आती है। दस हजार की योजना मुझे छोटी ही लगती है। सरजाम यह वस्तु ही ऐसी है कि उसके प्रमाण मे १० हजार विशेष अधिक नही है। इसलिए ऐसी योजना तो हमें करनी आनी चाहिए, यह आज की स्थिति में भी मेरी अपेक्षा है, आशा है।

मेरी अपनी मन-स्थिति का प्रसगवश सहज ही उल्लेख करता हू। किसीसे कोई रकम लेकर उसका 'नाम' सस्था को देने की कल्पना मुझे अटपटी लगती है। इस पद्धति को बडे बुजुर्गो ने स्वीकार किया है, यह बात सही है। लेकिन मुझे तो काम बिल्कुल ही न हो तो भी चलेगा, पर यह 'नाम लेना' ठीक नही है, ऐसा मुझे लगता है। नाम लेना हो तो भगवान का ही ले। इसानो के 'नाम रखने' की यह कल्पना किस शैतान ने खोज निकाली यह मै नही जानता। लेकिन वह शैतान हमारे धर्म का नही था, यह निश्चित है। हिन्दू-धर्म मे ऐसी व्यक्तिपूजा कभी भी नही थी। आज वह

रूढ होना चाह रही है। लेकिन यह तो मेरी राय हुई और बाकी तो जिसकी जैसी राय हो।

बिना व्याज के अथवा व्याज से कर्ज देने की झंझट में 'ग्राम-सेवा-मडल' को नही पडना चाहिए। कर्ज के लिए योग्य व्यक्ति का नाम सूचित करने मे हर्ज नही है, लेकिन वह भी वहुत सावधानी के साथ।

कार्यकर्ता को काम के लायक स्पष्ट और व्यवस्थित लिखना-पढना आना ही चाहिए। उसमे साहित्य भले न हो, परन्तु काम ठीक होना चाहिए।

'दिसा माजि काही तरी तें लिहावें', अर्थात् प्रतिदिन कुछ-न-कुछ तो लिखे, ऐसा अभ्यास रखना चाहिए। रोज के समाचार, विचार, अनुभव को रोज नोट करना और उस नोट से पत्र तैयार करना। ऐसा करे तो सुलभ होगा।

अन्य जानकारी मेरे पिछले पत्र मे है।

विनोबा के आशीर्वाद

२३

फैजपुर, १७-१०-३६

श्री राधाकिसन,

मेरी ओर से तुम्हारे सब पत्रो का उत्तर मिला है।

नदलालजी बोस आकर गये। उनकी सब व्यवस्था हो गई।

'आश्रम-वृत्त' का सपादक व प्रकाशक दोनो होने की दत्तोवा की तैयारी है। लेकिन 'ग्राम सेवा मडल' की ओर से वह प्रकाशित हो रहा है, इसलिए उन्हीमे से किसीका प्रकाशक होना उचित होगा, ऐसा मुझे लगता है।

तात्याजी उपदेव के बारे मे मेरे लिखने की बात नही है। अण्णासाहब फुरसत से लिखेंगे। दूर के स्वयसेवको की अधिक आवश्यकता अब यहा नही है। मेरे मन पर ऐसा असर है। फिर भी इस बारे मे अण्णासाहब जब जैसा लिखेंगे, उसके अनुसार करना चाहिए।

विनोबा के आशीर्वाद

२४

फैजपुर, २०-१०-३६

राधाकिसनजी,

मुकदमे की मै कल्पना नही करता। 'वृत्त' का उद्देश्य ही भिन्न है। जब उसमे परिवर्तन करना होगा तब भले ही प्रकाशक व सपादक एक किये जा सकेगे। दत्तात्रेय के प्रकाशक होने का सवाल ही नही है। 'ग्राम सेवा मडल' का व्यक्ति प्रकाशक होना चाहिए। गद्रेजी का नाम उस दृष्टि से ठीक लगता है। उन्हे पूछ देखो कि उनको आपत्ति तो नही है ?

तुम्हारी इस समय की दिक्कतो की तो हद ही हो गई। लेकिन शुक्ल-पक्ष और कृष्ण-पक्ष चाद के लिए भी नही टले है। 'ये भी दिन जायगे।'

विनोबा

२५

फैजपुर, २३-१०-३६

राधाकिसनजी

दल्लूचद को इजेक्शन का कोई खास उपयोग हो, ऐसा मुझे नही लगता। ये सब उपाय तात्कालिक स्वरूप के प्रतीत होते है। लेकिन उसे अभी सुर-गाव जाने की जल्दी नही करनी चाहिए। पूरी शक्ति आने तक नालवाडी मे ही रहे, ऐसी मेरी राय है।

लोहे के इजेक्शनो से तो पौष्टिक आहारादि का सेवन करना अधिक उपयुक्त समझना चाहिए।

'वृत्त' मे विशेष विचारो का ऊहापोह अच्छी तरह होना चाहिए, ऐसी वल्लभस्वामी की सूचना है। मुझे लगता है, पत्रिका के आकार के आठ पृष्ठ हम दे सकते है। इस बार मैंने चितनिका अधिक दी है, लेकिन कुल मज-मून ज्यादा नही है।

बापूजी ने जाजूजी की ओर से 'ग्राम उद्योग शिक्षणालय' के लिए (बुनाई शिक्षक के तौर पर) वल्लभस्वामी की माग की है। दत्तोबा की राय प्रतिकूल है। तुम्हारी क्या राय है ?

विनोबा

२६

फैजपुर, २८-१०-३६

चि० राधाकिसन,

वल्लभ के सम्बन्ध मे नालवाडी से प्रतिकूल राय आई, और अपने ही घर मे कई तरह की दिक्कते होने के कारण बाहर से आई हुई माग को स्वीकार करना ठीक मालूम नही दिया, इसलिए महादेवभाई को आज उसके अनुसार सूचित कर दिया है। इसलिए इस प्रश्न का निपटारा हो गया, यह समझना चाहिए। अगर वल्लभ मुक्त हो सके तो बढई के काम मे उसे मेहनत करनी चाहिए, ऐसा मै सोचता हू, क्योकि पहले वह उसी काम मे था। बुद्धिमान और स्वेच्छा से शरीर-श्रम स्वीकार करनेवाले लोग जबतक तैयार नही होते तबतक अपने काम की किसी भी तरह प्रगति नही होनेवाली है, ऐसा मै समझता हू। जो सरजाम कार्यालय हमने खडा किया है, उसे खूब अच्छी तरह सफल बनाना है। मुझे तो उसमे अपने कार्य की कुजी नजर आती है। इसलिए हमारे हाथ मे जो लोग है, उन्हे परिपूर्ण बना लेना ही अत मे लाभदायी सिद्ध होगा। वल्लभ आगे चलकर सरजाम की जिम्मेदारी सभालेगा, ऐसा आज तो कोई ख्याल नही है, फिर भी उसके काम करते रहने का अवश्य बहुत उपयोग होगा।

पवनार का अनाचार का वह किस्सा बहुत ही भयानक प्रतीत होता है। ऐसे दुराचारी आदमी का समर्थन अगर भले लोग करते होगे तो उस भयानकता की सीमा ही कहा रही!

बुनाई-काम-विषयक योजना बनाने के सबध मे मेरे निम्न विचार है—

१ मै जिसे आदर्श पूनी समझता हू, ऐसी सर्वोत्तम पूनिया जिसे चाहिए, उसे मोल मिलने की सुविधा होनी चाहिए। आदर्श पूनी का मतलब है अधिक-से-अधिक उत्तम, जैसी कि मैने कभी किसी समय इस्तेमाल की है।

२ पूर्ण मजदूरी पाते हुए उत्तम बारीक सूत कातनेवाले कम-से-कम पाच-छ व्यक्ति हमेशा एक स्थान पर कातते रहे।

३ रोज एक ताना नित्य नियम से तैयार होता रहे।

४ पाच-छ व्यक्तियो के अथवा सात-आठ व्यक्तियो के बारीक

सूत मे से एक ताना तैयार नही हो सकेगा। इसलिए उसकी पूर्ति के लिए उत्तम स्वावलम्बी सूत बुनने की व्यवस्था हो।

५ उपरोक्त चारो बाते एक ही स्थान मे एक साथ चले। इसका उद्देश्य यह है कि आश्रम मे आनेवाले लोगो के प्रशिक्षण के लिए अनुकूल वातावरण रहे। अर्थात् ऐसे प्रशिक्षण की सुविधा वहा हो।

६ बुनाई के काम से सम्बद्ध सारी प्रवृत्ति जैसे कातना, पीजना, बुनना आदि की खोजबीन और प्रयोग होते रहे।

७ शरीर-परिश्रम के सिद्धात को माननेवाले कुछ लोग यहा काम करते हो।

८ कताई आदि का काम करनेवालो को मजदूरी से रखने मे आस-पास के देहातो के बेकारो को काम देने की दृष्टि हो, और—

९ उनमे से नये कार्यकर्ता निर्माण हो, यह दृष्टि भी रहनी चाहिए।

१० सस्था मे तैयार होनेवाला पूरा माल व्यापारी दृष्टि से सर्वांग सुन्दर होना चाहिए।

११ प्रतिदिन एक ताना तो अवश्य ही तैयार होना चाहिए, लेकिन उससे अधिक का पसारा जहातक हो सके टालना चाहिए।

वातावरण सिद्धात-पोषक, शोधक (अन्वेषक) और शैक्षणिक तो हो ही, साथ ही यथासम्भव स्वावलम्बी भी हो।

इन बातो से मेरी दृष्टि समझ मे आजायगी और नालवाडी मे ही यानी जहा मेरा वास हो वही यह सब क्यो हो, यह भी इससे ध्यान मे आ जायगा। मै जहा कही रहू, वही मेरे आसपास इस प्रकार का वातावरण उपस्थित किये बगैर मेरा जीवन-क्रम चल ही नही सकता।

अब बैठक के लिए सोची हुई एक-दो बातो के सबध मे अपने विचार लिखता हू।

मुद्दा १६—सरजाम कार्यालय का आर्थिक बोझ 'मडल' पर न रहे, परन्तु महारोग निवारण-कार्य और चर्मालय को जैसे हम स्वतत्र सस्था के तौर से चलाते है, उसी तरह सरजाम कार्यालय के सबध मे फिलहाल तय न करे, क्योकि 'ग्राम-सेवा-मडल' और 'आश्रम' की प्रवृत्तियो से सरजाम की प्रवृत्ति करीब-करीब बुनियादी स्वरूप की ही है।

अभिज्ञा[1] के सबध मे शायद मित्र लोग विचार करेगे। करना भी चाहिए। लेकिन उस सबध मे अनुकूल अथवा प्रतिकूल प्रस्ताव 'ग्राम-सेवा-मडल' न करे। अभिज्ञा व्यक्तिगत बात समझी जाय। उसके प्रचार का भार मुझपर है ही। साथी जो उठा सके वे केवल आचार का भार उठा ले। अभिज्ञा की सहायता से मेरी बुद्धि मे एक व्यापक सगठन तैयार हो रहा है। 'ग्राम-सेवा-मडल' से बाहर के बहुत-से लोग अभिज्ञा देते है। 'ग्राम-सेवा-मडल' के अन्तर्गत यथा-सभव सभीको देनी चाहिए, ऐसा मै चाहूगा। निरपवाद रूप से सभी देनेवाले निकले तब भी इस सबध मे प्रस्ताव नही होना चाहिए। अभिज्ञा को मैने सघ-भावना का प्रतीक माना है और इस विषय पर इस बार के 'आश्रम-वृत्त' मे मैने लिखा है। अबतक इस विषय पर 'आश्रम-वृत्त' मे जो कुछ लिखा गया है और कभी जो कुछ मै बोला होऊगा, उसका विवरण रखा गया हो और वह एकत्र करके अगर मुझे मिल जाय तो उनका उपयोग करके, और जरूरत हो तो उसमे कुछ और जोड करके एक छपा हुआ पत्रक तैयार किया जाय, ऐसा भी मेरे मन मे है। लेकिन वह जब होगा तब होगा। अभी तो मेरा इतना ही कहना है कि इस बात का विचार एकागी न हो, सर्वांगी हो और इसपर जो शका, आक्षेप आदि किये जाय उनके सहित वह मुझे सूचित हो।

काग्रेस के लिए साथियो को भेजने के सबध में—सर्व-सामान्य स्वय-सेवको की, विशेषत दूर से आनेवालो की, मै अधिक आवश्यकता नही देखता हू। विशेष विभागो की जिम्मेदारी तो बाटी ही जा चुकी है। लेकिन इन दोनो को छोडकर भी जिम्मेदारी के कुछ छोटे-मोटे काम बच रहते है। उनके लिए उपयोगी व्यक्तियो की जरूरत है, ऐसा समझना चाहिए। बीमार, दुर्बल अथवा उसके जैसे व्यक्तियो को आना ही नही चाहिए।

बाबाराम की जिम्मेदारी, उनका स्वास्थ्य पूरी तरह ठीक होने तक, अर्थात् उनकी इच्छा हो तबतक, मेरी समझी जाय। मेरी ओर से उसे 'आश्रम' सभाले, ऐसा कुन्दर को सूचित करे।

विनोबा

---

[1] यज्ञ-भावना से बनाई हुई पूनियां

: २७ :

४-७-३७

श्री राधाकिसनजी,

मुद्दे क्रम से जमा लेवें। जैसे सूझे वैसे लिखता गया हू।

१ खादी की मूल वृत्ति को ध्यान मे रखकर वस्त्र-स्वावलम्वी खादी को उत्तेजन देना, उसके लिए तालुका मे से वुनकर तैयार करना।

२ खादी का उपयोग करनेवालो की सख्या बढाना, आज के खादी-धारियो के लिए, तालुका मे पैदा होनेवाली कपास की लोढाई, धुनाई, कताई, वुनाई आदि कराके खादी तैयार करना।

३ पूर्ण मजदूरी का प्रयोग करके मजदूरो को अधिक-से-अधिक मजदूरी कितनी दी जा सकती है इसका अदाज लगाना।

४ चर्खा, धुनकी, तकली, यरवडा-चक्र, गति-चक्र-युक्त सावली चरखा, मगन-चरखा, इत्यादि की गति के प्रयोग करके उनमे सुधार और सशोधन करना।

५ खादी-शास्त्र के विद्यार्थियो के शिक्षण की व्यवस्था करना।

६ खादी-उद्योग मे (काम आनेवाले) औजार वनाना और सुधारना।

७ सूत की मजवूती, समानता इत्यादि के वारे म प्रयोग करके बुनकर की शिकायत दूर करके यथासम्भव मिल के जैसा सूत निर्माण करना।

८ तालुका के विशिप्ट किसानो से विभिन्न प्रकार के कपास उगाने के प्रयोग करवाना।

९ गत वर्ष की तरह अगर वेकारी वढ जाय तो कम-से-कम अपने केन्द्रो मे कताई की मजदूरी के द्वारा उसका सामना करना।

विनोवा

: २८ :

पवनार, १७-२-३८

राधाकिसन,

साथ मे मोहनलाल की चिट्ठी है। उस विपय मे उससे वात कर लें।

विद्यामदिर शिक्षण-योजना पर, जो मुझपर आ पडी है, पूरी ताकत

लगाये बिना वह चलनेवाली नही है। इतने बडे पैमाने पर यह पहला ही काम हम ले रहे है। उसकी उपयोगिता स्पष्ट ही है। जिस वस्तु की साधना मे बरसो गुजारे उसके प्रचार की यह योजना सहज हुई प्राप्त है। इस बारे मे वल्लभ से चर्चा कर ले। इस काम मे अपनेको पूरा ध्यान देना होगा।

तकली-उपासना का वातावरण आश्रम, 'ग्राम सेवा मडल' बुनाई काम, कार्यालय, सरजाम, ग्राम-सुधार, चर्मालय, एव खानगी लोग आदि सबो में उत्पन्न होना जरूरी है। इस विषय मे क्या किया जा सकता है ?

विनोबा

२९ :

पवनार, २-५-३८

राधाकिसनजी,

बाबाराम के सबध मे मै विचार कर रहा हू।

सरजाम-कार्यालय का काम घर पर देने की रीत ठीक नही है। काम तो कार्यालय मे ही होना चाहिए, नही तो दूसरे मजदूर से काम करवा-कर नफा लेने की वृत्ति निर्माण होती है, ऐसा मैंने पाया है।

विनोबा

३०

पवनार, ११-१२-३८

राधाकिसन,

जोगलेकर का कदील (लालटेन) देखा। उसमे कल्पकता दिखाई देती है। बत्ती बुनने की उनकी योजना मे भी कल्पकता है। मेरी दृष्टि से अभी तो कदील मे सुधार की काफी गुजाइश है। उनको एक बार बापूजी से मिला देना उचित होगा। शाम का समय ठीक रहेगा। वह शायद बापू के लिए भी सुविधाजनक हो और दीपक के प्रदर्शन के लिए भी वह अच्छा रहेगा। इसलिए वैसी व्यवस्था करे।

वर्धा-शिक्षण-पद्धति के लिए बम्बई प्रान्त से विद्यार्थी, १५ दिन के लिए, आनेवाले है। उनके रहने की क्या व्यवस्था की जाय, इसका विचार करने के लिए कल—सोमवार को सुबह ९ बजे, जाजूजी के घर पर साथियो की सभा है। उसमे मुझे बुलाया है। मेरे बदले मे तुम चले जाओ, क्योकि

इस दृष्टि से तुम्हारा उपयोग हो सकेगा—मेरे जाने का विशेष उपयोग नहीं है। इसलिए मैं जानेवाला नहीं हूं।

विनोबा

: ३१ :

परधाम (पवनार), १०-२-४७

राधाकृष्णजी,

वनस्पति घी-सम्बन्धी साहित्य वापस भेज रहा हूं। उस विषय में एक छोटी-सी टिप्पणी इस अंक में भी है। कुमारप्पा का लेख परिपूर्ण है, वह भी दिया जायगा।

११ तारीख के कार्यक्रम में सामुदायिक कताई के बदले, सम्भव हो सके तो, सामूदायिक पूनी-यज्ञ किया जाय, ऐसा मैं सूचित करना चाहता हूं। कताई को अब प्रोत्साहन की जरूरत नहीं है। तुनाई-पुनाई को है। परधाम में हम सामुदायिक पूनी-यज्ञ करते हैं। इस बार न जम सके तो आगे जब ऐसे प्रसग आवेंगे तब यह सूचना ध्यान में रखें।

नालवाडी की गोशाला में सफाई की ओर कम ध्यान रहता है। अथवा ध्यान रहता है तो भी सफाई पर्याप्त नहीं होती। यह मेरी पुरानी शिकायत है। 'गो-सेवा-सघ' के काम के बारे में कुछ लिखने की बात सोचता हू तो मुझे इस कमी का ख्याल हो आता है, और लेखनी आगे नही सरकती, तथापि 'गोसेवा-दिवस' के निमित्त लिखे हुए लेख मे हिचकते-हिचकते हिम्मत की है।

विनोबा

: ३२

बरेली, ४-१-५२

राधाकिसन,

चुनाव के बारे में श्रीमन्जी को तार व पत्र द्वारा खुलासा किया है।

पवनार में नदी के अदर एक छोटा-सा कुआ बनवाना पडेगा, ऐसी मुझे भी शका थी। जरूरत पडने पर सब करना ही पडेगा।

गोपुरी की पाठशाला सर्वोत्तम आदर्श बुनियादी शाला के रूप में

चले, यह मेरा आग्रह है। तत्सम्बन्धी साहित्य भी तैयार होना चाहिए—उद्योगो के अनुभवो पर आधारित जिन्दा साहित्य।

विनोबा

३३

परसोनी (दरभगा), २०-९-५४

राधाकिसन,

तुम जानते हो कि स्मारको की मै कम ही जानकारी रखता हू। बहुत-से स्मारक जो बनते है, मुझे प्रेरणा नही देते, यह सही बात है।

जमनालालजी ने अपना आखिरी निवास-स्थान घास-फूसवाला जो बनाया था, उसीकी प्रतिमा वहा रही होती तो आज शाति-कुटीर से वह बहुत अधिक शाति और स्फूर्ति देता। खैर, जो हो गया, सो हो गया।

'सर्व-सेवा-सघ' का दफ्तर वर्धा मे, और गया मे जैसे रहा है, वैसे ही दक्षिण मे भी एक तीसरी जगह आगे बननेवाला है। वर्धा मे वह शाति-कुटीर के स्थान मे ही शोभा देगा।

मेरी राय में जमनालालजी का सर्वोत्तम स्मारक जो हो सकता है, उसीमे मै लगा हू। मैंने स तरह का अभिप्राय अभीतक जाहिर नही किया था। जब तुम पूछ ही रहे हो तो प्रकट कर रहा हू।

शाति-कुटीर मे प्रार्थना की सुन्दर जगह बने, यह बहुत उचित है। उस बाबत जैसा सोचा जायगा मुझे लिखोगे ही।

(हिन्दी मे) विनोबा

३४

पजाब-यात्रा, ९-४-५९

राधाकिसन,

'ब्रह्म-विद्या-मदिर' मेरी शायद अतिम कृति होनेवाली है। अर्थात् इसके बाद मुझे अन्य कोई भी योजना सूझे, ऐसी सम्भावना नही दिखाई देती। पद-यात्रा चालू है। वह ब्रह्मविद्या के अग के रूप मे ही चल रही है। उस यात्रा से सहजरूप मे चाहे जो (फल) निकले, पर ब्रह्मविद्या से वह भिन्न नही होगा।

'ब्रह्मविद्या-मदिर' मे पहले की कोई भी कल्पना उसी रूप मे नही चलेगी। आमूलाग्र परिवर्तन होगा।

अदरूनी सारा (कारोवार) भगिनी-मडल की इच्छानुसार चलना चाहिए। उनकी इच्छा के अनुसार उनकी मदद करना तुम लोग अपना काम समझो। उनपर कोई भी कल्पना लादने की मेरी इच्छा नही है। सुझाना मेरा काम है। लेकिन निर्णय उनका होना चाहिए और उसे विना शोरगुल के हम लोगो को पार लगाना है।

जहा कोई प्रश्न उत्पन्न होगे वहा तुम और हम मिलकर विचार करेगे। लेकिन वहनो को मुक्त चितन की सुविधा कर देनी है।

विनोवा

: ३५ .

पजाव-यात्रा, १९-१०-५९

राधाकिसन,

साथियो से तीन-चार दिन चर्चा की। विचारो की सफाई होने मे वह उपकारक हुई है, और मुझे भी 'ग्राम सेवा मडल' की आजतक की स्थिति की अधिक स्पष्ट कल्पना मिली। मुझे 'ग्राम सेवा मडल' को जो कहना था, वह मै एक पत्र मे लिख ही चुका हू। नई जानकारी जो मिली उसके वाद भी उसमे फर्क नही पडा है।

सस्था के विभिन्न विभागो की जिम्मेदारी विभाजित करके विभिन्न व्यक्तियो को सौपी जाय और उनमे तारतम्य रखने का बचा-बचाया काम आफिस के द्वारा अध्यक्ष करें, तुम्हारी यह सूचना मुझे पसन्द आई। धीरे-धीरे ये सारे विभाग 'आटोनमस', अर्थात् स्वयशासित और स्वयपूर्ण हो जाय, इस प्रकार उनका उत्तरोत्तर विकास होना चाहिए। अपनी-अपनी ताकत के अनुरूप उन विभागो से यथोचित कर (टैक्स) मूल सस्था को मिले और घाटेवाले विभागो को प्रसगवश जो मदद देनी पडे, वह मूल सस्था से प्राप्त हो, ऐसी वहुत सुन्दर रचना हो सकती है, जो अन्य सस्थाओ के लिए भी आदर्शरूप होगी।

स्त्री-शक्ति को इस प्रकार शिक्षित किया जाय कि जिससे धीरे-धीरे सस्था का सचालन उनके हाथ मे आ जाय, अगर इस कल्पना को सफल

बनाना है तो आज की स्थिति मे तुमको सस्था की ओर अधिक ध्यान देना होगा। अर्थात् यह समझो कि हर महीने कम-से-कम दस दिन तो तुम सस्था में उपस्थित रहो और अनुपस्थिति के दिनो मे भी आफिस और आफिस के सेक्रेटरी के द्वारा सारी जरूरी जानकारी से परिचित रहते रहो, ऐसी व्यवस्था करनी होगी। और भी कई कारणो से इसकी जरूरत है। वर्धा जिले की ओर जिस दृष्टि से देखने का मैंने सुझाव दिया है या वर्धा शहर का दूध का और सर्वोदय-पात्र का काम भी सौ फीसदी पूरा होने के लिए, या सेवाग्राम मे अण्णासाहब सहस्रबुद्धे आनेवाले है, उस दृष्टि से भी कुछ ज्यादा समय वर्धा मे बिताना आवश्यक ही है। 'ग्राम सेवा मडल' के मुख्य-मुख्य सदस्यो मे सौहार्द की कमी है, ऐसा बहुत निरर्थक-सा ही आभास होता है। मुझे ऐसा लगता है कि वाणी पर कम अकुश होना ही शायद इसका मुख्य कारण है। शक्तिशाली लोगो को मामूली कामो मे लगा देने से भी दोष निर्माण होते है। आदमी शक्तिशाली हो और निरहकारी भी हो, यह तो ईश्वरी देन ही समझनी चाहिए। अत जिम्मेदारी का विभाजन करने की तुम्हारी कल्पना इस दृष्टि से भी अच्छी है।

परधाम मे 'ब्रह्मविद्या-मदिर' बना है। हम सब लोगो का उसमे जाकर रहना न सम्भव है, न उसकी जरूरत ही है। फिर भी हममे से हरेक का हृदय-मदिर ब्रह्मविद्या का मदिर बने, ऐसी आकाक्षा हम रक्खे। मुह से ऐसी भाषा बोलने की आदत भी हम डाले। मराठी मे कहावत है कि "काशीस जावे नित्य वदावे'। काशी को जाने की बात हमेशा बोलते रहे। 'ब्रह्मविद्या-मदिर' को जो स्थूल मदद चाहिए या आगे जरूरत होगी उसे पूरा करने का प्रयत्न 'ग्राम सेवा मडल' करेगा। उसमे से सहज ही यह अपेक्षा उत्पन्न होती है कि हम सबका अन्तिम लक्ष्य ब्रह्मविद्या है, इसका भान 'ग्राम सेवा-मडल' के लोगो को सदा रहेगा। ऐसी दृष्टि रहने पर 'ग्राम सेवा मडल' की गाडी सहज ही सरलता से चलने लगेगी, इसमे मुझे सदेह नही है।

विनोबा का जयजगत्

: ३६ :

पजाव-यात्रा, १८-११-५९

राधाकिसन,

विचार-गोष्ठी का विचार अच्छा है । मैं उसमे उपलब्ध होऊगा कि नही, मैं नही जानता । देखें क्या होता है ।

पचवार्षिक योजना मे खेती के बाद गो-सेवा का महत्व का स्थान होना चाहिए, यह श्री ढेवरभाई का विचार मुझे पूर्ण समत है । ढेवरभाई उस काम मे एकाग्र हो सके तो उससे अधिक वाच्छनीय क्या हो सकता है ?

(हिंदी में) विनोबा का जयजगत

: ३७

इन्दौर, १४-७-६०

राधाकिसन,

उपवास के आरम्भ का और पाचवे दिन का, ये दो पत्र मिले । खाना छोडने को 'फाका' या सस्कृत मे 'अनशन' कहते है । उसके लिए भक्तो का शब्द है 'उपवास' । उपवास याने परमेश्वर के समीप रहना । परिमित आहार लेते हुए भी उपवास हो सकता है, और आहार छोडकर भी उपवास नही हो सकता। आशा करता हू कि आहार छोड़कर उपवास तुम-को सध जायगा, जिससे कि आगे आहार लेने पर भी वह जारी रह सके ।

देशभर मे हडताल है । मालूम नही यह तुम्हारे पास पहुचेगा या नही । पर मेरा अपना अनुभव है कि सदेश मानसिक भी भेजे जा सकते है, और पाये जा सकते है । तो यह अगर पहुच गया तो पहुच ही गया, और न पहुचा तो भी पहुच ही जायगा ।

तुमने अपने तीन दोष लिखे है । अव इस तरह मैं अपनी तरफ देखता हू तो दोषो की लम्बी यादी (सूची) होती है । लोग मेरे गुणो की भी सूची बनाते है । वह भी है और यह भी है । लेकिन पहचानने की चीज यह है कि दोनो से हमारा ताल्लुक नही । खैर, यह एकदम कैसे बूझेगा ?

'बूझत बूझत बुझे'

(हिन्दी में) विनोबा का आशीर्वाद

४. अनसूया बजाज के नाम

३८

आश्रम (वर्धा), १-४-३६

चि० अनसूया,

अभी वहा जो दूध का प्रयोग चल रहा है वह कुछ मर्यादा मे और कुछ व्यक्तियो के लिए ही उपयोगी है। उसमें कुछ कठिनाई नही है। सादा और सरल प्रयोग है और तुमको अब उसका अनुभव प्राप्त करने का मौका भी अच्छा मिला है। इस स्थिति मे उसका शास्त्रीय अध्ययन करके कम-से-कम इतनी प्रवीणता तो सम्पादन कर लेनी चाहिए कि स्वतन्त्ररूप से यह प्रयोग हम यहा भी कर सके। हर वक्त गौरीशंकरभाई को तकलीफ देने की जरूरत नही होनी चाहिए। हर दिन का इतिहास लिखा हुआ हो, और समय-समय पर जो प्रश्न उत्पन्न होते है उनके बारे मे क्या-क्या चर्चा होती है, कौन-से सवाल खडे होते है, क्या परिवर्तन किये जाते है, इसकी सम्पूर्ण और सुव्यवस्थित जानकारी होनी चाहिए। इसके अलावा इस विषय पर जो साहित्य उपलब्ध हो, उसकी सूची और गौरीशंकरभाई की सलाह से इस सम्बन्ध की २-४ सर्वोत्तम पुस्तके भी साथ ले जाना चाहिए। एक ऐसे चौकस व्यक्ति के लिए, जिसे राधाकिशनजी-जैसे अनेक व्यक्तियों की सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है, इस विषय की पर्याप्त प्रवीणता प्राप्त करना कठिन नही है। इसलिए उत्तम शरीर और विद्या दोनो सम्पादन करके इस कार्यक्रम को पूरा करना है। इतना तुम्हारे ध्यान मे रहना चाहिए।

पूनियों के सम्बन्ध में क्या विधि हो, यह दत्तात्रेय से पूछा। यह ५ तोले की कल्पना उनकी है। और इस बारे में उनकी राय तुम्हारे-जैसी ही है। जो पूनिया दे दी सो दे दी। आगे से ५ तोले ली जाय। वचन-रूप में न सही, फिर भी महीने की सर्वोत्तम ३० तोला अथवा इतनी ही पूनिया, स्वत के उपयोग के अलावा, स्वतन्त्र रूप में बनाना सम्भव हो तो बनाई जाय। और वे २॥ रु० सेर के हिसाब से मुझे बेची जाय। इस तरह जो मजदूरी

मिले उसका अपने पास हिसाब रक्खा जाय। समझो कि इस तरह से २० तोले की पूनी भी अगर प्रतिमाह बेची जा सके तो सालाना ३॥। रुपये मजदूरी हुई। हिन्दुस्तान के ७ करोड कुटुम्बों में से (प्रति परिवार) कम-से-कम एक व्यक्ति सालाना ३॥। रु० मजदूरी खादी के कार्य में दे तो भी २६। करोड रुपये राष्ट्र में बढ जायगे। इसके अलावा पूनी के कच्चा माल होने की वजह से उसका रूपान्तर खादी में होगा, इससे कितनी वृद्धि हो सकेगी उसका हिसाब तुम खुद कर देखो। यह है 'शरीर-परिश्रम-व्रत' की महिमा। 'बूद-बूद से तालाब भरता है' यह है उसका सूत्र। आश्रम में हमने स्वतन्त्र मजदूरी खाता खोला है, उसका विवरण तुम 'आश्रम-वृत्त' में पढती ही होगी। शिक्षित समाज अगर थोडी भी शुद्ध कमाई करे तो उनमे उनका और देश का उद्धार होने का रास्ता खुलेगा। लेकिन जैसा ३० तोले का वचन था वैसा यह वचन नही है। अगर वचन कहा जाय तो वह पाच ही तोले का है। 'श्यामची आई'[1] तुम ले गई हो, लेकिन वह पुस्तक केवल पढ डालने की नही है, बल्कि पढकर उसमें जो महत्व के मुद्दे हो उनको कापी में नोट करके उसकी नकल मेरे पास भेजना।

वहा तकली कातने को छुट्टी क्यो दी है ? बम्बई तकली से डरती है क्या ? मुझे लगता है कि आध घटे का स्वामित्व तो तकली को दिया ही जाय। इससे अधिक का मालिक चरखा बैठा ही हुआ है।

विनोबा

· ३९ ·

फैजपुर, ९-१०-३६

चि० अनसूया,

तुम्हारे दैनिक कार्यक्रम मे रात को प्रार्थना के बाद ८॥ से १० का समय व्यर्थ मालूम होता है। सामान्यत प्रार्थना के बाद मौन न रखा जाय। फिर भी, समय व्यर्थ अथवा फालतू काम में न बिताते हुए, हरि-स्मरण करते हुए सो जाने की रीत उत्तम है। सेवा-कार्य को छोडकर प्रार्थना के बाद अन्य किसी भी कार्य मे समय न खोना ही उपयुक्त है। ९ बजे से

---

[1] सुप्रसिद्ध लेखक स्व० साने गुरुजी-कृत मराठी पुस्तक।

५ बजे तक नीद के लिए ८ घटे तो अवश्य ही चाहिए। रात म ८ घटा नीद मिल जाने से थकान महसूस नही होगी। इसलिए अगर सम्भव हो तो ९ के बाद न जागने का क्रम आजमा कर देखो।

पीजन को ८ महीने विश्राम मिला, इसकी मुझे कल्पना नही थी। मुझे यह उचित प्रतीत नही होता। अभिज्ञा का एक मूल उद्देश्य यह भी है कि सेवक का हाथ पीजन पर सदा ताजा रहे। पीजने मे जिस दिन प्रकृति की अथवा परिस्थिति की दिक्कत हो तो उस दिन छोडकर, सम्भव हो तो, नियमित रूप से रोज पीजना चाहिए। अपनी पीजी हुई रुई ज़रा भी दोप-युक्त रहे यह शोभा देनेवाली चीज़ नही है। बापूजी पूनियो को मान्य कर लेते है, इतने से हमे सतोष नही मान लेना चाहिए। यह तेरे ध्यान मे है ही।

शरीर-परिश्रम-विषयक भावना से प्राय बडे लोग या तो अलग हो गये है या होनेवाले है। मुझे इसमे स्पष्ट रूप से भय दिखाई देता है। इन 'बडे' लोगो मे तेरी गणना तो नही करनी है न ?

जमनालालजी दौरे पर है, यह तो मुझे मालूम ही था, लेकिन वह कब आनेवाले है आदि विशेप जानकारी दी होती तो वह उपयोगी हुई होती। जानकारी देनी हो तो केवल गोलमोल लिखने में कोई लाभ नही, उसमें सुव्यवस्थितता चाहिए।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। गाव से, और काग्रेस की जगह से अलग एक खेत मे हमारी वस्ती है।

आज शरीर दुर्बल है, फिर भी चरखे की तरह तकली का भी ८ घटे का प्रयोग कुछ दिन कर देखने का मेरे मन मे है। यह कब होगा यह नही मालूम। लेकिन उसीके लिए बाये हाथ का अभ्यास साल भर से किया है। दोनो हाथो से तकली चलेगी तो थकान नही होगी। लेकिन यह तो जब होगा तब।

इससे पहले दोनो हाथ आध-आध घटा तकली पर चलाकर दोनो की गति नोट कर रखने की कल्पना कर देखने-जैसी है।

विनोबा के आशीर्वाद

४०

गोपुरी, (वर्धा), १५-१०-४५

चि० अनसूया,

तेरा स्वास्थ्य, यहा जो मैने देखा उससे, मुझे काफी खराब लगा। अब वहा कुछ ठीक होगा, ऐसी आशा करता हू ।

परन्तु इस कारण से जीवन का कुछ परीक्षण करना, तुम दोनो के ही लिए, उपयोगी होगा । अपने जीवन का कोई हेतु है । उसको पहचानकर उसके लिए मनुष्य को जीना है । अपने मूल उद्देश्य की ओर, ईश्वर द्वारा हमारे लिए नियोजित हेतु की ओर, हम कितने जा रहे है यह परीक्षण करते रहना चाहिए ।

तुम दोनो की वृत्ति कुल मिलाकर बहुत शुभ है । और थोडे आत्मचितन की आदत से दोनो का ही मगल होगा, ऐसा मेरा विश्वास है ।

विनोबा के आशीर्वाद

४१

पडाव-कुसुमाहा (पूर्णिया),
२०-१०-५४

अनसूया,

सदा सतुष्ट रहना भक्तो का एक लक्षण है । गीताई (अध्याय १२-१४) देख लो । यह लक्षण तुम्हे साधना चाहिए और सध सकता है ।

मै सुनता हू कि गौतम भी बीमार हो गया । हमारी यात्रा मे वह काफी सयम से रहा और बहुत दिनोतक अच्छा रहा । बाद मे उसका सयम टूट गया । तैरने का मोह वह सवरण नही कर सकता । फिर उसको शीत-ज्वर लागू हुआ । मेरा यह अनुभव है कि बगैर अपनी गलतियो के रोग अक्सर आता ही नही । खैर वह तो बालक है । एक-एक अनुभव से सबक सीखता जायगा ।

प्राकृतिक उपचार के लिए अपने पास एक बडा ही सुन्दर स्थान है । उस स्थान से मुझे तो बहुत ही लाभ मिला है । शारीरिक और आध्यात्मिक दोनो प्रकार का । उपचार के साधनो का थोडा इतजाम करने पर वह आदर्श

आरोग्य-धाम हो सकता है। परधाम तो वह है ही। पर साधको का निजधाम भी वह हो सकता है। यह तो सहज लिख दिया।

बाल-गोपालो को आशीर्वाद।

(हिन्दी मे) विनोबा के आशीर्वाद

४२

चिन्नमनूर (मदुरा),
१६-१२-५६

अनसूया,

पत्र मिला। तेरे पत्र से मुझे जैसी चाहिए वैसी अचूक जानकारी मिलती है। ऐसी जानकारी दो-चार जनो से ही मुझे मिलती है। बाकी के लोग समझते है कि इसको इधर-उधर की फुटकर जानकारी देकर इसका समय क्यो ले। मुझे फुटकर जानकारी जितनी महत्व की मालूम देती है, उतनी ठोस जानकारी नही मालूम देती। ठोस जानकारी का मतलब किसीका मरण, किसीका जन्म और किसीकी लगन-शादी आदि। शादी के पत्र तो मै सीधे फाड ही डालता हू। लोग आशीर्वाद चाहते है। पत्र फाडने से जितना वह मिलता है, उतना उत्तर लिखने से नही मिलता।

परधाम मे मिर्च, मसाले व छौक का वर्णन तेरे पत्र मे पढकर मुझे वहा चुपचाप आकर भोजन कर जाने की इच्छा हो गई। उसके बाद फिर वही मेरी समाधि बनाने मे हर्ज नही है। आध्यात्मिक दृष्टि से उसमे विशेष बिगाड नही है, क्योकि वह आतरिक वस्तु है। भिक्षावृत्ति से जो मिले वह प्रेमपूर्वक खा लेना। ऐसा करनेवालो के लिए ये बाते बहुत बाधक नही होगी। उसमे नुकसान तो असल मे शारीरिक ही है। लेकिन यह अभी मै लोगो के गले उतार नही सकता, क्योकि इन-सब वर्जित बातो को टालकर भी मै बीच-बीच मे बीमार पड जाता हू। ऐसे आदमी को 'परोपदेशे पाडित्यम्' करने का क्या अधिकार? तब भी मेरा यह पक्का विश्वास है कि इन वस्तुओ का सेवन अगर मे करता रहता तो उपचार-केन्द्र मे जीवन गुजारने की नौबत आगई होती।

विनोबा के आशीर्वाद

. ४३

कुपाचपेट्टी, (त्रिची) १४-१-५७

अनसूया,

पत्र मिला। मनसाराम की कहानी मुझे मालूम ही नही थी। एक हरिजन लडके को अपना समझकर उसकी उन्नति के लिए पुत्रवत् चिता करना, वडे-वडे हरिजन-छात्रालय चलाने से अधिक ठोस काम है। ऐसा काम तेरे हाथ से हो रहा है, इससे मुझे सतोप मिला। महादेवी के बाद अपने आस-पास के लोगो मे यह दूसरा उदाहरण है।

जेल मे (कैदियो से) आटा पिसाया जाता है। उसमे से जो चोकर निकलता है उसे फिर से पीसकर आटे मे मिलाना पडता है। हमे याद है कि हम जेल मे (चक्की) पीसते थे। इक्कीस पौड मे से तीन-चार मुट्ठी से अधिक चोकर मजूर नही करते थे, और वह भी फिर से उस इक्कीस पौड मे मिला देना पडता था। ऐसा नियम न रखे तो आटा मोटा पीसा जाता है और रोटी बनानेवालो की शिकायत आती है। फिर भी चोकर अलग रहे तो उस दिन का चोकर, जिनको जरूरत हो वे कच्चा खावे या दाल मे डालकर पका ले। दाल मे वह खप जायगा और रोटी खानेवालो के गले मे बेमालूम प्रवेश करेगा। बेमालूम प्रवेश होने पर भी परिणाम मे फरक नही पडेगा। उवली हुई सब्जी अच्छी व रुचिकर हो सकती है और उसका प्रचार भी हो सकता है। नारियल वगैरा भी उसमे डाला जा सकता है। जिनका स्वाद अजीब-सा हो गया उनको, स्वाद छोडने का कहने के बजाय अच्छे स्वाद की आदत डलवानी चाहिए।

रेड्डीजी ने सबकी रसोई के लिए अधिक आग्रह नही रखा, यह उचित ही हुआ। उवला हुआ खानेवाले कभी भी बीमार न पडे तो अपने-आप सात्विक आहार का प्रचार होता रहेगा। बीमार हुए कि उनकी प्रचार-शक्ति क्षीण हुई।

अन्य लोग उपचार के लिए आते है। उनको अलग रसोई करनी पडती है। फिर हम ही अहसान क्यो ले, ऐसा तेरा विचार करना गलत है। तेरी गिनती परधाम के अन्तर्गत ही है।

भीमावरम के रोगी के ऊपर उपचार की जिम्मेदारी डालने की

रीति एक तरह से अधिक सुविधाजनक है, तो दूसरी तरह से धोखे की भी है। सैकडो लोगो का उपचार करनेवाली सस्था उरुली-जैसी जिम्मेदारी नही उठा सकेगी। परधाम मे अधिक रोगी न रखने हो, फिर भी रोगी के साथ सबकी रसोई का भार आज की स्थिति मे विद्यापीठ शायद न उठा सके।

विनोबा के आशीर्वाद

४४

गाधीग्राम (मदुरै), १६-२-५७

अनसूया,

ता. ८-२-५७ का पत्र मिला। धीरेनभाई वुलाते है तो उधर जाने की हिम्मत करना ठीक है। परन्तु तुम्हारा मन न माने तो मेरा आग्रह नही है।

तुम्हारा उपचार अधूरा रह गया दीखता है। ऐसा है तो पवनार में ही क्यो न रहा जाय ? रेड्डीजी को उपचारो का अच्छा ज्ञान है, ऐसा माना जाता है। मनष्य प्रेमल तो है। प्राकृतिक उपचारो मे भी मतभेद होता है। अगर थोडा फायदा हुआ है, तो क्यो न पूरा कर लिया जाय, ऐसा विचार मन में आता है। परमधाम विद्यापीठ है, प्राकृतिक उपचारो की मानी हुई सस्था नही है। ऐसा माना होता, तो भिन्न प्रकार की व्यवस्था कर सकते थे।

सामनेवाले व्यक्ति मे अपनत्व हो और हम भी अपनत्व रखे तो उसमे हमारी विशेषता क्या ? यह तो जानवर भी करते है। मनुष्य का गुण अपने खुद के स्नेह से दुनिया को स्नेहमय करना यही है। स्नेहवान मनुष्य को दुनिया मे स्नेह के दर्शन होने लगते है, यह अनुभव है। इस कारण बुद्ध के जो वचन तुमने लिखकर रखे है, वे ठीक है। उन्होने वे वाक्य तुम्हारे ही लिए लिखे है, यह समझो।

पृथ्वी, आकाश और गगा ये उपमाए देह के लिए ल तो गौतमवुद्ध को भी लागू नही होगी। आत्मा के लिए ले तो ये तुम्हे भी लागू होगी। इसपर विचार करो।

मेरे पास तू कभी भी आ सकती है। पर आजकल मै सख्या बढाने मे हिचकिचाता हू। इस वक्त एकदम कम-से-कम सख्या रखी है। उसमे से भी कम कर सका तो, जैसे पाणिनी को सूत्र छोटा करने मे आनन्द होता था,

वैसा ही मुझे होगा। मुझे मनुष्यो का कष्ट नही है, उनके प्रति प्रेम है, इसी लिए ऐसी वृत्ति है। इसके सिवा, तुझे दूर रखने मे मुझे एक लाभ है, वह यह कि मुझे विस्तृत जानकारीपूर्ण पत्र मिलते रहेगे। परतु बीच मे काफी दिन तुमने कुछ लिखा ही नही।

राधाकिसनजी शीघ्र ही इधर आवेगे ऐसी खबर है। उनके आने पर उनसे चर्चा कर लूगा।

विनोबा के आशीर्वाद

४५

कल्लुपट्टी (मदुरै), १४-३-५७

अनसूया,

तेरा कहना ठीक है। अग्रेजी शताब्दी अबतक खत्म नही हुई है, खत्म होनेवाली है। जाऊ-जाऊ कहती है, परतु उसका पैर अभी सरकता ही नही।

वैसे तो अग्रेज़ी भाषा हमारे देश मे रहकर गई, इससे कोई नुकसान नही हुआ। उसमे काफी अच्छा साहित्य है। लेकिन उठते-बैठते हमारे हरेक व्यवहार मे वह दखल न दे इतना ही हमारा कहना है।

कोरापुट की चर्चा मे निराशा की तो कोई बात ही नही है। निराशा का ही नाम 'कोरापुट' है। वहा आशा ही कौन-सी थी ? बल्कि अब ग्रामदान के बाद आशा की किरण दीखने लगी है। दरअसल तो करने का काम हो जाने के बाद ही अवलोकन करना चाहिए।

"पूजून देव पाहीजे। पेरून शेती जाईजे।"

यह सत ज्ञानदेव का वचन है। बिना बोये खेत मे जाओगे तो घास-ही-घास दिखाई देगा। पूजा न करते हुए भगवान को देखोगे तो भद्दा-सा पत्थर दीखेगा। अब परसो राधाकिसन, वल्लभस्वामी आयेगे तब और जानकारी उनसे सुन लूगा।

विनोबा के आशीर्वाद

४६

कालडी (केरल), २१-४-५७

अनसूया,

११-४ का पत्र मिला। कर्त्तव्य का ख्याल रखकर तुरन्त निकल पडी,

इससे जीवन मे धर्म-दृष्टि उतारने मे मदद होगी। खादी ग्राम के लिए तत्काल चल पडना धर्म था। वहा से सर्वोदय-सम्मेलन के लिए आना ही चाहिए, ऐसा कोई धर्म नही है। धीरेन्द्रभाई कहे तो आने मे कोई हर्ज नही है और वही काम हो तो रहने मे भी हर्ज नही है। ऐसी भावना रखोगी तो 'दस दिन मे क्या करोगी' यह सवाल ही खडा नही होगा।

विनोबा

४७

केरल राज्य, २-७-५७

अनसूया,

भिडे गुरुजी एक अखड सेवक थे। उनसे अधिक मजदूरी करनेवाला कोई भी मजदूर सहसा नही मिलेगा। उनके जाने की खबर किसीने मुझे दी थी, लेकिन शिवराजजी चूडीवाले गये, यह तेरे पत्र से ही मालूम हुआ। हमारे साथ की यह सारी पीढी थी।

विनोबा के आशीर्वाद

४८

पटियाला (पजाब), १-४-५९

अनसूया,

तेरा सुन्दर पत्र मिला। अठारह महीनो का मौन समाप्त करके लिखा हुआ पत्र स्वाभाविक रूप से ही हृदय को सुख देनेवाला हुआ। ऐसा न हुआ होता तो ही आश्चर्य था।

तूने कुछ अच्छी सूचनाए की है। देखें उनमें से कितनी ली जाती है। ब्रह्मविद्या अदर से अकुरित होनेवाली है। वडे लोग, जो और बातो मे समर्थ सिद्ध हुए, वे ब्रह्मविद्या मे समर्थ सिद्ध होगे ही, सो बात नही है। इसीलिए कहा है

'व्हावे लाहानाहूनी लहान।' (अर्थात् छोटे से भी छोटा बनो।)

देह, इन्द्रिया और मन से अपनेको और उसी तरह दूसरो को भी अलग देखने की बात सतत अभ्यास के द्वारा ही सधनेवाली है। यह अभ्यास जागृत रहकर प्रतिक्षण करना पडता है। बहुत बडे पुरुषार्थ का यह काम है।

परिचित लोगो के सम्बन्ध मे मनुष्यो की कुछ भावनाए, धारणाए बन जाती है। उनको निकाल देना मनुष्य के लिए बहुत ही कठिन होता है। पर मुझे यह जरूर सधा है। उसके लिए मेरी एक सरल युक्ति है। मै ऐसी धारणाए बनाता ही नही हू। प्रतिपल मनुष्य नया-नया ही होता है, यह बात मेरे मन मे जम गई है। तुझे यह सध जाय।

विनोबा के आशीर्वाद

: ४९

अज्ञात सचार (पजाब),
१५-३-६०

अनसूया,

राधाकिसन की मां बहुत दिनो से बीमार है और तकलीफ मे भी शाति रख रही है, ऐसा लोगो ने मुझे कहा। उससे खुशी हुई। आत्मा अखड है। अनेक देह आते-जाते है। देह मे बचपन, जवानी, बुढापा और उसमे अनेक सुख और अनेक दु ख, यह सब चक्कर चलता ही रहता है। उसमे जो ईश्वर पर श्रद्धा रखकर चित्त को शात रखता है, वह भक्त ईश्वर का प्यारा होता है। तुम माजी की सेवा मे रही हो, यह तुम्हारा भाग्य है। मेरी शुभकामनाए माजी को सुनाओगी।

(हिन्दी मे) विनोबा के आशीर्वाद

५. कमलनयन बजाज के नाम

५०

नालवाडी (वर्धा), २६-२-३८

कमलनयन,

२६ जनवरी का पत्र मिला। शिक्षण के बारे मे जो विचार व्यक्त किया, यह ठीक किया। शिक्षण मे उद्योग का केवल उद्योग की दृष्टि से स्थान नही है। परन्तु वह सारे शिक्षण का द्वार है, यह समझना चाहिए। उद्योग से जो समस्याए पैदा होती है, उनके हल के लिए कुछ समय उसकी उपपत्ति के लिए देना आवश्यक हो तो देना चाहिए।

मुझे लगता है कि तुमने मुझे जो पत्र लिखा, उसके बाद तुम्हे मेरा पत्र मिला होगा। किसी भी एक स्कूल की पहली कक्षा से लगाकर मैट्रिक तक की अग्रेजी की सभी पाठ्य-पुस्तके (गद्य और पद्य दोनो ही) मुझे चाहिए—प्राइमरी वर्ग से मैट्रिक के अत तक की व्याकरण आदि की पुस्तको को छोड-कर। पहले मैने सिर्फ जानकारी मगवाई थी। लेकिन समय ज्यादा हो गया है, इसलिए अब जानकारी नही, बल्कि पुस्तके ही भेज दो तो ठीक रहे।[1]

विनोबा

५१

१९५२

कमलनयन,

तुम्हारा चिन्तन[2] अच्छा लगा। त्रिगुण के विषय मे अनेक प्रकार से विचार किया गया है और किया जा सकता है। तमोगुण से नीचे की

---

[1]. श्री कमलनयन बजाज के नाम लिखे विनोबाजी के सारे पत्र हिन्दी में हैं।—सं०

[2]. गीता-प्रवचन के दूसरे अध्याय में रजोगुण और तमोगुण की तुलना की गई है। उसे पढकर श्री कमलनयन ने अपनी निम्नलिखित शका विनोबा-जी को लिख भेजी थी। उपरोक्त पत्र उसीका समाधान करने के लिए लिखा गया था—

अथवा सत्वगुण से ऊपर की वृत्ति की कल्पना नही की जाती। सारे जगत् का विभाग तीन गुणो मे करना है। तीनो गुणो से अलिप्त एक अवस्था है। उमे गुणातीत पुरुष की भूमिका समझना चाहिए। उसमे किसी प्रकार की वृत्ति नही रहती, अत उसे निवृत्ति कहते है, परन्तु निवृत्ति का अर्थ प्रवृत्ति-विरोध नही। प्रवृत्ति-विरोध भी एक वृत्ति ही है, उसे तमोगुण कहना चाहिए।

इतने प्रास्ताविक कथन के बाद अब मूल प्रश्न लो। तत्वत त्रिगुण प्रकृति के घटक है। प्रकृति मे तीनो की आवश्यकता एक समान ही है। स्थिति, प्रकाश और गति, तीनो मिलकर जीवन बनता है। यह तात्विक दृष्टि है। इसमे ऊपर या नीचे का कोई भेद नही है।

इससे भिन्न नैतिक दृष्टि है। इस दृष्टि से तम, रज, सत्व ये उत्तरोत्तर श्रेष्ठ गुण है। सामान्यत लोग इस दृष्टि से विचार करते है।

"गीता-प्रवचन के दूसरे अध्याय में कर्म करनेवालो की दुहेरी वृत्ति बताते हुए रजोगुण और तमोगुण की समता आपने कही है। 'लूंगा तो फल-समेत ही', यह रजोगुण की वृत्ति बताई। और 'छोडूंगा तो कर्म-समेत ही', यह तमोगुण की वृत्ति बताई है। दोनो वृत्तियो में फर्क नहीं है, यह भी आप कहते है। मेरे विचार से दोनो वृत्तियो का समावेश रजोगुण में ही हो जाता है। १, ३, ९ के हिसाब से तमोगुण, रजोगुण और सत्वगुण एक-दूसरे से दूर है। रजोगुण और तमोगुण एक ही वृत्ति के भावात्मक और अभावात्मक (पाजिटिव और नेगेटिव) स्वरूप नहीं है। कर्म करके फल को छोडना सत्वगुण है। 'लूंगा तो फल समेत ही' और 'छोडूंगा तो कर्म-समेत ही' ये दोनो वृत्तिया रजोगुण में ही खपनी चाहिए। 'केवल फल लूंगा, पर कर्म नहीं करूंगा', यह वृत्ति तमोगुण में जायगी। इससे भी एक भिन्न लापरवाही की वृत्ति हो सकती है। कर्म किया तो किया, अथवा हुआ तो हुआ। फल की अपेक्षा, परवाह, आवश्यकता, मोह आदि नहीं होता। उलटा, फल आया, लिया तो लिया। कर्म की जरूरत, जवाबदारी नहीं मालूम होगी। यह वृत्ति मन की स्थिति के अनसार कदाचित् तीनो गुणो में हो सकती है। ज्ञान-शून्य स्थिति में यह वृत्ति तमोगुण से भी नीचे की होगी और ध्यानमग्न स्थिति में सात्विक वृत्ति से भी ऊपर को निकलेगी।"

सृष्टि-तत्व को समझानेवाली प्राकृतिक अथवा तात्विक और दूसरी नैतिक, इन दोनो से भिन्न एक तीसरी साधना की दृष्टि है । तदनुसार रज और तम एक-दूसरे के प्रतिक्रियारूप अथवा परीक्षणरूप अथवा पूरक है । दोनो मिलकर एक ही वस्तु है । रजोगुण की थकावट से तमोगुण आता है, तमोगुण की थकावट से रजोगुण आता है, दोनो से सत्वगुण भिन्न है और वही साधको का सखा है । रजोगुण और तमोगुण मिलकर आसुरी सम्पत्ति, सत्वगुण, दैवी सम्पत्ति—ऐसा सघर्ष चल रहा है ।

गीता मे प्राकृतिक, नैतिक और साधनिक, तीनो प्रकार का विवेचन मिलता है । मै प्राकृतिक विचार को छोडकर नैतिक और साधनिक दृष्टि से मुख्यत विचार करता रहता हू । कभी नैतिक, कभी साधनिक । जिस विवेचन के सम्बन्ध मे शका उत्पन्न हुई है, उसमे साधनिक दृष्टि है, इसलिए रजोगुण और तमोगुण की एकत्र कल्पना की गई है ।

फलत्याग के विचार की अधिक छानबीन 'स्थितप्रज्ञ-दर्शन'[1] और 'गीताई-कोष'[2] मे की गई है ।

विनोबा

५२

७-१०-५८

कमलनयन,

१-१०-५८ का पत्र मिला । उसके साथ मित्रो के लिए भेजने का मसविदा भी देखा । जिस दृष्टि से तुम देखते हो वह उचित ही है । मसविदा भी ठीक है । मै तुम्हारे उत्साह को कम नही करना चाहता, क्योकि उसमे मुझे कुछ भगवान की प्रेरणा-सी मालूम हो रही है ।

विनोबा का जयजगत्

---

[1]. 'सस्ता साहित्य मंडल' से प्रकाशित विनोबा की पुस्तक । मराठी में 'ग्राम सेवा मडल', वर्धा से प्राप्य ।

[2]. 'ग्राम सेवा मंडल', वर्धा से प्रकाशित व प्राप्य ।

६. श्रीमन्नारायण के नाम

५३

आटा, (लखनऊ), २०-५-५२

श्रीमन्,

पत्र मिला। पाटिल ने जो चर्चा उठाई, उससे हमारे काम को लाभ ही हुआ है। कई जगह लोगो ने उसके बारे मे मुझसे पूछा और मुझे सब समझाने का मौका मिला। पाटिल को कुछ लोगो ने भूमिदान-यज्ञ के विरुद्ध मान लिया, यह तो बिल्कुल ही गलतफहमी थी। जो शख्स अपना बहुत-कुछ पहले ही दे चुका, उसके बारे मे ऐसी आशका करने को स्थान ही नही। लेकिन वितरण के बारे में जो शकाए उन्होने पेश की है, उसके पीछे भी, जहातक मै समझता हू, उनकी जिज्ञासा और शोधन की वृत्ति है। आपने जो जवाब दिया है, वह ठीक ही है।

लेकिन पाटिल को बिना किसी शाब्दिक चर्चा के समाधान-कारक जवाब मिल जाता, अगर वह मेरे साथ प्रवास मे कुछ दिन घूम लेते। पाच एकड तो, खैर, हम देने का सोचते है, लेकिन उत्तर प्रदेश के कई जिलो मे पाच मनुष्य के एक परिवार के लिए मागनेवाला पाच बीघा ही पर्याप्त समझता है। और दूसरे परिवार, जो बीसो बरस से खेती पर आजीविका चला रहे है, ऐसे है जिनके पास पाच एकड भी जमीन नही है। यह सारी स्थिति देखने पर मनुष्य सहज ही एक दूसरे ढग से सोचने लगता है।

अभी परसो मेरे हाथ से वितरण हुआ। लोगो का आग्रह था कि वितरण का एक नमूना मै पेश करू। उसका जिक्र तो मै अभी यहा नही करता, बल्कि वह सारा दृश्य देवो के देखने लायक था। जो जमीने दी गई वे सारी मै खुद देखकर आया। लेनेवाले, देनेवाले और देखनेवाले, इतने खुश हुए कि कई लोग आनद के अश्रु रोक नही सके। लेनेवालो ने हमे विश्वास दिलाया कि हम ठीक काश्त करेगे, और हमारे सारे नियमो का पालन करेगे। 'प्रत्यक्षे सति किं अनुमानम् ?' हाथ कगन को आरसी क्या ?

ससद मे जो लोग पहुचे है, उनमे कई भाई ऐसे है, जो कि बहुत सद्भावना

रखते है। विकेद्रित अर्थ-व्यवस्था और ग्रामोद्योगो पर भरोसा रखते है और अहिसक रचना को दिल से चाहते है। वे वहुत-कुछ कर नही पाते, क्योकि उनका परस्पर सम्मिलन कम होता है। और ससद का कुछ ढाचा भी ऐसा होता है कि जिससे कुछ अमली काम वनना कठिन हो जाता है। कई तो वोल भी नही पाते। लेकिन मै मानता हू कि कोई 'उभयान्वयी' मिल जाय तो परस्पर सम्मेलन से वहुत-कुछ वन सकता है।

अपना ग्रुप या पार्टी वना लेना तो गलत तरीका है। लेकिन जैसे शक्कर सारे दूध को ही मीठा वना लेती है, प्रेम-सम्मेलन और विचार-सम्मेलन से सारी ससद का ही स्वाद मीठा किया जा सकता है। यह काम करनेवाले की कुशलता होगी, जिसे भगवान् ने 'योग' नाम दिया है। मै उम्मीद करता हू कि वह योग आपको सधेगा।[1]

विनोवा

५४

माझी, (पटना) ७-१०-५२

श्रीमन्

तुम्हारा पत्र मिला। लेख पढा। अच्छा लगा। पच्चीस एकड की हद तुमने सोची, यह वहुत ठीक किया। आजकल वहुत-से लोग पचास एकड की बात करते है। मुझे वह निकम्मी मालूम होती है। परिस्थिति से इसका कोई ताल्लुक नही है।

छोटे-वडे टुकडो का वाद भी ऐसे लोग ही उठाते है, जिन्हे देहाती जीवन का अनुभव नही है। जिनके पास बहुत ज्यादा जमीने है, ऐसे देशो की मिसाले हमारे किस काम की ? मै तो ऐसे वाद मे पडता ही नही। जो लोग कल्पना-सृष्टि मे विहार करना चाहते है, वे ययेच्छ विहार कर ले। ऐसी कवि-कल्पना राष्ट्रीय योजना मे दाखिल न हो तो बस है। काग्रेस-वालो के लिए निकाला हुआ सरक्यूलर पढा। अच्छा है। लेकिन वहुत-से वजनदार काग्रेसियो का घोडा कही अडा है, यह ध्यान मे लेकर वैसा आदेश उन्हे मिलना चाहिए। वात यह है कि इन लोगो के खुद के पास काफी

[1]. श्री श्रीमन्नारायणजी के नाम लिखे विनोवाजी के पत्र हिन्दी में है।—स०

माया होती है। और उस गठरी को वे छोड नही सकते, न ढीली कर सकते है। इसलिए एक पत्रक दूसरे पत्रक को जन्म देता है, पर प्राप्ति होती नही है। यह विहार मे देख रहा हू, यू पी मे भी देखा। विहार मे तो अब मैं उसीपर प्रहार कर रहा हू। कुछ समझ भी रहे है। छठा हिस्सा माग रहा हू। जो खुद नही देता वह दूसरो से क्या दिलायेगा? फिर भी उस पत्रक से कुछ तो गति मिलेगी।

असल मे होना तो यह चाहिए कि हमारी समितियो को मदद करने के लिए काग्रेस की ओर से उन-उन स्थानो मे काग्रेस-कमेटियो को कोटा निश्चित करके काम मे लगना चाहिए तो शायद कुछ रफ्तार बढे।

गाव-गाव घूमता हू तो काग्रेसवालो से और दूसरे पक्षवालो से भी काफी निकट सबध आता है। नजदीक से देखने का मौका मिलता है। चवन्नी मेंबरशिप मे अब क्या सार रहा है, यह ध्यान मे नही आता है। एक मनुष्य सौ रुपया देता है, चारसौ मनुष्य के दस्तखत ले लेता है और अपनी पोजीशन मजबूत कर लेता है। यह सब 'ओपन सीक्रेट' है। त्याग का कुछ कार्यक्रम सामने रखे वगैर, जिसमे मेंबरो की कुछ कसौटी हो, शुद्धि कैसे होगी?

यह सब मेरे लिए अगम्य विषय हो गया है। खैर, यह तो सहज लिख दिया। तुम उसमे पडे हो। देखो, जो भी हो सकता है।

मैं तो किश्ती जला चुका हू और इसलिए निश्चिंत होकर काम करता जाता हू। सफलता हुई तो वह भगवान को समर्पण करूगा, निष्फलता हुई तो वह भी उसीको समर्पण होगी।

किशोरलालभाई जमनालालजी की समाधि के पास पहुच चुके। उस पार अब अच्छा सत्सग चलता होगा। हमे तो अभी अपना काम करना है।

शरीर का स्वास्थ्य ऊपर-नीचे हुआ करता है। फिर भी शरीर इतना काम दे रहा है, यही उसका उपकार है।

बीच-बीच मे, जहा प्रविष्ट हुए हो वहाका,[1] अनुभव लिखा करो तो मेरा चितन एकागी नही होगा।

विनोबा की शुभेच्छा

---

१. लोकसभा की सदस्यता से आशय है।—स०

५५

चाडिल (बिहार),
३०-१-५३

श्रीमन्,

तुम्हारा २६ जनवरी का पत्र मिला। आज बापू का प्रयाण-दिन है। हृदय भावना से भरा है।

पडितजी इन दिनो ग्रामोद्योगो पर ज़ोर देते है, यह खुशी की बात है। पर सस्कृत मे कहावत है, भूखा व्याकरण नही खा सकता और प्यासा काव्यरस नही पी सकता। पिछले पाच सालो से ग्रामोद्योग बहुत जोरो से न सिर्फ टूट रहे है, बल्कि तोडे जा रहे है। मै अपनी आखो से देख रहा हू और हर महीने दो-चार जगह से ऐसे पत्र आते ही रहते है। अभी एक पत्र उसी रोज मिला, जिस रोज तुम्हारा मिला। वह तुम्हे देखने के लिए भेज रहा हू।

मेरा स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधर रहा है। बच्चो को और उनकी माता को आशीर्वाद।

विनोबा की शुभेच्छा

५६

चाडिल, १७-२-५३

श्रीमन्,

सर्वोदय-सम्मेलन मे अगर उपस्थित रह सकते तो अच्छा होता। साल भर मे एक दफा परस्पर विचार-विनिमय के लिए एकत्र होते है, उसमे हाजिर न हो सकना एक सजा ही है।

विनोबा

५७

गया, १३-४-५३

श्रीमन्,

२८ मार्च का पत्र मिला। तार नही मिला है। ससदवालो के भूदान-सम्मेलन का सारे देश पर अच्छा असर पडा है। मै आशा करता हू कि उससे काम को कुछ गति मिलेगी।

इधर विहार के लोग जाग रहे है। चाडिल-सम्मेलन के वाद दो जिले समाप्त करके, अब मैं गया जिले मे प्रवेश कर रहा हू। विहार का पहली किस्त का कोटा चार लाख एकड का माना था, वह पूरा हो गया है और अव दूसरी किस्त चल रही है। २-३ मई को विहार के कार्यकर्ताओ का एक सम्मेलन गया मे रक्खा है। उसके वाद विहार-भर मे कार्यकर्त्ता लोग काम मे जुट जायगे, ऐसी आशा की जाती है।

ससद के सदस्य दिल खोलकर समय देगे तो अपनी जगहो मे वे वहुत-कुछ कर सकते है। मतदाताओ के पास पहुचने का यह एक वहुत अच्छा साधन होगा। यह उनका कर्त्तव्य भी गिना जायगा।

स्वास्थ्य ठीक है। आठ-दस मील चलने का रक्खा है। अक्सर साढे सात वजे के करीब पडाव पर पहुच जाते है।

विनोबा की शुभेच्छा

५८

गया, १४-७-५३

श्रीमन्‌जी,

ता ५ जुलाई का पत्र मिला। पुस्तिका भी मिली है। हा, तुमसे जो बन सकता है कर रहे हो, यह मै देखता हू। कुल मिलाकर देश मे सुस्ती वहुत है। वैमनस्य भी काफी है। विहार मे काम बहुत अधिक होता, अगर ये दो दुर्गुण नही होते। लेकिन दुर्गुणो के रहते, उनका मुकावला करने मे जो मजा आता है वह फिर न आता।

आगरे का हाल वैसे अखवार मे तो पढा, पर वहा के कुल वातावरण के वारे मे जानने की इच्छा है। कभी फुरसत से लिखो।

विनोवा

५९

गया १३-१०-५३

श्रीमन्‌जी,

८-१०-५३ का पत्र मिला। हा, उस विल के वारे मे नाहक चर्चा चली। लेकिन जिम्मेदारी उद्‌गम स्थान पर ही आती है। पर इसके वारे मे अव सोचने की जरूरत नही है। वह तो पुरानी वात हो गई।

इधर डे साहब मिल गये। हमारा सहयोग कैसे मिल सकता है, इस बारे में वह पूछते थे। मैंने कहा कि जितने कम्युनिटी प्रोजेक्ट है, उन सबमे गाव के कच्चे माल का गाव मे ही पक्का माल बनाने की योजना उसूल के तौर पर मानी जानी चाहिए। इधर कम्युनिटी प्रोजेक्ट अपने ढग से काम करते जाय। उधर 'खादी ग्रामोद्योग बोर्ड' भी काम करता रहे। इसमे सार नही देखता हू। दोनो कामो का जोड होना चाहिए। तभी बेकारी हटेगी।

विनोबा

• ६०

पटना, २८-१०-५३

श्रीमन्,

२० अक्तूबर के पत्र का जवाब दे रहा हू। काग्रेस की शुद्धि के लिए भगीरथ प्रयत्न करना होगा। निराशा का तो कोई सवाल नही है, लेकिन अल्प सतोप से भी काम नही चलेगा। मर्ज काफी गहरा जा चुका है। लेबर फ्रेंचाइज एक उपाय हो सकता है। काग्रेस के काम के लिए पैसा ही चाहिए तो डोनेशन से भी मिल सकता है। लेकिन मतदान का अधिकार श्रमिक को ही होना चाहिए। आज की चवन्नी पुराने एक आने की भी कीमत मुश्किल से रखती है। वह चवन्नी भी अपनी ही कमाई की होनी चाहिए, ऐसा निर्देश शायद न काग्रेस विधान मे किया होगा, न वह व्यावहारिक भी होगा।

जबतक कोई ऐसा कार्यक्रम नही दिया जायगा, जिसमे काग्रेसवालो को कुछ त्याग करना पडे, और लोगो के पास सतत पहुचना पडे, तबतक शुद्धि की आशा मृगजल ही साबित होगी। आजकल 'शुद्धि' शब्द को भी लोग टालते है। 'मजबूत' बनाने की भाषा लोग बोलते है। मजबूत तो राक्षस भी होता हे। शुद्धि के बिना सच्ची कल्याणकारी शक्ति नही हो सकती, इस बात का ख्याल लोगो में आना चाहिए। मै मानता हू कि इस दिशा मे भूदान-यज्ञ का कुछ उपयोग हो सकता है।

बिहार मे मैं गहरे जाने की कोशिश कर रहा हू। सबका सहयोग हासिल होगा तो काम बनेगा। वैसे मेरी बात सबकी समझ मे तो आती है। बिहार का काम पूरा करके ही आगे बढना, यह तो मैंने तय कर ही लिया

है, इसलिए मैं निश्चिन्त हू ।

प्लानिंग कमीशन गोलमोल बाते बहुत करता है। पाच साल के अन्त मे बाहर से अनाज नही मगाना पडेगा, ऐसी भी आशा दिखलाता है । लेकिन वैसी प्रतिज्ञा करने से हिचकिचाता है । मुझे यह दृश्य देखकर बहुत दया आती है । निश्चय-विहीन योजना याने 'बहुत करके आपको पैसा मिलेगा' ऐसा आश्वासन देनेवाला प्रोमेसरी नोट । क्या उस तरह का प्रोमेसरी नोट कुछ कीमत रखेगा ? जनता की सारी इच्छा-शक्ति किसी काम मे लगाने के लिए दृढ सकल्प की जरूरत रहती है ।

तुम अभी ठीक जगह पहुच गये हो । नम्रता और निश्चय, ये दो पख साबित रक्खो तो ठीक उडान ले सकोगे । सब तरह की जानकारी मुझे देते रहो, तो मुझे कुछ सूझा करेगा ।

एक विचार सहज सूझा है । उस दिन पडितजी ने प्रादेशिक भाषा के लिए नागरी लिपि की सिफारिश की थी । मै तो वरसो से यह कह रहा हू और अनुभव ने ही मुझे यह बात सिखाई है । हिन्दुस्तान की बहुत-सी भाषाए सीखने मे अलग-अलग लिपियो के कारण मै जो-कुछ भुगत चुका हू वह दूसरो को भुगतना न पडे यह मै चाहता हू। इसका आरम्भ, मेरा खयाल है, हैदराबाद यूनिवर्सिटी सुलभता से कर सकती है। हैदराबाद स्टेट मे हिन्दी, उर्दू के अलावा मराठी, तेलगू, कन्नड ये तीन प्रादेशिक भाषाए चलती है । अगर इन तीनो की पाठ्य-पुस्तके नागरी-लिपि मे यूनिवर्सिटी की तरफ से प्रकाशित हो तो उसका शीघ्र प्रचार हो सकता है । स्टेट के भिन्न-भिन्न लोगो का परस्पर सम्बन्ध बढाने मे इसका बहुत उपयोग हो सकता है । आज तो वहा सेपरेटिस्ट टेडेसी जोर कर रही है । देखो, पडितजी को यह बात कैसे जचती है ।

विनोबा की शुभेच्छा

· ६१ ·

पटना, १७-११-५३

श्रीमन्‌जी,

ता ११-११ का पत्र मिला। 'हरिजन' के बारे मे लिखते हुए, आखिर आपने लिखा है कि 'यह तो हम कभी भी नही चाहेगे कि यह पत्र बद करना

पडे ।' मैं इससे सहमत नही हू । सस्थाए किसी तरह चालू रहे, ऐसा मैं नही मानता। तिलक महाराज के वाद 'केसरी' ३३ साल से चल रहा है। 'उनकी नीति पर वह चल रहा है', ऐसा सचालको का दावा है। लेकिन थोडा फरक होते-होते आज वह पूरा प्रतिक्रियावादी पत्र वना है। सस्थाओ का लोभ हमे छोडना ही होगा। शरीर से वढकर सुन्दर सस्था हो ही नही सकती, और वह भी हमे छोडनी ही पडती है ।

अलावा इसके मुझे आज लिखने की अत प्रेरणा नही हो रही है । ऐसे ही बाहर के उपयोग के लिए मैं लिखा करू, यह मुझसे बननेवाली वात नही है ।

इसके सिवा भूदान-यज्ञ का जहातक ताल्लुक है, प्रान्त-प्रान्त मे अखबार निकल रहे हैं। विहार मे तो कोशिश यह है कि हर गाव मे 'भदान-यज्ञ-विहार' पहुचे। अभी उसकी दस हजार प्रतिया निकल रही है और उसका प्रचार बढता ही रहेगा। उस हालत मे 'हरिजन' का वहुत ज्यादा उपयोग उस काम के लिए मैं नही देखता ।

और मान लीजिये कि मुझे स्वतन्त्र कुछ लिखने की प्रेरणा हो जाय तो यह समझने की जरूरत है कि मैं वैसा 'इन्नोसेंट' (भोला) नही हू, जैसा कि शायद कुछ लोगो ने मान लिया है। मेरे अपने विचार है। मुझे विश्वास नही कि वे हमारे सचालक भाइयो को हजम हो ही सकेगे। 'दूरत पर्वता रम्या' कहावत है ही कि पर्वत दूर से सुहावने दीखते है।

विनोबा

६२

पटना, २४-१२-५३

श्रीमन्,

देश मे अनेक विचार-प्रवाह काम कर रहे है। और चूकि मैं जनता के सीधे सम्पर्क मे रहता हू, उनका वारीकी से निरीक्षण करने का मौका मिलता रहता है। इसका परिणाम, जहातक मेरा ताल्लुक है, यह हो रहा है कि मैं बहुत अधिक तटस्थ वन रहा हू और समन्वय का सतत भान रहता है।

कभी मिलना होगा तो बहुत-कुछ सुनूगा, और समझने की कोशिश करूगा ।

'गाधी-ज्ञान-मन्दिर' के उद्घाटन समारभ के लिए सदेश[1] भेज दिया है ।

विनोबा

६३ ·

१४-३-५४

श्रीमन्नारायण,

आखिर पडितजी को मैंने निमन्त्रण लिख दिया । वह पत्र अब तुमको मिला ही होगा । इन दिनो जितना मेरा अर्थशास्त्रीय चितन चलता है उतना ही राजनैतिक चितन भी चलता है । वैसे मेरा स्वभाव मूल मे धर्म-चितन का है । पर बिना आर्थिक समता के धर्म टिक ही नही सकता, इस-लिए अर्थशास्त्र का चितन करने की भी आदत पड गई । अब यह देख रहा

---

[1] यह संदेश निम्न प्रकार है—

"वर्धा के 'गाधी-ज्ञान-मन्दिर' का उद्घाटन पंडितजी के कर-कमलो से होने जा रहा है, यह बहुत खुशी की बात है ।

"यह 'गांधी-ज्ञान' क्या चीज है, जरा समझने की जरूरत है । अपने देश में आत्म-ज्ञान का उदय प्राचीन काल में ही हुआ था और उसकी परम्परा आजतक यहां अखडित चली आ रही है । विज्ञान का भी उदय अपने यहां हुआ था । पर उसकी परम्परा अखडित नहीं चली और आधु-निक जमाने में विज्ञान का विकास पश्चिम में हुआ । आत्म-ज्ञान और विज्ञान के सयोग से सामूहिक अहिंसा का जन्म हुआ है । उसीको 'गाधी-ज्ञान' कहते है । मेरा दृढ विश्वास है कि उसीसे दुनिया का भला होनेवाला है । इतना ही नहीं, उससे हम इस दुनिया में स्वर्ग ला सकते है । जैसे हाइड्रोजन और आक्सीजन मिलकर पानी बनता है, वैसे ही आत्म-ज्ञान और विज्ञान मिलकर सर्वोदय या साम्य-योग बनता है ।"

"मैं आशा करता हूं कि 'गांधी-ज्ञान-मंदिर' इस तरह के समग्र जीवन का केंद्र साबित होगा और पडितजी को जो तकलीफ दी जा रही है, उसकी सार्थकता होगी ।"

हू कि पश्चिम से आये हुए चुनाव के तरीके, अगर हमने वैसे-के-वैसे अपनाये, तो देश की दरिद्रता पर जो जुट करके सामूहिक हमला होना चाहिए, वह नही हो सकेगा। इसलिए राजनीति-शास्त्र का चिंतन भी जोड दिया है। कांग्रेस, प्रजा-समाजवादी और रचनात्मक कार्यकर्ता जिस तरीके से नजदीक आ सकेंगे वह तरीका हमे ढूढना होगा। उसके लिए राजनीति के विधि (कनवेन्शन) जो माने गये, वे तोडने पडेंगे।

यह मेरा निरीक्षण है, परिस्थिति भी बलात् हमे उस तरफ मोडेगी।

पडितजी ने तुमको कांग्रेस-सेक्रेटरी के काम के लिए बुलाया तो मैंने भी अपनी सम्मति दी। इसमे भी ईश्वर की कोई योजना दीखती है। पडितजी का बुलाना भी अचानक ओर मेरा समति देना भी मेरी हमेशा की वृत्ति से कुछ भिन्न बात थी। सर्वोदय पर विश्वास रखनेवाला कोई मेरा साथी किसी एक राजनैतिक पक्ष मे फस जाय, चाहे वह पक्ष कितना ही बडा हो, अक्सर मैं पसन्द नही करता। लेकिन तुमको बिल्कुल सहज भाव से समति दी, मुझे कुछ सोचना भी नही पडा। सहज ही लगा कि ईश्वर कुछ पुल बनाने की योजना कर रहा है।

तुम्हारे जिस गुण ने मुझे खीचा है, वह है तुम्हारी शात प्रकृति। जवानी मे जो शांति रख सकता है, वह वृद्धावस्था मे भी उत्साहहीन नही होगा। परमेश्वर तुम्हारा यह गुण बढावे, यही मेरी कामना है। इस गुण का भेदो को मिटाने मे उपयोग होगा।

विनोबा की शुभेच्छा

६४

चौमार (गया), २६-३-५४

श्रीमन्नारायण,

पत्र मिला। मैं भी चाहता हू कि सम्मेलन मे मिलना-जुलना व परस्पर चर्चा अधिक रहे, व्याख्यानो की भरमार न रहे। १८ ता का प्रोग्राम जो वल्लभस्वामी ने तुम्हारे पास लिख भेजा है, वह आखिरी नही है। आखिरी तो तुम्हारे आने पर सबकी राय से ही तय होगा।

पडितजी को बुलाने मे मुझे बहुत झिझक रही। अब उसका ठीक उपयोग कर लेना आप लोगो पर निर्भर है। मुझे सुनना जितना उत्तम सधता

है, उतना वोलना नही सधता। और जितना वोलना सधता हूँ वह आम सभा मे। व्यक्तिगत चर्चा मे श्रवण-भक्ति का मुझे वहुत अभ्यास है। लेकिन मैंने इतना देखा कि पडितजी कीर्तन-भक्ति कर लेते हैं। दोनो श्रवण-भक्तिवाले होते तो कठिन ही काम था।

विनोबा की शुभेच्छा

६५

मोहनीया, (गया) १८-५-५४

श्रीमन्,

९ मई का पत्र मिला। प्रादेशिक काग्रेस कमिटियो के अध्यक्षो के भूदान मे समय देने आदि की खबरे अखवारो मे पढी थी।

वर्किंग कमेटी मे आर्थिक प्रश्नो की चर्चा होगी, यह अच्छा है। जिस तरह शिक्षण-माध्यम के विपय मे वर्किग कमेटी ने सर्वांग परिपूर्ण व्यवस्था दी वैसी व्यवस्था अगर ग्रामोद्योगो के क्षेत्र के विषय मे वह दे सकी तो कितना अच्छा होगा। लेकिन नेताओ के दिमाग इस विषय पर साफ है, ऐसा अभीतक मुझे आभास नही हुआ है। फिर भी मैंने आशा नही छोडी है। परिस्थिति भी अपना काम कर रही है।

स्वास्थ्य ठीक है। लोगो की तरफ से सद्भावना की कोई कमी नही है। जीवन-दान की प्रेरणा कुछ काम कर रही है।

वोध गया थाने मे सेवाकार्य तो शुरू कर दिया है। समन्वयाश्रम मे फिलहाल दामोदर है।

विनोबा

६६

रेवासी, ९-९-५४

श्रीमन्,

तुम्हारी और मेरी मानसिक मुलाकात दरभगा जिले के जल-विप्लुत प्रदेश मे हो गई। यह पत्र एक विशेष काम के लिए लिख रहा हू। जब मै काशी था तब गोपाल शास्त्री नेने नाम के एक वैदिक विद्वान मुझसे मिले थे। वह वहा अखिल भारतीय वैदिक आश्रम चला रहे है। उन्होंने ता ५-९-५२ को एक लिखित प्रस्ताव वहा के वैदिक ब्राह्मणो की ओर से मुझे भेजा था, जिसमे वेदविद्या की रक्षा के लिए

वैदिको की आजीविका के वास्ते भूमि की माग की थी। मैंने वह मजूर की थी, बशर्ते कि वैदिक लोग अपने हाथ से खेती करना मजूर करे। वह शर्त उन्होने मानी थी। करणभाई को मैंने कह भी दिया।

वाद में नेनेजी मुझसे कई दफा मिले और वेद-रक्षा के बारे मे उनसे चर्चा भी हुई। उनके कथनानुसार सपूर्ण भारत मे आज सिर्फ १५०० वैदिक रह गये होगे, जिन्हे वेद मुखस्थ होगा। इस विद्या का उत्तरोत्तर ह्रास हो रहा है, और कुछ वर्षो मे शायद मुश्किल से कोई ठीक स्वरयुक्त वेद-पठन करनेवाला मिले, ऐसा भी हो सकता है।

तुम शायद जानते हो कि वैदिक सहिता की रक्षा के लिए भारत मे प्राचीन काल से सतत प्रयत्न होता रहा है, जिसके परिणाम-स्वरूप आज वेद मे कही पाठभेद नही मिलता, जबकि तुलसी-रामायण जैसे अर्वाचीन ग्रथो मे भी पचासो पाठभेद होते है। इतनी मेहनत से रक्षित की गई वस्तु, याने उसका स्वर-युक्त पठन हम खो न बैठे। उसकी चिता करना हमारा कर्तव्य हो जाता है। तो मैंने सुझाया था कि आज के जमाने मे इसका उपाय, वेदो का पूर्ण रेकार्ड करने से हो सकेगा। यह सूचना नेनेजी को जची।

वेदो मे कुल मिलाकर २० हजार मत्र होगे। बोलनेवाला शान्ति के साथ बोलेगा तो मेरा ख्याल है २०० मत्र घटे भर मे हो जायगे। उस हिसाब से १०० घटो का वह रेकार्ड होगा। उसका क्या खर्च होगा, इसका मुझे कोई अदाज नही है। पर जो भी होगा, कर लेना कर्त्तव्य है, ऐसा मै समझता हू। श्री केसकर से और दूसरे भी सबधित व्यक्तियो से यथासमय बात कर लो। श्री नेनेजी का पता नीचे दिया है।

विनोबा की शुभेच्छा

गोपाल शास्त्री नेने,
सचालक, अ० भा० वैदिकाश्रम,
राज मदिर, बनारस–१

• ६७

परसोनी (दरभगा), २०-९-५४

श्रीमन्,

बाढ-रिपोर्ट, पचायत-रिपोर्ट और पत्र मिले है। बाढ मुझे उतनी

भयंकर आपत्ति मालूम नही हुई, जितनी ग्रामोद्योगो के छिन जाने के कारण ऐसे मौको पर जनता की पूरी बेकारी। ग्रामोद्योगो के विनाश का सिलसिला हर दिन जारी है। बावजूद पचवार्षिको के।

विनोबा

६८

थोरिया साही, कटक, ५-६-५५

श्रीमन्,

२३ और २५ मई के पत्र मिले। फ्रेंच कविता तुम्हारी सूचनानुसार भेज रहा हू। कविता की रचना पर मै अभिप्राय तो क्या दू? मेरे फ्रेंच-ज्ञान की परीक्षा उससे हुई। अग्रेजी अनुवाद के आधार से अर्थ समझ सका।

'फ्रीडम फर्स्ट' वाला लेख मेरे पास भी आ पहुचा था। मैंने उसको कोई महत्व नही दिया था। हमारी यात्रा यथापूर्व चल रही है। चित्त उत्तरोत्तर अतर्मुख हो रहा है। पद-यात्राओ से चित्त की चितन-शक्ति बढती ही है। विचारो के नये-नये क्षितिज दीख पडते है। किसी प्रकार के क्लेश का लेश-मात्र अनुभव नही होता।

ब्रह्मपुर के बाद बाह्य आयोजन का मै विचार ही नही करता। आप लोगो के सामने जो कुछ कहना था, कह दिया। अब वह अध्याय समाप्त हो गया है।

विनोबा

६९

जगदलपुर (कोरापुट),
२९-८-५५

श्रीमन्जी,

ता १६ का आपका पत्र मिला। पहले के दोनो भी।

आपकी माताजी का स्वर्गवास जन्माष्टमी के दिन हुआ। जन्म-मरण की तिथियो का क्या महत्व हो सकता है? पर हमारे-जैसे भोले लोगो पर उसका भी कुछ असर होता है। मुझे एक ऐसे शख्स का उदाहरण

मालूम है, जो मृत्यु के नजदीक पहुच चुका था और जिसको डाक्टर का प्रमाण-पत्र भी मिला था और उसने दो दिन के बाद पूर्णिमा आनेवाली थी उसपर अपनी श्रद्धा रक्खी थी। उसीकी तीव्र भावना उसके मन मे रही होगी और उसी दिन वह गया।

काग्रेस-कमेटियो से भूदान-निश्चय आप लोग करा रहे है, इससे खुशी होती है। बडे निश्चयो के साथ तीव्र और सतत प्रयत्न भी रहे तो शोभन होगा, अन्यथा—

"बोलाचीच कढी बोलाचाच भात।
जेवोनीया तृप्त कोणा झाला।"[१] —तुकाराम

अभी हमारी यात्रा बहुत रमणीय, लेकिन विकट रास्तो से हो रही है। बीच का 'लेकिन' गलत है। उसकी जगह 'क्योकि' रख दो।

कल और परसो मिलकर २५ ग्रामदान सुनाये गए। घोर वर्षा मे दूर-दूर के गावो मे कार्यकर्त्ता अविश्रात घूम रहे है। जाहिर है, बाबा घूम रहा है, इसीलिए यह हो सकता है। फिर भी बाबा के लिए सब प्रकार की सुविधाए होती है, उनके लिए सब प्रकार की दुविधाए। ईश्वर जब एक चीज चाहता है तो अचेतन को भी वह चेतन बना लेता है। उसकी लीला अपार है। लेकिन लोगो को ईश्वर के अस्तित्व मे शका होती है। मुझे तो इस दुनिया के अस्तित्व मे ही शका होती है।

मदालसा इन दिनो मुझे पत्र न लिखकर बहुत लिख देती है। मुझे वह अच्छा लगता है।

'कोरा कागद काली स्याही।
लिखत पढत वाको पढवा दे॥
तू तो राम सुमर . "

आगे की बात हम नही बोलेगे। कबीर जो चाहे बोल सकता है।

विनोबा

---

[१] बोलने की कढ़ी और बोलने का ही भात खाकर कभी कोई तृप्त हुआ है?

७०

हैदराबाद, ४-२-५६

श्रीमन्,

२९-१ का पत्र मिला। उसके पहले का भी मिला था। अमृतसर मे बहुत-से रचनात्मक कार्यकर्त्ता मिल रहे है, यह बहुत खुशी की बात है। इस वक्त खास कुछ सुझाने की मन -स्थिति मे नही हू। राज्य-सीमा-समिति की रिपोर्ट के बाद जो बहुत सारी घटनाए, विघटनाए और दुर्घटनाए हुई उनसे मेरा हृदय बहुत व्यथित है। इस बीच आप लोगो से कुछ सम्पर्क रहता तो अच्छा होता, ऐसा लगा।

सरक्यूलर मे जो प्रोग्राम सुझाये है, उनमे विद्यार्थियो से पक्षातीत सम्पर्क यह एक विषय जोडा जा सकता है।

मदालसा के साथ हमारी यात्रा मे चद दिन तुम रहोगे, यह जानकर मुझे न सिर्फ खुशी हुई, बल्कि तसल्ली हुई।

डेसाहब मिले थे। इधर भूदान-यात्रा ठीक चल रही है। जो काम करते है, वे करते है, नही करते है वे नही करते है। इस सबकी मुझे चिन्ता नही होती। यह मैने ईश्वर पर सौंप दिया है। बहुत अच्छा होता, जिन बातो से मुझे अभी व्यथा हो रही है, अगर उनकी चिन्ता भी मै ईश्वर पर सौप सकता। मुझे कबूल करना चाहिए, यहा मेरी कुछ भक्ति कम पड रही है।

विनोबा की शुभेच्छा

७१

अज्ञात यात्रा (पजाब),
२१-२-६०

श्रीमन्जी,

पत्र मिला। याद दिलाने का काम आपको करना ही नही चाहिए। उनके[1] पीछे बहुत काम है। इधर मै अज्ञात-वास मे हू, यह भी मुश्किल है। लेकिन सबसे बडा कारण यह है कि मै उनसे अपनी सहूलियत के

[1] श्री जवाहरलाल नेहरू।

अनुसार मिला ही करता हू । यह मिलन एक दूसरे प्लेन पर होता है, पर 'फिजीकल प्लेन' से वह कम 'रीयल' नही है ।

विनोबा का जयजगत्

७२

जबलपुर, १७-११-६०

श्रीमन्‌जी,

पत्र मिला । मेरी सूचना के विषय मे तीन बाते स्मरणीय है ।

(१) रेलवेवालो को वे बहुत सारी चीजे देते थे । मैने सब नौकरो के लिए (बेसिक पे का एक हिस्सा) सिर्फ अनाज देने का प्रस्ताव रखा है ।

(२) उनका उद्देश्य डी ए मे से छुटकारा पाने का था । मेरी योजना मे डी ए देना ही है । पर देने पर भी 'इन्डैक्स फिगर' के साथ उसका मेल नही रहेगा और शिकायत बनी रहेगी । कम-से-कम, अनाज मिलता रहा तो उतनी राहत रहेगी । लेनेवाले ने वह अनाज बेचा तो भी मुझे हर्ज नही ।

(३) किसान से लगान अनाज मे लेना है । मेरा कुल सुझाव अनाज के फ्रंट पर और न्यूनतम करुणा पर खडा है ।

गदे पोस्टरो के लिए मुझे कुछ करना पड रहा है, इसका मुझे दु ख है । इन पोस्टरो के रहते बच्चो की तालीम का कोई अर्थ ही नही रहता । पोस्टरो के जरिये जो फ्री एण्ड कम्पलसरी (नि शुल्क और अनिवार्य) तालीम आख के जरिये बच्चो को दी जाती है, वह नागरिको के मूलभूत अधिकारो पर प्रहार है, ऐसा मै मानता हू । इसके रहते मुझे जीवन ही असह्य-सा मालूम हो रहा है । इन्दौर शहर मे महीना भर मै रहा, उसने मेरी आखें खोल दी ।

कल अचानक मेरी कमर मे मोच आई और आज के पडाव पर मुझे मोटर से आना पडा । प्रभु की लीला है । पीर-पजाल लाघने का जिसको वह बल देता है, उसकी मैदान मे वह कमर तोडता है । आशा करता हू एक-दो रोज मे ठीक हो जायगा ।

विनोबा का जयजगत्

: ७३ :

ग्राम निर्माण कार्यालय
नार्थ लखीमपुर-असम
१९-७-६१

श्री श्रीमन्‌जी,

आप जानते है इधर दो महीने से हमारी यात्रा बिलकुल देहात मे चल रही है जहां ग्रामदान की अच्छी हवा निर्माण हुई है, और उस काम में मै मशगूल हू। इस हालत मे सिनेमा वगैरह के बारे मे जाने का और बोलने का मौका इधर मुझे नही मिला। पर पुराने अखबार कुछ मिलते है उससे पता चला, जिसका आपके पत्र मे भी जिक्र आया, कि सरकार के निर्देश पर फिल्मो का पहले से कुछ अच्छा सेन्सरिग हो रहा है, जिसके खिलाफ फिल्म उद्योग-पतियो ने एक जिहाद-सा उठाया है। मुझे इस खबर से दुःख हुआ। आप जानते हैं कि मैने कई दफा कहा है कि फिल्म उद्योग के खिलाफ मै नही हू, बल्कि अगर उसका ठीक नियत्रण और आयोजन किया जाय तो मनोरंजन का और शिक्षण का वह अच्छा जरिया हो सकता है। जैसा रस्किन ने लिखा है, हर उद्योग के सामने लोकहित का एक ध्येय होना चाहिए। उसके अन्तर्गत उचित मुनाफे का स्थान हो सकता है। लेकिन लोकहित की तरफ ध्यान दिये बिना और लोकहानि प्रत्यक्ष हो रही हो उसकी परवा किये बिना, केवल मुनाफे की दृष्टि से ऐसा धधा उद्योगपति करते जाय, यह सायस के इस जमाने मे असह्य है। इतना ही नही, अगर ऐसा ही रवैया रहा तो लोकमानस पर इतना व्यापक असर डालने वाला यह धधा प्राइवेट सैक्टर में रहने देना ही खतरनाक माना जायगा। आप यह भी जानते है कि मै प्राइवेट सेक्टर के खिलाफ नही हू, बल्कि प्राइवेट सैक्टर को सौ फीसदी अवकाश होगा, साथ-साथ पब्लिक-सैक्टर को भी सौ फीसदी अवकाश होगा, और दोनो मिलकर भी सौ फीसदी होगा, ऐसा हमारा सर्वोदय का गणित है। १००+१००=१०० यह गणित किसी यूनिवर्सिटी ने मान्य नही किया है, जो हमने मान्य किया है। ऐसी हालत मे सिनेमा इडस्ट्री को प्राइवेट सैक्टर मे रखना चाहिए या नही रखना चाहिए, यहा तक सोचने की नौबत आये, यह शोचनीय बात होगी।

शोभनीय क्या अशोभनीय क्या इस विषय मे कोई दकियानूस विचार मै नही रखता, बल्कि वैज्ञानिक ढग से सोचना चाहिए, यही मेरा आग्रह रहता है । यह मेरे सब साथी जानते है, बल्कि गदे पोस्टरो के खिलाफ मुझे सत्याग्रह करना पडा, यह मेरे लिए एक कष्टदायक बात थी । पर लाचार होकर मुझे वह करना पडा । पोस्टर्स तो आतरिक रोग का एक बाहरी चिह्न मात्र था । पोस्टर के नियत्रण के साथ खराब सिनेमा, गदे गाने आदि का भी सैंसरिंग करना ही था । इस तरफ सरकार ध्यान दे रही है, इसकी मुझे खुशी है । मेरी सिनेमा-उद्योगपतियो से प्रार्थना है कि वे भी इस काम मे सहयोग की वृत्ति रखे और देश की तरुण पीढी को प्राणवान् और स्वस्थ बनाने मे नेतृत्व करे ।

आप मेरा यह निवेदन प्रैस को दे सकते हैं ।

बिनोबा का जयजगत

७. मदालसा अग्रवाल के नाम

: ७४ :

भिवापुर, २३-८-३२

चि० मदालसा,

माताजी ने रख लिया तो कुछ फिकर नही। इसमें वृद्धि अस्थिर होने का कोई कारण नही है। हम जानते तो है कि दुनिया मे कुछ भी स्थिर नही हैं। फिर भी हमारी वुद्धि तो स्थिर ही होनी चाहिए।

अभिमान के लिए तो सोचना चाहिए। मै जो कुछ जानता हू, वह तो ठीक, लेकिन क्या-क्या नही जानता हू, इसका तो पार नही है। अव अभिमान का मुद्दा क्या रहा ? साक्रेटीस ज्ञानी था, क्योकि वह जानता था कि वह अज्ञानी था। सच्चे ज्ञान से, विवेक मे, अभिमान नष्ट होता है।

(हिन्दी में) विनोवा के आशीर्वाद

. ७४ :

पवनार, १-९-३२

चि० मदालसा,

चिट्‌ठी मिली। दुकान[1] मे रहो या कन्याशाला मे रहो, हमे अपने जीवन का नियमन करते तो आना ही चाहिए। रात को ८ वजे और सुवह ४ वजे प्रार्थना, दोपहर मे १२ वजे तकली (उपासना)। तीनो समय का आहार नियत समय पर। अध्ययन का एक वर्ग तो चलता ही है। उस निमित्त घूमना भी हो ही जायगा। इस तरह से वाकी के वचे हुए समय का नियमन भी किया जा सकता है। थोडा समय निश्चित रूप से खाली भी रखना चाहिए।

"पाहे तिकडे बाप-माय विट्‌ठल आहे रखुमाई"[2]

---

[1] जमनालालजी का गांधी-चौकवाला मकान।

[2] जिधर देखूं उधर विठ्ठल और रखुमाई के रूप में पिता और माता ही दिखाई देते हैं।

आहार मे क्या-क्या रहता है ?
मेरा स्वास्थ्य तो उत्तम ही है।

विनोबा के आशीर्वाद

७६

पवनार, १६-९-३२

चि० मदालसा,

अतिथि को देव क्यो माना जाय ? यह जो प्रश्न मुझसे कल पूछा था उसका उत्तर दे रहा हू।

जिन-जिनका अपने ऊपर उपकार हुआ है, उन-उनके सबध मे देव-भावना रखकर उनकी सेवा करना और उनके ऋण से अश-मात्र ही क्यो न हो, मुक्त होने का प्रयत्न करना अपना धर्म है।

मातृदेव, पितृदेव, आचार्य-देव ये तीनो देव क्यो माने जाय, यह आसानी से समझ मे आनेवाली बात है। हमारे ऊपर इनके अनन्त उपकार है। उसी तरह से समाज के भी हमारे ऊपर महान उपकार है। अनन्त रूप से हम समाज की सेवा ही लेते रहते है। इसलिए समाज को देवरूप मानकर उसकी भी सेवा करना यह हमारा सहजधर्म है। हमारे घर आया हुआ अतिथि समाज का एक प्रतिनिधि है, ऐसा समझना चाहिए। अतिथि के रूप में समाज हमारी सेवा माग रहा है, यह समझ होनी चाहिए, अन्यथा समाज तो केवल अव्यक्त है। इसलिए 'अतिथि-देव' का अर्थ 'समाज-देव' है। समाज अव्यक्त है, अतिथि व्यक्त। अव्यक्त समाज की व्यक्त मूर्त्ति अतिथि है।

अतिथि की भाति दीन, दुखी, पीडित, रोगी इत्यादि की सेवा करना भी समाज-पूजा का ही अग है। दरिद्रनारायण भी महान देव ही है। उसका हमपर जो उपकार है, वह कभी भी अदा होनेवाला नहीं है।

विनोबा के आशीर्वाद

: ७७ :

नालवाडी, २९-११-३३

चि० मदालसा,

मैं २० तारीख को यहा से हरिजन-कार्य के लिए पुलगाव गया था,

उसके वाद कल ता २८ की शाम को वापस आया हू । आश्रम के पाच केन्द्र देख आया । वुद्धसेन साथ में था । उसके अतिरिक्त स्थानीय आश्रम के व्यक्ति भी साथ मे रहते थे । पुलगाव, सावगी, कोलामपुर, नागझरी, देवली में पडाव हो चुके है । इस वार के भ्रमण में मुझे वहुत-कुछ देखने को मिला है । प्रत्यक्ष आखो से देखने में और कितनी ही अच्छी तरह सुनने में वहुत अन्तर होता है । इस वजह से नये विचार भी सूझे । वे केन्द्रो के कार्यकर्ताओं के सामने प्रकट किये है । इसके अलावा जनता को क्या लाभ हुआ होगा, सो तो राम जाने । व्याख्यान आदि तो जो होने थे, वे हुए ही ।

तेरा पत्र प्रवास मे ही मिला था । उसका जवाव देने का सवाल ही नही था । आज चार लाइनें लिख देता हू ।

तुम लोग आजकल निसर्ग-उपासना का आनन्द लूट रहे हो । हवा खाने की कल्पना से निसर्ग का पूरा फायदा नही मिल पाता । इसलिए केवल उतनी ही कल्पना न रखते हुए उसके साथ दूसरी भी व्यापक कल्पना हम कर सके तो ऐसे स्थानो मे हरि-दर्शन प्राप्त हो सकता है । पर्वत, नदी आदि स्थानो में शिमला, महावलेश्वर इत्यादि विलास-स्थानो का निर्माण करना ईश्वर का वडा अपमान है । ऐसा अपमान हमारे पूर्वज नही करते थे । इसलिए निसर्गदेवी की कृपा से उन्हे आध्यात्मिक लाभ प्राप्त होता था । आज के कार्यकर्ता, जिन्हे कर्मयोग का नशा चढा हुआ है, उन निर्जन स्थानो की, और वहा 'भाग' जानेवाले तत्वज्ञानियो की कितनी ही निदा क्यो न करे, फिर भी ऐसे स्थानों की पावनता, जो अनुभव-सिद्ध है वह तो, कायम ही रहती है । वैदिक ऋषियो, उपनिषदो, गीता, योग-शास्त्र एव सत-जनो के अनुभवो में एकात-सेवन तथा निसर्ग-परिचय के अनेकविव लाभ वर्णन किये गए है । जैसे कि

"गज वजा सांडिलिया, बसवी वनस्थलिया ।
आगाचिया मादिया । एकले या" इत्यादि

—'कोलाहलरहित वनस्थलियो को अकेले अपने अगो से जो आबाद करते है' इत्यादि श्री ज्ञानदेव के वचन तुझे ज्ञात है ही । इस पत्र मे मनुष्य-समाज के सबसे पुरातन ग्रथ का एक वचन यहा उद्धृत करता हू ।

उपव्हरे गिरीणा संगथच नदीना ।
धिया विप्रो अजायत"—ऋग्वेद ।

इस मत्र के ऋषि 'वत्स काण्व' है । छद गायत्री और देवता इन्द्र है । इन्द्र याने परमात्मा । उसीको इस मत्र में 'विप्र' याने 'ज्ञानी' कहा है । वह कहा और कैसे प्रकट हुआ 'अजायत', जन्म पाया—प्रकट हुआ यह इस मत्र मे बताया गया है । पर्वतो की कदराओ मे और नदियो के सगम पर (धिया) याने ध्यान-चितन से ज्ञानी का जन्म हुआ ।

ज्ञानी पुरुष का जन्म कहा हुआ और वहा क्या करने से हुआ, ये दोनो बाते इस मत्र में है ।

यह वैसे ही लिख डाला । लेनेवाले को जो रुचे सो वह ले, बाकी का मेरा मुझे वापस दे ।

जमनालालजी और जानकीबाई को मेरे सप्रेम प्रणाम । उनको लिखकर मेरी और उनकी भी शाति मे दखल किसलिए ?

विनोबा के आशीर्वाद

: ७८ :

नालवाडी, ११-१२-३३

चि० मदालसा,

दोनो पत्र मिले । भिन्न-भिन्न पदार्थ खाने मे आये, इसकी कोई बात नही । अगर शरीर का बल बढा तो वनदेवी की कृपा होगी ।

निर्भयता तीन प्रकार की है । जानकार निर्भयता, ईश्वर-निष्ठ निर्भयता, विवेकी निर्भयता । जानकार अर्थात् भिन्न-भिन्न प्रकार के भयो से परिचय पाकर उनका इलाज सीख लेने से जो निर्भयता आती है वह । इसकी मर्यादा है । जितनी यह प्राप्त कर लेना सम्भव हो उतनी कमा लेनी चाहिए । जिसे सापो की पहचान हो जाय, निर्विप, सविप की परख हो जाय, साप पकडने की कला सध जाय, काटने के बाद करने के इलाज मालूम हो जाय, साप को कैसे टालना यह सध जाय तो उसे सापो के सबध मे बहुत-कुछ निर्भयता आ जायगी । अर्थात् वह सापोतक ही रहेगी, और हरेक के लिए इसे हासिल करना सभव भी नही होगा । लेकिन जिसे सापो के बीच रहना है, वह यथा-सम्भव इसे प्राप्त कर ले तो यह व्यवहार में उपयुक्त होने जैसी है, क्योकि

इसकी वजह से मनुष्य मे जो हिम्मत आ जाती है, वह उसके हाथ से अस्वाभाविक वर्तन नही होने देती, बल्कि उसकी बदौलत सापो से भी दोस्ती करने की वृत्ति निर्माण होना सम्भव है। फिर भी यह निर्भयता मर्यादित है। दूसरी है ईश्वर-निष्ठ। यह पूर्ण निर्भय करनेवाली है। हरेक को इसे साध्य कर ही लेना चाहिए। लेकिन दीर्घ प्रयत्न, उत्तम पुरुषार्थ, ('पुरुष' अर्थात् स्त्री भी) और भक्ति इत्यादि सावनो को सतत आचरण में लाये वगैर वह प्राप्त नही होगी और जब प्राप्त होगी तब दूसरी किसी भी प्रकार की मदद की अपेक्षा नही रहेगी। इस निर्भयता की मात्रा धीरे-धीरे बढती रहे तो कभी-न-कभी पूर्णता प्राप्त होगी। इन दोनो तरह की निर्भयता का उल्लेख तेरे पत्र मे है। इसके अलावा तीसरी विवेकी निर्भयता है। यह मनुष्य को निरर्थक साहस नही करने देती और इतने पर भी अगर भय निर्माण हो ही जाय तो विवेक से बुद्धि को शात रखना सिखाती है। यह विवेकी निर्भयता अपने अदर समा लेने का प्रयत्न करना चाहिए। यह सबके लिए सुलभ है। समझो कि मै शेर के पजे मे फसने ही वाला हू, पर यह सभव है कि मेरी मौत अभी लिखी न हो। अगर लिखी होगी तो टलेगी नही। लेकिन मै अगर भयभीत न होते हुए बुद्धि शात रखने का प्रयत्न करू तो बचाव का कोई-न-कोई मार्ग निकल आना सभव है। और कुछ नही तो बुद्धि को सावधान रखा जा सका तो अत मे हरि-स्मरण तो किया ही जा सकेगा। यह लाभ भी कम नही है, बल्कि विचार करे तो परम लाभ है।

विनोबा

७९ :

सवाई मुकुटी, ११-१-३५

चि० मदालसा,

गाय का दूध दुहना शुरू किया, यह अच्छा है। दूध दुहने के जरा देर पहले गाय को खाना देने का रिवाज है। जो मनुष्य खाना दे वही दूध दुहनेवाला हो तो गाय को प्रेम महसूस होता है, और वह सुगमता से दूध निकालने देती है। इसके अलावा दूध दुहना भी एक कला ही है। लेकिन दूध दुहने से पहले गाय के सामने खाना रखने पर गाय दूध किस तरह निकालने देती है यह, देखने लायक है।

तेरे अक्षर थोडे-से प्रयत्न से सुधर सकते है । १ होल्डर छोडकर बरू की कलम बनाई जाय । २ मोड □ चौरस है । वह खडा लम्ब चौरस [] किया जाय । और ३ अक्षर का नमूना आखो के सामने रखकर अक्षरो के अवयवो का प्रमाण ध्यान मे लिया जाय । मेरी समझ से इस काम मे १५ मिनिट काफी होगे । अक्षर ज़रा धीमे तो लिखने ही होगे ।

यह मै पाच-पचीस लोगो के सामने ही लिख रहा हू । अगर इस तरह समय न निकाला जाय तो समय मिलेगा ही नही । मेरा प्रार्थना का समय निश्चित रूप से शाम को ८ और सुबह ४ और दोपहर को १२ बजे का तकली कातने का तय है। वह टलने का मौका आजतक नही आया है । इस प्रवास मे टलने की कोई सम्भावना भी नही है ।

अब समाप्त करना चाहिए ।

विनोबा के आशीर्वाद

: ८० :

येवळे, ८-४-३५

चि० मदालसा,

देवली की खादी-यात्रा के लिए तू जान-बूझकर गर्मी मे वहा रही । गाडी आदि से न आकर पैदल आने का तय किया । किन्तु पाव से भी अधिक श्रेष्ठ साधन—मन से तू आई । जो मन से आया वही दरअसल आया । चित्त के समीप भगवान है । नैवेद्य (सूत की गुडी) आगामी वर्ष के लिए हममें से हरेक को अर्पण करना चाहिए ।

खादी-यात्रा की यह कल्पना शक्तिशाली, प्राणदायी कल्पना है । उसमें अगर हम अपना हृदय उडेले तो वह राष्ट्र को नवीन स्फूर्ति दे सकेगी, यह इस बार की यात्रा ने दिखा ही दिया है । मेरी स्फूर्ति की तो सीमा ही नही रही । दो घटे तक सतत बोलता ही रहा । उसका सार तो वल्लभस्वामी के पास तैयार होगा । अनेक नई कल्पनाए सूझी । उनका अमल आगामी वर्ष में करेगे ।

इस बार अपने साथ तुकारामबुआ को भी रक्खा है, क्योकि उसकी मनोदशा बहुत ही व्याकुल है । दत्तु पास मे है, वह मेरे आनद के लिए है । अन्य अनेक—शरीर से नही तो मन से—साथ मे फिरते है । वे कौन-कौन

है, इसे तो वे ही जाने। प्रार्थना और तकली ये दो बाते नियमित रहे तो निराशा भाग जायगी।

विनोबा के आशीर्वाद

: ८१ :

नालवाडी, १९-४-३५

चि० मदालसा,

रात की प्रार्थना के बाद नालवाडी से यह लिख रहा हू। कभी नालवाडी और कभी कन्याश्रम इस तरह मेरी प्रार्थना की जगह आजकल बदलती रहती है।

ता २१ को प्रवास समाप्त हुआ। इस बार गागोदा[1] हो आया। १९२० में एक पूरा दिन वहा ठहरा था। अब १५ साल बाद ४ दिन रह आया। मरनेवाले मर चुके थे। जीनेवाले जिदा थे। 'कोई अदहन मे थे, कोई सूप मे।'[2] इतना ही फर्क था। नक्षत्र और सितारे जो वर्धा में दिखाई देते थे वे ही गागोदा में दिखाई दिये। मेरी भावना जो वर्धा मे थी वही वहा भी थी। लेकिन पुरानी स्मृतिया ताजी हो गई और ताजी पीछे सरक गई। पर वहा के पहाडो को देख-देखकर तो मन अघाता ही नही था। मुझे लगता है कि मै पहाडो पर रहनेवाला ही कोई प्राणी, किसी योगी की सगत मे रहनेवाला कोई हिरन या शेर, किसे मालूम क्या रहा होऊगा और भूलकर इस जन्म मे मनुष्यो में आ पडा हू। अभी तक पूरा इन्सान नही बन पाया हू। "गाधीत तळला आणि जमनालालजीत घोळला तेरी विनोबा तो विनोबाच राहिला"। 'घी मे तला और शक्कर मे डुबोया गया। फिर भी करेला तो करेला ही रहा।' यह कहावत तुझे मालूम है न? शका हुई, इसलिए यहा उल्लेख करने की अरसिकता करनी पडी है।

---

[1] विनोबा की माता का स्थान

[2] यह मराठी की प्रचलित कहावत है। इसका अर्थ है कि सूप से फटकते समय तो अनाज के दाने खुश होते है, लेकिन अदहन यानी उबलते पानी में डालने पर दुःखी होते है। —सं०

एक ओर पर्वत और दूसरी ओर माता, इन दोनो के दरम्यान वाकी सारी सृष्टि और सगे-सवधी वैठा दिये जाय। मा की याद चार दिन में चालीस वार आई होगी।

गीता, माता और तकली—मेरे जीवन की त्रिमूर्त्ति। मेरा सारा विष्णु सहस्रनाम इन तीनो मे समा जाता है।

९॥ वजे जाने के कारण यही समाप्त करता हू, क्योकि यह मर्यादा वध गई है। आगे का प्रात काल की प्रार्थना के वाद लिखा जायगा।

रोजाना ८ लटी (१६० तार की) कातने का नियम किया है। ३०-३२ नम्बर की ६-६॥ लटी सुवह तीन घटे मे होती है। उस समय मौन रहता हूं। वची हुई पढाते समय कातता हू। सुवह ६ से ७ और दोपहर मे १२॥ से ७॥ वोलने का समय, वाकी मौन।

विनोवा के आशीर्वाद

: ८२ :

नालवाडी, ८-५-३५

चि० मदालसा,

हाल ही में लिखा हुआ पत्र अवतक मिल गया होगा। वह रवाना हुआ, उसी दिन तेरी ओर से खुलासेवार पत्र मिला।

अनंत गुणदोप प्रकृति मे भरे हुए है। किन्तु उन सवसे परे कोई एक तत्व है। उसे इन गुण-दोपो का ज़रा भी स्पर्श नही है। और वह मैं हू। यह मुख्य वात जच जाय तो वाकी का काम सुलभ हो जाता है। इस वात पर मेरा विलक्षण विश्वास वैठ गया है। किसीके गुण-दोष भासमान होते है। उस ओर ज़रा भी ध्यान न दिया जाय, ऐसा मेरे कहने का अर्थ नही है। गुण वढाये जाय, दोप निकाले जाय, ऐसा यह दुहेरा प्रयत्न सतत करते रहना तो अत्यन्त आवश्यक ही है। लेकिन वैसा करते रहने मे अधीरता या अशाति उत्पन्न होना ठीक नही है। इसके लिए जो उपाय मुझे अनुभव से जंच गया है, वह उपरोक्त विचारधारा मे मिलता है। यह विचारधारा गीता के अध्याय ३ श्लोक २७, २८, अध्याय १३ श्लोक २९, अध्याय १४ श्लोक १९ इत्यादि मे व्यक्त हुई है। मुझे वह वहुत प्रिय है, क्योकि इसका मुझपर अपार उपकार हुआ है और आगे भी होनेवाला है।

मैंने तुझे जिस तरह से २-२।। वर्ष सतत समय दिया है, उसी तरह से आगे भी मेरी ओर से जब चाहो मिलता रहेगा । इन दिनों मेरा जीवन मौन मे समाया हुआ दिखाई देता है, पर इस मौन में भी तेरे लिए तो समय रखा ही हुआ है ।

रोने-गाने की जरूरत ही न रखना उत्तम मार्ग है, पर अगर वह गाना ही पडे तो उसे किसके आगे गाया जाय इतना विवेक होना चाहिए । चाहे जिसके आगे 'मै चचल, मै दुर्बल, मै मूरख' —ऐसा पहाडा पढते रहना भी एक तरह का जप होता है और ऐसा जप करने से उलटा वही अवगुण दृढ हो जाता है । इससे उलटी माला भले ही सतत जपते रहे, और उसीके अनु-सार दुनिया मे प्रसगवश बोलते भी रहे, इसमें असत्यता नही है, बल्कि यह सत्य-दर्शन है । 'मै चंचल' आदि कहना ही असत्य है । यह अब कम-से-कम बुद्धि मे तो उतरा होगा, ऐसी मै आशा रखता हू । योग्य व्यक्ति के आगे स्वभाव के जो अवगुण दिखाई दे, उन्हे प्रसग-वश प्रकट किया जा सकता है । जहातक तेरा सवाल है, ऐसा योग्य व्यक्ति मै हू, यह मै कबूल करता हू ।

वल्लभ को अभी मेरे पास वेदाभ्यास करना बाकी है । प्रभु की इच्छा होगी तो उसे इस काम के लिए अवश्य समय दूगा । मदालसा लेगी उतना समय उसको देना ही है । और अब तीसरा प्रयोग शुरू किया है दत्तोबा का । एक किनारे आ लगा है । दूसरा मध्य मे है । तीसरे का आरम्भ है । ऐसा ही यह मरनेतक चलनेवाला है, क्योकि जीनेवाले की खोट मरे बिना पूरी नही निकलती, बल्कि मरने पर भी निकलेगी या नही, यही आशका है ।

उद्योग, प्रयोग और योग यही साधक के जीवन का सक्षिप्त स्वरूप है । मेरे प्रयोग सर्वस्व की बाजी लगाकर चल रहे है और वे पूर्णरूप से सफल है, ऐसी मेरी राय बनी है । उस सुयशता का प्रमाण हृदय की पावनता मे प्रत्यक्ष दिखाई देता है । ज्योही दत्तू आकर पढने बैठता है कि मेरे हृदय मे हुए, न हुए, सारे दोष एकदम दूर हो जाते है—इसके मानी ही यह है कि मै विद्यार्थियो के लिए ही पैदा हुआ हू ।

अपने जीवन मे अन्य जो कुछ मै करूगा उसकी कीमत जगत को जो

आकनी होगी वह आकेगा। किन्तु मेरी दृष्टि से यह हृदय धोने की क्रिया, अध्यापन का यह तीर्थ-स्नान ही मेरा मुख्य जीवन है। मेरे विद्यार्थी और मेरे पारस्परिक सबध का वर्णन करना हो तो चद्र-चकोर, मेघ-चातक इत्यादि काल्पनिक दृष्टात ही खोजने होगे। ९॥ बज गये।

विनोबा के आशीर्वाद

८३

वर्धा, १०-६-३५

चि० मदालसा,

तेरा पत्र प्रवास से आने के बाद यहा मिला। अब यह दोपहर मे तकली-उपासना के बाद लिखवा रहा हू। खराब अक्षरो के लिए कौन किसको बदनाम करे, क्योकि ज्यादा अकलमद या ज्यादा पढे-लिखे की यह एक पहचान है।

अब रोज १६ लटी[1] कातने का महायज्ञ[2] शुरू किया है। कुछ दिन से ३० नम्बर का सूत निकालने का प्रयत्न चालू है। परसो ८॥ घटे लगे। कल भी इतने ही। थोडे प्रयास से ८ घटे मे हो जायगा। लेकिन अध्यापन, पत्र-व्यवहार इत्यादि उद्योग बचे हुए समय मे होते है। साधारण रूप से ८॥ घटे का अदाज लगा रखने मे हर्ज नही है। प्रार्थना १ घटा, तकली आध घटा। इस तरह कुल मिलाकर १० घटे का हिसाब लगता है। इसके अलावा २ या ३ घटे बचेंगे, जो बाकी के कामो के लिए पर्याप्त होगे। कातते हुए भी कुछ उद्योग हो सकते है। रोजाना इतना काता जाय तो चरखा-सघ की मजदूरी के हिसाब से ५)रु० मासिक मजदूरी होगी। सावली (चादा जिले) की तरफ रहनेवाली औरतो की मजदूरी का हिसाब चरखा-सघ की रिपोर्ट में इस प्रकार दिया है

कातनेवाली बाई की ८ घटे की औसत मजदूरी ७॥ पाई, मध्यम मजदूरी ~) एक आना, उत्तम मजदूरी ~)॥ डेढ आना। इस हिसाब से

---

[1] एक लटी याने १६० तार की सूत की आंटी या लच्छी।

[2] आश्रम में १६० तार की एक लटी रोज कातना यज्ञ कहलाता है। १६ लटी रोज कातने का विनोबाजी का यह प्रयोग उनकी भाषा में महायज्ञ ही था।—सं०

प्रतिदिन की करीव ≈)॥ २ (अढाई आने और दो पाई) मजदूरी चरखा-सघ को पर्याप्त प्रतीत होगी। मेरी राय मे मेहनत के प्रमाण मे यह मजदूरी चार आना अवश्य होनी चाहिए। पू० वापू की राय मे आठ आने है, किन्तु इतनी मजदूरी देकर खादी खरीदना हमारे श्रीमानो को पुसाता नही। इसका इलाज यही है कि मुझ जैसे को ऐसी मजदूरी पर ही जीवन-निर्वाह करना चाहिए। फिलहाल मैंने उसमें हाथ नही डाला। अभी तो जितना शारीरिक परिश्रम करना उचित है, उतना करने में ही सतोप माना है। इन सव वातो का महत्व अयवा उपयुक्तता क्या है, इस विपय में कुछ लिखकर पाठको की वुद्धिमत्ता का अपमान नही करना चाहता।

पिछले दिनो कोडवा से १६ लटी कतवाने का प्रयत्न किया था। वेचारे ने १२-१३ घटे काम करके ज्यो-त्यो १२ नम्वर की १६ लटी दस-पाच दिन दी, फिर उसकी शक्ति खतम हो गई। उस वक्त मेरी निष्ठुरता देख वहुतो को ताज्जुव होता था; पर अव ध्यान में आयेगा कि वह निष्ठुरता नही थी, वल्कि विशुद्ध दया थी। नदी समुद्र मे मिल जाती है, फिर आगे उसे कही जाने का वाकी नही रहता। उपरोक्त नियम के वाद मेरी भी वही स्यिति हो गई है। १६ लटी में १६ कलाए पूर्ण होती हैं।

नमक के वारे में तुझे जो शका आई है, वह मुझे मान्य नही है, परन्तु वैद्यक अभी गणित के समान निश्चित शास्त्र नही वना है। इसलिए थोडा नमक लेकर देखना अनुचित नही है।

ईश्वर के विषय मे श्रद्धा रखनेवाला इन्सान सहज रूप से ही निर्भय होकर विचरता है। सहज वर्ताव करने मे थोड़ी-वहुत भूलें भी हो जायं तो उसमें हानि नही है। गीता मे यह आया ही है।

मा के साथ तुम्हारा मेल वैठता जा रहा है, इसमे दोनो का ही कल्याण है। हमको खडणी[1] वहुत-सी लड़कियो की ओर से मिलने लगी है। पुरुषो

---

[1] श्री महादेवभाई देसाई ने जेल से कातने के लिए विनोवाजी से पूनियो की मांग की थी। बिनोबाजी के पास भेजने के लिए पूनियां नहीं थीं, तब उन्होने कन्या-आश्रम की लड़कियो से नियमित रूप से पूनियो की मांग की थी। उसको उन्होने खडणी कहा था। —सं०

मे से मनोहरजी और रामदासभाई खडणी भेजते है। सभी पूनिया जितनी बढिया होनी चाहिए उतनी नही है, पर उनमे सुधार किया जा सकेगा। आज जो बिल्कुल ही अकाल आ पडा है, इतने महसूल से वह कुछ कम होगा। आजकल तकली की गति[1] साधारणतया ११८ के आसपास आती है। गत डेढ महीने मे अधिक-से-अधिक १२९ व कम-से-कम १०८ तार की गति आई थी।

बाल कटवानेवाली लडकियो की सख्या बढी है। इसमे निष्ठा की भावना कितनी और मौज की भावना कितनी, यह मै नही जानता।

विनोबा

: ८४ :

वर्धा, १४-६-३५

चि० मदालसा,

बहुत-से सवाल 'बडे सवाल' है, ऐसा कहकर मै जवाब न देकर ही छोड देता हू। इसका अर्थ स्पष्ट करने की आज इच्छा है।

अर्थ पहला—बडे प्रश्न याने फुटकर निकम्मे प्रश्न, जिसमे समय बिताने की 'बडे' लोगो की आदत होती है, लेकिन जिसमे मुझे कोई रस नही मालूम होता। "रामाय स्वस्ति, रावणाय स्वस्ति" यह है उन प्रश्नो का जवाब।

अर्थ दूसरा—सामान्य तत्व की बाते समझ लेना, समझा देना। तफसील अपनी मै तय करू, दूसरे की दूसरा तय करे। ऐसा मेरा रुख है। ये तफसील के प्रश्न एक तरह से तो बिल्कुल मामूली होते है, पर हरेक की अपनी मनोदशा के अनुसार महत्व के होते है। उसका उत्तर कोई तीसरा दे यह लाभदायी होता हो सो बात नही है, बल्कि हर कोई अपना हल खुद ढूढे, इसमें बुद्धि का भी विकास होता है।

अर्थ तीसरा—कुछ लोगो की श्रद्धा के अनेक स्थान होते है। वैसे तो यह आनन्द की बात समझनी चाहिए। लेकिन उसके साथ स्वय-बुद्धि याने

[1] प्रतिदिन दोपहर को ठीक १२ बजे सेकण्ड तक का हिसाब लगाकर तकली पर मौनपूर्वक सूत काता जाता था और कितने तार हुए यह लिखा जाता था। ११८ तार उत्तम गति का द्योतक था। —स०

अपनी अकल काम में लाने का रुख न रहे तो उस आदमी की त्रिविध या बहुविध फजीहत होती है। उदाहरणार्थ तुझे अगर एकाध सवाल का हल खोजना हो तो मा की, काकाजी की, मेरी और बापू की और पता नही किस-किसकी, सलाह पूछनी ही चाहिए। अब चारो जने अगर समान विचार के हो तो भी उनकी राय मे थोडा-बहुत फर्क तो होगा ही। और वह मारा सुनकर सुननेवाले की बुद्धि का घोटाला बढेगा। ऐसी स्थिति मे सलाह न देने में मैं उस हदतक उस आदमी का घोटाला घटाता हू।

ऐसी यह 'बहुधा' स्थिति जिस आदमी की नही होती है, उसे स्पष्ट सलाह प्रसगवशात् देता भी हू। प्रसगवशात् कहने का कारण न० २ में दिया ह।

आश्रम में नमक छोडा गया है, यह जानकर केवल इसी वजह से नमक छोडने की उतावली करने की जरूरत नही है। कोई एक सिद्धान्त सही हो तो भी उसका प्रति-सिद्धान्त भी सही ही हो, यह जरूरी नही हैं। उदाहरण के लिए तर्कशास्त्र का ही दृष्टांत लेना हो तो कौवे काले होते है, यह सच है। फिर भी जो कोई काले हो वे कौवे ही हो सो बात नही है। इसी तरह आश्रमवासियो ने नमक छोडा हो तो भी नमक छोडने से मनुष्य आश्रमवासी बनता हो सो नही है। कोई भी कदम जल्दी मे न उठाते हुए विवेक के साथ और निश्चयपूर्वक उठाना सीखना चाहिए।

अलमोडा से जल्दी नीचे उतरने के बजाय मा के साथ वही रहो, इसमे मुझे कोई हर्ज नही मालूम देता।

समय बरबाद होता है, यह मानना ठीक नही। समय बीतेगा तो सही, क्योकि उसके बीते बिना न दिन का अस्त होगा, न उदय होगा। केवल देखना यह है कि बरबाद होने का मतलब क्या। आजकल हमारे बहुत-से साथी देहातो मे गये हुए है। दो-चार बच्चे उनके पास आ जाते है। इसके अलावा गाववाला कोई उनको पूछता ही नही और बिचारो का बहुत-सा समय लोगो की दृष्टि से तथा उनकी अपनी दृष्टि से भी बरबाद होता है। मुझे आशा है कि उसी परिस्थिति मे मैं रहू तो मेरा वक्त बरबाद नही होगा। मेरा चरखा मेरे साथ रहेगा। प्रार्थना टलेगी नही। तकली तो वियोगातीत माता है, जो मरने पर भी दफनाकर अथवा जलाकर बची रहेगी। और

राम-नाम को तो कोई छुडा ही नही सकता। अभ्यास तो समीप उपस्थित रहेगा ही। पावो को फिरने की आदत हो गई है, वह बदलेगी नही। दैनिक देहकार्य नियमित रूप से होते रहेगे। रोज के अनुभवो का, कल्पनाओ का, विचारो का लेखा-जोखा रक्खा जायगा। अगर दो-चार ही बच्चे पास आये तो उनकी अवहेलना न करते हुए, उनपर अपन सर्वस्व लुटा दिया जायगा। अगर सारी दुनिया भी ऐसा कहे कि तेरा समय बरबाद हो रहा है तो उसे सुनने मे समय बरबाद नही किया जायगा। इससे अधिक आज भी मै यहा क्या कर सकता हू, और कही भी क्या कर सकूगा ?

हिन्दू-धर्म मूर्त्तिपूजक है। मूर्त्तिपूजा के मानी है कि प्रत्येक वस्तु के पीछे कोई अमूर्त तत्व छिपा हुआ है, अथवा दूसरे शब्दो मे मूर्त याने अमूर्त का प्रकाश है, यह ध्यान मे लेते हुए आस-पास की हर वस्तु मे से, या घटना मे से, या व्यक्ति मे से बोध ग्रहण करना, ऐसी जिसकी दृष्टि हो जाय, उसका समय कही भी और कभी भी और किसी भी तरह बरबाद नही हो सकता।

प्रवास मे मेरा स्वास्थ्य बिगडा था, यह तेरे पत्र से मुझे मालूम हुआ। इस समय के प्रवास मे तीन पौड वजन बढाकर आया हू। मेरी राय मे इसका श्रेय चरखे को है। मेरे ये पत्र बहुधा काकाजी को मिलते होगे। उनको और जानकीबाई को प्रणाम न लिखते हुए भी पहुचे।

विनोबा

• ८५ •

वर्धा, १९-७-३५

चि० मदालसा,

भगवान् ने हिमालय की गणना विभूतियो मे की है। उसकी यथोचितता का अब प्रत्यक्ष अनुभव मिल रहा होगा। कुछ विभूतियो का महत्व तत्कालीन होता है। वैसी ही गीता मे भी आई है। पर कुछ विभूतिया, जो विशेषत निसर्गात्मक होती है, उन्हे चिरतन कहा जा सकता है। यो तो दर-असल इस जगत मे एक आत्मतत्व ही चिरन्तन है, और विभूतियो का वर्णन करते समय 'अहमात्मा गुडाकेश' इसी प्रकार आरम्भ किया है। इस महान् विभूति मे बाकी की सब विभूतियो का सहज ही समावेश हो जाता है।

वाह्य विभूति-दर्शन से जो आनन्द होता है, उसका भी कारण यही है कि उसमें आत्मा का गुण प्रकट होता है। समुद्र को देखकर आत्मा की गभीरता, कमल को देखकर आत्मा की अलिप्तता, रात को देखकर आत्मा की अव्यक्तता, सूर्य को देखकर आत्मा की तेजस्विता, चद्र को देखकर आत्मा की आल्हादकता, हिमालय को देखकर आत्मा की स्थिरता इत्यादि आत्म-भावो का अनुभव होता है, इसलिए आनन्द-लब्धि होती है। छपे हुए अक्षर सुदर प्रतीत होते है, क्योंकि उसमे आत्मा की व्यवस्थितता प्रकट होती है और व्यवस्था के मानी है समता। लिखे हुए अक्षर भी सुदर प्रतीत होते है। उसका कारण यह है कि उसमें आत्मा की स्वच्छदता और स्वतन्त्रता प्रकट होती है। जहा-जहा आत्मा की यत्किचित भी उपलब्धि होती है वही सौंदर्य, सतोप, समाधान और सुख का वास होता है। सृष्टि-दर्शन से प्राय सभीको आनन्द होता है। परन्तु सृष्टि मे समाये हुए आत्मतत्व की जिसे पहचान होती है, वह कवि कहलाता है।

हिमालय की सन्निधि मे रहकर अनेको ने महान् तपस्या की है। उस तपस्या की पावनता हिमालय के शुभ्र अग की काति के रूप मे झलकती है। अनेक ऋपियो ने उस (हिमालय) की गुफा मे बैठकर जगत के हित या चितन किया है। उनकी वह विश्व-कल्याण की कामना गगा आदि नदियो के प्रवाह के रूप मे आज भी वह रही है। हिमालय के शिखरो का शरीर से और उन्नत विचारो से अनेक ऋपियो ने आक्रमण (उल्लघन) किया है। वहासे वहनेवाले, उनके विचारो की पवित्र हवा के प्रवाह हिंदुस्तान के हर मनुष्य के हृदय का आलिगन करके उसे जगाते रहते है। रात को सोते समय एक वार उत्तर दिशा का दर्शन करके ध्रुव तारे की निश्चलता का ध्यान करके सोनेवाला मुझ-जैसा मनुष्य एक हजार मील दूर रहकर भी हिमालय के सान्निध्य का अनुभव कर सकता है। उत्तर दिशा मे सप्त ऋपियो के तारे भी दिखाई देते है। उनकी आकृति के सबध मे अनेको ने अनेक कल्पनाए की है। परन्तु हिन्दुस्तान के नक्शे के उत्तर प्रदेश की आकृति—काश्मीर और हिमालय को मिलाकर, जैसी वनती है वैसी ही मुझे वह सप्तर्पियो की आकृति दिखाई देती है।

जमनालालजी कह रहे थे कि तेरी मा कोई जप करती है। यह

सुनकर मुझे कितना आनन्द हुआ है। मनु (महाराज) ने कहा कि इन्सान के हाथ से और कोई साधना हो पाये या न हो पाये, फिर भी अगर वह जी-जान से पवित्र कल्पनाओ का जप करता जाय तो, वह सिद्ध हो सकता है। 'सर्व यज्ञो में मै जप-यज्ञ हू', इसका अर्थ यह है कि वाकी यज्ञो मे कुछ-न-कुछ वाह्य साधनो की, शिक्षण की अपेक्षा रहती है। ऐसे किसी भी साधन की अपेक्षा न रखते हुए सहज रूप से सव कोई जिसे कर सकते है, ऐसा कोई यज्ञ है तो वह जप-यज्ञ ही है। हमारी मा कहा करती थी कि "आपण जप जपतो तर जप आपल्याला जपतो", यानी जव हम जपो का जाप करते है, तव जप हमारी रक्षा करते है।

फिलहाल हमारे अध्यापन मे सुवह की प्रार्थना के वाद कठोपनिषद् चालू है। नामदेव और सत्यवृतन् प्रात ३।। वजे उठकर नित्यकर्म से निपटकर कन्याश्रम की प्रार्थना मे आते है और प्रार्थना समाप्त होते ही पाठ शुरू होता है। पाठ मे अभी जप ही चला है याने सथा[1] चालू है। अर्थ का आगे देखा जायगा। वेद की ध्वनि मे जो सामर्थ्य है, उसका प्रभाव अर्थज्ञान से कम नही। प्रतिदिन प्राय आध घटे मे ३ श्लोको का उच्चारण होता है। तीन वल्ली समाप्त हो चुकी है। चौथी चालू की है। एक महीने मे इतना हुआ। तू अनेक वार ऐसा कहती थी कि अभ्यास करते समय विचार सूझते है, पर वाद मे दिन भर कुछ याद नही आता। इसमे मेरी भूल थी। अर्थ समझाने के गौरव में मैंने सथा नही दी। अगर वह दी होती तो दिनभर विचार सूझते रहते। ध्वनि का विलक्षण सामर्थ्य है। इसीलिए उसे शव्द-व्रह्म या नाद-व्रह्म कहते है। सायकालीन प्रार्थना में एकाध भावभरा भजन सुनने को मिल जाय तो सुवह-उठते-उठते कुछ भी विचार किये विना वही याद आ जाता है। यह कइयो का अनुभव है। मन के अदरूनी परदे पर, यानी वुद्धि के समीप के हिस्से पर नाद-व्रह्म का गहरा असर होता है। इसलिए आगे कभी भी, जो हिस्सा पढा जा चुका है, उसमे स्मरणीय हिस्से की सथा लेगें।

भाऊ अग्रेजी सीखता है। जैसे कुम्हार के पास सारा माल मिट्टी का

---

[1] संस्कृत श्लोको का शुद्ध उच्चारण के साथ सस्वर पाठ किया जाना।—सं०

ही बनता है, वैसे हमारे पास अंग्रेजी हो, सस्कृत हो या मराठी हो या हिन्दी हो, सबकी मूल मिट्टी एक ही है। आकार जिसे जो पसन्द हो सो माग ले। इसलिए अंग्रेजी में बाइबिल चलता है।

वत्सला हाल ही में घर की सेवा से उत्तीर्ण होकर आई है। उसका गणित आगे चलने लगा है। उसके साथ अनसूया तो रहती ही है। वत्सला के ऊपर कन्याश्रम के कताई-विभाग की जिम्मेदारी आई है और अनसूया ने एक नया प्रयोग शुरु किया है। कपास साफ करने से लेकर लोढकर, पींजकर २० तोले पूनी रोज बनाना। उसकी अभी तो ५ आने मजदूरी तय की है। इस प्रकार मजदूरी लेकर उसपर आजीविका चलाना। इसमे पाच घटे जायगे, ऐसा उसका अदाज है। अभी छ के आसपास जाते है। अब ये पूनिया नि सकोच इस्तेमाल हो सकेगी। मनोहरजी ने हाल ही मे १६ आटी कातना शुरु किया है। शुरु मे महीने भर तैयार पूनी से और बाद मे अपनी बनाई पूनी से, कातेगे ऐसी उनकी योजना है। उनके लिए दो सेर पूनी चाहिए थी। वह तत्काल भेज दी। इसको मै आश्रम का वैभव समझता हू। आदर्श पूनी की कीमत दो रुपये सेर के बजाय अब ढाई रुपये सेर करनेवाला हू।

दत्तू मेरे आनद का विषय है। उसके साथ वर्ड्सवर्थ नाम के एक निसर्गोपासक महान् कवि की कविता पढा करता हू। एक कविता मे वह ऊचे उडनेवाले चंडूल (पक्षी) को सबोधन करके कहता है—

"मुझे अपने साथ ऊचा उडा ले जा या ऊचा कैसे जाया जाय, यह मुझे सिखा दे। तेरे चारो ओर उस ऊचाई पर एक पागलपन फैला है और मेरे चारो ओर सारा सयानेपन का वातावरण फैला हुआ है। मै अब इस सयानेपन से ऊब गया हू। अपन पागलपन का थोडा अनुभव मुझे दे।"

सपूर्ण जगत के सब विचारो को छोडकर एकान्त मे आत्मचिंतन अथवा विश्वचिंतन करनेवाले सचमुच पागल ही नही है क्या ? भाग्यवानो को यह फले।

'आश्रमवृत्त' भेजने का प्रबन्ध करता हू।

विनोबा के आशीर्वाद

: ८६

वर्धा, २९-८-३५

चि० मदालसा

इस बार का तेरा ११ घटे की मेहनत का (लिखा हुआ) खत सुनकर आनन्द हुआ। तुझे भेजने के लिए पूनिया भाया को दी है। आगे रवाना करना उसका काम है। अबतक अनसूया पूनी बनाती थी। अब वह सिलसिला बद हो गया है। अब हमें एक-एक तोला पूनी मिलती है। उतनी ही हमारे हाथ मे बची। उसमें तो जितनो की माग हम पूरी कर सकेंगे उतनो की तो पूरी करेंगे ही। लेकिन पूनियो के लिए कोई स्थायी योजना बनाने का विचार है।

आजकल मैं सुबह छ बजे नालवाडी आता हू और शाम को छ बजे कन्याश्रम लौट जाता हू। कन्याश्रम मे शाम को बाळकोबा, बापू, बाबाजी, शिवाजी आदि के साथ बातचीत, प्रार्थना, रात को सूत कातना। निद्रा, प्रातर्विधि, सुबह की प्रार्थना, बाद में उपनिषद् का वर्ग और फिर लौटना। उपनिषद् का वर्ग पहले तो नामदेव व सत्यन् के लिए शुरू किया। फिर उसमें लडकियो को आने की इजाजत दी। ८-१० लडकिया आती है और कुछ शिक्षक भी होते हैं। नालवाडी मे कताई के अलावा कुछ वर्ग और पत्र-व्यवहार का काम चलता है। अब तारीख १ सितम्बर १९३५ से एक नया उपक्रम (प्रयोग) शुरू करनेवाला हू। ऐसे तो वह नया नही है, पर प्रत्यक्ष मे नया है। कताई के कार्यक्रम मे यह मान ही लिया था कि यथासम्भव भोजन-खर्च मजदूरी में से ही हो, अर्थात् मजदूरी जो मैंने मानी है और खाद्य-पदार्थों के दर भी जो निश्चितरूप से सोच लिये गए हैं, मतलब यह कि उनके बाजार-भाव में फर्क हो जाय तब भी हमें फर्क नही करना है। साधारण रूप मे सामान्यत छ रुपयो में भोजन होना चाहिए, ऐसा सोचा है। उसमें निम्न चीजे होगी

१. दूध ५० तोला
२ सब्जी ३० तोला
३ गेहू १५ से २० तोला
४. तेल ४ तोला

५ शहद अथवा गुड अथवा फल (प्रतिदिन)
=चार आना

तूने जिन पुस्तको के नाम सूचित किये है, उनमे से मैने कोई भी न पढी है न सुनी है और न अब सुनने की वृत्ति ही है। हा कोई बाचे तो सुनने की तैयारी है। लेकिन, किसीको कुछ पढने के लिए कहता हू तो उसे कुछ ठीक से पढकर सुनाना आता नही, तो फिर स्वय पढने लग जाता है। अगर सौ पढे-लिखे लोग हो तो उनमे से एक भी अच्छा पढनेवाला होगा या नही राम जाने। मुझे पढकर सुनानेवाले को सस्कृत, मराठी और अग्रेजी ये तीन भाषाए तो अच्छी तरह से आनी ही चाहिए। इसके अलावा हिंदी भी करीब-करीब उतनी ही चाहिए। बाकी और भाषाए तो 'अधिकस्य अधिक फलम्' (जितनी आवे उतना अच्छा ही है)। लेकिन ऐसा पक्का माल मुझे कहा से मिलेगा और तैयार पक्का माल लेने की मुझे इच्छा भी नही है। कच्चे माल का पक्का कर लेना चाहिए। ग्रामोद्योग सघ की यह दृष्टि है और मैने भी यही उद्योग चला रक्खा है।

वजन बढ रहा है, यह सतोष की बात है। आहार जो कुछ चल रहा है, उसकी मुझे चिता नही है। उस बारे मे मातृ-देवता को प्रमाण माना जा सकता है। मानने मे हर्ज नही है।

मातृदेवता शब्द का मैने उपयोग किया है। अक्षरश, शब्दश, ऐसी ही मेरी श्रद्धा है। लेकिन इसका यह अर्थ नही है कि सत्य को अथवा सिद्धात को छोडकर केवल आसक्ति से मातृवाक्य को प्रमाण मान लेना। तेरी मा और तेरे बीच मे जो मजेदार झगडा होता है उसकी हकीकत, तुम दोनो ने बापू को जो पत्र लिखे है, उनमे आई थी। बापू ने मुझे वह पढने को दी। वह पढकर मुझे केवल मौज मालूम दी और कुछ नही। तेरी मा का स्वभाव अति चिता और आग्रह करने का है। लेकिन वह प्रेममूलक है और मामूली तौर से मा का हठ बेटी पूरा करे तो इससे कुछ बिगडनेवाला भी नही है। दरअसल तो जो छोटी-छोटी बातो मे आग्रह रखता है, वह बडी बातो का आग्रह रख भी नही पाता है। इसलिए छोटी बातो मे खीचातानी न करके उनके अनुकूल हो जाने मे ही मिठास और जीत दोनो मिलती है।

आश्रम की निदा तुझे सुनने को मिली यह अच्छा हुआ। आश्रम अगर

सचमुच पावन हैं तब तो निंदा करनेवालो को मोक्ष ही मिलनेवाला है। विरोधी भक्ति भी भक्ति का एक प्रकार ही है न ! आजकल बहुत-से देश-सेवको के विचार नास्तिकता की ओर झुक रहे हैं। किंतु मुझे तो यह नास्तिकवाद भी ईश्वर के अस्तित्व का नही, बल्कि उसकी क्षमाशीलता का एक प्रमाण ही प्रतीत होता है। कुछ नास्तिक कहे जानेवाले सदाचारी भी होते हैं। उनकी नास्तिकता केवल नाममात्र की, बिना विष के साप जैसी ही, समझनी चाहिए। भगवान बहुधा ऐसे ही सांप के मस्तक पर सोये रहते हैं। शेषशायी भगवान का यह एक अर्थ है।

तुम्हारी मा को प्रणाम।

विनोबा के आशीर्वाद

• ८७ •

वर्धा, २८-९-३५

चि० मदालसा

देवली का एक लडका था। वहा के आश्रम से उसका नित्य का परिचय था। वह जेल हो आया था और वहा की सारी सजाए भोग चुका था और टेक रखकर पास हुआ था। वह परसो यहा के दवाखाने मे गुजर गया। उसकी यह मृत्यु बोध-दायक है। वह अधिक पढा-लिखा नही था। बढईगिरी आदि कुछ कलाए उसे ज्ञात थी और व्यायाम का उसे शौक था। उसने और उसके मित्रो ने मिलकर एक व्यायाम-शाला खोली थी। वहा कुश्ती लडते हुए उसकी गर्दन की हड्डी टूट गई और शरीर का नीचे का और ऊपर का हिस्सा अलग-सा हो गया। गोपालरावजी उसे यहा के अस्पताल मे ले आये थे। उसके साथ उसकी सेवा के लिए उसके अनेक मित्र आये थे। आखिरी घडी तक इन मित्रो ने ही सेवा की। (उसकी) उम्र करीब २२-२३ साल की होगी।

एक दिन शाम की प्रार्थना आश्रम मे करने के बजाय अस्पताल मे उसके कमरे मे कर आया। गीताई के ५, ६ अध्याय उसे याद थे। बाबाजी (मोघे) के साथ याद करके वह उन्हे बोला करता था और उसी चिंतन मे उसने शरीर छोडा। मुझे देखकर उसे आनन्द हुआ और जब बडे उत्साह से वह बोला कि मैं अच्छा होने ही वाला हू, तब बालक गफलत मे न रहे

इस खयाल से, मैने कहा कि "अच्छा होना न होना यह तो भगवान के हाथ मे है। उसकी चिता हम क्यो करे।" तब वह बोला कि "कोई चिता नही। फिकर की क्या बात है ? कर्त्तव्य करने का अपना अधिकार है (और) फल उसके हाथ मे। अनासक्ति का आचरण करना यही अपना धर्म है।" बापू जब उससे मिलने आये, तब बापू से उसने कहा–"आत्मा अमर है। शरीर मरने ही वाला है। जीऊगा तब भी सेवा करूगा और मरूगा तब भी सेवा ही करूगा।" उससे जब यह पूछा गया कि किसीको कोई सदेश देना है, तो उसने जो सदेश दिये वे भी बोधप्रद है। पत्नी को सदेश मिला कि "दूसरा विवाह करले और आनन्द से रह।" मित्रो को सदेश मिला कि "मेरा ऐसा (हाल) हुआ यह देखकर कुश्ती लडना न छोडे। छोड देने का कोई कारण नही है।" बालक ज्ञानी था मुझे यह सूचित नही करना है, अथवा मुझपर वैसी छाप भी नही पडी है। लेकिन वह निर्भय, श्रद्धालु और सेवा-परायण अवश्य था और उसकी यह इस तरह की मृत्यु दु खान्त प्रतीत नही हुई, पर सुखान्त ही दीख पडी है।

वास्तव मे मृत्यु तो भगवान की ही देन है। जब नजदीक-से-नजदीक के सगे-सम्बन्धी, मित्र, अनुभवी जानकार कोई भी दु ख से नही छुडा सकते तब वह छुडाता है। मृत्यु के जो दु ख माने गए है, वे वास्तव मे जीवन के दु ख है। रोग आदि के कारण जो दु ख होते है, वे मृत्यु के नही अपितु जीवन मे जो असयम होता है, उसके फल है। मृत्यु तो उसमे से छुडाता है। मृत्यु का उससे कोई सम्बन्ध नही है। इसलिए बेमतलब मौत के माथे मढे हुए ये शारीरिक दु ख, अगर कम कर दिये जाय तो फिर दो तरह के दु ख शेष बचते है। एक पूर्व पापो की स्मृति से होनेवाले, और दूसरे आसपास के लोगो को छोडना होगा, इस आसक्ति के कारण होनेवाले। पहले के लिए मृत्यु की क्या जिम्मेदारी ? वह तो जीवन मे किये हुए पापो का फल है। और दूसरे मोहजनित है। अगर हमारा प्रेम सच्चा होगा और सेवा करने की तडपन होगी तो देहत्याग के कारण हम मित्रो से दूर न जाकर अधिक नजदीक पहुचेगे। एकदम उनके भीतर प्रवेश कर सकेगे। जबतक देह का परदा खडा था तबतक चाहे जो उपाय करके भी हम इतने अदर नही जा सकते थे। कितनी ही गहरी सेवा करके भी वह ऊपर-ऊपर की ही होती

थी। पर अब देह का परदा दूर हो जाने से दूसरे की अतरात्मा मे घुल-मिलकर उसकी सेवा की जा सकती है ।

लेकिन सेवा करनी हो तबकी यह बात है, अर्थात् इसके लिए निष्काम-भाव चाहिए। (अब) एक दु ख और बचता है, लेकिन वह मृत्यु की वजह से नही, बल्कि हमारे अज्ञान के कारण है। मृत्यु के बाद क्या होगा कौन जाने ? लेकिन अपने मन की सद्वासना के विरुद्ध मृत्यु के बाद कुछ होने ही वाला नही है। और अगर वह कुवासना ही हुई तब तो जो कुछ बुरा होगा, वह उस कुवासना का ही फल होगा, ऐसी श्रद्धा अर्थात् भगवान् की न्याय-बुद्धि पर श्रद्धा हो तो वह काल्पनिक भय भी टल जायगा। इसका साराश यह हुआ कि कुल दु ख चार प्रकार के है . (१) शरीर वेदनात्मक, (२) पाप-स्मरणात्मक, (३) सुहृन्मोहात्मक (४) भावी चिंतात्मक ।
और इनके उपाय क्रमश ये है

(१) नित्य सयम (२) धर्माचरण (३) निष्कामता (४) ईश्वर के प्रति श्रद्धा ।

आज एक निमित्त से मरण-विषयक ये विचार लिख डाले है। इसमे और कोई मुद्दा विचार करने का रह जाता हो या कोई शका उत्पन्न होती हो तो पूछना ।

तेरी मा को भी यह पत्र देखने को मिल ही जायगा। मरण का निरतर स्मरण करना, बुद्धि को मरण-चर्चा करके नि शक रखना, और रोज रात को सोने के पहले मरण का अभ्यास करना, ऐसी तिहेरी साधना करते रहना चाहिए। पहली बात गीता के १३वे अध्याय के ज्ञान-लक्षणो मे दी गई है। उसपर ज्ञानदेवजी की टीका बहुत सुस्पष्ट है। दूसरी बात दूसरे अध्याय के आरम्भ मे ही आगई है और तीसरी आठवे अध्याय मे है ।

बस, आज इससे ज्यादा नही लिखता हू। यहाके समाचार इस बार 'आश्रम-वृत्त' मे अच्छी तरह दिये गए है। हिमालय के सान्निध्य का पूरा लाभ लिये बगैर नीचे उतरने की जरूरत नही है। प्रात कालीन उपनिषद का पाठ बहुत अच्छा चल रहा है। गाव मे से तीन-चार प्रेमीजन आते है। और तो कहनेवाला क्या जानता है, यह तो हरी ही जाने ।

"आश्चर्यो वक्ता कुशलोऽस्य लब्धा
आश्चर्यो ज्ञाता कुशलानुशिष्टः"

विनोबा के आशीर्वाद

: ८८ :

वर्धा, २६-१०-३५

चि० मदालसा,

विस्तृत पत्र लिखने की आशा मे रहकर तू छोटा पत्र भी नही लिख पाती है। इसलिए विस्तृत पत्र जब भगवान लिखावेगे तब लिखेगे, ऐसा समझकर नियमित रूप से स्वास्थ्य की एव अन्य जानकारी का सक्षेप मे एकाध कार्ड भेज दिया करो तो भी चलेगा।

इधर की बहुत-सी जानकारी 'आश्रम-वृत्त' द्वारा ही दी जा सकती है। 'आश्रम-वृत्त'-सम्वन्धी पत्र-व्यवहार अब मै खुद देखने लगा हू और सबका सकलित सम्पादन दत्तोवा करेगा। वालकोवा अहमदावाद गया है, क्षय-चिकित्सा के लिए, यह शायद तुझे विदित हुआ होगा। सेवा के लिए साथ मे सूर्यभान और बाबाजी है। वालकोबा का क्षय वहुत आगे वढा हुआ नही है, प्राथमिक ही है। लेकिन मै देखता हू कि वह प्राथमिक हो या प्रगति पर, वालकोवा को उसकी तनिक भी परवा नही दीखती। देह का क्षय हो भी रहा होगा, फिर भी उसकी आत्मा की वृद्धि ही देख रहा हू। एक साधु की एक कहानी वताते है—सम्भव है, काल्पनिक ही हो, पर उससे हमें क्या करना है। बात यो है कि उस साधु के पाव के घाव मे कीडे पड गये थे। उसमे से एक कीडा सरसर करते-करते वाहर निकल आया। उसने उसे उठाकर फिर से उस जखम मे डाल दिया और उस कीडे से वोला "मूर्ख, अपना आहार क्यो छोड रहा है ?"

हमे इस कथा का अक्षरार्थ नही लेना है। ज्ञानी के पैर मे जखम हो सकता है क्या ? और ऐसा आचरण उचित समझा जायगा क्या ? इस तरह से बहस भी नही करनी चाहिए। तुकाराम महाराज का कहना है कि सार ग्रहण करो। यहा सार इतना ही लेना है कि शरीर भिन्न है और मै भिन्न हू। यद्यपि मेरे कर्त्तव्य देह से सम्वद्ध माने जायगे, फिर भी देहबद्ध नही है। सूक्ष्मरूप से देखा जाय तो वे देह से सम्बद्ध है भी नही। सम्बद्ध

और बद्ध इनमे क्या फर्क है, यह तुम समझती हो, ऐसा मानकर चलता हू। यह सब गीता के १३वे अध्याय मे आया है। वह ध्यान मे होना कठिन नही है। हा, तदनुसार जीवन की रचना करना अवश्य कठिन है। परन्तु पहले समझ मे आ जाय तो धीरे-धीरे जीवन भी उस तरह से रचा जा सकता है।

नामदेव को बुनाई के लिए सावली भेजा है। उसका हाल ही में मुझे एक पत्र मिला है। उसको अभी लिखना-पढना भी मामूली-सा ही आता है, यह तुझे मालूम ही है। उसका पत्र मै तेरे देखने के लिए भेज रहा हू। उसे पढकर लौटा देना। मैंने उसे जो पत्र लिखा था, उसमें कहा था कि विन्या का हाथ कताई से और नामदेव का हाथ बुनाई पर से कभी भी न सरके। इससे (पत्र का) सदर्भ समझने मे मदद होगी।

सच्चा आरोग्य प्राप्त होने के साथ वृत्ति भी निर्विकार होने लगती है और वृत्ति के निर्विकार होने से शरीर में आरोग्य प्रकट होने लगता है। इसलिए आरोग्य केवल शारीरिक अथवा स्थूल वस्तु है, ऐसा नही मानना चाहिए, बल्कि वह आत्मिक और सूक्ष्मतम है, यही समझना चाहिए। गीता में सत्वगुणो के लक्षणो मे वह ज्ञान व आरोग्य बढाता है, ऐसा कहा गया है। इससे यह ध्यान मे आता है कि एक ही सत्वगुण का यह दुहेरा परिणाम है। ज्ञान, आरोग्य और सात्विकता तीनो अदर से एकरूप ही है। यह तिहेरी एकरूपता मदालसा को प्राप्त हो, ऐसा मै भगवान से कहता रहता हू। बाकी तुकोबा (सत तुकाराम महाराज) का कहना भी सच ही है—

"नाहीं देवापाशी मोक्षाचें गाठोडें।
आणूनी निराळें घ्यावें हातीं।
इंद्रियाचा जय साधूनियां मन।
निर्विषय कारण असे तेथें।"

इसमे प्रथम चरण का अर्थ तो स्पष्ट ही है कि भगवान के पास मोक्ष की गठडी नही रक्खी है कि जो अलग से लाकर हाथ मे दे दी जाय। दूसरे चरण का अर्थ यह है कि इन्द्रियो को जीतकर मन को निर्विषय करना इसका साधन है अर्थात् प्रयत्नवाद पर जोर दिया है। पर प्रयत्न-वाद और हरि-शरणता दोनो एक ही है। देखो गीता—

अध्याय २ श्लोक ५९ से ६१, अध्याय ३ श्लोक ४१ से ४३, अध्याय ४ श्लोक ३८, ३९; अध्याय ५ श्लोक २८, २९, अध्याय ६ श्लोक ४६, ४७, अध्याय ७ श्लोक १, २९; अध्याय ८ श्लोक ७, १०, अध्याय ९ श्लोक १३, १४, २७, २८, अध्याय १२ श्लोक १४, अध्याय १८ श्लोक ४६, ५०, ७८। इन सब श्लोको का अभ्यास करके अर्थ ध्यान मे लेना। बस, आज इतना काफी है।

विनोबा के आशीर्वाद

· ८९ .

देवली, १६-१-३६

चि० मदालसा

गणित के सवालो मे चित्त तन्मय होता है, यह बहुत अच्छा है। पर हरेक सवाल को उपपत्ति के साथ हल करना चाहिए। केवल सवाल हल होने से काम नही चलता। हरेक सवाल के साथ उपपत्ति के चिंतन के साथ एक जैसे ५-२५ सवाल कर लेने के बाद वह उपपत्ति चित्त मे जम जाती है, फिर उसके चिंतन की आवश्यकता नही रहती।

व्याकरण थोडा-थोडा होने से भी चलेगा, पर वह रोज होना चाहिए। भगवान बुद्ध का एक श्लोक है —

"असज्झाय मला मंता
अनुट्ठान मला घरा।"

जैसे घर रोज़ न झाडने से मलिन होता है, वैसे ही रोज स्वाध्याय न करने से मत्र मलिन होते हैं। अध्ययन को रोज ताजा करते रहना चाहिए। मैंने मन से क्या पढा, इसका एक-एक दिन का, फिर एक-एक सप्ताह का या पखवाडे का या बाद मे महीने का या वर्ष का, यो उत्तरोत्तर निरतर चिंतन और स्मरण करते जाना चाहिए। मै आज भी १५-१५, २०-२० साल पहले के विषयो का चितन करता हू। कुछ चितन औरो को सिखाने से अपने-आप हो जाता है, और कुछ अपनेको ही करना पडता है। 'चिंतने चितने तद्रूपता।' जो इस प्रकार चिंतन मे मग्न हो सकता है, उसके लिए विश्व मृगजल के समान है अथवा उसके चिंतन की ही बुवाई है।

अभ्यास करते हुए जहा कोई दिक्कत आये उसे नोट कर लेना चाहिए और पत्र मे पूछ लेना चाहिए। कल मै यहा से निकलूगा। नागझरी ठहरता हुआ खानदेश जाऊगा। हमारा कातना शातरूप से और व्यवस्थित चला है। पूनी का क्या प्रबन्ध होगा, इसकी मुझे भी चिंता रहती ही है। आज मै कातने पर अधिक ज़ोर दे रहा हू—मेरे अपने लिए उतना ही मुझे पीजने पर भी देना होगा, यह सम्भव है। इसकी मैने कल्पना कर रक्खी है। पिजाई का महत्व तो स्पष्ट ही है, लेकिन जिस तरह से कातना हरेक के लिए यज्ञरूप है, वैसे ही पीजना यज्ञरूप मानने के मार्ग मे अनेक दिक्कते है। और सबके लिए वह सधने जैसा नही है। यह भी सच है।

विनोबा

• ९० •

खेडी, २-२-३६

चि० मदालसा

तुम्हारी मा को नालवाडी के बारे में नाराजी प्रतीत हुई है। वह सकारण हो तो रोज नालवाडी आने की आवश्यकता नही है। मेरी आशा के विपरीत, तेरा क्या चला है, यह मै नही जानता। नम्रतापूर्वक, निश्चित बुद्धि से, किसी के व्यर्थ के दबाव मे न आते हुए, तेरा व्यवहार चलता रहे, इससे अधिक मेरी कोई अपेक्षा नही है। अभ्यास मे या और किसी बात मे तन्मय हुए बगैर उसके आनन्द का अनुभव नही हो सकता। इसलिए जो कुछ करो, तन्मयता से करो। अब स्वास्थ्य ठीक होगा, ऐसी मै आशा रखता हू। जिस देहात से मै यह लिख रहा हू वह छोटा-सा ३५ घरो का गाव है। गाधी-चौक जैसी रचना है। किसी बहुत बडी हवेली-सा मालूम देता है। कल शाम की प्रार्थना मे गाव के आ सकनेवाले करीब सभी स्त्री-पुरुष आये थे, ऐसा कहा जा सकता है। ऐसे गाव में काम करने की अच्छी सुविधा होती है। दो-चार व्यक्तियो की सेवा करने से ही सारे गाव पर उसका सहज असर हो जाता है। कल मैंने एक सूत्र बनाया है। सेवा व्यक्ति की, भक्ति समष्टि (समाज) की। इसका अर्थ तू खुद समझ ले।

विनोबा

: ९१ :

समय १ घटा खादी निवास, अनतपुर, ९-२-३६

चि० मदालसा

तुम लोग बम्बई गये हो, ऐसा वल्लभस्वामी का पत्र था। यहा की मुख्य जानकारी तो खादी के बारे में है, लेकिन वह आज नही लिखता। बाकी और थोडा वर्णन लिखता हू। लेखन आदि के लिए यहा आज ही थोडा वक्त निकल पाया है। इसके पहले आसपास के गावो मे घूमना और देखना रहता था। उसमे से थोड़ा-सा ही समय निकालकर जरूरी पत्रो का उत्तर देने के अतिरिक्त अवकाश ही नही था।

पहली बात मोटर का अनुभव है, जो मुझे इसके पहले नही आया था। ऐसी बातो मे कुल मिलाकर मै बहुत ही पिछडा हुआ हू, यह कबूल कर लेना चाहिए। मोटर मे कायदे के अनुसार १८+२ आदमियो के बैठने की जगह थी। मेरी व्याख्या के अनुसार १४+२ आदमियो का ही बैठना उचित था। इसके बजाय आदमी थे २८+२। २ का मतलब है एक मोटर चलानेवाला और एक उसका सहायक। उसमें भी मेरे आस-पास बैठे हुए तीन व्यक्ति कभी बारी-बारी से तो कभी एक साथ धूम्रपान कर रहे थे। हमे लिवाने के लिए आया हुआ आदमी भला, भोला और फूहड-सा था। उसके इतजाम मे दखल देना मुझे ठीक नही लगा। लेकिन अनुभव बढिया मिला। यद्यपि इस तरह से लोगो मे बैठने की मुझे चिढ है, फिर भी बैठने के बाद सबके विषय मे ईश्वरीय भावना रखकर आनन्द का उपभोग लेने की दूसरी वृत्ति भी है, इसलिए सबकुछ मीठा हो गया।

यहा एक बात खास ध्यान मे आई कि स्त्रियो की और पुरुषो की प्रतिदिन की मजदूरी एक-सी, इन दिनो ६ पैसे है। पर दूसरी जगह ऐसा मेरे ध्यान मे नही आया। स्त्रिया पुरुषो से कम काम करती है, ऐसा अनुभव तो कही भी नही हुआ, बल्कि कुछ अधिक ही करती है, ऐसा अनेक जगहो का अनुभव है सही। अधिक जोरदार काम के लिए इधर अधिक मजदूरी देते है, अर्थात ऐसे काम पुरुष ही करते है पर यह ज्यादा मजदूरी पुरुष की नही, बल्कि उस काम की समझनी चाहिए।

पर यह स्त्री-पुरुषो की समता अपने (यहा के) खादी-कार्यकर्ताओ

मे जरा भी नही है। सव स्त्रियो को कार्यकर्त्ताओ ने अपने कार्यक्षेत्र से वाहर सम्भालकर रख दिया है, मानो सव प्रकार के ज्ञान से और कौटुविक भार-वहन छोडकर अन्य सव प्रकार की सेवाओ से, पूर्णतया वचाकर वेचारियो को केवल गहनो से लादकर अलग रख छोडा है। यहा सामुदायिक प्रार्थना तक नही होती, इसलिए उसमे भी स्त्रियो के आने का सवाल नही रहता। अभी तक इतने दिनो मे मै वहनो से वोल नही पाया हू। अव आज दोपहर को उनके लिए समय रखा है। छ जनी है। उनमें भी अलग-अलग दिशाओ की ओर उनके मुख है।

लेकिन इस सामाजिक वर्णन को छोडकर हम फिर जरा निसर्ग की ओर लौट जाय। एक ही तालुका के किसी हिस्से मे चावल, किसी हिस्से मे ज्वार-कपास तो किसी हिस्से मे गेहू-चना ऐसी विविधता है। और अनतपुर के समीप तो ये सारी चीजे होती है। इनके अलावा गरीवो का 'कोदो', 'कुटकी' 'तेखा' आदि भी हैं। 'तेखा' एक तरह की दाल है। रद्दी चीज़ है। सवसे सस्ती होने की वजह से गरीव की तो वही मा है। उसीकी रोटी वनाकर ये खाते है। आरोग्य की दृष्टि से केवल दाल की रोटी को अत्यन्त हानिकारक समझना चाहिए। दाल एक 'द्विदल' धान्य है और वतौर द्विदल धान्य के ही उसका उपयोग होना चाहिए, वल्कि मुख्य अनाज के नाते उसका उपयोग किया जाना आयु-घातक समझना चाहिए।

मेरा आहार यहा दूध, खजूर और टमाटर का है। खजूर यहा का स्थानिक नही है। इसलिए इन दिनो मै लेना नही चाहता, लेकिन यहा केले अच्छे नही मिलते, इसलिए उसे रखा है। फिर भी यहा के धान्य का भी अनुभव लेना चाहिए, इसलिए दोपहर को 'तेखा' आदि लेता हू। अव कोदो आदि भी लेंगे। इनके साथ दूध वगैरा तो सदा की भाति रहता ही है।

कार्यकर्त्ताओ की स्त्रियो के खयाल से प्रार्थना रखनी हो तो सायकालीन भोजन वनाने के कारण वे कैसे एकत्रित हो सकेंगी, यह सवाल उठा था। उसका जो जवाव देना था, वह मैंने दिया। लोग समझदार है, इसलिए ध्यान से सुन लेते है। लेकिन ऐसी कोई भी दिक्कत यहां होने का तो कारण ही नही होना चाहिए। गाय के दूध का भाव यहा एक रुपये का ३२॥

रत्तल है। इतना सस्ता भाव होने की वजह से आहार मे मुख्यत दूध का ही समावेश किया जा सकता है। कम-से-कम सायकालीन भोजन पकाने की झझट तो मिट ही सकती है। दोपहर को घी डालकर रोटी बनाकर रख ली जाय तो वह शाम को चल सकती है। इसके अलावा दूध, कच्ची सब्जी और सतोष, ये कम-से-कम शाम के एक समय के लिए तो पर्याप्त है। वास्तव मे तो ये जन्म भर के लिए पर्याप्त है। गाय का घी सस्ता है। रुपये का एक सेर (याने १०० तोला)। बेर पावोतले बिछे रहते हैं। उनकी सब्जी चाहे जितनी बन सकती है, पर बनाते नही है। अमरूद रद्दी है, लेकिन भरपूर है। गुड दो तरह का है। एक गन्ने का और दूसरा गन्ने के ही भाई-बध का, जिसे पानी देने की जरूरत नही होती। यह गुड अच्छा है। उसमे कचरा कुछ ज्यादा होता है सही, पर कचरा तो हमारे जन्म का साथी है, इसलिए कोई बात नही।

जिस तरह से भैसे गदगी मे सोती है, उसी तरह से जमीन पर गदगी में आराम से स्त्रियो और पुरुपो को सोते हुए देखता हू। सबका मुख्य कार्यक्रम निद्रा का है। सुबह सब सुनसान रहता है। यह हमारी प्रार्थना के लिए उपयुक्त है। आटा घर पर ही पीसना पडता है, क्योकि इधर अभी 'मिल' नही आई है, लेकिन वह पिसाई दोपहर को होती है। सूर्योदय के बाद उठने-वाले बहुत लोग दिखाई देते है। नीद पूरी हो जाने के बाद आलस्य का कार्य-क्रम शुरू होता है। दोनो मे से बचा हुआ समय काम मे लगाना ही पडता है पर उसमे मन नही होता। गीता मे तमोगुण का वर्णन है, उसका अक्षरश दर्शन दो जगहो में ही मिलता है। एक तो अमीरी के उस किनारे और दूसरा दरिद्रता के इस किनारे। एक है लक्ष्मीनारायण और दूसरा है दरिद्र-नारायण। दोनो है निद्रा-परायण। शेष-शायी हमारा अतिम आदर्श है न?

यहा के जूतो में एक खास तरह का सौदर्य है। एक नमूना इस्तेमाल करने के लिए लिया है। जमनालालजी ने भी लिया था, कहते है। उनसे वर्णन सुनने को मिलेगा।

घरो की दीवारे पत्थर की पपडी—चिपो की है। एक पर एक चिपे रखते है। बीच मे चिपकने के लिए मिट्टी। यह मिट्टी बरसात से बह

जाती है । पर एकदम अदर थोडी-थोडी रहती है । बाहर से एक के ऊपर एक पत्थर रख दिये हो, ऐसा दीखता है ।

चिलम पीने मे लोग स्वावलम्बी है । अनेको के घर के आगन में तुलसी और तमाखू एक साथ पनपती हुई दिखाई देती है । गृह-उद्योग मे धान कूटना, चक्की पीसना और चाहे तो भोजन पकाना कहा जा सकता है । चावल दलने की चक्किया सुन्दर है । मिट्टी की होती है । कीचड मे थोडी घास मिलाकर बनाई जाती है । चार-पाच खडी चावल दल लिये तो चक्की चकनाचूर हुई । ज्यादा के लिए नई बना लेते है । चक्की के नीचे का पाट मिट्टी का ही होता है । करीब दो इच मोटा तो जमीन मे गाडा हुआ होता है । ऊपर का करीब एक बालिश्त मोटा होता है । उसका आकार उलटी टोकनी के जैसा होता है ।

यहा एक कार्यकर्त्ता की बहुत-सी पुस्तके है, उन्हे पलटकर देखा । उनमे 'रघुवश-कथा' नामक मराठी पुस्तक नई देखी । 'भारत गौरव-ग्रथ माला' की है और कर्नाटक प्रेस, बम्बई की छपी है । कीमत १। रुपया । रघुवश की सारी कथा सक्षेप मे मराठी गद्य मे दी है । तू रघुवश पढ रही है, इसलिए उल्लेख किया है । सारी कथा थोडे मे मालूम हो जाती है ।

मैं १४ या १५ को वर्धा पहुचने की आशा रखता हू । शकररावजी के साथ मे रहने का अच्छा उपयोग हुआ है । यहा के बुनाई के काम को मदद मिली । यहा तात बैल की पीठ के चमडे की बनाते है । यह बनाना शकररावजी ने सीख लिया है ।

विनोबा के आशीर्वाद

: ९२ :

आश्रम, वर्धा, २६-३-३६

चि० मदालसा

काकाजी के साथ रहने का तय किया, यह बहुत ठीक हुआ । फिलहाल उन्हीके साथ रहो तो हर्ज नही है । विचारो मे जो गोलमाल होता है, वह विकारो का निदर्शक है । वह विवेक से, सयम-शक्ति से और भक्ति से मिटनेवाला है । और यह सब सुयोग्य सत्सग से ही साध्य हो सकता है । काकाजी के साथ रहने मे ऐसी सगत भी मिलेगी और मन को लगाये रखने

के लिए भरपूर काम भी मिलेगा। ऐसे एकाव काम की जिसे धुन लग जाय उसकी बहुत-सी बाते अपने-आप जमती जाती है। मै ता० २१ को यहा आया। इस बार वेरूळ की गुफाए देख आया। उन्हे देखते-देखते ज्ञानदेव महाराज ने गीता की गुफा का जो रूपक रचा है, वह आखो के आगे खडा हो गया और दोनो की अद्भुतता का प्रत्यक्ष दर्शन हुआ। साथ ही इन दोनो का निर्माण जिस हमारे देश मे हुआ है, उसके रहनेवाले भी हम धन्य हैं, इसकी प्रतीति हुई। भुसावल मे वत्सला के विवाह मे उपस्थित होकर अब यहा आ गया हू।

"आतां अविवेक कुमारत्वा मुकले।
जया विरक्तीचें पाणिग्रहण झाले।।"

—अव अविवेक रूपी कुमारावस्था से (वह) मुक्त हो गई है और उसने विरक्ति का पाणिग्रहण कर लिया है।

विनोबा के आशीर्वाद

: ९३ :

गुरुकुल कागडी, १३-४-३६

चि० मदालसा

लखनऊ का ता० ३ का और कानपुर स्टेशन से ता० ८ का लिखा हुआ, ये दोनो पत्र आज यहा मिले। इसके अलावा पहले के एक पत्र की पहुच भी देना बाकी थी। सो तीनो पत्रो का यह उत्तर है।

'आर्य प्रतिनिधि सभा' के अर्द्धशताब्दी महोत्सव के निमित्त होनेवाली परिपद में, ब्रह्मचर्य-सम्मेलन की अध्यक्षता करने के लिए मैं लाहौर आया था। अब यहा गुरुकुल मे कुछ दिन रहकर और खादी का थोडा काम देखकर २२ ता० के करीब वर्धा पहुचने का इरादा है। उस समय तुम लोग वहुत करके वर्धा होओगे ऐसा अदाज है। चित्रकूट वगैरा देखने का मौका साध लिया, यह अच्छा ही किया। इस तरह से सहज-प्राप्त अवसर का उपयोग कर लेना लाभदायी होता है। लेकिन उसमे केवल मनोरजन की भावना नही होनी चाहिए। यो मनोरजन तो अपने-आप हो ही जाता है। चित्रकूट का दर्शन अर्थात् राम का ही दर्शन है। रामचन्द्रजी किसी काल मे हो गये है, इतना ही नही, बल्कि आज भी उन्हे हम देख सके तो दिखाई दे सकते हैं।

वे अपने हृदय मे ही विराजमान है। यह बात ध्यान मे आने के लिए चित्रकूट के समान स्मारक स्थानो का दर्शन अवश्य उपयोगी हो सकता है।

विनोबा के आशीर्वाद

• ९४ .

फैजपुर, २७-१०-३६

मदालसा,

विष्णु-सहस्रनाम, तुलसी, गगाजल इत्यादि सब वस्तुए हम हिन्दुओ के लिए मन का मैल धोने के लिए उपयोगी है। मुझपर भी उनका विलक्षण परिणाम होता है। वह क्यो होता है, यह नही कहा जा सकता। होता है सही। इसीलिए हम 'हिन्दू' कहलाते है।

विनोबा

• ९५

नालवाडी (वर्धा) ५-२-३८

मदालसा

तेरे पत्र मे अशुद्ध मराठी भाषा देखकर अच्छा नही लगा। इसलिए यह लिख रहा हू। 'एकै साधे सब सधे, सब साधे सब जाय', यह अनुभव मैं अनेको के बारे मे देखता हू। उसमे से जो बात एक बार हम सीख ले, उसे आगे बढावे। या कम-से-कम वह भूल न जाय, इतनी खबरदारी तो लेनी ही चाहिए, नही तो होगा यह कि नया सीखते जायगे और पुराना भूलते जायगे।

विनोबा

९६

पवनार, २४-३-३८

मदालसा,

तूने हारमोनियम शुरू किया है, यह पढकर ही मेरे कान मे भनभनाहट होने लगी। यद्यपि मुझे हारमोनियम रद्दी वाद्य मालूम देता है, फिर भी यह सच है कि फेशनेबल लोगो मे इसकी मान्यता है। हारमोनियम, फ्रेंच और सिलाई का काम, यानी उत्तम सुशिक्षित महिला, ऐसी व्याख्या टाल्स्टाय ने

की ही है। लेकिन कुछ भी करे तो भी तू उस आदर्श तक पहुच सकेगी, ऐसे लक्षण मुझे नही दिखाई देते ।

जानकी अम्मा को प्रणाम।

विनोबा

. ९७ :

पवनार, ३-४-३८

मदालसा,

तेरी मा मे अतिचिता करने का दुर्गुण है, इसलिए बात ज्यादा बिगडती है, ऐसा मुझे लगता है। तुझमे भी दृढ निश्चय व हिम्मत न होने की वजह से बात बढ जाती है। बचपन मे मै कभी भी किसीकी परवा नही करता था। आज भी करीब-करीब वैसा ही है। मेरी मा ईश्वरनिष्ठ थी, इसलिए सेवा करती थी, पर अतिचिता नही करती थी । मुझपर उसका विश्वास भी असाधारण था। इसलिए तेरे जैसा अनुभव मुझे नही हुआ। ऐसी स्थिति मे मै तुझे क्या सात्वना दे सकता हू।

विनोबा

९८ :

पवनार, २९-११-३९

चि० मदालसा,

तेरा एक पत्र मिला था। उसे बहुत दिन हो गये। उसके बाद फिर मौन क्यो ?

वहा इलाज तो होरहा होगा। उसके साथ आरोग्यकारक आचार के नियम समझ मे आजायगे। उनका पालन करने से नित्य का लाभ हो सकेगा।

विनोबा के आशीर्वाद

९९ .

पवनार, २२-१-४०

चि० मदालसा,

दु.ख मे भी ईश्वर-स्मरण न हुआ तो बिचारा दु ख व्यर्थ गया कहना चाहिए। सुख मे उसकी याद रहे तो दु ख का प्रसग ही कम आयेगा।

विनोबा

१०० •

पवनार, १३-१०-४०

चि० मदालसा,

मैं यह रात को १ बजे लिख रहा हू । मेरी सत्याग्रह की तैयारी हो रही है । आज पत्रो को निपटा रहा हू ।

पतिव्रता के आदर्श के विषय मे तेरा प्रश्न समझ मे आया । हमारे शास्त्रो मे जो आदर्श बताया है, वह मुझे ठीक लगता है । पति और पत्नी दोनो का ही 'दरजा' समान है । परस्पर एक दूसरे के व्रतो मे लीन होना है । 'पतिव्रता' शब्द के अनुसार 'पत्नीव्रत' ऐसा शब्द भी है ही । व्रत और है तथा मत और है । पति का अथवा पत्नी का मत हो कि दारू पी जाय तो परस्पर एक-दूसरे को उस काम मे मदद देनी चाहिए, ऐसी बात नही है, उल्टे विरोध करना चाहिए और एक-दूसरे के व्रतो मे परस्पर सहायता देनी चाहिए ।

"पतीचिया व्रता । अनुसरोनि पतिव्रता ।
अनायासें आत्महिता । साधे जेवीं ।"

—पति के व्रत का अनुसरण करके पतिव्रता सुलभता से आत्महित साध लेती है ।

यह ज्ञानदेवजी की ओवी है । इसमे 'मता' यह गलत पाठ इन दिनो रूढ हो गया है ।

स्वास्थ्य अच्छा रक्खो । नियमितता जितनी सध सके उतनी साधी जाय । भगवान की भक्ति और एकाध बाह्य नियम के रूप मे सूत कातना, इतना अवश्य पालन करो ।

विनोबा के आशीर्वाद

• १०१

नालवाडी, १४-७-४१

मदालसा,

बाल-राम का या बालकृष्ण का ध्यान करना चाहिए ।

हवा मे सारे शब्द फैले हुए है ही । रेडियो अपने घर पर हो तो वे शब्द हमें प्राप्त हो सकते है । जो चाहे सो । इसी तरह हवा मे सब लोगो

के सारे विचार भी फैले हुए है। मानसिक रेडियो—अर्थात् सम-विचार की उत्सुकता—के द्वारा वे हवा में फैले हुए विचार ग्रहण किये जा सकते है—जो चाहिए सो।[1]

विनोबा के आशीर्वाद

(हिन्दी मे)

: १०२ :

सिवनी जेल, १४-९-४४

चि० मदालसा,

तेरा आकुलता-भरा पत्र मिला। उसका उत्तर देना इस समय सम्भव हो रहा है, यह एक अनपेक्षित घटना है।

तू व्याकुल मत हो। तेरी भगवान पर श्रद्धा है, उसीको उत्तरोत्तर सुदृढ करती रह, तो सवकुछ शुभ होनेवाला है। चचल मन वहुत छल करता है, यह सही है, लेकिन तू उस मन से अलग है। तू निश्चल है। तुझे छलने की ताकत सचमुच उस मन मे नही है, किन्तु यह ज्ञान भी भगवान की कृपा से ही होनेवाला है। इसलिए नित्य उसीको प्रेम से पुकारा करे। यही तेरा, मेरा और सबका काम है।

हाल ही मे तामिल की एक सुदर कविता मेरे पढने मे आई, उसमे कहा है .

"सारी दुनिया विरोध मे खडी हो जाय। चित्त की सारी आकाक्षाए निष्फल हो जाय। चाहे माथे पर आसमान फट पडे। भय नही है। भय नही है। भय नही है।"

---

[1] मदालसा को बच्चा होनेवाला था, उस अवस्था में उसने विनोवाजी से नीचे लिखे प्रश्न पूछे थे। उनके उत्तर में उपरोक्त पत्र लिखा गया।—सं०

(१) इन दिनो में कौन-से विचार और किसका ध्यान मुझे विशेष रूप से करना चाहिए ?

(२) दूर रहकर भी समीप रहने का अनुभव किन विचारो द्वारा मिलेगा ?

(सत) तुकाराम ने अपना अनुभव एक अभग में इस प्रकार ग्रथित किया है—

"जे काहीं करितो तें माझें स्वहित।
आली हे प्रचीत कळो चित्ता॥"

—(भगवान) तू जो कुछ करता है, वह मेरा स्वहित है, उसीमे मेरा भला है, इसका अनुभव मेरे चित्त ने पा लिया है।

यही मेरा भी अनुभव है, और अनेको का है।

साथियो को मैं क्यो नही लिख सकता हू, यह सहज ही तेरी समझ मे आने जैसी वात है। सवका स्मरण तो मुझे हमेशा ही होता रहता है। उसे मैं अपनी ईश्वर-प्रार्थना का भाग ही समझता हू।

विनोवा के आशीर्वाद

: १०३ .

परधाम, ५-१२-४५

चि० मदालसा,

तुझे या किसीको भी लिखने मे मुझे आजकल एक आनन्द यह मिलता है कि मेरे लिपि-सुधार का प्रचार होता है।

महादेवी को इन दिनो 'केकावली'[1] की केकाए समझाता हू। केकाओ की कल्पना यह है कि केका याने मोरो का मेघो के लिए कूकना—पुकारना। आर्त्तभाव से जब मनुष्य मोर की तरह पुकार उठता है तव उसपर भगवान 'मेघ की तरह' कृपा करते है। यह भक्तो की सदा की प्रक्रिया है। अगर कोई पूछे कि इस तरह (व्याकुल होकर) पुकारने के लिए ईश्वर क्यो मजबूर करते है तो उत्तर नही देते, चुप रहते है। सच पूछो तो मनुष्य के हाथो जो गलतिया होती है, वे ही रोने-चिल्लाने के लिए मजबूर करती है। उसमे अनुताप के मिलने से वही 'भक्ति' वन जाती है। भक्ति से ध्यान होता है। ध्यान से गलतिया नही होती। गलतियो से सदा के लिए छुटकारा हो जाता है। यही मोक्ष नही है क्या ?

विनोवा के आशीर्वाद

---

[1] मराठी के प्रसिद्ध कवि मोरोपत का कविता-संग्रह।

१०४.

परधाम, १८-११-४५

मदालसा,

बाल-लीला देखने मे और उसके द्वारा ईश्वर स्वरूप का ग्रहण करने मे नि सशय अपार आनन्द है। उसकी बराबरी वह बिचारा सिनेमा क्या करेगा ? बालक का मन योगी के लिए भी अभ्यास का विषय है। ऐसी दृष्टि प्राप्त होने से प्रत्येक माता को योगिनी ही होना चाहिए।

विनोबा के आशीर्वाद

. १०५

परधाम, २०-१२-४५

चि० मदालसा,

तेरी ठीक परीक्षा हो रही है। ईश्वर का जो अधिक लाडला होता है उसकी वह अधिक परीक्षा करता है, ऐसा हमारी मा कहा करती थी। अर्थात् इसका अर्थ दूसरी भाषा मे यह हुआ कि ईश्वर का भक्त आई हुई आपत्ति से उत्तम लाभ उठाता है। उस निमित्त वह आत्मपरीक्षण करता है। व्याकुल होकर ईश्वर की याद करता है। उसपर सारा भार सौंपना सीखता है।

आज मैंने अभिनव तुनाई का आरम्भ किया है। अभिनव तुनाई, यह शब्द कुदर का है, और यह कल्पना भी उसकी है। खेत मे से अच्छा चुना हुआ कपास लाकर, उसके गुच्छो को अच्छी तरह खोलकर पटिये पर सीधा रखकर बिनौले निकालने से रेशे एक दिशा में बहुत-कुछ समानातर हो जाते हैं। फिर उसी आकार मे पूनी बना लेते है। सोलह नम्बर से नीचे के सूत के लिए अच्छा कपास हो तो चल जाता है। अभिनव तुनाई अथवा नव तुनाई की आसान और स्थूल आवृत्ति है। अधिक अभ्यास करके उसमे कुछ सशोधन हो सकते है। मैंने अब ऐसा सयोजन किया है कि सूत कातना यह एक सत्क्रिया समझी जाय और तुनाई को यज्ञ-क्रिया का स्थान दिया जाय। कारण घर-घर स्वय-पाक होता है। उसी तरह सूत निकालने के लिए तुनाई के सिवा कोई गति नही है। और घर-घर सूत-कताई होना ही खादी का सही तत्व है।

विनोबा के आशीर्वाद

१०६

गोपुरी, २-१-४६

मदालसा

हमारी मा कहा करती थी कि 'खाना-पीना, सुख से सोना' यह भी कोई जीवन हुआ ? पर मुझे तो, मानो यही जीवन है, ऐसा लगता है। सबको उत्तम खाने-पीने को मिले और किसीकी नीद कभी भी न बिगडे, अगर ऐसी युक्ति सध जाय तो स्वर्ग यही उतर आय। यह सूत्र सरल-सा दिखाई देता है, पर दुनियावालो की जान के लिए तो यह सकट-रूप हो गया है। सबके लिए उत्तम खान-पान की सुविधा करने का मतलव है शरीर-परिश्रम, अन्याय-प्रतिकार, व्रत-पालन और स्वराज्य-सिद्धि आदि सब बाते साध लेनी होगी, और नीद खराब न होने के लिए चित्त को पूर्णरूप से निर्विकार करना होगा। इन दोनो बातो का मेल कर लेने के वाद जीवन मे साध्य करने का और क्या वचता है ?

वस, आज इतना ही।

विनोबा के आशीर्वाद

१०७

परधाम, १४-१-४६

मदालसा,

आजकल मैं तुम्हारे लिए एक काम करता हू—ज्ञानदेव के भजनो का अर्थ, अक्षरश नही परन्तु भावार्थ अपनी भापा मे लिखना शुरु किया है। रोज ५-६ अभग (भजन) होते है। पन्द्रह-बीस दिन मे पूरे हो जाने चाहिए। लेकिन यह तो आगे का उधारखाता हुआ। अवतक जितने हुए उतने ही पक्के समझने चाहिए। आज के आखिर के अभग मे ज्ञानदेव ने योगी और भक्त इन दोनो की तुलना की है। ज्ञानदेव दोनो से परिपूर्ण थे, इसलिए इन्होने तुलना विल्कुल सहज-भाव से की है। इतना होने पर भी आखिर मे दुर्गति ही हुई है। योगी की जीवन-कला सधी हुई होती है। भक्त को नामामृत की मिठास होती है। एक अपनी कला की मजिल पर पहुचता है, वहा उसे भक्ति का सार मिलता है। दूसरा नाम-स्मरण करता रहता है, उसमे से अनेक धक्के-चपेटे खाते-खाते ही क्यो न हो, अत मे जीवन-

कला का फल उसके पल्ले पडता है। उसे धक्के खाना ही चाहिए, ऐसा नही है, और ज्ञानदेव ने ऐसा लिखा भी नही है। लेकिन मैं तुझ-जैसो की ओर देखकर ऐसा भावार्थ निकालता हू, अर्थात् वह भक्ति की अपूर्णता का ही लक्षण माना जायगा। ऐसे तो योग मे भी अपूर्णता होगी तो जीवन-कला का अभ्यास करते-करते धक्के खाने ही पडेगे। अत मे ज्ञानदेव ने मुहर लगा दी कि दोनो मार्ग एक-से ही समर्थ है, किन्तु नाम-स्मरण सुलभ है। पर वह सुलभ होते हुए भी उसके लिए चाहिए उत्कट ममता। और उत्कट ममतावाला मनुष्य होता है दुर्लभ, ऐसा कहकर ज्ञानदेव ने यह अभग और अपनी दुर्गति की बात दोनो एकदम ही समाप्त कर दी है।

विनोबा के आशीर्वाद

१०८

पवनार, २३-२-४६

चि० मदालसा,

तेरी दिक्कते मेरे ध्यान मे है। श्रीमन्‌जी से धीमे-धीमे परिचय कर लूगा। वैसे मेरा उनसे आध्यात्मिक परिचय तो है ही।

फिलहाल बाबाजी[1] आ रहे है, उनका तुझे अच्छा अनुभव आयेगा। बाहरी बातो की ओर अधिक ध्यान नही देना चाहिए। भीतर ध्यान होना चाहिए। नौकरो पर गुस्सा नही करना चाहिए। उनके रूप मे भगवान ही हमारी सेवा करता है न ? मुझे कुछ दिनो तक रोज लिखा कर।

विनोबा के आशीर्वाद

: १०९ .

परधाम, १४-५-४६

चि० मदालसा,

'जे काही करितो ते माझे स्व-हित'—अर्थात् ईश्वर जो कुछ करता है वह मेरे हित के लिए होता है, ऐसा मुझे प्रतीत हुआ है। तुकाराम महाराज का ऐसा एक वचन है

'आली हे प्रचीत कळो चित्ता।' अर्थात्—मेरे चित्त को यह प्रतीत हो गया है।

---

[1] श्री शिवराम पत

प्रतीति न होने पर भी वैसी श्रद्धा होने से शांति मिल सकती है।

विनोबा के आशीर्वाद

११० .

परधाम, २२-५-४६

चि० मदालसा

अभी श्रीमन्‌जी से मेरी बातें हुई। तेरी मन स्थिति मुझे मालूम ही है। उनसे भी वैसी ही जानकारी मिली। मेरा अब यह कहना है कि तू मेरे पास कुछ दिन रह। यहा सब व्यवस्था हो जायगी। तुझे शांति मिलेगी। बहुत साल हो गये तुझे मेरे पास रहे। मुझे भी अच्छा लगेगा।

विनोबा के आशीर्वाद

१११

पवनार, ३०-५-४६

चि० मदालसा,

'जिस मनुष्य में विवेक नही है, उसको शोक और भय के असख्य कारण प्रतिदिन प्राप्त होते है।' व्यास महाराज का यह प्रसिद्ध वाक्य है। विवेक करनेवाले को वे कारण नही मिलते। गृहस्थ-आश्रम मे सामूहिक जीवन होता है, उसीमे अनासक्ति सीखने की साधना होती है। प्रेम देता ही रहता है, मागता नही। जो मागता है वह प्रेम नही होता, वह ममता होती है। 'ममता' याने मेरे-पने की, मालिकी की, हक की अथवा सत्ता की भावना। वह दु ख का कारण होती है। प्रेम मे सुख का झरना है।

विनोबा के आशीर्वाद

११२

पवनार, ३-८-४६

चि० मदालसा

तू विना कारण क्लेश भोगती है, ऐसा मेरा मत बना है। साप से डरनेवाले का इलाज हो सकता है। डोरी से डरनेवाले का इलाज क्या ? ज्ञान ही न ?

विनोबा की शुभेच्छा

: ११३ :

परधाम, २-९-४६

चि० मदालसा,

तुम्हारा २४-८ का पत्र मिला। स्पष्टीकरणात्मक कौन-सा पत्र भेजा था ? वह तो नही मिला है। बहुतो की दिक्कतो की बाते मै सुनता हू तब मुझे कुछ सूझ नही पाता, क्योकि दिक्कते क्या है, यह मेरी समझ मे ही नही आता। फिर उनको कहना नही आता या मुझमे समझने की अक्ल नही है, यह कौन बतावे ? सब तो नही, पर अधिकतर दिक्कते, शकाए और भय मुझे तो काल्पनिक ही मालूम देते है। कल ही मुझसे एक ने प्रश्न पूछा कि भूत हो सकते है या नही, और आपकी कभी किसी भूत से भेट हुई या नही ?

मैने उससे कहा, "मनुष्य की कल्पना-शक्ति मे भूतो का अस्तित्व नि सशय है और भूतो से भेट होने के सम्बन्ध मे कहो तो भूतो से मेरी हमेशा ही भेट होती है। अभी ही तो मिला है, तू भी तो भूत ही है।"

जो भूतो की गति है, वही ससार की आपत्तियो की है। अर्थात् भूतो की भाति ही वे भी काल्पनिक ही है। लेकिन जिसको उनका भास होता है उसके लिए वे सच्ची ही है। मा मरी। लोग कहते है, बडी आपत्ति आई। मुझे लगता है, वह जन्मी थी, यह अगर आपत्ति नही थी तो मरी यह आपत्ति कैसे होगी ? मरे बगैर और कही जन्मेगी कैसे ? अच्छा आपत्ति किस पर ? उसपर ? या उसके लडके पर ? या जगत पर ? या ईश्वर पर ? ईश्वर पर होना सभव नही है, कारण उसकी योजना के अनुसार ही सब-कुछ चलता है। जगत् पर होना सभव नही है। कारण, जन्मे हुए सब जीव जिन्दा रहे, यह जगत् को पुसा नही सकता। मरे हुए मनुष्य पर होना सभव नही है, कारण रद्दी शरीर को फेककर नया प्राप्त करने का अवसर मिलना आपत्ति कैसे हो सकती है ?

इसलिए अत मे उस लडके पर आपत्ति आई, यह कहना होगा। तो फिर बिगडे हुए शरीर मे अपनी मा की दुर्दशा देखते रहने को क्या सपत्ति कहा जाय ? यो सब प्रकार से विचार करते हुए उसे आपत्ति नही कहा जा

सकता, वल्कि तुकाराम कहते है वैसे यह भी छूटी, वह भी छूटा, यही सच दिखाई देता है।

"बाईल मेली मुक्त झाली,
देवे माया सोडविली
विठो तुझें माझें राज्य"

—मा मर गई, वह मुक्त हो गई, भगवान ने माया से छुडा दिया, विठोबा! अब तेरा-मेरा राज्य आ गया! श्री शकराचार्यजी ने कहा, "जग भ्रम है।" अनेको की काल्पनिक दिक्कते सुन-सुनकर कम-से-कम मेरे गले तो उनका कहना सहज ही उतर जाता है। उसके लिए उनका तार्किक भाष्य पढने की भी जरूरत मालूम नही होती। समय वह जाता तो दु खादि सब भूल जाते है। उसका जोर कम हो जाता है। आगे चलकर मनुष्य उसकी ओर तटस्थ भाव से देखने लगता है। अधिक समय बीत जाने पर अपने ऊपर आई हुई अनेक दु सह आपत्तियो का वह बडा रस-भरा वर्णन लोगो को सुनाता है। वह एक 'रस' बन जाता है—सुननेवाले और सुनानेवाले दोनो के लिए ही। साडी का रग जैसे उत्तरोत्तर उतरता जाता है, वैसे आपत्ति का भी रग फीका पडता जाता है। आखिर मे केवल घटना बचती है। वस्त्र के ऊपर का रग ऊपर से चढाया हुआ होता है। वह कोई उसका असली रग नही होता। उसके उतरे विना चारा ही नही है। वही दशा आपत्तियो की है, अर्थात् आत्मा के ऊपर मन की उपाधि (आवरण), उस मन मे अनेक कल्पनाए, और उन कल्पनाओ द्वारा कल्पित आपत्तिया और इन आपत्तियो से आत्मा का तडपते रहना—यह नाटक आत्मा कितने दिन करेगा? दूसरे के द्वारा अपने ऊपर लादा हुआ यह बोझ वह कितने दिन ढोयेगा? अत अत मे वह सबकुछ फेंक देता है और सुखी हो जाता है।

लेकिन जो आपत्तियो से, भले ही वे कल्पना की ही क्यो न हो, आज प्रत्यक्ष घिरा हुआ है, उसको इस विचार से, चाहे वह कितना ही युक्ति-युक्त हो, समाधान नही होता।

वह कहता है, 'मुझे आपका विचार नही चाहिए। मुझे समाधान दीजिये।' मै कहता हू, विचार नही चाहिए तो क्या अविचार मे से समाधान

मिलेगा ? अविचार में से ही तो वह आपत्ति आई है। इसलिए विचार, विवेक के समान कोई दूसरा तारक साधन ही मनुष्य के लिए नही है।

परन्तु वह कहता है, विचार मुझसे होता नही है। तो मैं कहता हू, "कोई हर्ज नही। कम-से-कम श्रद्धा तो तुझसे रखी जा सकती है ? अगर उसीको भीत की तरह सीधी और स्थिर रख सकेगा तो भी तेरा काम हो जायगा।" राम विचारपूर्वक आचरण करता है। हनुमान श्रद्धा से काम करता है। दोनो ही रावण से नही डरते है। बाकी के रावण की बदीशाला मे पडे ही है। उनकी भी आगे मुक्ति होनी ही है।

विनोबा की शुभेच्छा

: ११४ :

पवनार, २५-९-४६

चि० मदालसा,

ज्ञानेश्वरी से तेरा परिचय बचपन मे हुआ है। स्वाभाविक ही वह एक बडा आधार हो गया है। मुझे लगता है, जैसे-जैसे समय मिले उसके अनुसार, विशेषकर कठिनाई के समय, ज्ञानेश्वरी का आसरा लेना चाहिए। उसके अभ्यास से मन को अवश्य शाति होनी चाहिए।

बच्चो की सेवा पावन ही है।

विनोबा के आशीर्वाद

: ११५ :

पवनार, ४-११-४६

चि० मदालसा,

पत्र मे समाचार अनत थे। मुझे ऐसे समाचार ग्रहण होते है। परन्तु बीच-बीच मे थोडी विगत भी होनी चाहिए। बीच मे मुझे बुखार आया था। सुरगाव का काम इसलिए खण्डित हुआ है। आरोग्य रहना भी साधक की साधना ही होनी चाहिए न ?

विनोबा के आशीर्वाद

: ११६ :

परधाम, ११-१२-४६

चि० मदालसा,

ज्ञान-बीज बोया हुआ कभी भी अकुरित हुए बगैर नही रहेगा। वह

क्या ज्वार का दाना है, जो दो दिन मे निकल आयेगा ? ज्वार का दाना उगेगा ही ऐसा निश्चय नही है, लेकिन ज्ञान-बीज अमर है, इसलिए उसकी कोई चिन्ता नही । अपने पर सबका अधिकार है, किन्तु अपना ईश्वर के सिवाय और किसीपर हक नही, यह ध्यान मे आ जाय तो मनुष्य निरतर प्रसन्न रह सकता है ।

विनोबा के आशीर्वाद

११७

पवनार, १६-६-४७

चि० मदालसा,

पत्र तेरे अनेक आये । लेकिन अब ठिकाना स्थिर हुआ दीखता है । इसलिए उत्तर देता हू । हिन्दुस्तान का राजकीय बटवारा हो रहा है तो भी उसमे दु ख मानने की बात नही । हृदय एक रखना आया तो काफी है ।

विनोबा के आशीर्वाद

११८

पवनार, ८-९-४७

चि० मदालसा,

'क्रिस्तायन'[१] मुझे चाहिए। सुरगाव के लोगो को पढने के लिए देना ह । किन्तु मैंने ही अभीतक वह देखा नही है ।

विनोबा के आशीर्वाद

११९

पवनार, ४-३-४८

मदालसा,

मन व्यवस्थित होता जा रहा है, यह शुभ लक्षण है । नि सशय यह ईश्वरी कृपा का द्योतक माना जायगा । ईश्वर की कृपा इसी तरह से नापी

[१] रेवरेण्ड तिलक की मराठी में ज्ञानेश्वरी के छन्द (ओवी) में लिखी ईसा मसीह की जीवनी । यह जीवनी रे० तिलक अधूरी छोड़ गये थे । बाद में उनकी पत्नी लक्ष्मीबाई तिलक ने उसे पूरा किया । —स०

जा सकती है। बाकी बाहरी अन्य बातो का व्यवस्थित होना या न होना कृपा का सही नाप नही है।

मैंने पुराने पत्रो का सग्रह करके रखने का उद्योग कभी नही किया, फिर भी मुझे यह अच्छा लगता है। किसी वस्तु की ओर काफी दूर के अतर से देखा जाय तो कुछ निराला ही बोध मिलता है, जोकि उस वक्त नही मिला था। हा, अक्षर सुवाच्य और एकदम अधबोध—आख मूदकर दिखाई दे सके, ऐसे होने चाहिए।

'सोह' के दर्शन कोई भी करना चाहेगा। जमेगा तब देखेगे। नाम उत्तम दिये जाय तभी तो कभी-न-कभी काम भी उत्तम होगे न ?

विनोबा

· १२० .

पवनार, २७-७-४८

मदालसा,

बुनने का घर मे प्रयोग हो सका तो करने जैसा है। मनोरजन भी होगा, और देश के लिए जरूरी भी है।

शार्टहैंड का अभ्यास निरन्तर रखे बगैर उसका उपयोग नही होता ह।

ज्ञानेश्वरी की गीताई के साथ तुलना करो और कहा नवीन प्रकाश मिलता है, यह देखो।

रोज का अनुभव लिखने का रखो। पद्रह मिनिट मे हो जाना चाहिए।

दुबटे चरखे पर कताई करना लाभदायी है।[1]

विनोबा

(हिन्दी मे)

[1] मदालसा ने विनोबाजी से निम्नलिखित प्रश्न पूछे थे, जिनके उत्तर में उपरोक्त पत्र लिखा गया—

१. अब श्री ज्ञानेश्वरी का क्या अभ्यास करना, कैसे करना ? कुछ प्रश्न दे दीजिये कि उनको सामने रखकर अभ्यास—स्वाध्याय किया जा सके।

२. शार्टहैंड और टाइपराइटिंग नागरी लिपि का सीखू क्या ? बहुत ज्ञान के साथ मन लगेगा, स्पर्धा से अभ्यास भी ठीक होगा। भविष्य में

१२१

परधाम, ३०-७-४९

मदालसा,

तुम्हारा २३-६ का पत्र दो-चार दिन पहले मिला। बहुत दिनो की भ्राति (भटकने) के बाद हाल ही मे स्थानापन्न हुआ हू। १०-५ दिनो मे बहुधा पुन चक्कर चालू होगा। शरीर कमजोर, पर स्वास्थ्य अच्छा है। यह पहले ही कह देने से आगे की हकीकत के लिए राह खुल जायगी।

पृथ्वी की गति को पीछे डाल देने का चमत्कार गौण है। हम काल को ही पीछे डाल रहे है, यह विशेष (घटना) है। आज शुक्रवार को यहा से रवाना होकर गुरुवार को हम मुकाम पर पहुच सकते है। उसी तरह जुलाई मे प्रवास के लिए निकलकर पिछले जून मे पहुच सकेंगे, ऐसा चमत्कार सिद्ध हुआ चाहता है—देखो, पहेली बूझती है क्या ?

मृत व्यक्तियो के लिखे ग्रंथ पढ सकते थे—वह एक चमत्कार था। पर काफी परिचय के कारण वह वैसा प्रतीत नही होगा। लेकिन आज मृत व्यक्तियो के भाषण उनकी आवाज मे सुन सकते है। आगे चलकर मृतक का रूप भी हू-ब-हू दिखाई देने की सुविधा होगी। मनुष्य के मर जाने पर भी उसका विचार बचता है, उसकी कृति बचती है, उसकी आवाज बचती है, उसका रूप बचता है और गुण तो बचते ही है। फिर नष्ट क्या होता है ? जो नष्ट होता होगा, वह माया होते हुए भी मिथ्या होगा। जो बचता है, वह सत्य है। बचने की प्रतीति न होने पर भी सत्य है। ऐसी यह मजे की बात है। देह की आसक्ति न हो, मै व मेरा न हो, यह इस विनोद का सार है। विनोद विनोद ही है, पर सार-ग्रहण करना जी को भारी पडता है। 'आमुचा विनोद, ते ते जगा मरण।' अर्थात् हमारे लिए जो हँसी-

---

उपयोग हो सकेगा। कुछ प्रत्यक्ष कार्य हो, ऐसा यह अभ्यास है। इसी तरह का कुछ करने को मन होता है।

३. 'सेवक' आदि में क्या लिखने लगू ? शुरू में कुछ प्रश्न दीजिये।

४. घर पर कर्मचारियो की सामूहिक कताई शुरू करना चाहती हू। कैसे करूं, कराऊ ?

विनोद की बात होती है, वही औरो के लिए मरण के समान दुखदायी हो सकती है।

हमारे प्रयोगो के जो परिणाम होते है, उनका पूर्ण लाभ लोगो को जितना दिया जा सके उतना दिया जाय, यह तेरी सिफारिश गैर-वाजिब नही है। लेकिन देनेवाला दे ही रहा था, लेनेवाले को लेना नही आता था। यही रहस्य था। और आज भी वह उसी भाति शेष है। गगा अगर परोपकार करने के उत्साह मे अपनी मर्यादा छोडकर घर-घर जाने लग जाय तो लोगो को वह कितनी पुसायेगी यह युक्तप्रात और बिहारवालो से पूछना चाहिए। चीन देश की एक बडी नदी ऐसा पागलपन किया करती है। इसलिए मुझे भरोसा है कि जैसे हम गगा मैया का नाम प्रेमादर से लिया करते है, ऐसा सुख चीनी लोगो के नसीब मे नही रहा है।

कार्यक्रम हमारे लिए कुछ भी नही है। कार्यक्रम कर्मयोग का होता है। हमारा चला है अकर्मयोग। इसलिए विश्राति का भी प्रश्न पैदा नही होगा।

विनोबा

१२२ .

परधाम, १७-१-५०

मदालसा,

परीक्षा-सम्बन्धी मेरे विचार मेरे पास ही रहने दे। परीक्षा ने मेरे ज्ञान मे वृद्धि नही की बल्कि थोडी रुकावट ही हुई। मैने होने नही दी यह बात अलग है। लेकिन लोगो का अनुभव ऐसा नही है। वे कहते है कि परीक्षा से लाभ होता है। हर कोई अपने अनुभव का खयाल करे।

सिखलाने से ज्ञान पक्का होता है, यह मेरा अनुभव है। तेरे समीप एक सस्था[1] है। लडकियो की ऐसी सस्थाए, अखिल भारतीय स्वरूप की, अपने देश मे बहुत थोडी ही है। अगर वहा नियमित रूप से कुछ सिखलाती तो ज्ञान-वृद्धि का सहज अनुभव आता। सेवा भी होती। कइयो को वैतनिक काम से नियमितता सधती है। ऐसा हो तो एकाध घटा नियम

[1] वर्धा का महिलाश्रम

—संपादक

से सिखलाकर दस-पाच रुपये पगार लेने मे भी हर्ज नही है। लेकिन यह सहज सूचना है। विनोद समझो तो विनोद है, और विचार कहो तो विचार है।

विनोबा

: १२३ .

परधाम, २५-५-५०

चि० मदालसा,

पत्र मिला। तुम्हारे अदाज के अनुसार मै परधाम ही हू। गर्मी भरपूर होती है, पर भयकर नही होती। अभयकर और कल्याणकर होती है। महादेवीताई की तबीयत भी गर्मी मे सुधर रही है। हमारा भी उस ओर ध्यान है ही। वल्लभस्वामी परधाम के ग्रीष्म आरोग्यधाम की अनुभूति ले रहे है।

'वसंत इन्नु रंत्यो ग्रीष्म इन्नु रंतयः ?'—वसत रमणीय है, ग्रीष्म रमणीय है। वर्षा, शरद, हेमत, शिशिर, रमणीय है। यह ऋषि-वाक्य पचमढी और परधाम दोनो को समान लागू होते है। आज है गुरुवार। कृषि-गुरु अनतरामजी का परधाम की फेरी का दिन है। उनकी देखरेख मे आज कुछ नये बीजो की बुवाई होगी।

विनोबा

: १२४

परधाम, १५-११-५०

शुभ सकल्प के लिए शुभ दिन की प्रतीक्षा न करे। जिस दिन शुभ सकल्प हो जाय वही सर्वोत्तम शुभ दिन है, ऐसा समझकर तत्काल आरम्भ कर दिया जाय।[1]

विनोबा के आशीर्वाद

: १२५ .

परधाम २७-७-५१

मदालसा,

पाडुरग से बात हो गई है। पत्नी को लेकर वह घर जाय। तुम्हारे यहा

[1] मदालसा की डायरी के आरम्भ में विनोबाजी ने स्वयं अपने हाथ से यह शुभाशीर्वाद लिख दिया था। —सं०

से जल्दी-से-जल्दी चला जाय। पत्नी की जचगी आदि (उसके) घर होगी। उसको तुमने कुछ पैसे दिये है। वह काम के बदले मे कहो या प्रेम के बदले मे कहो, भेट समझी जाय। इससे अधिक कुछ उसे देना नही है। परिवार को घर छोडकर अगर उसे नौकरी की जरूरत हो तो वह मुझसे मिले। तब उसका मै विचार करूगा। इसलिए तुम उसकी चिंता से अब मुक्त हो जाओ। वैसे तो वह भला आदमी है। उसकी इच्छा होगी तो उसका उपयोग कही भी कर लिया जायगा।

विनोबा

: १२६ :

बाजपुर (नैनीताल) ३०-१२-५१

मदालसा,

बहुत दिनो के बाद तुम्हारे पत्र मे तुम्हारी खबर मिली। चुनाव के बारे मे 'हरिजन सेवक' मे किशोरलालभाई ने 'खुलासा' शीर्षक मे जो खुलासा किया है, उसमे मेरे विचार आ गये है।

सर्वोदय के विशेष काम मे लगे हुए सेवको से चुनाव के प्रचार में मदद की अपेक्षा करना गलत है। वे अपना खुद का वोट दे तब भी बहुत है। जो लोग खडे हो गये है, उनको बहुत ज्यादा प्रचार की, जिस हालत मे आवश्यकता रहती है, उस हालत मे सर्वोदय की दृष्टि से उनका चुनाव मे खडे रहना ही गलत माना जायगा। जिन लोगो को प्रचार की फुरसत है, उन्हे जरूर प्रचार करना चाहिए।

इधर ठड उधर से तो ज्यादा होना स्वाभाविक है, लेकिन दूर से जितनी कल्पना होती है उतनी नही है। मेरे पैर मे जो चोट लगी है, वह विशेष तो नही, फिर भी उसकी मुद्दत बढ रही है। चिताजनक नही है, ठीक हो जायगी।

भरत और रजत दोनो की प्रगति अच्छी हो रही है, यह मै देखता हू। उनके इर्द-गिर्द अनेक प्रकार का ज्ञानमय, उद्योगमय, अच्छा वातावरण है। उसमे से वे सहज ही बहुत-कुछ ले लेगे। ज्यादा फिकर करने से लाभ के बदले हानि हो सकती है।

दूसरे पत्र हिन्दी मे लिखवाये, उस प्रवाह मे यह भी हिन्दी में लिखा गया। इधर आजकल उसी वातावरण मे रहता हू। उसका भी असर होता

ही है। अच्छा है। लेकिन तुम तो मराठी मे ही लिखना, क्योकि तुम्हारी हिन्दी से तुम्हारी मराठी अधिक सहज और सरल होती है।

(हिन्दी मे) विनोबा

: १२७ :

फर्रुखाबाद, ४-२-५२

मदालसा,

विस्तृत पत्र मिला। सुन्दर लिखा है। हमारा इटावा का प्रवास अच्छा हो गया। व्याख्यान प्लेट पर उतारा गया है। यथासमय पढने को मिल जायगा। 'गीता-प्रवचन' २५० बिकी। मुरादाबाद मे सवा चारसौ की खपत हुई। लेकिन वहा की बस्ती तिगुनी है। लोग श्रद्धावान दिखाई दिये।

महिलाश्रम के शिक्षको के बच्चे जबतक शहर मे पढते रहते है, तबतक महिलाश्रम की उन्नति नही होगी, यह निश्चित ही है। हिम्मत के साथ महिलाश्रम की पुनर्रचना करनी चाहिए। शाताबाई और रमा, वृद्ध थत्तेजी को छोडकर मालतीताई अगर उम्मीद बाधे तो कुछ हो सकता है। श्रीमन्, राधाकिसन आदि जनो को विचार करना चाहिए।

विनोबा

: १२८

काशी विद्यापीठ (बनारस), ८-९-५२

मदालसा,

जब मै काशी मे था तब यह भजन मैंने बनाया था। उसमे सोलह कडिया थी, ऐसा याद आता है। वे गगा मे समर्पित कर दी। उनमे की दो कडिया मेरे ध्यान मे रह गई है, बाकी की मै भूल गया हू।

उसमे कल्पना यह है कि कमल (फूल) मुझसे कहता है। जो कडी तुमने लिखी है, उसमें एक रूपक है और श्लेष है। 'वामन-रूप' और 'बलिदान' ये दो द्विअर्थी शब्द है। भृग (भवरा) आकार मे छोटा होता है अर्थात् वामनरूप है। वामनावतार तो प्रसिद्ध ही है। बलिदान याने समर्पण। यह अर्थ तो स्पष्ट ही है। लेकिन बलि राजा के जैसा समर्पण, यह उसमे श्लेष है। छोटा-सा रूप लेकर भवरा मुझे लूटने के लिए आया तो भी मैंने उलटे उसको प्रेम से स्वीकार कर लिया, यो कमल कहता है। इसलिए

वह भवरा जीत लिया गया, वदी वना लिया गया, वह लुब्ध हो गया ।

'कोडिला' का अर्थ है वदी वना लेना । यह शब्द तुकाराम (महाराज) मे लिया है ।

"नम्र झाला भूता,
तेणें कोंडिले अनंता,
हें चि शूरत्वाचे अंग ।"

—जो जीवमात्र के लिए नम्र हो जाता है, वह अनंत को वदी वना लेता ह, यही शूरता का रूप है, ऐसा तुकाराम का कहना है । उसमे भी वलि राजा की ओर इशारा है । वलि राजा ने वामन के आगे मस्तक झुकाया अर्थात् वह नम्र हो गया । इसलिए वह पाताल मे तो गया, परन्तु भगवान् वहा द्वारपाल होकर अटक गये । वलि राजा शूर था, अनेको को उसन जीता था, लेकिन भगवान् के आगे मस्तक नमाकर और उनको हराकर उसने वहुत वडा पराक्रम दिखाया । यह उस उक्ति का अर्थ है । कमल कहता है कि 'समर्पण मे इतनी शक्ति होती है', इसलिए मै नित्य समर्पण के गीत गाता हू । और हे मेरे सखा विनोवा ! तू भी वैसा ही गाता चल ।

लेकिन इस समय तो विनोवा वामन का काम कर रहा है, तथापि उसमे भी वह वलि राजा की नम्रता साधने का प्रयत्न करता है ।

विनोबा के आशीर्वाद

: १२९ :

गया, १७-४-५३

मदालसा,

पत्र मिला । चाडिल-सम्मेलन मे और वाद मे भी कुछ दिन तुमने मेरे व्याख्यान सुने है । उसमे कही सुधार सुझाना चाहो तो सुझाओ । और प्रेस मे आया हुआ एकाव आलोचनात्मक नमूना मुझे भेज दो तो मुझे कुछ कल्पना हो सकेगी ।

भरत का मन अभी काशी मे नही लगा है । यह वात ज़रा चिताजनक है । किंतु इसमे कोई आश्चर्य नही है, क्योकि उसका वचपन से सस्कार यही है कि वातावरण मे ज़रा भी मैल हो तो उसे सहन नही हो पाता है ।

हमारा काम धीमे-धीमे प्रगति कर रहा है। मै तो श्रीहरि पर भार डाले हुए हू।

वह करायेगा सो काम, लायेगा सो परिणाम।

विनोबा की शुभेच्छा

: १३० :

गया, २१-४-५३

मदालसा,

एक पत्र का उत्तर तो दिया ही है। भूदान के काम मे सरकारी अधिकारियो का भी सहयोग, व्यक्तिगत रूप से, लेने मे हर्ज है ही नही।

समग्र ग्राम-विकास की योजना के सबध मे 'सर्व-सेवा-सघ' ने जो प्रस्ताव पास किया है, वह 'सर्वोदय' मे आया है। इससे अधिक कुछ करना उन्हे सभव नही जान पडा। रही मेरी बात, सो तो पाच करोड एकड जमीन प्राप्त करने तक मै दूसरा कोई भी बोझ रचनात्मक कार्यकर्ताओ पर नही डालना चाहता। उससे शक्ति का विभाजन और कार्य-हानि, अर्थात् निस्तेजता ही पल्ले पडेगी।

विनोबा

: १३१ :

१४-५-५३

मदालसा,

विचार-प्रचार का काम तुम्हारी पसद का है, और तुम्हे सधेगा भी ठीक। नम्रतापूर्वक करती जाओ। मन कुछ निश्चित हुआ है, यह जानकर अच्छा लगा। बच्चे राह पर लगे है, इसलिए अतिचिंता करने का कारण ही नही है। भरत फिर से काशी जाना चाहता है तो उसे वहा जाने देना ही ठीक होगा।

'सेवियर' शब्द गलत है। मेरा उस शब्द की ओर ध्यान गया था और निर्मला को उसके सबध मे मैने कहा था। मेरे भाषण हिन्दी मे होते है, यह दिल्लीवालो को मालूम होना चाहिए। यो तो हिन्दी भी मुझे अच्छी तरह नही आती है, लेकिन हिन्दी भाषावाले इतने उदार मालूम होते है कि मै जो बोलता हू, उसे वे गुण-ग्रहण की भावना से मीठा मानकर ग्रहण करते है। अबतक ऐसा ही अनुभव हुआ है।

परमेश्वर की मुझपर एक बडी कृपा है कि लोगो द्वारा गलतफहमियो के कारण मुझपर की गई टीकाओ का मेरे चित्त पर कोई असर नही होता। ईश्वर जैसे नचायेगा वैसे मै नाचूगा। काम मेरा नही, उसका है। वह मुझे घुमा रहा है। इसलिए घूम रहा हू। इससे अधिक प्रचार की मै चिंता नही करता। तुम्हारे-जैसी को भी पुस्तकें लेकर वही दौड-धूप कराता है। इसलिए मै रात को सुख मे सोता हू।

विनोबा के आशीर्वाद

: १३२ :

३-६-५३

मदालसा,

तू देहरादून गई, इसमें कोई गलती नही हुई। गया, पलामू विभाग मे इस साल बेहद गर्मी है। ११३, १४ फेरेनहाइट है, ऐसी भाषा सुनाई देती है। मुझे गर्मी बाधा नही देती, इसलिए मेरी चिंता नही है। लेकिन भरत तो शायद भुन ही जाता।

टंडनजी उत्तर प्रदेश भूदान-समिति के अध्यक्ष है। इसलिए वह लोगों को अच्छी तरह ज़ोर देकर समझाते होंगे, यही मेरी अपेक्षा है।

बीच मे मुझे एक बार बुखार आ चुका। अब ठीक है।

विनोबा की शुभेच्छा

: १३३ :

नेतरहाट (बिहार) १२-६-५३

मदालसा,

पत्र मिला। तबीयत ठीक है। यात्रा चालू है।

मीराबहन की शकाओ के जवाब अनेक बार दिये जा चुके है। उसमे नई बात कुछ नही है। उसके लिए एकाध लेख लिखने की मेरी प्रवृत्ति नही है। परमेश्वर का काम नम्रता से करते जाना। उसमे से शकाओ का निरसन अपने-आप होता जाता है, यह मेरी भूमिका है। और तो समय-समय पर व्याख्यानो मे जो कहना होता है, वह कहता रहता हू। ईश्वरेच्छा से जब कभी मीराबहन से मिलने का योग आयेगा तब देख लेंगे।

विनोबा के आशीर्वाद

: १३४ :

गया ३१-७-५३

मदालसा,

पच-भूतो का खुलासा हो गया, यह अच्छा ही हुआ है। लेकिन उनके पजे से छूटना चाहिए। उसमे मुख्य रुकावट आती है मन की। वह सब भूतो से बडा भूत है। भले-भलो की नस ढीली कर देता है। लेकिन जब बस मे हो जाता है तब बिचारा इतना सरल हो जाता है कि यही पहले इतना नाच नचा रहा होगा, इसकी कल्पना भी नही हो पाती।

विनोबा के आशीर्वाद

१३५

गया, १५-८-५३

मदालसा,

आज १५ तारीख को विहारशरीफ नाम के शहर के नजदीक एक देहात मे हमारा मुकाम है। इस बार बारिश मे भी यात्रा-क्रम चालू रखने का प्रयोग शुरू किया है। गत दो माह मे बारिश ने छ दफा खूब भिगोया। दो बार मामूली, और बाकी के सब दिन बचा लिया। वर्षाकाल मे सारी सृष्टि रमणीय हो जाती है। तब एक मुकाम पर बैठ रहने से तो मन घुट जाता है। दो साल उसका अनुभव लिया। इस बार तीर छूटा है। लोग कहते है कि बारिश के दिनो मे तबीयत कैसे अच्छी रहेगी ? इसका उत्तर नीचे के मन्त्र मे मिलता है।

आ शर्म पर्वतानाम् वृणीमहे
नदीनाम् आ विष्णो: सचाभुवः।

—आओ, हम पर्वतो से आश्रय मागे। और नदियो से आश्रय मागे। और परमेश्वर के पास आश्रय मागे, जो हमारा सदा का साथी है।

इस बार काग्रेसवालो ने हिन्दुस्तान भर मे भूदान-यज्ञ-सप्ताह मनाने की योजना की है। अन्य पक्षवालो ने भी उसका अनुमोदन किया है। वाग्दान खूब होने से भी मदद होगी। आखिर मे भूदान होना ही है। वह तो अटल है, क्योकि ईश्वर बोल चुका है।

विनोबा के

: १३६ :

गया, २-१०-५३

मदालसा,

तुम्हारा इस वार का पत्र मुझे बहुत ही अच्छा लगा। तुम कवि तो हो ही, लेकिन मराठी मे इतनी अच्छी कविता तुम कर सकोगी इसकी कल्पना नही थी।

चर्खा चक्कीची घर-घर गाज गोड़
तेंव्हां जिरेल मद-आलस्याची खोड़।[१]

यह अतिम पक्ति मुझे बहुत ही पसद आई है। इतनी सुन्दरता से अपना नाम कविता मे गूथा गया और इस खूबी से कि लोगो को इसका पता भी नही लगता।

जवाहरलालजी का हृदय गहरा व स्नेहमय है, इसमे सदेह ही नही है।

उस दिन रेडियोवालो को मैने सवाद नही दिया, इसमे मेरी दृष्टि है। सहज व्याख्यान देते हुए रेडियो का लाभ मिलना अलग बात है, और खास-तौर से रेडियो को सदेश देना अलग बात है। यह दूसरी बात आज की हालत मे मुझे कृत्रिम मालूम होती है, और जो कृत्रिम मालूम देता है वह मुझसे होता नही। तुम्हारा उस दिन का आग्रह साफ तौर से गलत था। लेकिन गलती करने का हक—अधिकार ही तो स्वराज्य है।

दूसरा पत्र आज मिला।

विनोबा के आशीर्वाद

: १३७ :

पटना, १-११-५३

मदालसा,

तुम्हारे पत्र का एक विचार मेरी समझ मे नही आया। "अग्रेजी नही आने की वजह से मै इनके और बच्चो के लिए भी निरुपयोगी हो चली हू।" इसका अर्थ क्या बच्चो को केवल अग्रेजी सीखना है? स्वतत्र भारत मे अगर अग्रेजी नही आने की वजह से काम मे मदद नही

---

[१] "चर्खा और चक्की की प्यारी घरघराहट घर-घर गूंजे, जिससे मदालस्य सारी कमी दूर हो।"

हो सकती हो तो भारत स्वतत्र नही हुआ, यही समझना चाहिए। यह सब दिल्लीवालो का भ्रम है। देश मे क्राति हो रही है, इसका उन्हे कुछ पता ही नही है। हमारे देश की कार्रवाई अमरीका और इग्लैड के लोग समझ सकते है, और हमारे अपने लोग नही समझ सकते, यह दशा इस अग्रेजी की वजह से हो गई है। पैर के नीचे से जमीन जब खिसकने लगेगी तब सब कुछ समझ मे आयेगा।

विनोबा के आशीर्वाद

: १३८ :

रानीगज ५-१२-५३

मदालसा,

तेरा, श्रीमन् का और जानकीबाई का ये तीनो के पत्र एक साथ मिले। जानकीबाई कूपदान के लिए भगीरथ प्रयत्न कर रही है। इतनी एकाग्रता उन्होने अबतक किसी भी काम मे नही दिखलाई होगी। उनको लिखना कि स्वास्थ्य सभालकर काम करे, क्योकि दीर्घकाल तक काम करना है।[1]

विनोबा के आशीर्वाद

१३९

पटना १५-१२-५३

मदालसा,

तुम्हारे पत्र मिले है। एक पत्र मै वापस भेज रहा हू, इसलिए कि उसमें जो ह्रस्व इकार और दीर्घ ईकार, लोकनागरी के और देवनागरी के समिश्र किये गए है, उनको देखकर दुरुस्त कर सको।

(हिन्दी मे) विनोबा

१४०

सीता बदियारा, २-६-५४

मदालसा,

'शेरघाटी की नई तालीम परिषद' का विवरण तेरे लिए भेज रहा हू।

---

[1] सन् १९५३ के चांडिल (बिहार) में हुए सर्वोदय-सम्मेलन में माता जानकीदेवी के प्रयत्नो से और विनोबा के आशीर्वाद से कूपदान का कार्य-क्रम शुरू हुआ था। उपरोक्त पत्र में उसीका उल्लेख है। —स०

तेरा प्रश्न—"प्रयत्न मे सातत्य और तत्परता कैसे रक्खी जाय ?"

उत्तर—"मदालस्य हा सर्व सोडूनि द्यावा। प्रभाते मनीं राम चिंतीत जावा।" —मदालस्य को बिल्कुल छोड दिया जाय और प्रात काल में मन से राम का चितन किया जाय।

तेरे पत्र तुझे वापस चाहिए। तदनुसार वापस भेज रहा हू।

विनोबा

: १४१ :

गया, २८-६-५४

मदालसा,

तुम्हारा २१-६ का पत्र। बादशाह खान का पता तूने मुझको सूचित किया, यह तेरे हाथ से बडी अकल का काम हुआ है, क्योकि मैं यो भी आलसी हू। ठिकाना पास मे न हो तो पता-ठिकाना खोजकर पत्र लिखने की मुझे एकदम से इच्छा होती ही नही। लेकिन पता पास मे पडा हो तो कभी सहज ही लिखने का सयोग आ सकता है। वह भी जब हरि की इच्छा होगी तब।

विनोबा के आशीर्वाद

: १४२ :

समस्तीपुर, १३-८-५४

मदालसा,

दोनो पत्र मिले। विन्या[1] को पाठशाला में फ्रेंच लेने की सलाह बाबा (पिताजी) ने दी। उसके मुताबिक विन्या फ्रेंच सीखने लगा। मा ने पहले कुछ नही कहा। बाद मे विन्या से बोली, "विन्या, तुझे सस्कृत नही आनी चाहिए क्या ? वह अपने धर्म की भाषा है न ?" विन्या ने कहा—"सस्कृत आनी चाहिए तो आयेगी, उसकी चिंता क्या है ?"

विन्या ने फ्रेंच खूब सीखी, पर आज विन्या को फ्रेंच र, ट, फ ही आती है। बहुत-सा तो भूल भी चुका है। आज विन्या को पद्रह-बीस भाषाए आती हैं, लेकिन मराठी को छोडकर सस्कृत के जितना और किसी भी भाषा का ज्ञान उसे नही है।

---

[1] विनोबाजी की माता उन्हे प्यार से 'विन्या' कहा करती थीं।

बच्चो को सस्कार देने के लिए माता को कुछ भी योजना नही करनी पडती। उसकी इच्छा-मात्र ही काम करती है।

विन्या की शिक्षा के लिए मा ने कुछ भी नही किया। फिर भी विन्या ९० प्रतिशत मातृमय है।

इतना जवाब तेरे और चरत-भरत के पत्रो के लिए पर्याप्त है।

विनोबा

१४३

परसोनी (दरभगा), २०-९-५४

मदालसा,

श्रीमन् के पत्र आते रहते है और तुम्हारे भी आते रहते है। उस आदमी को मै कमती ही उत्तर देता हू। पर मदालसा को लिखने मे कुछ सकोच नही होता।

कारण क्या ? कारण इतना ही कि वह लिखता है काम के पत्र। और मदालसा के होते है वेकार के। और कामगारो की अपेक्षा बेकारो से मेरा अधिक जमता है।

आजकल कमेटीवाले दो-तीन महीने मे एकाध सभा रखते है। हिन्दुस्तान भर से इधर-से-उधर पद्रह-बीस लोग आनेवाले होते है और खुले मन से बोलने की किसीको फुरसत नही होती। मीटिंग का एक एजेण्डा होता है। कहते है 'बिजनेस लाइक' मीटिंग करो। कोई कम न बोले, कोई ज्यादा न बोले। बाबा बोलता ही नही।

सर्वोदय-सम्मेलन का मेरा भाषण तुमने सुना ही है। हरेक हर साल एक (सूत की) आटी दे। तुम कितने हजार आटी लाओगी ? लोकसभा के सदस्य, राज्यसभा के सदस्य और अन्य भी बहुत-से असदस्य और उनका परिवार, परिजन और प्रियजन, सबको पकड सकती हो। पहली आटी मदालसा, फिर भरत और रजत। श्रीमन् छूट ही नही सकता। वह तो एम पी, काग्रेस सेक्रेटरी, शिक्षण-वेत्ता, सर्वोदयी, और क्या नही है ? चार आटी तो मैंने ही जुटा दी। बाकी जितनी तुम करोगी सो। रा प, प्र म ये तो हाथ आयेगे ही। यह पहेली समझ लेगी क्या ? महादेवी पूछती है। मैंने कहा—होने दो अक्ल की परीक्षा।

विनोबा के आशीर्वाद

: १४४ :

१५-७-५५

मदालसा,

प्रकृति (स्वास्थ्य) याने स्वाभाविक अवस्था। विकृति स्वाभाविक अवस्था से च्युत होना। सस्कृति याने प्रकृति से ऊपर की प्रगति। सस्कृति के नाम पर हम बहुत बार विकृति मे पडते है, इसीसे प्रकृति बिगडती है।

प्राकृतिक कही जानेवाली चिकित्सा भी कई बार अप्राकृतिक हो जाती है। चित्त की समता रखकर वहावो (वेगो) को रोकना ही सच्ची सास्कृतिक चिकित्सा है। सास्कृतिक चिकित्सा के बिना बिगडी हुई प्रकृति सुधर नही पाती। इसलिए मुख्य जोर रामनाम पर दिया जाना चाहिए।

१ पूर्ण निद्रा

२. योग्य शरीरश्रम

३. आकाश-सेवन

४. सयत आहार

ये चार प्राकृतिक इलाज है। सास्कृतिक इलाजो (उपचारो) के साथ इन चार (बातो) को सभाला जाय तो विकृति नही रहेगी।

विनोबा के आशीर्वाद

: १४५ :

२८-३-५९

मदालसा,

तेरे पत्र मुझे महत्त्व की जानकारी देते है। अखड चलने दे।

'दिल्ली दूर है' ऐसा कहा जाता है। लेकिन अब वह नजदीक आने लगी है, ऐसा आभास होता है। वस्तु-स्थिति क्या है हरि ही जाने।[1]

प्यारेलालजी से मिलते रहना अच्छा है। गाधी-ज्ञान के भडार है। अत्यन्त सरल हृदय।

काकासाहब से मेरा प्रणाम निवेदन करोगी। शाति-सेना का कार्य उठाने की जरूरत पर उन्होने मेरा ध्यान कबका खीचा था। पर उस वक्त 'ग्रामदान' मे से वह चीज सहज निकलती हुई प्रतीत न हुई। जब प्रतीत हुई,

[1] यहां तक मराठी से अनूदित है। आगे हिन्दी में है। —सम्पा०

उसके पीछे लगा हू । उनकी सूचनाए समय पर मैं उठाता नही, ऐसी उनकी शिकायत रही है, जो सही है । पर मेरे चित्त की एकाग्रता अन्य वस्तु के प्रवेश के लिए सहसा तैयार नही होती । अब दोनो चीजे एकरूप लगती है । इसलिए कोई भार नही महसूस होता है ।

विनोबा

. १४६ .

ऊधमपुर, ५-९-५९

मदालसा,

तुम्हारे पत्र मिलते रहते है । अभी वर्धा की जानकारी तुम्हारे पत्र से ही मुझे मिली । वहा का कार्यक्रम सबको पसद आया, इससे खुशी हुई । वहां जो भी आते है अक्सर, 'ब्रह्म-विद्या-मदिर' देखने जाते ही है । सबके कुतूहल का एक विषय वह बन गया है । मुझे उसके लिए बहुत आशा है । धीरे-धीरे उसका विकास होता जायगा । बहनो के साथ पत्र-व्यवहार मेरा रहता है ।

तुम्हारे पत्रो मे कभी किसीसे बाते होती है, इतना ही उल्लेख रहता है । वह ठीक भी है । पर क्या बात हुई उसका भी सार दे सकती हो ।

'सत्यानृते' वाला वाक्य, ब्रह्म-सूत्र के आरभ मे, शकराचार्य ने प्रस्तावना के रूप मे जो भाष्य लिखा है, उसके आरभ मे आता है ।

विनोबा का जयजगत्

८. उमा अग्रवाल के नाम

१४७

नालवाडी, ३-१२-३३

चि० ओम्,

तुम्हारा पत्र मिला।

तुम्हारे पत्र से तुम्हारे बारे मे तो जानकारी चाहिए ही, लेकिन उसके अलावा प्रवास की जो बाते अखबारो आदि मे नही आती, उनकी जानकारी भी चाहिए। जिन हिस्सो का दौरा हो, उन स्थानो की भौगोलिक जानकारी प्राप्त करने के लिए मिल सके तो वहापर, नक्शा देखने की आदत रखनी चाहिए, जिससे कल्पना स्पष्ट आती जायगी।

तुम्हारे पत्र से ऐसा मालूम होता है कि तुम सुबह की प्रार्थना मे नही रहती हो। इस यात्रा की सगति से प्रार्थना मे श्रद्धा निर्माण हो सके तो उत्तम होगा।[1]

विनोबा के आशीर्वाद

१४८

सफदरगज, ५-५-५२

ओम्,

सर्वोदय-सम्मेलन के निमित्त लिखा तुम्हारा पत्र मुझे मीठा लगा। जैसे तुमने लिखा, जमनालालजी का स्मरण उस सम्मेलन में होने के लिए बहुत कारण थे। स्मरण-रूप से वह सम्मेलन मे अवश्य उपस्थित थे। मेरे इस काम के पीछे अव्यक्त रूप से जिनका बल रहा है, उनमे काकाजी[2] का एक प्रमुख नाम है।

मेरे काम से धनिको को प्राण-वायु मिल रहा है, यह भी मै मान्य करूगा। प्राण-वायु सबके लिए प्राण-वायु ही हो सकता है। पानी बाघ को

---

[1] उमा के नाम विनोबाजी का यह पत्र मराठी में है। शेष मूल हिन्दी में है।—सं०

[2] जमनालालजी बजाज को परिवार के लोग काकाजी कहा करते थे। —सं०

भी जीवन देता है, गाय को भी जीवन देता है। वह सबकी प्यास बुझाता है। सबको ठडक पहुचाता है। इस काम से धनिक और गरीब सब प्राणवान बन सकते है। इसीलिए तो इसे 'सर्वोदय' का काम कहते है।

'सोपान'[1] नाम सब तरह से मधुर है। जिस स्थान मे और जिस समाज मे घूमती रहती हो, वहाके लिए वह असाधारण है। महाराष्ट्र में उसका चलन स्वाभाविक है। निवृत्ति, ज्ञानदेव, सोपान, मुक्ताबाई, एकनाथ, नामदेव, तुकाराम, रामदास यह सतो की नामावली ईश्वर की नामावली के समान महाराष्ट्र मे चलती है। सोपानदेव के नाम पर 'सोपान-पट' नाम का एक खेल भी है। उसे 'मोक्ष-पट' भी कहते है। किस दुर्गुण से मनुष्य नरक मे गिरता है, किस सद्गुण से स्वर्ग मे पहुचता है, किस साधन से मुक्ति पाता है, इसका उस पट मे दिग्दर्शन किया गया है। कहते है, वह चित्रपट सोपानदेव ने बनाया है। हो भी सकता है, लेकिन निश्चित नही कह सकते, क्योकि वह तमिल प्रात मे भी चलता है। सोपानदेव को अब ६५० साल हो गये, इसलिए उनकी बनाई हुई चीज का इतने वर्षो मे मद्रास पहुचना असभव नही है। जो हो, वह खेल बच्चो के लिए बहुत रुचिकर और बोधकर है। शायद तुम जानती होगी। सोपानदेव के अभग मे आया है **'असो खेळी मेळो इथे जनीं'**। इस समाज में हम सबसे हिल-मिलकर रहे।

अव्यक्त ईश्वर को प्रणाम और व्यक्त शरीरधारी मनुष्य को प्रणाम करने में मुसलमान लोग भेद करते है। तुमने देखा कि मुसलमान लोग "पावांधोक वाचीजो" नही करते है। चरणो पर मस्तक झुकाना, यह प्रणाम ईश्वर के लिए रिजर्व रखते हुए, मनुष्यो को खडे-खडे प्रणाम करने का रिवाज रहे तो अच्छा होगा। एक जगह तुलसीदासजी ने लिखा है 'सीस ईस ही नैहों'। लेकिन चूकि वह सर्वत्र ईश्वर देखते थे, सर्वत्र वह सिर झुका सकते थे। मालिक के सामने, मारने-धमकानेवाले के सामने, सिर झुकाने की आदत हम लोगो मे पडी है। वह नम्रता नही, लेकिन हीनता है। 'पावा धोक' मे कितना धोखा है, इसका मुझे तो रोज अनुभव आता है।

विनोबा के आशीर्वाद

---

[1] उमा का लडका

१४९

विक्रम (पटना), ३-१०-५२

ओम्,

मगलायतन हरि का स्मरण करके तुमने तो सबके लिए एकदम से मबकुछ माग लिया। ऐसी ही अकल हर काम मे रखा करो।

निष्काम सेवा करते हुए जब ईश्वर बुलायेगा तब सौ साल समाप्त हुए जानना।

सबको यथायोग्य,

विनोवा की शुभेच्छा

●

९. रामकृष्ण बजाज के नाम

१५०

पवनार, २२-१०-४०

चि० रामकृष्ण,

पत्र मिला था। घडी मिली है। पुरानी घडी का जो भी उपयोग हो सकता है, करो। बीच-बीच में जो भी लिखना उचित समझो लिखा करो। 'लोक-नागरी' पढ तो सकोगे ही। लेकिन उसके तत्व जान लो।

चि० विमला को आशीर्वाद। कभी सस्कृत पढने का होता है?[1]

विनोबा के आशीर्वाद

१५१

परधाम, (पवनार) २०-२-५०

चि० राम,

टाइप[2] ऐसा-वैसा नही चलेगा। आकार निश्चित और सुदर ही चाहिए।

किसी आदमी के इटली गये बिना अच्छा टाइप नही बनेगा, यह बात समझ में नही आती है। दुनिया इससे बहुत आगे बढ गई है। हमे जैसा चाहिए उस तरह का रबर की स्टैंप का टाइप बनाकर भेजा जा सकता है और तदनुसार काम हो जाना चाहिए, ऐसी आशा की जा सकती है।

हमें बीस टाइप-राइटरो की जरूरत है, ऐसी बात नही है। पर कहते हैं कि कम-से-कम कुछ सख्या बताये बिना वे बनाकर नही देते। तब राधाकिसन ने कहा कि इतनो की खपत न हुई और इन्हीमे नया साचा बैठा देने की सुविधा अगर हुई तो इतने बनवा लेने मे हर्ज नही है। सौ रुपयो में साचा बदल लिया जाता है, ऐसा तेरे पत्र से प्रतीत होता है। और यही अदाज राधाकिसन का भी था।

यो जल्दी तो है, परन्तु सुधार नये करन है, इसलिए उसमें सुदरता

---

[1] रामकृष्ण बजाज को लिखे विनोबाजी के सब पत्र हिन्दी में है।—सं०

[2] विनोबा लोकनागरी लिपि में टाइपराइटर बनवाना चाहते थे।—सं०

की कमी रह गई तो लोगो के मन को आकर्षण नही होगा। इसलिए सुदरता को कायम रखकर ही काम करना चाहिए।

विनोबा

१५२

पटना, ३०-१२-५३

रामकृष्ण,

'बापू के आशीर्वाद' वाली पुस्तक मिल गई है। फुर्सत से देखूगा। उसमे तुमको बहुत मेहनत पडी है। उसका परिणाम जीवन मे दीख पडना चाहिए। जमनालालजी ने अपना परिवार देश-व्यापी कर लिया था। मेरा ख्याल है कि बापू को छोडकर शायद ही कोई दूसरा नेता होगा, जिसने इतने व्यक्तिगत मित्र जोडे हो। यह उनकी विरासत तुम्हे मिलनी चाहिए।

जमनालालजी निरतर अपना आत्म-परीक्षण करते रहते थे। वह गुण दुनिया भर की दौलत से अधिक मूल्यवान है। उसका भी सग्रह करो।

विनोबा के आशीर्वाद

१५३

१४-३-५४

रामकृष्ण,

९-३-५४ का व्यक्तिगत पत्र मिला। व्यक्तिगत पत्र सीधे मुझे पहुच जाते है। विचार-परिषद आदि के बारे मे तुमने जानकारी दी वह मेरे लिए पर्याप्त है।

बापू और जमनालालजी के बीचवाला पत्र-व्यवहार[1] मै सरसरी तौर पर बहुत-सा देख गया हू। साधक का जीवन-विकास सतत प्रयत्न से आहिस्ता-आहिस्ता होता है। उसके लिए बारीक-से-बारीक तफसील मे भी जाना पडता है। बापू ऐसी बातो मे बहुत ध्यान देते थे, इसका दर्शन इस पत्र-व्यवहार मे होता है। अपने साथियो के लिए उनकी वह स्नेह-दृष्टि थी। ऐसे पत्र-व्यवहार का कुछ सक्षिप्त रूप दूरस्थो के लिए विशेष उप-

[1] पाचवे पुत्र को बापू के आशीर्वाद—सपादक काकासाहब कालेलकर। यह अप्राप्य है। इसका सक्षिप्त सस्करण 'बापू के पत्र' के नाम से उपलब्ध है। मूल्य १।) ।—स०

योगी होता है। वैमी एक छोटी-सी आवृत्ति भी इसकी निकल सकती है। सारा-का-सारा पत्र-व्यवहार प्रकाशित करने का भी ऐतिहासिक दृष्टि से महत्व होता है। उस लिहाज़ से यह पुस्तक बहुत उपयोगी है।

शरीर तो मेरा ठीक काम दे रहा है। एक-एक दिन जो आगे बढ रहा है—जवानी की तरफ तो नही बढ रहा है न ? और सतत पैदल-यात्रा मे हवा, पानी, अन्न आदि के फर्क जहा रोज सहन करने पडते है, वहा शरीर ऊपर-नीचा हुआ करता है, इसमे आश्चर्य की बात नही है। आश्चर्य की बात यही है कि ये सब वह सहन कर रहा है और जबतक भगवान उससे काम लेना चाहता हो तबतक सहन करना उसके लिए सभव हो जायगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

गया के काम मे चट्टान लगी है। पत्थर तोडना पडेगा, लेकिन यह अपेक्षा से बाहर नही है। कुआ खोदने मे जैसे-जैसे गहरे जाओ अधिकाधिक परिश्रम करना ही पडता है।

विनोबा के आशीर्वाद

१५४

गया १८-७-५४

राम,

पत्र मिला। साथ की पत्रावली पढी[1]। यह उपक्रम अच्छा है। इससे पद-यात्रा के साथ-साथ ट्रेन, मोटर, जहाज़, हवाई जहाज आदि सब यात्राए मुफ्त मे हो जायगी।

हा, उस काम[2] मे शिवाजी का अच्छा उपयोग हो सकता है। जमना-

---

[1] कमलनयनजी विलायत गये थे और वहां से उनके खत बराबर आते थे। उनमें वह वहां का सरस वर्णन लिखते थे। उन्हींकी नकलें विनोबाजी को भेजी थीं, उसीका जिक्र है। —स०

[2] श्री जमनालालजी का अन्य लोगो के साथ पत्र-व्यवहार तो छुआ हो था, साथ ही उन्होने माताजी को जो पत्र लिखे थे, वे भी बहुत सुन्दर हैं। उन पत्रो व डायरियो का भी सपादन किया जा रहा है। यह कार्य विनोबाजी के छोटे भाई श्री शिवाजी की मदद और सलाह से करने का सोचा है, इसकी सूचना दी थी, उपरोक्त उल्लेख इस सबध में है। —स०

लालजी के पत्र-व्यवहार के अध्ययन से उनकी मैत्री-भावना का स्पर्श अगर हमें हो जाय तो हम बहुत कमायेंगे। कुछ तो स्पर्श होगा ही, इसमे शक नही, क्योकि उनको उस लेखन मे साहित्य की कोई चिंता नही थी। सत्य की चिंता थी। आजकल जबसे पत्र-साहित्य साहित्य का एक विभाग बन चुका है तबसे खानगी पत्र-व्यवहार मे भी कृत्रिम लेखन की प्रवृत्ति हुई है। जानकी-देवी एक दफा विनोद में कहती थी कि जमनालालजी से तो हम बहुत अच्छे वक्ता हो सकते है, क्योकि बोलते समय उनके मन मे हमेशा ऐसा ख्याल रहता था कि हम जैसा बोलते है वैसा आचरण करते है कि नही। हमारे मन मे ऐसी कोई हिचक नही रहती है तो बेखटके बोलते जाते है। एकनाथ का वचन है—

"वाचा सत्यत्वें सोवली, येर कविता ओवली।"[1]

विनोबा के आशीर्वाद

१५५

गया, ४-९-५४

राम,

कमलनयन के दोनो पत्र मिले। पडितजी को वह काम की बाते लिखता है और मेरे लिए मनोरजन की। पर उसका मुझे उतना लंबा पत्र अपने अक्षरो को सभालकर लिखने का शायद यह पहला ही मौका है। वह लिखता है, 'रस्सी मेरी इलास्टीक है'। उसको लिखो, वह मैंने ही इलास्टिक रखी है ताकि बैल को रस्सी की लबाई का अत देखने का मोह न हो। लिखने की आदत हमने उसको डाली नही, यह भी उसका कहना गलत है। जहा दस उगलियो से काम करना सिखाया गया, वहा तीन उगलीवाला तो उसमे आ ही गया।

उसका स्वास्थ्य अच्छा है, यह जानकर खुशी हुई। पर वजन कितना घटा? यह जबतक मालम नही होता तबतक उसके स्वास्थ्य का भरोसा मुझे नही आता।

जमनालालजी की डायरी मे सपत्तिदान-आन्दोलन की कल्पना मिलती है, इस बारे मे तुमने जो लिखा है वह मेरे लिए नई जानकारी थी। पर

[1] वाणी सत्यमय होनी चाहिए और कविता ओवीमय होनी चाहिए।

: १५६ :

गया, ५-१०-५४

राम,

तुम्हारा १४ सितबर का पत्र आज ४ अक्तूबर को मिला। 'गोला गोकर्ण की प्रसादी' से मेरा मतलब डायबीटीज है। मैंने सुना था, वह रोग तुम्हे हुआ है। इसलिए पूछा।

दरभगा जिले मे कल का आखिर का दिन है। परसो सहरसा जिले मे जायगे। २ जनवरी को बगाल मे तथा २६ जनवरी को उडीसा मे प्रवेश करने का कार्यक्रम है।

बबई मे गुजराती प्रिंटिंग प्रेस मे १४ सस्कृत टीकाओ के साथ भगवद्-गीता छपी थी। अगर वह मिलती हो तो तलाश करो।

विनोबा

१५७

निचितपुर (पूर्णिया), ७-११-५४

चि० राम,

तुम्हारा २० ता का पत्र मिला। ११ और ८ टीकावाली दोनो किताबे पर्याप्त होगी। चौदह टीकाओ का उसमे समावेश हो जायगा।

१ जनवरी को मेरा बगाल मे प्रवेश है। पर कलकत्ता जाने का कार्य-क्रम नही है। बाकुडा और मेदिनीपुर इन दो जिलो मे २५ दिन की यात्रा है। २६ जनवरी को उडीसा मे प्रवेश है। श्री बसतकुमार बिडला या जो भी कोई, मिलना चाहेगे, तो वे गलतफहमी मे न रह जाय, इसलिए लिख दिया है।

माताजी को प्रणाम कहो। इन दिनो उन्होने बहुत काम किया है। वहा उन्हे कुछ आराम मिलेगा, वह अच्छा ही है, बशर्ते कि वहा वह मिले।

विमला और उसका नया लड़का दोनो अब स्वस्थ है, यह जानकर खुशी हुई। मैं चाहता हू कि आप सब-के-सब स्वस्थ रहे। 'स्व' बाहर कभी न जाय।

विनोबा के आशीर्वाद

१५८

गाधीग्राम (मदुरै), २५-७-५६

रामकृष्ण,

पत्र मिला। ठीक है। वे भाई और बहन आ सकते है।[१] यात्रा तो हमारी अच्छी चल रही है। रोज के दो पडाव होने से बैलेन्स ठीक रहता है। लोगो की पाचन-शक्ति सुधरेगी, ऐसी उम्मीद कर रहा हू।

परदेश जा रहे हो तो वहा से मेरे लायक जानकारी मुझे देते रहो। सेहत तुम अच्छी रखोगे, ऐसी उम्मीद रखता हू। कुटुम्बी जनो को आशीर्वाद।

विनोबा के आशीर्वाद

· १५९

ईरोड (कोईम्बतूर), २७-१०-५६

रामकृष्ण,

तुम्हारा १९ अक्तूबर का पत्र मिला। वियनावाला भी मिला था। मुझे जितनी भी जानकारी भेजेगा, उसका स्वागत है। इज्राइल के बारे में दूसरो ने भी मझे कुछ सुनाया है। इज्राइल के कुछ भाई मिले भी हैं। फिर भी हरेक का अपना अलग-अलग अनुभव होता है। और उससे हमको लाभ उठाना चाहिए।

नीचे की दो किताबो की जरूरत है। दोनो मिलाकर एक ही किताब है।

१. ऋग्वेद का अग्रेजी अनुवाद—भाग १—ले ग्रीफिथ
२ „ „ भाग २ „

विनोबा के आशीर्वाद

· १६० :

उकडाई (तजावर), २५-१-५७

चि रामकृष्ण ने, फिर से एक बार जमनालालजी के अपने कुछ सस्मरण मै लिखू, ऐसा आग्रह किया। स्थूल स्मरण तो दिन-ब-दिन भूलता ही जा

---

[१] दो अमरीकी भाई व एक बहन उनके पास आकर दो-तीन दिन रह सकते है क्या, यह पूछे जाने पर उपरोक्त उत्तर दिया।—सं०

रहा हू । सूक्ष्म स्मरण सदैव मेरे मन मे रहा है । और भूदान-यज्ञ, सम्पत्ति-दान-यज्ञ के रूप में वह प्रकट हो रहा है । जमानालालजी का स्मरण इन कामो में मुझे बल देता है और मेरा विश्वास है, वह दुनिया के जिस किसी कोने मे हो, इस काम के लिए शुभ-कामना करते होगें ।

पुस्तक तो खैर प्रकाशित होगी, फिर अप्रकाश मे जायगी । लेकिन सद्भावना अनन्त काल काम करती रहेगी। स्थूल स्मृति के साधन मैंने अपने पास रखें नही । पत्र, टिप्पणिया आदि जो समय-समय पर लिखी गईं, अग्नि-नारायण को समर्पित की गईं । अब मेरे साथी मानो उसका प्रतिशोध ले रहे है और मेरे पत्रो का व्यर्थ सग्रह कर रहे है । मुझे आशा है, भगवान उनको सदबुद्धि देगा और सार लेकर असार मिटाने की शक्ति उनमे आयेगी। सार जीवन में प्रकट होता है । वह स्वयमेव प्रकाशित है । असार प्रकाशित करने की कितनी भी कोशिश की जाय कालात्मा उन सब कोशिशो को बेकार बना देता है ।[1]

विनोबा के प्रणाम

---

[1] श्री जमनालालजी के संस्मरणो का एक ग्रंथ प्रकाशित करने की योजना थी। उसके लिए विनोबाजी से एक संस्मरण मागा गया था। उस संबध में विनोबाजी का उपरोक्त पत्र है। यह ग्रंथ 'स्मरणाजलि' के नाम से प्रकाशित हो गया है। —संपादक

१०. गौतम बजाज के नाम

१६१

कोज्हीकोडे, (केरल)
१६-७-५७

चि० गौतम,

तुम्हारा वर्णनात्मक पत्र मिला। निसर्ग के दर्शन से चित्त की शुद्धि हो सकती है। उस तरह की दृष्टि होनी चाहिए तब वह अनुभव मिलता है।

सृष्टि के वर्णन के साथ-साथ और क्या क्या सीखने को मिला इसकी नोंध रखते जाना चाहिए। शरीर को सेवा मे घिसना होता है तभी वह आत्मज्ञान प्राप्त करने के योग्य बनता है। तुम्हे ऐसा ही सुअवसर मिला है।

आज यहा राधाकिसन वगैरह आनेवाले है। यू तो कल ही आनेवाले थे, लेकिन उनकी गाडी चूक गई। उनकी मुलाकात मे हमारे कार्यक्रम की चर्चा होगी। बहुत करके २६ अगस्त को मगलोर पहुचने की योजना है।

विनोबा

१६२

बगलोर, २४-१०-५७

चि० गौतम,

चित्त की एकाग्रता (आत्म-परीक्षण) का विषय है। जहा सामूहिक प्रार्थना की नियमित योजना न चलती हो वहा सोने से पहले और सोकर उठने पर पाच-दस मिनट हम अपने-आप परमेश्वर का चिन्तन करे। यू भी दिन भर मे कभी-कभी नामस्मरण की साधना की जा सकती है, लेकिन यह विषय ज़रा सूक्ष्म है। फिलहाल एकाग्रता न हो पावे तब भी चिता न की जाय। चित्त मे अन्य विचार न आवे तो बस है।

कुल मिलाकर तुम्हारे अक्षर अच्छे ही है। दूसरे हाथ से लिखने का अभ्यास कर देखो तो सव्यसाचित्व प्राप्त होगा।

विनोबा के आशीर्वाद

· १६३ ·

जम्मू-काश्मीर, २२-६-५९

गौतम,

६ जून का पत्र मिला। तुम कहते हो कि उसके पहले दो पत्र लिखे थे, लेकिन उनमे का एक मिला है।

'आर्य-भारत' के उद्धरणो की जल्दी नही है। हृदयगम होनेवाले उद्धरणो का चुनाव करना चाहिए। और किसीके लिए नही बल्कि अपने खुदके ही उपयोग के लिए।

कमर का स्नायु दुर्बल हुआ हो, फिर भी उसे बचाया जाय तो वह लबे अर्से के बाद दुरुस्त हो सकता है। शरीर को चलता-फिरता रखनेवाला और किसी भी प्रकार का अतिरेक न करनेवाला अपना आरोग्य सभाल सकता है।

समय बरबाद न होने का और समय के सार्थक होने का मतलब क्या है, इसकी एक कसौटी है। जिस समय चित्त मे कोई भी विकार नही है वह समय सार्थक हुआ। भले ही बाह्य रूप मे उसमे से कोई निष्पत्ति हुई हो चाहे न हुई हो। इसके विपरीत हाथो से भरपूर काम होते हुए भी अगर चित्त मे विकार की तरगे उठती होगी, तो वह सारा समय दुनिया की निगाहो मे भले ही अच्छा बीता हुआ-सा प्रतीत होता हो, फिर भी वह व्यर्थ ही गया है। बल्कि युवावस्था मे समय की कीमत और भी एक कसौटी पर आँकी जा सकती है। सज्जनो की सगति मे से जो ज्ञानप्राप्ति की आशा रखता है वह एक तरह से सज्जनो को पुस्तको की कोटि में ही डाल देता है। अर्थात् सत्सगति को वह अपने मतलब का साधन मानता है, भले ही वह मतलब कितना ही ऊंचा क्यो न हो। "केवल सत्सगति के प्रेम के कारण ही सत्सगति"—यह एक आध्यात्मिक कसौटी है। मा का बालक पर प्रेम होता है। उसके बिना उसका मन नही लगता। उसकी सेवा मे वह मशगूल रहती है। वैसा सतो पर और सद्गुरु पर अपना प्रेम है क्या? उनकी सेवा करना ही मधुर प्रतीत होता है क्या? जब ऐसी मिठास महसूस होने लगेगी तब काल की सार्थकता का एक न्यारा ही अनुभव प्राप्त होगा।

"मनाचे श्लोक"[१] में एक श्लोक है—

"नव्हे पिड ज्ञान " इत्यादि। उसे निकालकर देखो।

लेकिन इसका यह अर्थ नही है कि वाह्य विचार किया ही न जाय। शरीर, मन और वाणी इन सबसे दिनभर हमने समतोल रूप मे काम लिया या नही यह भी देखना लाभप्रद होता है।

काल की सार्थकता के सबध मे एक श्लोक वहुत उपयोगी है, उतना लिखकर पूरा करता हू।

अजरामरवत् प्राज्ञो विद्या अर्थं च चितयेत्।
गृहीत इव केशेषु मृत्युना धर्ममाचरेत् ॥[२]

विनोवा

१६४

अज्ञात सचार, पजाव, १४-२-६०

गौतम,

३-२-६० का पत्र मिला। तुम मेरे पास आने पर मुझसे स्पष्ट वातें करनेवाले हो, ऐसा तुमने अपने एक पत्र मे लिखा है। स्पष्ट बोलने को ही मैं वोलना मानता हू। स्पष्ट बोलें या मौन रखे, दोनो के वीच की व्यर्थवाणी किसीसे भी न वोले। मौन को छिपाने के लिए नही, वल्कि मनन के लिए और सयम के लिए।

शिवाजी का और तुम्हारा जमा नही, ऐसा लगता है। तुम मिलोगे तव कारण मालूम हो जायगे, या उसके पहले भी मालूम हो जायगे। लेकिन मैंने

---

[१] समर्थ रामदास स्वामी-कृत 'मनाचे श्लोक',—मन को संबोधित करके लिखे श्लोक। पूरा श्लोक इस प्रकार है—

नव्हे पिंडज्ञानें नव्हे तत्त्वज्ञानें। समाधान कांहीं नव्हे तानमानें।
नव्हे योगयागें नव्हे भोगत्यागें। समाधान तें सज्जनाचेनि योगें॥१५३॥

[२] ज्ञानी मनुष्य को चाहिए कि मैं अजरामर हूं, यह समझते हुए वह विद्या का और अर्थ-प्राप्ति का चिंतन करे; किंतु धर्म का आचरण करते समय यह समझे कि मृत्यु ने मेरे केशों को अपनी मुट्ठी में पकड़ रक्खा है।

एक पत्र मे तुम्हे जैसा सुझाया था, वैसी सेवा तुम्हे सधी क्या ? हम ज्ञान पाने के लिए जैसे पुस्तको का इस्तेमाल करते है, वैसे ही व्यक्तियो को इस्तेमाल करना चाहते है। लेकिन व्यक्ति पुस्तको की कोटि मे नही आते। व्यक्तियो पर प्रेम करना होता है, उनकी सेवा करनी होती है। लेकिन इस विषय को मै यही छोडता हू।

जिसकी कमर कमजोर हो गई, वह जीवन-दृष्टि से करीव-करीव निरुपयोगी ही हो गया। कमर को सीधे रखकर चलने मे कम-से-कम तकलीफ होती है, या सरल-सीधा सोने मे। वीच की स्थिति मे कमर पर ही भार आता है। अगुलियो की जो पिछली वाजू होती है, जिन्हे पोरुवे कहते है, उनसे कमर के हिस्से को मलते रहे—दो-दो घटे वाद एक-दो मिनट तक। चलने के लिए लाठी लेने मे भी हर्ज नही है। वैठना जितना कम होगा, उतना अच्छा है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा ही रहता है। सतत पैदल चलनेवाले का स्वास्थ्य विगडना एक चमत्कार ही है। कभी-कभी वह भी होता है। कारण योग पूरी तरह से सघ नही पाता। योग के विना जीवन ही नही है। योग ही जीवन है।

विनोवा का आशीर्वाद

११. भरत अग्रवाल और रजत अग्रवाल के नाम

: १६५ .

गया, ११-७-५३

भरत,

तुम्हारा पत्र मिला । अक्षर तुम्हारे बहुत खराब तो नही है, लेकिन काफी सुधर सकते है । अच्छे अक्षर का नमूना सामने रखकर एक-एक अक्षर की तुलना उसके साथ करो । तुम्हारा "स" बहुत टेढा है । "ज" भी ठीक नही है । "प" का पाव बहुत छोटा है । अगला पत्र लिखोगे, उसमे ये सब सुधार कर लो ।[1]

विनोबा के आशीर्वाद

. १६६

गया, ३१-७-५३

चि० चरत,

तुम्हारा पत्र मिला है । विद्यालय में भरती हो गये हो, यह अच्छा है । तुम तो गो-माता के पुत्र हो । जानते हो न ? गोपालकृष्ण के समान अच्छे सेवक बनने की उम्मीद रक्खो । मैं यह पत्र दिन में लिखवा रहा हू, इसलिए तुम्हारा नाम चरत[2] ही लिख दिया है । हमारा पता क्या पूछते हो ? वह तो रोज बदलता है ।

विनोबा के आशीर्वाद

. १६७

गया, २३-९-५३

चि० भरत,

तुम्हारा पत्र मिला । इस बार तुम्हारे अक्षर पहले से कुछ अच्छे है ।

---

[1]रजत और भरत के पत्र मूल हिन्दी में है ।

[2]बालक का नाम रजत है । विनोबाजी ने प्यार से उसके दो नाम रख दिये । दिन में चरत और रात में रजत ।

फिर भी सुधार की वहुत गुजाइश है। नमूने के बडे-बडे अक्षर सामने रखा करो और एक-एक अक्षर को एक-एक चित्र समझकर उसके अनुसार लिखने की कोशिश करो।

गणित तो एक आसान और मनोरजक विषय है। दिया हुआ सवाल पहले पूरी तरह से समझ लेना चाहिए। वहुत-से लडके सवाल को समझते ही नही है और हिसाब करना शुरू कर देते है। इससे वह गलत हो जाता है।

आगे जब पत्र लिखो तो, उठते कब हो, सोते कव हो, आदि सारा दिन-क्रम लिखो। खेलने के समय खेलना चाहिए। काम के समय काम करना चाहिए। अभ्यास के समय अभ्यास करना चाहिए। आराम के समय आराम करना चाहिए। पर आलस मे ज़रा भी समय नही जाना चाहिए।

तुम्हारे पत्र पर पूरा पता नही था। इसलिए यह पत्र मदालसा के पते पर दे रहा हू।

मेरा यह पत्र 'लोक-नागरी' मे है। उसमे और चालू नागरी मे क्या-क्या फरक देखते हो?

विनोबा के आशीर्वाद

१६८

गया, २-१०-५३

रजत,

तुम्हारा पत्र मिला। सगीत मे जो भजन सिखाये जाते है, उनका अर्थ समझ लो तो मन लगेगा। अर्थ समझे बिना तोते के माफिक गाओगे तो कैसे मन लगेगा?

विनोबा के आशीर्वाद

१६९

डेरी ऑन सोन, ५-५-५४

चि० चरत,

तेरा ता २५-४-५४ का 'लोकनागरी' लिपी और मराठी भापा मे लिखा हुआ पत्र मिला। पढकर वहुत आनद हुआ। वम्वई मे तुम वालगोपाल

एकत्र होकर खूब खेलो और मौज करो। तुम्हारे खेल में मन से मै भी हिस्सा लूगा ।

विनोबा के आशीर्वाद

(मराठी से अनूदित)

१७० ·

कटिहार (पूर्णिया)
१७-११-५४

चि भरत और चरत,

तुम दोनो के पत्र मिले। इस वर्ष के अत तक हमारा पूरोगम (प्रोग्राम) विहार मे रहेगा। मानभून जिले से हम दूसरे प्रदेश मे जायगे। उसके बाद कौन-सा प्रदेश आयेगा, यह तुम नक्शे मे देख लो। हर मनुष्य के पीछे हिन्दुस्तान मे जोत की और जोतने लायक जमीन करीब एक एकड आती है। हमको उस कुल जमीन का १।१०० मिल गया है। यह कितना होता है गणित करके देख लो। इन दोनो प्रश्नो के जवाब मे एक दूसरे की मदद ले सकते हो।

विनोबा के आशीर्वाद

१७१

कोरापुट, (उडीसा),
१८-९-५५

चि० भरत,

लोकनागरी मे लिखने का तुम्हारा प्रयास काफी सफल रहा। दो गलतिया है और एक समझने की बात है।'क्ऋप्ण' गलत है। 'कृप्ण' ऐसा लिखना चाहिए। कारण अम्मा से पूछो। 'ख' तुमने पुराना ही लिख डाला 'लोकनागरी' मे उसकी शकल दूसरी होती है। तुमने 'मन्त्र' लिखा है। यह गलत तो नही है, पर 'लोकनागरी' मे उसकी सुलभ योजना है। 'मत्र' ऐसा लिखना पर्याप्त है। ऊपर का अनुस्वार वरतुल के समान गोल (०) हो।

तुम्हारे अक्षर अच्छे हो सकते है। पर लिखने की रफ्तार बढाने का मोह छोडना होगा।

इधर हम केवल भूमि-दान नही माग रहे हैं। अब ग्राम-दान भी माग रहे हैं। रोज नये ग्राम मिलते जाते हैं। इन गावो मे खाना, कपडा, बच्चो की तालीम, आदि सब समानरूप से सबको हासिल होगा। कोई ऊच नही, कोई नीच नही। भरत और चरत जितना ही फरक, और वह भी केवल पहचानने के लिए। वास्तव मे सब रामरूप।

विनोबा के आशीर्वाद

दूसरा खण्ड

डायरी के अंश

जमनालाल बजाज की डायरी के कुछ विनोबा-सबधी अश

२०-११-१२, वर्धा

श्री वृद्धिचदजी पोद्दार आये। उनसे मारवाडी-जाति के सुधार के वारे मे बाते हुईं। उन्होने कहा कि मुनाफे पर सैकडा १० टका तुम्हारी (जमनालालजी की) मरजी से सार्वजनिक कार्य के लिए खर्च किये जायगे।

• •　　　　•　　　　• •

१२-८-२१, तेजपुर-आश्रम

जबतक स्वराज्य नही प्राप्त हो वहातक स्वराज्य के सिवाय, दूसरी वातो का स्वप्न भी हमे नही आना चाहिए। इतना मन उसमे लगा दो। सत्याग्रह-आश्रम मे हमेशा जाया करती होगी ? वहा जाने से मन को अवश्य शाति मिल सकेगी। पूज्य विनोबाजी का तुमपर विश्वास हो जायगा तो आध्यात्मिक ताकत वढाने का मार्ग भी वह अपनी वुद्धि के अनुसार बताया करेगे।

उनके सत्सग से रोज की दिनचर्या अवश्य सुधर जायगी। सब वच्चो तथा कुटुम्बियो के साथ खूब प्रेम का वर्ताव रखना। अतिथियो का पूरा ध्यान रखना।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

• •　　　　• •　　　　• •

५-२-२४, वर्धा

आश्रम के भविष्य के कार्य के सम्बन्ध म विनोवा से वहुत-सी बाते हुईं।

• •　　　　•　　　　• •

वर्धा, ९-२-२४

श्री केदार वकील ने १०००) वर्धा तालुका मे विनोवा के मार्फत अन्त्यज-सेवा-कार्य के लिए देना स्वीकार किया। अपना समय देने की भी इच्छा व्यक्त की।

१२-२-२४, वर्धा

आश्रम गये। विनोबा ने गाधी-सेवा-सघ के नीचे लिखे मुताबिक सदस्य बनाये—

गोपालराव काले	५०)	रघुनाथराव धोत्र	४०)
मोघे	५०)	शकरराव वेले	४०)
द्वारकानाथजी	५०)	नर्मदाप्रसादजी	५०)
	१५०)		१३०)

शकरराव नागरे	७५)
बाबराव पराजपे	२५)
	१००)

.. .. ..

१२-७-२४, वर्धा

आश्रम के बोर्डिंग मे गये। जाजूजी व विनोबा से रात के ९ बजे तक बातचीत। भविष्य के कार्य का प्रबध।

.. .. ..

१५-७-२४, वर्धा

आज विनोबा ने आश्रम मे राष्ट्रीय शिक्षण-सस्था पर सुन्दर विचार व कार्यक्रम प्रकट किया। जानकर सुख हुआ।

.. .. .

१७-७-२४, वर्धा

चि० कमलनयन को सत्याग्रहाश्रम, वर्धा मे रखने के लिए जल्दी तैयार करके सुवह ६॥ बजे भेजा।

.. .. ..

२३-७-२४, वर्धा

तिलक हाल मे लोकमान्य तिलक की जयती के निमित्त सभा। श्री विनोवाजी भावे का बहुत ही सुन्दर व प्रभावशाली प्रवचन हुआ।

१६-८-२४, वर्धा

पूज्य विनोबा व जाजूजी से प्रातीय काग्रेस-कमेटी तथा वर्तमान स्थिति मे अपने कर्तव्य पर विचार होता रहा।

.. .. .

२७-१-२५, वर्धा

पुणतावेकर, पडवीतरी, काका सा कालेलकर, विनोबा, अप्पासाहब पटवर्धन आदि से राष्ट्रीय कॉलेज, शिक्षण आदि के सबध में वार्ता व चर्चा।

.. ..

२-३-२५, बडौदा

सुबह काठियावाड एक्सप्रेस से उतरकर वडौदा मे विनोवा के पिताजी, पूज्य नरहर शभुराव भावे, से मिलने गया। उनसे मिलकर वहुत खुशी हुई। दूध पिया। उनका आग्रह देखकर वही पर भोजन करने का निश्चय किया। वहासे जुमादादा व्यायामशाला गये और प्रो माणिकराव से मिले। व्यायामशाला देखी। स्नान किया। वहासे अब्बास तैयबजी के यहा गये। उनसे मिलकर आनद हुआ। उनकी स्त्री व छोटी पुत्री से मिले। बाद मे विनोवा के घर भाखरी, दूध, दही का भोजन। विनोवा की वहन से परिचय। नरहर भावेजी से रग के वारे में तथा जून १५ के बाद वर्धा आने के बारे मे विचार। रात १॥। की गाडी से अहमदाबाद रवाना।

. .. ..

५-५-२५, वर्धा

आश्रम गये। वहा सेवा सघ की सभा का कार्य ४ वजे से रात के ९ बजे तक होता रहा। वहीपर भोजन व प्रार्थना। आज पू० विनोबा का व्यवहार महाराष्ट्र-धर्म तथा विद्यालय के बारे मे सतोषजनक नही मालूम हुआ।

.. .. .

८-७-२५, नागझरी

सुबह विनोवा और द्वारकानाथजी के साथ दहेगाव स्टेशन से नागझरी पैदल गये। करीब ६ मील चले। रास्तेभर थोडी-थोडी वर्षा होती रही।

वहा की परिस्थिति देखी। लोगो का उत्साह आश्रम के लिए नही

दिखाई दिया। खण्डेराव का आग्रह बहुत था। नर्मदाप्रसादजी वकील आदि आगये। शाम को कवठा होकर वर्धा वापस।

.. .. ..

१२-७-२५, वर्धा

आश्रम से मारवाडी विद्यालय की सभा मे गये। पू० विनोबाजी के विद्यार्थी-गृह-सबधी नियम कडे मालूम हुए। उन्होने जवाबदारी लेना स्वीकार नही किया।

.. .. ..

२५-१०-२६, बबई

पूज्य विनोबा और नाना कुलकर्णी का पूर्ण विश्वास प्राप्त करने में ही तुम्हारी बहादुरी और कल्याण है।

(कमलनयन को लिखे पत्र से)

.. ..

२३-२-२७, बबई

आश्रम के वातावरण के बारे मे लिखा सो समझा। इस तरह घबराना नही चाहिए। तुम तो बहादुर हो।

पू० विनोबा व कुलकर्णीजी वहा है। तुम्हे विशेष चिन्ता रखने की आवश्यकता नही।

प्रामाणिकता से रहते हुए भी सच्चे-झूठे दोषारोपण होना सभव है और उसे बहुत समय तक सहन भी करना पडता है। पर आखिर में सच्चाई कायम ही रहती है।

(कमलनयन को लिखे पत्र से)

.. ..

१२-७-२७, पूना

मुझे आशा है कि तुम अपने नियमित पठन-पाटन, उत्साह और सेवा-भाव से पू० विनोबा तथा अन्य गुरुजनो का प्रेम सम्पादन करने मे सफलता प्राप्त करोगे। अगर चाहोगे तो यह बात तुम्हारे हाथ मे है। तुम कर सकते हो। विश्वास और श्रद्धा रखनी चाहिए।

(कमलनयन को लिखे पत्र से)

सैंडो के डवेल्स की जरूरत नही मालूम देती। अगर मगाना हो तो पूज्य विनोबाजी की परवानगी लेकर श्री धोत्रे के मार्फत मगा लेना।

तुम्हे पू विनोवा का व अन्य अध्यापक-वर्ग का पूरा प्रेम सम्पादन करना चाहिए। वह तभी हो सकेगा जब तुम मन लगाकर उत्साह से पढोगें व सब काम करोगें। (कमलनयन को लिखे पत्र से)

• • • • •

२७-८-२७, अहमदावाद

कमलनयन के वारे मे सतोष है। परतु काशीवहन कहती है कि विनोवा पर पूज्य भाव तो है, किंतु विनोवा के खुराक मे माल नही है। प्रभुदास गाधी जवसे विनोवा के पास रहा तवसे तबीयत विगडी है सो अव कितना परिश्रम व खर्च करके भी क्या पहले जैसी वननेवाली है ? तो आप जव आओ काशीवहन से मिल लेना। उतावली तो कुछ है नही। वस इस वात का विश्वास कोई करा दे कि तबीयत के वारे मे फिर पछतावा न करना पडे तो मैं तो कहती हू कि पाच वर्ष में मिलने की इच्छा नही करूगी। पर काशीवहन के शब्द है कि गुलाव और वोरडी (वोर की झाडी) एक कैसे हो सकते है। इस वात का निर्णय यहा आओगे तव कर लेंगे। आश्रम मे खर्च तो २००) मे चल जायगा, ऐसा लगता है। पीछे कम-ज्यादा हुआ तो देख लेंगे।

(जानकीदेवी द्वारा जमनालालजी को लिखे पत्र से)

• • •

१९-७-२८, वर्धा

आज सुवह से लेकर रात्रि के १० वजे तक का मदिर के सम्वन्ध मे जनता का व्यवहार वहुत ही सन्तोपप्रद व उत्साहजनक रहा।

आज परमात्मा की शक्ति मे विशेष श्रद्धा व विश्वास वढा।

• • • • •

१९-७-२८, वर्धा

आज श्री लक्ष्मीनारायण मदिर[1] अस्पृश्यो के लिए खोल दिया गया। पूज्य विनोवा का भाषण वहुत ही वोध-भाव से भरा हुआ था।

[1] भारत में हरिजनो के लिए खोला गया पहला मन्दिर।

२३-१२-२८, नागपुर, वर्धा

राष्ट्रीय शिक्षण परिषद का स्वागत-सभापति बनना पडा। पू. गगाधर-रावजी देशपाडे सभापति थे। पू विनोबाजी का राष्ट्रीय शिक्षण पर उत्तम भाषण हुआ।

.. .. ..

३०-७-२९, वर्धा, बडनेरा, अमरावती

एलिचपुर दत्तमदिर (दत्त दरबार) सुलतानपुर मे है। उसे खोलने जाने की तैयारी। पूज्य विनोबा व दास्तानेजी को तैयार किया। श्री पिजरकर व चिरजीलाल के तार वहा जाने के बारे मे आये।

.

३१-७-२९, अमरावती, एलिचपुर

पूर्णा नदी पर स्नान। श्री विनोबा से 'परमात्मा की याचना क्यो करे ?' इस विषय पर काफी विचार-विनिमय।

तीन बजे मिरवणूक (जुलूस) बाजा वगैरा के साथ निकाला। सुलतानपुरा पैदल। वहा सभा। मदिर देखा। बाद मे ट्रस्टी व स्वामी विमलानन्दजी आदि की आज्ञा से श्री दत्तमदिर का उद्घाटन किया।

.. .. ..

१-८-२९, अमरावती, आर्वी, खरागणा

राष्ट्रीय झडे का उद्घाटन। मेरे हाथ से ९ बजे झडा फहराया गया। श्री विनोबा व बाबासाहब पहुच गये थे। भाषण आदि हुए। आर्वी मे शाम को सार्वजनिक सभा। विनोबा का असरकारी भाषण हुआ। सभा भी अच्छी हुई।

.. . ..

५-८-२९, वर्धा

पूज्य विनोबा की सलाह से तय हुआ कि जाजूजी ही महाराष्ट्र का खादी-कार्य करे और दास्तानेजी को नाम के लिए एजेट रहने दे।

.. .. ..

३-११-२९, वर्धा

आज अस्पृश्यो को मदिर-प्रवेश करान के बारे म प्रमुख लोगो की सभा

हुई। दुकान पर खूब विचार-विनिमय हुआ।

. .. .

८-११-२९, वर्धा

आश्रम मे विनोबा का गीता-वर्ग ५। से ६ तक।

.. . ..

१०-११-२९, वर्धा

विनोबा के गीता-वर्ग मे।

.. . ..

११-११-२९, वर्धा

विनोबा के गीता-प्रवचन मे गये।

..

१२-११-२९, वर्धा

सुबह विनोबा के गीता-क्लास में।

१३-११-२९, खामगाव

सुबह ४ बजे के करीब पूज्य विनोबा व मनोहरजी के साथ जलम्ब होते हुए खामगाव पहुचे। स्टेशन पर कोई नही था। तागा करके राष्ट्रीय विद्यालय रवाना हुए। घोडा खराब था। रास्ते में घोडा पीछे हटा और ताग को गड्ढे मे गिरा दिया। सद्भाग्य से किसीको कोई चोट नही आई। विद्यालय मे हेडमास्टर श्री पुरवार ने २॥ घटे तक रिपोर्ट सुनाई।

निवृत्त हुए, स्नान किया। कपडे हाथ मे धोये। डा पारसनीस, अबुलकर, नागजी भाई आदि आये। विद्यालय के सबंध मे चर्चा सुनी।

विद्यार्थी व श्री अबुलकर ने शिस्त (डिसिप्लिन) का भग किया और वार्डन ने अव्यावहारिकता बरती।

शाम को सार्वजनिक सभा हुई। अध्यक्ष विनोबा ने अस्पृश्यता व मदिर-प्रवेश पर अच्छा कहा।

.. .. ..

२३-११-२९, वर्धा

विनोबा के गीता-वर्ग में।

२७-११-२९, वर्धा

पूज्य विनोबा से अस्पृश्यता-निवारण के सबध मे चर्चा।

.. .. ..

२२-१२-२९, वर्धा

श्री विनोबा से वारुताई, दास्ताने व कन्या-पाठशाला के सबध में विचार।

.. .. ..

३०-१-३०, वर्धा

पूज्य विनोबाजी से काग्रेस के प्रातिक सगठन के विषय मे बातचीत हुई।

.

८-१-३२, वर्धा

पू विनोबा, गोपालराव, द्वारकानाथ आदि के जलगाव मे गिरफ्तार होने की खबर सुनी।

.. . .

२५-३-३२, धुलिया-जेल

चालिसगाव से धुलिया पहुचे। रास्ते में अखबार पढा। धुलिया स्टेशन पर मित्र लोग मिले। मुह-हाथ धोया, नाश्ता किया। जवार की राब, छाछ व मुनक्के का पानी।

पैदल ही जेल गये। मित्र लोग भी साथ थे। मोटर में बैठने को कहा, इनकार किया। जेल पहुचने पर पू विनोबा, दास्ताने, पुरुषोत्तमजी आदि कई मित्र मिले। मिलकर सुख व आनन्द मिला।

. . ..

२६-३-३२, धुलिया-जेल

शाम को रामायण-वर्ग मे।

विनोबा का गीता-प्रवचन, छठा अध्याय बहुत ही भावपूर्ण हुआ। मन को सतोष मिला।

२८-३-३२, धुलिया-जेल

शाम को विनोबा से चर्चा हुई। विनोबा के साथ शाम की प्रार्थना बराबर चालू है।

.. . .

३०-३-३२, धुलिया-जेल

सुबह ४ बजे विनोबा के साथ प्रार्थना, चर्खा, तकली, सुकाभाउ के काम का परिचय।

स्त्रियो के लिए भी सप्ताह मे एक रोज विनोबा का प्रवचन निश्चय हुआ।

विनोबा ने तुलसी-रामायण शुरू की। विनोबा के साथ प्रार्थना।

.. .. ..

२-४-३२, धुलिया-जल

सुबह ३॥। बजे और शाम को ८ बजे विनोबा के साथ प्रार्थना। 'विनय-पत्रिका' मे से ९३वा भजन समझाया।

.. .. .

१०-४-३२, धुलिया-जेल

विनोबा द्वारा गीता के आठवें अध्याय मे 'मृत्यु' पर सुन्दर विवेचन हुआ।

.. .. ..

११-४-३२, धुलिया-जेल

दोपहर को विनोबा का वर्ग। विनोवा का गला बहुत खराब हो गया। रात मे विनोबा को निद्रा नही आई। मुझे भी उत्तर रात्रि को निद्रा नही आई। देश की हालत व अत्याचार पर विचार चलता रहा।

. . ..

१५-४-३२, धुलिया-जेल

मेरा मन और स्वास्थ्य बहुत ही ठीक रहता है। पूज्य विनोबा की सगत में व खेलने, कूदने और कातने में खूब आनन्द से समय बीतता है।

मन का असर शरीर पर अवश्य पडता है। मै सुबह ४ बजे व रात्रि को ८ बजे विनोबा के साथ बराबर नियम से प्रार्थना करता हू। नासिक

से भी बडी कोठरी मुझे व विनोबा को अलग-अलग स्वतत्र रूप से दी गई है।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

.. .

१७-४-३२, धुलिया-जल

विनोबा का प्रवचन बहुत ही मनन योग्य हुआ। मन पर उसका अच्छा असर हुआ।

.. .. ..

१९-४-३२, धुलिया-जल

विनोबा से तुकाराम का जीवन-चरित्र और अभग सुने। उनके जीवन के सम्बन्ध मे चर्चा की।

.. . ..

२०-४-३२ धुलिया-जेल

सुबह ४ व शाम को ८ बजे प्रार्थना, 'मनाचे श्लोक' का पाठ, विनोबा ने ज्ञानेश्वरी के प्रकरण पढकर बतलाये, ठीक लगे। अहिसा के सम्बन्ध मे चर्चा हुई। आज १॥ बजे से ४॥ बजे तक तुकाराम के अभग पढे व कुछ लिखे।

.. .. ..

२१-४-३२ धुलिया-जेल

विनोबा से मन की स्थिति के बारे मे बातचीत। आज 'सी' वर्ग मे रहने की मजूरी आ गई।

. .. ..

२२-४-३२, धुलिया-जल

तुकाराम के अभग पढे व लिखे।

विनोबा से ठीक तौर से मन की स्थिति-सबधी बात हुई।

.. .. ..

२३-४-३२, धुलिया-जल

कल और आज भोजन के समय विनोबा के लिए खरबूजा आता है। उसकी एक फाक उनके कहने से ली, परन्तु मन मे सन्तोष नही रहा।

२५-४-३२, धुलिया-जेल

सुबह ४-५० व शाम को ८ बजे प्रार्थना। मनाचे श्लोक का पाठ। विनोवा के जीवन-चरित्र लिख देने पर उनसे चर्चा व विचार।

चर्खा काता। गोपालराव से विनोवा के बचपन का परिचय मिला।

• •

२७-४-३२, धुलिया-जेल

विनोवा व सुपरिटेडेट की बहुत देर तक बातचीत हुई। स्वभाव-परिवर्तन के बारे मे।

• • •

२८-४-३२-धुलिया-जेल

पू० वापू का दूसरा पत्र आया। उसपर विनोवा से खूब चर्चा हुई। दूध लेने के सम्बन्ध मे विनोबा का सतोषजनक उत्तर। विनोवा से स्वप्नदोष के सम्बन्ध मे विचार-विनिमय।

• • • • •

२९-४-३२, धुलिया-जल

विनोबा से दास्तानजी की सेवा के सम्बन्ध में चर्चा। खानदेश के काम व कार्यकर्ताओ के सम्बन्ध मे भी विचार-विनिमय।

• • • •

१-५-३२, धुलिया-जेल

विनोवा का बहनो मे प्रवचन, परिचय आदि। सतोष हुआ। विनोबा का (गीता के) ग्यारहवे अध्याय पर प्रवचन। दास्तानेजी आदि के साथ शाम की प्रार्थना।

• • • • •

२-५-३२ धुलिया-जल

विनोवा के जरिये वर्धा, घर और आश्रम की खबर मिली।

वत्सला के बाल निकालने के सबध मे विचार-विनिमय। उसकी इच्छा पर ही छोडने का निश्चय हुआ।

३-५-३२, धुलिया-जल

आज विनोबा से चक्की के काम और प्राचीन काल मे स्त्रियो के दर्जे के विषय में काफी चर्चा हुई।

•• •• ••

७-५-३२, धुलिया-जेल

सुबह ४ बजे और शाम को ८ बजे प्रार्थना। 'मनाचे श्लोक' का पाठ। उर्दू कविता विनोबाजी के साथ पढी।

• •• ••

८-५-३२, धुलिया-जल

विनोबा द्वारा १२वे अध्याय मे से सगुण भक्ति व निर्गुण भक्ति पर सुन्दर विवेचन। भरत व लक्ष्मण, उद्धव व अर्जुन के सुन्दर दृप्टात दिये।

तुकाराम पढा। रात्रि को रामायण पढी।

बापू के प्रति मीराबहन की सगुण भक्ति व विनोबा की निर्गुण भक्ति है, ऐसा मैंने विनोबा से कहा। उन्होने स्वीकार किया।

•• •• ••

९-५-३२, धुलिया-जेल

सुबह ४ बजे व शाम को ८ बजे प्रार्थना। कविता-कौमुदी और उर्दू पढी। विनोबा के साथ 'मनाचे श्लोक' का पाठ। विनोबा से सगुण भक्ति व निर्गुण भक्ति पर विचार-विनिमय हुआ।

तुकाराम के अभग पढे व लिखे।

•• •• ••

१४-५-३२, धुलिया-जेल

आज मेरी दूसरी सजा के दो महीने पूरे हुए। 'सी' वर्ग का अनुभव। विनोबा व गोपालराव की सजा के आज चार महीने पूरे हुए। आज से इन दोनो की जुर्माने के बदले मे सजा चालू हुई।

टाल्स्टाय की तीसरी कहानी पूरी हुई। गोपालराव से विनोबा के जीवन-काल की चर्चा। उन्हे जितना मालूम है, वह नोट करके देना उन्होने मजूर किया।

१५-५-३२, धुलिया-जेल

आज गीता के १३वे अध्याय पर विनोबा का सुन्दर प्रवचन हुआ।

. ..

१६-५-३२, धुलिया-जेल

सुवह ४ वजे व शाम को ८ वजे प्रार्थना। 'मनाचे श्लोक' का पाठ किया। विनोबा से रामायण के सम्बन्ध मे चर्चा। तुलसी-रामायण रस के साथ पढी।

.. .. ..

१८-५-३२, धुलिया-जेल

विनोबा के साथ बरसात मे स्नान किया। ठडक हुई।

.. .. ..

२१-५-३२ धुलिया-जेल

आज सुवह प्रार्थना के समय विनोबा को उठाना पडा।

. .. .

२२-५-३२, धुलिया-जेल

१४वे अध्याय पर विनोबा का प्रवचन वहुत ही उत्तम हुआ।

.. .. ..

२४-५-३२, धुलिया-जेल

विनोबा से वाते। आज से विनोबा से रोजनिशी (डायरी) लिखाना शुरू किया।

. . ..

२९-५-३२, धुलिया-जेल

अस्पताल मे मणिभाई की वातचीत व व्यवहार से दु ख हुआ। खूब विचार किया।

विनोबा के साथ भी अच्छी तरह विचार किया। ईश्वर की प्रार्थना की।

विनोबा का १५वें अध्याय का प्रवचन अच्छा था, पर आज मन पूरा नही लगा।

३०-५-३२, धुलिया-जेल

राम-भक्ति किस प्रकार हो सकती है, इसपर विनोबा से विचार।

.. .. .

३१-५-३२, धुलिया-जेल

विनोबा की गीता के पहले व दूसरे अध्याय का थोडा भाग रामदास की नोट बुक मे से पढा, आनन्द आया।

स्वभाव के सम्बन्ध मे व खासकर आलस्य कैसे कम हो और राम की सच्ची भक्ति किस प्रकार से हो, इसपर विनोबा से विचार।

.. .. ..

१-६-३२, धुलिया-जेल

मुझे आशा है कि मै बाहर जाने पर पहले से ज्यादा शारीरिक परिश्रम कर सकूगा। विनोबा की सगत व प्रवचन से तो खूब ही लाभ व सुख-शान्ति मिल रही है, जो जन्मभर काम आवेगे। आशा है, तुम भी सब प्रकार से मजबूत होकर जेल से बाहर आओगी।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

.. .. .

१-६-३२, धुलिया-जेल

मेरे बहुत आग्रह करने पर गोपालराव ने विनोबा का 'जीवन-चरित्र' लिखना शुरू किया। जितना उन्होने लिखा, उसे देखा।

. .. ..

३-६-३२, धुलिया-जेल

विनोबा से उनकी जीवनी के सम्बन्ध मे बाते हुई।

.. .. .

५-६-३२, धुलिया-जेल

कडी बैरक व सामाजिक विषयो पर चर्चा हुई। बाद मे १६वे अध्याय पर विनोबा का बहुत ही व्यावहारिक व सुन्दर प्रवचन हुआ।

.. .. .

९-६-३२, धुलिया-जेल

जेलर आये, विनोबा का वजन कम हो रहा है। इस सम्बन्ध मे चर्चा

व विचार। विनोबा से बातें।

.. .. ..

१०-६-३२, धुलिया-जेल

भक्ति व श्रद्धा बढाने के बारे में आज विनोबा से करीब एक घंटा बातचीत हुई।

.. १२-६-३२, धुलिया-जेल

'गीताई' छपकर आई। आफिस से जाकर लानी पडी। मित्रो मे बांटी गई। विनोबा का १७वें अध्याय पर भावपूर्ण प्रवचन हुआ।

.. .

१८-६-३२, धुलिया-जेल

आज विनोबा को चक्कर आगया।

भोजन के बाद आराम किया। उसके बाद विनोबा के साथ 'गीताई' के दो अध्याय पढे।

शाम को खेल-कूद। विनोबा के पास रहा।

..

१९-६-३२, धुलिया-जेल

गीता के १८वें अध्याय का विनोबा ने सुन्दर व उत्साहप्रद विवेचन किया। गीता-प्रवचन समाप्त हुआ।

.. ..

२०-६-३२, धुलिया-जेल

मेरी नाक-कान पकडने की आदत पर विनोबा से बातचीत। उन्होने इसमे कोई आपत्ति नही बताई।

. . ..

२४-६-३२, धुलिया-जेल

चर्खा काता। प्यारेलाल से बातचीत हुई। विनोबा के सम्बन्ध मे मैंने अपना अनुभव कहा।

.. ..

२६-६-३२, धुलिया-जेल

आज ९ बजे भोजन किया, फिर आराम करने के बाद चर्खा काता।

कडी बैरेक। बीमारो से मिले। विनोबा के साथ विचार-विनिमय हुआ। प्रश्न-उत्तर ठीक हुए।

आज हमे ६ बजे बद किया गया। बाद मे अच्छी वर्षा हुई। विनोबा से कार्यकर्ताओ के बारे मे चर्चा व विचार ठीक-ठीक हुआ।

• •• ••

२७-६-३२, धुलिया-जेल

भोजन के बाद आराम किया। सुपरिंटेंडेंट ने सीताराम भाऊ के बारे मे बुलाया। उनसे साफ-साफ बाते हुई। उनके व्यवहार के बारे में मित्रो से—खासकर विनोबा, पुरुषोत्तमभाई, प्यारेलाल आदि से—बातचीत।

•• •• ••

२८-६-३२, धुलिया-जेल

जेल-कमेटी के मेम्बर तथा मि० भिडे कलेक्टर आदि आये। तबीयत के बारे मे पूछा। बाद मे कैदियो को दिये जानेवाले नमक, गुड, तुवर की दाल आदि की चर्चा की। सुपरिंटेंडेंट को गाली देने, हाथ उठाने, मारने आदि का हक है या नही? मि० भिडे व कमेटी व मेम्बरो से ठीक-ठीक चर्चा हुई। एक घटे से भी ज्यादा समय लगा।

प्यारेलाल, पुरुषोत्तमभाई, विनोबा, गोपालरावभाई का शाम को मणिभाई से विचार-विनिमय।

•• • ••

३०-६-३२, धुलिया-जेल

चर्खा काता विनोबा से बातचीत हुई। उन्हे मणिभाई की बातचीत का मतलब कहा। प्यारेलाल से थोडी बाते हुई।

शाम को खेल के बाद थोडी देर विनोबा से बातचीत हुई।

•• •• ••

१-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा को अस्पताल मे देर लगी। मणिभाई से उन्हे भी कडी भाषा मे साफ तौर से बाते करनी ही पडी। मणिभाई विनोबा के पास आये थे। मैं बोला नही। इसका मेरे मन मे दु ख हुआ। परन्तु दूसरा उपाय नही मालूम दिया।

३-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा से काफी विचार-विनिमय हुआ। आत्म-शुद्धि, नियम पालन, ईश्वर-प्राप्ति आदि के सम्बन्ध में।

· ·· ··

४-७-३२, धुलिया-जेल

सुपरिंटेंडेंट इन्स्पेक्शन के लिए आये। वजन कम हुआ। इस कारण एक रतल दूध व गेहूं लेने को कहा। दूध लेने की इच्छा कम थी। परन्तु उन्होंने कहा कि कुछ रोज लेकर देखना जरूरी है। विनोबा की भी राय थी कि मुझे यह स्वीकार कर लेना चाहिए।

कल से एक रतल दूध व गेहूं की रोटी मिलेगी।

· ·· ··

५-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा से गीता के श्लोकों का चुनाव करवाया। १८ अध्याय में से १८ श्लोक चुने।

· ·· ··

६-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा से 'उपनिषद' का पाठ व 'कठोपनिषद' का भावार्थ सुना। अच्छा लगा।

भोजन व आराम के बाद विनोबा से गीता के श्लोकों के अर्थ के सम्बन्ध में—खासकर १८वें अध्याय के ६६वें श्लोक पर—अधिक विचार किया।

विनोबा से बातें।

··

७-७-३२, धुलिया-जेल

विनोबा से अर्थ सहित 'मुंडकोपनिषद' सुना। चर्खा काता। विनोबा से बातें।

··

८-७-३२, धुलिया-जेल

पुरुषोत्तमभाई अस्पताल जाकर आये। उन्होंने बताया कि कल जिस लड़के को मारा था, उसके संबंध में संतोषजनक फैसला हो गया है।

१४-७-३२, धुलिया-जेल

आज विनोबा व गोपालराव छूटे। १० बजे तक उनके साथ रहा। उनके जाने पर दिल भर आया। तुलसीदासजी की चौपाई—'बिछुरत एक प्राण हरि लेही।' बार-बार याद आती रही। विनोबा की सगत व समागम से काफी लाभ व सुख मिला।

तुम्हारे शिक्षण के बारे मे पू० विनोबा से ठीक से बात हुई है। तुम श्री बालकोबा के पास से शिक्षण लो, यह मुझे पसद है। हिंदी का अभ्यास थोडा चलता रहे, यह जरूरी मालूम होता है, तथापि तुम्हे व पूज्य विनोबा को जिस प्रकार सतोष हो, वैसी व्यवस्था कर लेना। चि० रामकृष्ण के बारे मे मेरी इच्छा तो है कि वह श्री नाना (कुलकर्णी) के पास ही रहकर शिक्षण ले व हो सके तो नाना के घर पर ही रहे अगर उनकी पत्नी का स्वास्थ्य ठीक रहता हो तो। मुझे तो इससे बहुत सतोष मिलेगा। तुम अपनी मा को समझा सको तो पूज्य विनोबा की मदद लेकर जरूर समझाना, जिससे मेरी हमेशा की चिंता कम हो जाय। चि० कमलनयन आने पर विनोबा के पास व साथ रह सकेगा तो मुझे बहुत सुख व सतोष मिलेगा। विनोबा ने उसे बहुत जल्दी और अच्छी तरह अग्रेजी भी पढा देने का स्वीकार किया है। उसके बारे मे विनोबा से अच्छी तरह से बात हो गई है।

(मदालसा को लिखे पत्र से)

विनोबा की जबानी तुम्हे यहा के सब समाचार मिलेंगे। इस मास के आखिर तक तुम छूट जाओगी। चि० कमल भी छूट जायगा। बाद मे मुझ-से एक बार मिलने यहा आ जाना। पू० विनोबा की सगत से बहुत सुख, शाति व लाभ मिला है। चि० कमल, मदालसा, रामकृष्ण आदि की पढाई व रहन-सहन की विनोबा से अच्छी तरह चर्चा हो गई है। हम दोनो एकमत हो गये है। आशा है, तुम भी स्वीकार करोगी। विनोबा ने कमल को साथ रखने व उसे उत्तम अग्रेजी पढाने की जिम्मेदारी लेना स्वीकार कर लिया है। चि० रामकृष्ण को नाना कुलकर्णी के पास न रखने से उसको बहुत

महीने प्रिविलेज (सुविधाए) वद करने की सजा दी। चर्खा भी ले लिया।

जीवन मे नया अनुभव मिलना शुरू हुआ।

शाम की प्रार्थना अकेले की।

. .. .

११-९-३२, धुलिया-जेल

मेरे पास केवल तुलसी-रामायण, 'गीताई', 'आश्रम-भजनावली' रखी। चर्खे के विना सुनसान मालूम देने लगा। भजन, घूमना, खाना व सोने में विशेष समय बिताया। मन को शान्ति भी ठीक मिली। सन्तोषजनक अनुभव मिल रहा था। परमात्मा की प्रार्थना व स्मरण ठीक होता जा रहा था। पेडो व पक्षियो की तरफ भी देखा करता था।

शाम को भी प्रार्थना, भजन बाहर बैठकर किये।

खूब शान्ति मालूम हुई। रात सन्तोष व शान्ति से गई।

.. ..

१२-९-३२, धुलिया-जेल

सुपरिटेडेट इन्स्पेक्शन को आये। उनकी इच्छा समझौते की मालूम हुई। ठीक साढे तीन घटे बातचीत हुई। कुछ गरमागरमी, बाद मे सतोषजनक समझौता हुआ।

वापस अपनी कोठरी मे आना पडा। एकातवास का ज्यादा दिन अनुभव नही मिला।

.. .

३-१०-३२, धुलिया-जेल

जेलर आये। विनोवा का पत्र। तीन नियमो की चर्चा। प्रतिज्ञा लेने को कहा।

. .

५-१०-३२, धुलिया-जेल

जेलर व उनके भाई ने तीन प्रतिज्ञाए की—

१ मन मे भी क्रोध नही रखना।

२ किसीसे बैर रखने की वृत्ति नही रखना।

३ जल्दी सोना (दस वजे तक) व जल्दी उठना।

भावी जीवन का विचार कर कुछ निश्चय करना चाहे तो पू० विनोबा व तुम्हारी राय से कर सकता है।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

.. . ..

१२-१-३३, यरवदा-मदिर

पूज्य विनोबा तो नालवाडी चले गए। मैंने उनका पत्र बापू के नाम पढा था। उन्हे कह देना कि घुलिया-जेल मे जो विचार, खासकर खानदेश के बारे मे किये थे, उनकी तथा अन्य जिम्मेदारी से वह मुक्त नही हो सकते। हरिजनो के बीच नालवाडी जा बसना तो मुझे एक प्रकार से पसन्द है, परन्तु उसके पहले के निश्चय के मुताबिक तालुकाभर, जरूरत पडे तो प्रान्तभर और उससे भी ज्यादा जरूरी हो तो महाराष्ट्रभर मे घूमने की उन्हे तैयारी रखनी ही होगी। मैंने बापू से भी कह दिया है। छोटेलालजी को कह देना कि 'आश्रम-वृत्त' की अबतक की एक-एक नकल बापू को भेज देवे। आगे भी भेजते रहे। विनोबा को वहा किसी प्रकार का कष्ट वगैरह न हो, इसकी व्यवस्था भी पू० जाजूजी की सलाह से कर देना। भूल नही करना। कुआ वगैरह बनवाना पडे तो बनवा लेना। और जो जरूरी हो सो देख लेना।

(जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

.. .

२९-१-३३, यरवदा-मदिर

'हरिजन' की फाइल आई, देखी। 'गीताई' पर काका सा की सम्मति आई। विनोबा का सुन्दर प्रवचन हुआ। शरीर को वह विशेष कष्ट दे रहे है। बापू से इस बारे मे बातें करना है।

विनोबा के व मेरे खान-पान के बारे मे बापू ने जेल के मेजर भडारी आदि से चर्चा की।

.

१३-२-३३, यरवदा-मदिर

बापू ने कहा कि विनोबा तीन वर्ष के अदर ब्रह्म की प्राप्ति कर लेनेवाले है।

२३-३-३३, यरवदा-मदिर

विनोवा के कुछ सुन्दर वचनो का हिन्दी-अनुवाद किया।

· · · · ·

३-४-३३, वम्वई, आर्थर-जेल

विनोवा के सुन्दर वचनो का हिन्दी-अनुवाद शुरु किया।

· ·

४-४-३३, ववई, आर्थर-जेल

विनोवा के सुन्दर वचनो का हिन्दी-अनुवाद १२ वजे तक—करीव तीन घटे किया।

· · · · ·

५-४-३३, वम्वई, आर्थर-जेल के बाहर

विनोवा के सुन्दर वचनो का हिदी-अनुवाद।

११-४-३३, वर्धा

भोजन के वाद आराम किया। पत्रो के जवाव लिखे। विनोवा, जाजूजी से वातें। साथ मे भोजन किया। वहुत सुख अनुभव किया।

· · ·

१६-४-३३, वर्धा

वर्धा तालुका के कार्यकर्ताओ का परिचय।

विनोवा का छोटा-सा सुन्दर भाषण हुआ।

विनोवा ने घर पर दूध, खजूर, मुनक्का, सतरा लिया। विनोबा की राय मेरे पहाड पर जाकर रहने की रही। मन मे चिता रखने का कारण नही मैंने कहा।

· ·

२१-४-३३, वर्धा

प्रार्थना। विनोवा की राय से अलमोडा जाने का निश्चय।

· · · ·

२७-४-३३, शैल-आश्रम (अलमोडा)

आज मगनभाई गाधी की पुण्य-तिथि थी। विशेष कार्यक्रम। ६ वजे प्रार्थना। ८ वजे मगनभाई के जीवन के सवध मे पूज्य वापूजी, विनोवा,

काकासाहब, महादेवभाई के लेख व प्रभुदास के साथ का पत्र-व्यवहार पढा ।

३०-६-३३, वर्धा

वत्सला नालवाडी विनोबा के पास ११ बजे आती थी । रास्ते मे गाय चरानेवाले छोकरो ने उसे हैरान किया । मदालसा ने यह घटना कही । उसे सान्त्वना दी ।

४-७-३३, वर्धा

डोगरे को अस्पताल में देखा, आश्रम मे स्टेटमेट पूना भेजने के बारे में विनोबा से बाते की ।

१३-७-३३, वर्धा

आश्रम मे प्रार्थना । कु० तारा के साथ बाते । विनोबा से बाते ।

नागपुर-केस के कागजात देखे । वत्सला आई । रोने लगी । उसे सात्वना दी और कहा कि विनोबा को गुरु मानने से ही भविष्य मे जीवन का उद्धार होगा ।

१४-७-३३, वर्धा

मदालसा व वत्सला से बाते ।

१७-७-३३, वर्धा

चि० तारा व श्री बारुताई के साथ बाते की । विनोबा भी उपस्थित थे । उनका समाधान करने का प्रयत्न किया । उन्हे सतोष मिला ।

१८-७-३३, वर्धा

बापूजी के पत्र व तार आश्रम मे आये । विनोबा से विचार-विनिमय ।

१९-७-३३, वर्धा

आश्रम मे विनोबा ने आज तीन वर्ष पहले की घटना का दु:खकारक वर्णन किया।

.. .. ..

२४-७-३३, वर्धा

घर आकर सो गया। १ बजे के करीब स्नान, भोजन, बाद मे आराम। बापूजी के पत्र का जवाब लिखवाया। विनोबा से बाते—भविष्य के कार्यक्रम के सबध मे।

.. .. .

२६-७-३३, वर्धा

विनोबा घर आये। कार्य-पद्धति, जिम्मेदारी, बालको की व्यवस्था, मदालसा वगैरह के सबध मे विचार-विनिमय।

.. .. ..

२७-७-३३, वर्धा

सत्याग्रह-आश्रम की खानगी सभा मे विनोबा का सुन्दर प्रवचन हुआ। ३। से ५।। तक खुलासा व भविष्य के कार्य की चर्चा।

.. .. ..

१२-८-३३, वर्धा

प्रार्थना। आश्रम मे विनोबा, वारुताई, लक्ष्मीबाई, द्वारकानाथजी, गोपालराव, राधाकृष्ण आदि से विचार-विनिमय करके निश्चय हुआ कि—

(१) 'राष्ट्रीय कन्याशाला' का नाम 'कन्या-आश्रम' वर्धा रखा जाय और उसकी व्यवस्था लक्ष्मीबेन खरे व द्वारकानाथजी के सुपुर्द की जाय।

(२) स्वास्थ्य की दृष्टि से १२ नवबर तक मैं सत्याग्रह मे भाग न लू। बापूजी, काकासाहब, गगाधरराव देशपाडे, राजाजी आदि की आग्रह-पूर्वक राय के कारण, विनोबा की सलाह से यह निश्चय करना पडा। भविष्य मे स्वास्थ्य की हालत देखकर विचार करना होगा।

२०-८-३३, वर्धा

आज सुवह विनोवाजी से पूज्य बापू के उपवास के सबध मे विचार-विनिमय हुआ ।

. . . .

९-११-३३, वर्धा

'कन्या-आश्रम' की सभा हुई । विनोवा प्रमुख, जमनालाल उपप्रमुख, द्वारकानाथ मत्री, थत्ते, सत्यदेवजी, लक्ष्मीवाई, चन्द्रकान्ता सदस्य । इमारतो के लिए जमीन देखी ।

. .

१०-११-३३, वर्धा

तीन वजे से चार वजे तक पू विनोवा के साथ श्री गगाधररावजी, स्वामी आनन्द की गीता पर सुदर चर्चा हुई ।

. . . .

१५-११-३३, वर्धा

विनोवा की उपस्थिति में आज नालवाडी में महत्त्वपूर्ण विचार व निर्णय कार्यकर्त्ताओ के सामने हुआ । जाजूजी व जानकीदेवी भी हाजिर थे । नई जिम्मेवारी मालूम हुई ।

. . ' .

२९-११-३३, चिकल्दा

जाते समय चि० वत्सला से थोडी वातें—मदालसा के वारे मे व विनोवा, अन्नासाहव, वारुताई के समाधान के वारे मे । वाद में किला, मसजिद, तोप, तालाव वगैरह देखे ।

. . . . . .

९-१-३४, वर्धा

विनोवा के हाथ से आज 'नवजीवन मदिर' का उद्घाटन सुवह ९ वजे हुआ । विनोवा का व्याख्यान वहुत सुन्दर हुआ ।

. . .

१७-१-३४, मुरगाव, पवनार, सिंदी

सुवह सेलू होकर सुरगाव गये । साथ मे सीताराम शास्त्री, धर्माधिकारी,

मनोहरजी, कु० ताराबहन थे। सुरगाव मे सभा हुई। मदिर सुन्दर था। विनोबा ने हरिजनो के लिए खोला था। नानाजी महाराज का ठीक प्रभाव था। दुलुचद यहा रहता है। उसकी रिपोर्ट सुन्दर थी।

नालवाडी तिल-सक्राति पर विनोबा का भाषण। डिप्टी कमिश्नर श्री छोटेलाल वर्मा भी आये।

.. .. ..

२०-१-३४, वर्धा

श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर का वार्षिक उत्सव ४ से ५ तक हुआ, विनोबा का सुदर प्रवचन।

जाजूजी, विनोबा, कृष्णदास आदि से बातें।

.. .. ..

२६-१-३४, वर्धा

विनोबा से बिहार व बायकॉट के वारे में बातचीत की।

.. .. ..

९-२-३४, वर्धा

वुखार नही मालूम दिया। सुबह कमजोरी ज्यादा मालूम हुई। कुछ चक्कर आते थे।

आराम किया। दवा नही ली, टमाटर का सूप, मोसम्वी व थोडा दलिया लिया।

जानकीदेवी को मेरे स्वास्थ्य की चिन्ता व दु ख वहुत था। समझाने का प्रयत्न किया।

जाजूजी व विनोबा आये।

.. .. ..

१२-२-३४, वर्धा

कार्यकर्ताओ से बातचीत—थकावट आ गई।

दोपहर को फिर ४॥ वजे तक कार्यकर्ताओ से बातचीत की। विनोबा व टिकेकरजी आये।

गाधी-चौक मे बिहार के भूकम्प मे बलि हुए लोगो के लिए प्रार्थना हुई। उसमें शामिल हुआ।

१८-२-३४, वर्धा

श्री रमाबाई जोशी व चि. पन्ना ने आकर कन्या-आश्रम के बारे में . के व्यवहार की चर्चा की। दु ख हुआ। कन्या-आश्रम जाकर जाच की। विनोवा, द्वारकानाथजी व अनुसूया से वातचीत। पूज्य जाजूजी मिले नही। रात को चिन्ता रही।

.. .. ..

२५-२-३४, वर्धा

सुवह प्यारेलाल से वातें करते हुए कन्याश्रम गये।

पू० विनोवा का सुदर प्रवचन सुना। सतोष व सुख मिला।

.. .. ..

१-४-३४, वर्धा

विनोवा से भावी कार्य के वारे में वातचीत।

.. .. ..

१३-४-३४, वर्धा

विनोवा व जाजूजी से वायकाट व खद्दर के सवध में चर्चा व विचार-विनिमय।

.. . ..

२-६-३४, वर्धा

विनोवा ने खादी-यात्रा पर सुन्दर प्रवचन किया। कई उपयोगी दलीले दी। २॥ से ५ तक सभा का काम हुआ।

.. ..

७-६-३४, वर्धा

भोजन के बाद नालवाडी गया। श्री सुचेता, अनसूया, कृष्णदास साथ थे। विनोवा ने सात रोज का उपवास किया। दु ख व चिन्ता थी। सुचेता ने उन्हे भजन सुनाये। प्रार्थना।

.. . ..

१०-६-३४, वर्धा

वापू नालवाडी गये और विनोवा को कन्या-आश्रम ले आये।

१४-६-३४, वर्धा

शाम को आश्रम गया। विनोवा व कन्या-आश्रम की व्यवस्था की।

• •• ••

१५-६-३४, वर्धा

विनोवा का मौन। सुवह ८ से ९ व शाम को ६ से ७ तक खुला।

विनोबा के पास कन्याश्रम की सभा हुई—६ वजे से ७ वजे तक।

• •• ••

२३-६-३४, वर्धा

शाम को चन्द्रकान्ता रोहतगी, शान्ता रुइया के साथ आश्रम गये। वहा विनोवा से वातचीत। प्रार्थना तक ठहरा।

•• •

१२-८-३४, बबई

बापू को डाक्टरो की रिपोर्ट भेजी। डा जीवराज का व डा० रजबअली का पत्र जानकी के नाम भेजा। मैंने भी आपरेशन की इजाजत मागी।

• • •

२०-८-३४, बबई, (पोली क्लिनिक)

विनोबा वर्धा से आये। साथ मे दत्तु दास्ताने आया।

विनोवा से थोडी वाते। कमल ने घबराकर उन्हे भेज दिया।[1]

•• •

२१-८-३४, बबई

आज विनोवा ने प्रार्थना की व भजन गाये।

•• ••

२२-८-३४, बबई

विनोवा से थोडी वाते। कुछ देर आराम किया। उसके वाद विनोबा से आश्रम-सबधी वाते।

विनोवा वर्धा गये। दत्तु ने प्रार्थना की व भजन गाये।

••

---

१ जमनालालजी का उस समय वंबई में कान का बड़ा आपरेशन हुआ था।

१५-१०-३४, वर्धा

विनोवा से कन्या-आश्रम की वाते लिखकर देने के लिए कहा।

.. .. ..

१६-१०-३४, वर्धा

वापू व विनोवा से कन्या-आश्रम व महिला-आश्रम की थोडी वाते हुई।

.. . ..

१७-१०-३४, वर्धा

सुबह वापू व विनोवा से वाते।

पू० विनोवा, वापू, जाजूजी से अनुसूया के वारे मे सतोषजनक वातचीत।

.. ..

२३-१०-३४, वर्धा

दामोदर मूदडा से वाते। विनोवा, मोघेजी से अमलारानी की वाते सुनकर आञ्चर्य व विनोद हुआ। उसे वनारस जाने को समझाया और वह आज गई।

.. . ...

२८-११-३४, वर्धा

गाधी सेवा सघ की वैठक मे वापू न गाधी-सेवा-सघ के सभापति के लिए नाम लिखकर मागे। २१ जनो के नाम आये। विनोवा, काका-साहव, किशोरलालभाई के नाम आये। वापू और मैंने किशोरलालभाई का निश्चय किया।

... .

३०-११-३४, वर्धा

दोपहर को विनोवा ने ग्राम-सेवा के वारे मे कहा।

. .. .

१९-१२-३४, वर्धा

रामायण-पाठ वाद मे वापू से जाजूजी, विनोवा, कुमारप्पा के सामने वाते। आखिर मगन-स्मारक के लिए वर्धा का अपना वगीचा तय हुआ। मन को सन्तोष हुआ। वगीची व खेत देखने गये। फिर वापू से वाते।

२४-२-३५, वर्धा

आश्रम मे विनोवा ने अनन्तपुर के अनुभव कहे।

• •

४-३-३५, कलकत्ता

भाई जुगलकिशोरजी (विडला) से आज दस प्रतिशत मुनाफे का फैसला। पिछली दिवाली तक दस हजार मुकरडे (एकमुश्त) लेना। बाद मे दो हजार रुपया महीना जवतक वह व्यापार करे तवतक घाटे मे भी। नफा ज्यादा करे तो वह ज्यादा देंगे—खासकर हरिजन-कार्य मे।[1]

•• •• ••

२४-३-३५, वर्धा

नालवाडी मे विनोबा से बातें। धर्माधिकारी, अनुसूया, मदालसा, कमलनयन आदि के बारे मे चर्चा।

•• •• ••

२५-३-३५, वर्धा

राधाकृष्ण, विनोवा, वालुजकर, घोत्रे आदि से बातें। हरिजन-कार्य की व्यवस्था के बारे मे।

•• •• ••

७-५-३५, भवाली

कमलाबहन (नेहरू) के पास गया। स्वरूपरानीजी भी वहा आई हुई थी। स्वामी रामतीर्थ का जीवन तथा बापू व विनोबा के बारे मे विचार-विनिमय।

•• •• ••

१३-७-३५, वर्धा

विनोबा व बापू से खादी के नये परिवर्तन के सबध मे चर्चा हुई।

•• ••

२३-७-३५, वर्धा

विनोबा से देर तक बातचीत। सूत-कताई की दर तीन आने या चार

---

[1] विनोबाजी की सपत्तिदान की कल्पना जमनालालजी के दिमाग में भी काम कर रही थी। इसका सदर्भ सन् १९१२ की डायरी में भी आया है। देखें पृष्ठ १४९। —स०

आने करने के बारे मे चर्चा । गगादेवी व रामेश्वरजी के बारे मे अनुसूया, मदालसा आदि के बारे में चर्चा । बाद मे उनकी विचारधारा चली । देह कबतक रहेगा, क्या कार्य करने की इच्छा, चर्खा लेकर घूम-घूमकर प्रचार करने का विशेष उत्साह बताया । यदि कन्या-आश्रम चलेगा तो यही रहने की तैयारी बताई ।

• •

५-१०-३५, वर्धा

आश्रम मे 'कन्या-आश्रम' का फैसला । ५॥ से ६॥ तक विनोबा व शिक्षको से चर्चा ।

• • • •

९-११-३५, वर्धा

विनोबा से करीब डेढ घटे तक विचार-विनिमय । टेनरी देखने के बाद विनोबा ने कहा—

(१) देहात मे प्राकृतिक रूप से श्रमजीवी जीवन व्यतीत करनेवाले लोगो में श्रम-जीवन के सिद्धान्तो के लिए सच्चा प्रेम जाग्रत हो और उनकी सेवा-परायणता से देहातो की सेवा करनेवाले निष्ठावान् और व्यवहार-कुशल कार्यकर्ताओ का निर्माण हो ऐसी योजना ।

(२) शिक्षित समाज के जिन कार्यकर्ताओ के मन में देहात की सेवा की लगन लगी है, वे स्वतत्र रूप से देहात मे अपने पैरो पर खडे रह सके, ऐसी औद्योगिक शिक्षण की, सहकारिता की, और दिशा-दर्शन करानेवाली योजना और

(३) अहिंसात्मक आदोलन के मूल तत्त्वो के विषय मे विश्वास और समझ निकट के कार्यकर्त्ताओ मे भी कम दिखाई देती है । ऐसी स्थिति में उन मूल तत्वो का महत्व और तदनुसार जीवन-परिवर्तन करने की आवश्यकता—स्वय अपने और आसपास के लोगो के मन पर जम जाय ऐसी आचार-योजना बनाना ।

बापू से विनोबा की बातचीत पर विचार ।

१०-११-३५, वर्धा

विनोबा से ८ से ९ ॥ तक विचार-विनिमय । पूज्य जाजूजी से मिलकर तारा के साथ नालवाड़ी जाते हुए रास्ते मे बाते । उसकी मन.स्थिति समझी ।

.. .. ..

११-११-३५, वर्धा

विनोबा से ८ से ९॥ बजे तक विवाह-प्रकरण के सबध मे सुन्दर चर्चा । बाद मे वत्सला, मदालसा, कमल, नर्मदा, कृष्णदास आदि के सबधो के बारे मे विचार-विनिमय खानगी तौर से हुआ । विनोबा ने कहा—

(१) विवाह-सम्बन्ध अधिक दूर या अधिक नजदीकवालो मे नही करना चाहिए । जैसे शरीर से व विचार से स्वदेश व परदेश मे निराली सस्कृतिवाले सबध दूर के समझना । भाई, बहन या एक ही कुटुम्ब के सबध नजदीक के समझना । एक ही गुरु से साथ मे शिक्षण प्राप्त किये हुए विद्यार्थी व विद्यार्थिनी के सबध नजदीक के समझना ।

(२) विवाह-सबध मे ऊच-नीच की कल्पना को स्थान न देना ।

(३) विवाह-मर्यादा कम-से-कम लडके की २० और लडकी की १६ होनी चाहिए ।

(४) विवाह-सबध मे परस्पर के सुख से सतान पर होनेवाले सस्कार का विचार रहना जरूरी है ।

चि० तारा से नालवाडी जाते समय बाते । उसका विचार जाना । नालवाडी मे गगूबाई ने अपनी स्थिति कही ।

.. .. ..

१२-११-३५, वर्धा

विनोबा से ७॥। से ८॥। तक लक्ष्मीनारायण-मदिर-जन्म उत्सव व हरिजन-यात्रा, हिन्दी आदि पर विचार ।

१३-११-३५, वर्धा

विनोबा से ८ से ९।। तक बाते। विषय थे कार्यकर्ताओ की कमी, मगनवाडी की व्यवस्था, बापू का मोह, डेयरी, जामिया आदि।

• •   • •   • •

१४-११-३५, वर्धा

विनोबा से ८ से ९ तक मनुष्य-कर्त्तव्य पर सुन्दर विवेचन। शका-समाधान हुआ।

साधु पुरुष बनने का प्रयत्न सरल है। हरेक को सच्चाई के साथ अमल करना जरूरी है।

श्री प्यारेलाल व सुशीला के साथ बात करते हुए नालवाडी गया और आया। प्यारेलाल के रहन-सहन व विचारो के बारे मे बाते।

• •   •••   • •

१६-११-३५, वर्धा, बरोडा, पीपलखूटा, पवनूर

आज पवनूर मे विनोबा का मुकाम था। थोडी बाते। भोजन के बाद लड़को से बाते। माधोरावजी के लडके को देखा। बीमार था। देवी के पास-वाला आश्रम का स्थान देखा। विनोबा से खेती-कम्पनी के सबध मे चर्चा व विचार-विनिमय। बाबा साहब ओर डाह्याभाई भी साथ थे।

• •   •   •

२७-११-३५, वर्धा

श्री रामेश्वरी नेहरू को शाम को नालवाडी दिखाई। विनोबा से साम्यवाद के बारे मे विचार-विनिमय।

• •   •   • •

७-१२-३५, वर्धा

पवनार इजिन-घर तक गये। वापस लौटने पर पैदल। करीब ५।।-६ मील पैदल चलना हुआ। चि० शाता व सीता साथ थी। सीता से बाते। पवनार नदी का दृश्य दिखे, ऐसी ऊची जगह पर एक छोटी सी झोपडी बनाने का विचार।

२३-१२-३५, वर्धा

५ वजे उठे। मदालसा के साथ नालवाड़ी गया। रास्ते मे विनोबा से बाते हुईं।

• • • • • •

२४-१२-३५, वर्धा

विनोबा से मदालसा के बारे मे चर्चा।

२-२-३६, वर्धा

आज पवनार जाकर जमीन देखकर आये। रास्ते मे नालवाडी में कृष्णदास के घर की व्यवस्था देखी।

वहा एक वैरागी की १।।। एकड जमीन चार सौ रुपये में, और ३।। एकड सात सौ रुपये मे लेने को कहा। टेकरी का स्थान ऐतिहासिक मालूम हुआ। उसमे से विष्णु भगवान की एक बहुत ही सुन्दर मूर्ति निकली हुई देखी। वहा स्नान व जलपान किया।

• • • • •

१२-२-३६, आश्रम-साबरमती

विवाह के बारे मे मै तुमसे विशेष आग्रह नही करता और एक प्रकार से तुमको स्वतन्त्रता देने के लिए भी मै तैयार हो जाता।

बाकी मेरा तो प्रश्न अभी रहने दो। यदि पू० बापू एव विनोबा को तुम सन्तुष्ट कर सकोगे तो मेरे लिए अधिक कुछ कहना नही रहेगा।

(कमलनयन को लिखे पत्र से)

• •

१-३-३६

विनोबा से देर तक बातचीत—मदालसा, वत्सला के सबध में। १२।। से १ तक मौन रखा।

४-३-३६, सावली

आज सुबह गाधी-सेवा-संघ की कान्फ्रेस हुई। विनोबा का खुलासा सुन्दर व महत्त्व से भरा हुआ लगा।

५-३-३६, सावली

चि० मदालसा की मानसिक स्थिति तथा अन्य विचार जाने, चिन्ता हुई; विनोवा से वाते।

•• •• ••

६-३-३६, सावली चादा, वर्धा

आज की गाधी-सेवा-सघ की सभा में विनोबा का सुन्दर भाषण तकली तथा चरखे के वारे में हुआ। राजेन्द्रबाबू, वापूजी, मेरा व किशोर-लालभाई का भाषण भी ठीक हुआ।

•• •

६-५-३६, पवनार

खादी-यात्रा का कार्यक्रम। प्रथम गायन के वाद विनोबा का सुन्दर व प्रभावशाली प्रवचन। वाद मे पू० बापू का प्रवचन।

तीन वजे से कार्यकर्ताओ का परिचय।

५॥ वजे विनोवा का आखिरी भापण। फिर मेरा भाषण हुआ।

•• •• •

८-५-३६, वर्घा

विनोवा आये। वहुत देर तक चि मदालसा के भावी कार्यक्रम के वारे मे विचार।

•• •• ••

९-५-३६, वर्घा

श्रीमन्नारायण का दादा धर्माधिकारी, विनोवा, जाजूजी से भी परि-चय कराया।

• • •

२२-६-३६, वर्धा

सुवह नालवाडी गया। जानकीदेवी साथ थी। पू. विनोवा से वात-चीत। वहा थोडे पत्थर[1] ढोये। पसीना आ गया। श्री काशीवहन, कृष्ण-दास गाधी और मनोज्ञा से वातचीत।

•• •• ••

---

[1] आश्रमवासी अपने हाथो कुआं खोद रहे थे। उसके पत्थर ढोने से मतलव है।

६-७-३६, वर्धा

नालवाडी मे विनोवा के पास गया। कमलनयन, नर्मदा साथ थे। विनोवा से कमलनयन के योरप जाने के वारे में, सावित्री से सगाई होने के वारे में, सव स्थिति कही। मदालसा, उमा व नर्मदा का हाल कहा।

.. .. ..

२१-९-३६, वर्धा

सुवह घनश्यामदास विडला, वल्लभभाई, मणि आदि पवनार नदी पर घूमकर, व मन्दिर, हरिजन-वोर्डिंग देखकर घर आये। घनश्यामदासजी को पवनार का स्थान पसन्द आया। मूर्ति जो मदिर मे है, वह भी पसद आई।

.. ..

१९-११-३६, वम्बई (जुहू)

फैजपुर—विनोवा से मिलना और वातचीत। काग्रेस के काम का वर्णन समझा। देश-सेविकाओ से वातचीत। विनोवा, दास्ताने के साथ फैजपुर से लारी मे रवाना हुए।

.. .. ..

२४-१२-३६, फैजपुर

'गीताई' की प्रार्थना पढी, 'मधुकर'[१] मे से 'म्हातारा तर्क' व 'जशास तसे' प्रकरण पढे।

.. .. ..

२८-१२-३६, फैजपुर

'मधुकर' से 'मुले निघून जातील' लेख पढा। खादी-प्रदर्शनी विनोवा के साथ देखी।

हिन्दी-प्रचार-सभा का कार्य, काग्रेस-स्थान मे, राजेन्द्रवाबू के सभा-पतित्व मे हुआ।

काग्रेस का अधिवेशन ४॥ वजे से हुआ।

---

[१] विनोबाजी के मराठी लेखो का सग्रह।

१७-२-३७, वर्धा-सेगाव

सेगाव—बापू से नालवाडी तक मोटर मे बातचीत की। कार्यकर्ता-योजना, जाजूजी, साहित्य सम्मेलन-सभापति के सबध मे चर्चा। नालवाडी-चर्मालय खेत आदि देखा।

विनोबा से बहुत देर तक बातचीत हुई, मदालसा की सगाई, कार्यकर्ता-योजना, मानसिक स्थिति कही।

• • •

१८-२-३७, वर्धा

नालवाडी में पू० विनोबा से चि० मदालसा की सगाई-सबध व मानसिक स्थिति, कमजोरी आदि पर विचार-विनिमय हुआ।

• • •

२-३-३७, वर्धा

टेनरी—नालवाडी का समारम्भ। बालुजकर की रिपोर्ट मननीय थी। बापूजी ने भी कहा कि गौ-रक्षा व हरिजन-सेवा का टेनरी से सबध है।

• • •

९-६-३७, वर्धा

नालवाडी मे कृष्णदास गाधी के साथ विनोबा से थोडी बाते हुई। मनोज्ञा के यहा भोजन व बाते।

• • • •

११-७-३७, वर्धा

मदालसा के विवाह की तैयारी। ६। बजे दुकान पर (गाधी चौक) पहुचे। ७ बजे से विधि शुरू हुई। पू० बापूजी, विनोबा की हाजिरी मे विवाह सम्पन्न हुआ। समुदाय ठीक था।

•

२१-७-३७, बुधवार, वर्धा

विनोबा के पत्र के जवाब मे उन्हे पत्र लिखा। गगाबाई के बारे में ज्यादा गहरे मे जाने की मेरी इच्छा व उत्साह नही। उनका पत्र विनोबा के पास आया कि मुझे जाना ही होगा। मौलाना और मै बैलगाडी से सेगाव गये। बरसात बहुत जोर की हो चुकी थी और थोडी-थोडी हो भी

रही थी। राह मे गाड़ी का पहिया निकल गया। पहुचने मे देर हुई। वहा वापू से मेरी व मौलाना की थोडी वातचीत हुई। वापू भी थके हुए मालूम दिये। वापू से किशोरलालभाई व पडितजी के पत्रो पर विचार।

• ••

२२-७-३७, वर्धा

नालवाडी मे विनोवा से गगादेवी की हालत के सवध मे देर तक विचार-विनिमय हुआ। मेरी योजना उन्होने पसन्द की। चि० योगा के वारे मे वापू का पत्र भी उन्होने पसन्द किया।

गगादेवी को सेगाव वापू के पास भेजा।

•• •• ••

५-८-३७, नागपुर, वर्धा

वापूजी से सुवह व शाम को वातचीत हुई। विषय—मदालसा, उमा की सगाई, डा० वत्रा व उनकी पत्नी, सेगाव मे दो छोटे घर, विनोवा सीकर या सेगाव, हरिहर शर्मा, पारनेरकर, सावित्री व विदेशी वस्त्र, कार्यकर्ताओ का अभाव, आश्रम के नियमो का परिणाम, मनुष्य की कमजोरी, वापू का भावी कार्यक्रम आदि-आदि।

• • ••

७-८-३७, वर्धा

पू० विनोवा से देर तक विचार-विनिमय।

वापूजी का व विनोवा का पत्र पारनेरकर-रामेश्वरदास के वारे मे। वाद मे वापू के नाम का पत्र लिखकर सेगाव भेजने को दिया।

•• • •

२७-८-३७, वर्धा

नालवाडी मे विनोवा से उनके स्वास्थ्य के वारे मे वातचीत। स्वास्थ्य ठीक नही मालूम हुआ। राधाकृष्ण रुइया व रीता का परिचय करवाया।

•• ••

१०-९-३७, वर्धा

श्री कोठीजी से पवनार व शिक्षण के वारे मे वातचीत।

पू० विनोबा के पास चि० श्रीकृष्ण नेवटिया व लाली से देर तक बातचीत।

..

२-१०-३७, वर्धा

विनोबा का नवभारत-विद्यालय में बापू के जन्म-दिवस के निमित्त भाषण हुआ। लगभग एक घंटा सुना।

.. ..

२९-१२-३७, वर्धा

नालवाडी तक घूमने गया। विनोबा से बातचीत, विजय, महादेवी अम्मा, सहदेव आदि के बारे में चर्चा।

. .. .

१३-१-३८, वर्धा

सेलसुरा जिला-किसान-सभा में प्रमुख होकर गये। साथ में विनोबा व काका साहब थे। जिला-कांफ्रेंस एक प्रकार से सफल हुई कही जा सकती है। १॥ बजे से रात को ८॥। बजे तक एक बैठक में काम करना पड़ा। लोगों से परिचय हुआ।

.. .. ..

२०-१-३८, वर्धा

लार्ड लोथियन ने आज सुबह हरिजन-बोर्डिंग, हिंदी-प्रचार-विद्यालय, नालवाडी-टेनरी व कार्यालय का ठीक तौर से निरीक्षण किया। उन्होंने करीब २०-२५ मिनट विनोबा के साथ आध्यात्मिक विचार-विनिमय भी किया।

. .. ..

२९-१-३८, वर्धा

घूमते हुए नालवाडी पैदल गया व आया। चि० शान्ता साथ में थी। विनोबा से सेगाव के बारे में विचार-विनिमय। विनोबा का स्वास्थ्य आज कुछ ठीक मालूम हुआ। चि० शान्ता महिला-सेवा-मण्डल में तथा आत्म-विश्वास आदि के बारे में विचार-विनिमय।

२-३-३८, वर्धा

नालवाडी—विनोवा से देर तक वातचीत । जुहू जाने के वारे में जानकी का तार आया । उन्होंने विचार करके जवाव देने को कहा ।

* * *

३-३-३८, वर्धा

सेगाव—वापू के पास विनोवा, महादेवभाई । वापू से मदनमोहन के हाल कहे । नागपुर प्रान्तीय कांग्रेस-कमेटी से त्याग-पत्र देने के वारे में विचार-विनिमय देर तक हुआ । वापू ने अपनी नीति कही । सव जिम्मेदार कार्यकर्ताओ को कांग्रेस में सम्मिलित होना चाहिए । विनोवा व शिक्षण-वोर्ड आदि के वारे मे चर्चा ।

* * *

१६-४-३८, वर्धा

सोनेगांव—खादी-यात्रा । विनोवा का मार्मिक भापण हुआ । खादी के भाव वढाने के वारे मे श्री जलाल का भापण भी ठीक हुआ । चर्खा-यज्ञ मे एक घटा काता ।

* * *

१९-४-३८, वर्धा

विनोवा से देर तक विचार-विनिमय—मानसिक अशान्ति तथा रमण महर्षि आदि के वारे मे ।

सेगाव—वापूजी से चि० राधाकृष्ण की नालवाडी का काम वढाने की योजना पर विचार-विनिमय । वापूजी ने उसकी जिम्मेदारी लेना उचित समझा—अंन्दाजन चालीस हजार रुपये की । मैंने कहा, विनोवा व जाजूजी की लिखित स्वीकृति होना जरूरी है । वापूजी मुझसे सलाह व मदद की आशा रखते हैं ।

* * *

२३-६-३८, वर्धा

वालकोवा के पास थोड़ी देर वातचीत । मन को शान्ति मालूम हुई ।

पवनार मे विनोबा से रमण महर्षि व श्री अरविन्द के वारे मे देर तक

वातचीत, फिर प्रार्थना। ९ बजे के करीब सोया।

.. .. ..

२४-८-३८, पवनार, वर्धा

सुबह पाच वजे उठा। निवृत्त होकर विनोबा के साथ वातचीत। १॥ मील तक पैदल घूमते-घूमते वर्धा आया। वर्धा से साप्ताहिक पत्र निकालने के सबध मे विचार-विनिमय। दादा धर्माधिकारी व गोपालराव काले सम्पादक हो, यह विचार हुआ।

१८-१०-३८, वर्धा

घूमते हुए पवनार गये। पूज्य विनोबा का स्वास्थ्य ठीक देखकर आनद हुआ। वजन लिया। १२० पौड होने की उन्हे आशा है।

.. .

२९-१०-३८, वर्धा

घोत्रे और किशोरीलालभाई से वातचीत। बापू का पत्र—गाधी-सेवा-सघ से मेरे त्याग-पत्र देने के बारे मे, किशोरीलालभाई के पत्र से थोडी गलतफहमी हुई। महिला-आश्रम के काम मे घोत्रे मदद करे, यह निश्चय हुआ।

.. .. ..

३०-१०-३८, वर्धा

विनोवा से मेरे त्याग-पत्र आदि के बारे मे विचार।

. .

१-११-३८, वर्धा

डा० वारलिंगे, दादा, भीकूलाल आये, जाजूजी व वावासाहव करन्दीकर भी थे। श्री हरकरे 'रिवीजन' करना चाहते हैं। देर तक विचार। विनोवा, जाजूजी, किशोरीलालभाई जो निर्णय कर देगे, वह मानने को वह तैयार है।

..

४-११-३८, पवनार-वर्धा

सुवह प्रार्थना, विनोवा के साथ। मनुष्य अगर अपनी कमजोरी न

निकाल सके तो आत्म-हत्या में क्या दोष—इस समस्या पर भली प्रकार विचार-विनिमय। अप्पा पटवर्धन आदि भी थे। विनोबा के साथ घूमा। अप्पा पटवर्धन साथ थे। सेनापति, साने गुरुजी आदि के सत्याग्रह पर विचार सुने।

वालुभाई मेहता आये। 'सेवक' के मासिक खर्चे के बारे मे विचार-विनिमय हुआ। एक आदमी को ज्यादा-से-ज्यादा बीस रुपये काफी हो सकते हैं। विनोबा ने प्रमाण देकर समझाया।

दादा और राधाकिशन आये। बाबूराव हरकरे के बारे में दादा ने विनोबा के साथ बाते की। मैंने भी मजूर की—अगर सचमुच मे हृदय-परिवर्तन हुआ, यह विश्वास हो जाय तो।

पू० बापू, सरदार, जानकीदेवी व कमल को महत्व के, हृदय के उद्-गारो के तथा दुःख व जो मथन चल रहा है, उसके पत्र लिखे। कुछ पत्र विनोबा ने देखे। राधाकृष्ण ने नकले की।

•• •• ••

५-१२-३८, वर्धा

विनोबा से नागपुर म्युनिसिपल कमेटी के बारे में विचार-विनिमय।

•• •• ••

२०-१-३९, वर्धा

विनोबाजी से चर्चा। राधाकृष्ण को जयपुर-सत्याग्रह मे मदद देने के लिए भेजने का निश्चय किया। विनोबा का उत्साह खूब था।

•• •• ••

२१-२-३९, मोरासागर (जयपुर-जेल)

तुम 'सर्वोदय' मासिक नही पढती हो तो जरूर पढना शुरू कर देना। तीसरे अक मे पृष्ठ ३८ पर विनोबा का प्रवचन 'निर्दोष दान और श्रेष्ठ कला का प्रतीक खादी' और बापू के पत्र पढने योग्य हैं।

(जानकीदेवीजी को लिखे पत्र से)

२८-२-३९, मोरासागर

मुझे विनोबा के ससर्ग मे अधिक रहना चाहिए। उसीसे मेरा मार्ग साफ निष्कलक हो सकेगा। जीवन मे असली उत्साह प्राप्त हो सकेगा।

बापू के प्रेम व उदारता का खयाल करता हू तो अपनेको बहुत नीचा और नालायक (छोटा और अयोग्य) समझने (महसूस करने) लगता हू। बापू को समय बहुत कम मिलता है। इसलिए कई बार न्याय के मामले मे गलतिया होती दिखाई देती है। परन्तु उनके मन मे द्वेष, ईर्ष्या या किसीका बिगाड हो, यह वृत्ति न होने से उसका परिणाम ज्यादातर ठीक ही होता है।

आज से 'मधुकर' पढना शुरू किया।

• • •

१६-४-३९, मोरासागर

'मधुकर' आज पूरा किया। बहुत ही उपयोगी है। इसका सुन्दर हिंदी में अनुवाद अवश्य करवाना चाहिए। दादा से कहना होगा। मेरे लिए इसके कई प्रकरण विचारणीय व लाभदायक है।

• • •

२६-४-३९, मोरासागर

तुम कोई जिम्मेदारी का काम करोगी तो मुझे खूब खुशी व सुख मिलेगा। मुझे तो आशा है कि तुम जरूर कर सकोगी।

ग्राम्य जीवन का काम करना हो तो आशाबहन या प्रेमाबहन कटक या विनोबा के पास रहकर कार्य करना व सीखना होगा।

(उमा अग्रवाल को लिखे पत्र से)

• • •

२४-५-३९, कर्णावतो का बाग जयपुर-जेल

जानकी अकेले ही वर्धा से आई। विनोबा ने यहा आने की सलाह दी और वह दूसरे रोज ही रवाना होकर आ गई।

२७-७-३९, कर्माचनी का बाग

मैंने और दुर्गाई का 'सर्वोदय' पढ़ा। अच्छा लगा, अखबार देंगे।

'जो धनिक अपने आसपास लोगों की पर्वा न करता हुआ धन इकट्ठा करता है, वह धन प्राप्त करने के बदले अपना वध प्राप्त करता है' —विनोबा

.. .. ..

२२-८-३९, वर्धा

पवनार में विनोबा से बातचीत। प्रार्थना में सम्मिलित।

.. .. ..

२४-८-३९, वर्धा

पवनार—विनोबा से बातचीत। उनसे श्री राजनारायण का परिचय करवाया।

.. .. ..

२५-८-३९, वर्धा

श्री राजनारायण आगरावाले विनोबा के पास कमल के साथ गये।

श्री राजनारायण व उमा की आज बातचीत हुई। उमा ने कहा उसे पूरा सन्तोष हो गया है। बाद में पू० विनोबा व बापूजी की राय जानी। उन्हें भी पसन्द आ गया। विनोबा व बापूजी के समक्ष सम्बन्ध निश्चित हो गया। उन्होंने आशीर्वाद दिया। बाद में रात को कुटुम्ब के लोगों ने देख लिया। गुड़ वगैरा बांट दिया गया।

.. .. .

२६-२-४०, वर्धा

विनोबा से पवनार जाकर मिल आया। मदू, लक्ष्मी, शान्ता भी साथ थीं। जयपुर की स्थिति, व घुटने के दर्द आदि के बारे में बातचीत। जयपुर में अपनी ओर से सत्याग्रह न करते हुए रचनात्मक काम पर जोर देने की विनोबा की भी राय रही। स्टेट अनुचित तौर से रुकावट डाले तो अवश्य मुकाबला करना चाहिए, इत्यादि।

.. .. ..

१३-७-४०, वर्धा

चि० उमा के विवाह का कार्य सुबह ७॥ बजे शुरू हुआ। वर्षा हो रही

थी, फिर भी उपस्थिति ठीक थी। मण्डप ठीक बना था। पूज्य बापूजी और बा का आशीर्वाद उमा-राजनारायण के लिए प्राप्त होना बडे भाग्य व सुख की बात थी।

बरातियो के साथ बस मे पवनार गया। नदी मे बाढ होने के कारण पू० विनोबा से नही मिल सके।

• • •

२२-८-४०, वर्धा

वर्किंग कमेटी ८॥ से ११॥ तक हुई। आखिर मुख्य प्रस्ताव मजूर हुआ। वर्तमान स्थितिवाले प्रस्ताव पर काफी विचार-विनिमय हुआ।

शाम को २। से ६। बापू वर्किंग कमेटी मे रहे। आज बातचीत के सिलसिले मे उन्होने सकोच व दु खित हृदय से अपनी मनोदशा विचार व भावी कार्यक्रम बताया। उसे सुनकर सबके-सब चकित व किकर्तव्य-विमूढ हो गये। मन मे चिन्ता और विचार शुरू हुआ।

खुरशीद बहन से मिलकर सेवाग्राम मे बापू से मिला। महादेवभाई से बापू की भयकर योजना समझी। सरदार, राजेन्द्रबाबू से बातचीत। चिन्तित अवस्था मे सोया।

•

२३-८-४०, वर्धा

सेवाग्राम—मौलाना, सरदार, जवाहर गये। बापू से बातचीत हुई। थोडा समाधान हुआ।

पवनार—विनोबा से मिलकर सारी स्थिति उन्हे बताई। शाम को बगले आने का निश्चय। उनकी मदद मिलेगी। बापू किशोरलालभाई के घर आये। विनोबा, किशोरलालभाई, जाजूजी, काकासाहब से अपनी भावी योजना के (उपवास के) बारे मे विचार-विनिमय किया। विनोबा की राय ठीक पडी। वर्किंग कमेटी की स्वीकृति से ही इस समय बापू यह विकट मार्ग स्वीकार कर सकते है, यह तय हुआ। बापू ने वर्किंग कमेटी के आगे विचार रखे। वर्किंग कमेटी की सर्वानुमति से प्रेसीडेन्ट मौलाना ने बापू को पत्र लिखकर दिया। उसमें प्रार्थना की गई है कि यह मार्ग स्वीकार न करे। बापू ने मजूर किया।

११-१०-४०, वर्धा

वर्किंग-कमेटी २ बजे से शुरू हुई। पू० बापू आये। १३ मेम्बर हाजिर थे। केवल राजेन्द्रबाबू व डा सैयद महमूद गैर-हाजिर थे। बापू ने वाइसराय से हुई बातचीत कही। वर्तमान मे अपनी व्यक्तिगत सत्याग्रह की योजना, विनोवा को प्रथम सत्याग्रही वनाने की कल्पना आदि बाते कही।

.. .. ..

१३-१०-४०, वर्धा

वर्किग कमेटी की मीटिग सुवह ८।। से १०।। बजे तक और शाम को २ बजे से ५।। बजे तक हुई। बापू ने शकाओ का समाधान, जितना उनके लिए सम्भव था, किया। मौलाना व जवाहरलालजी का पूरा समाधान नही हुआ। डिसिप्लिन का पालन करने का निश्चय।

पू० बापू के साथ पवनार। विनोबा से बातचीत। प्रथम सत्याग्रही के नाते विचार-विनिमय। विनोवा अपना वयान तैयार करेगे। बापू स्टेटमेट बनावेगे। विनोबा बापू से ता १५ मगलवार को २ बजे मिलेगे। उसके बाद कार्यक्रम निश्चित होगा। बहुत करके पवनार से बुधवार या गुरुवार को विनोबा सत्याग्रह शुरू करेगे।

.. .. ..

१४-१०-४०, वर्धा

सरदार वल्लभभाई, मणिवेन की विनोबा से पवनार मे देर तक बाते। काग्रेस वर्किग कमेटी की विचार-धारा के ऊपर विचार-विनिमय।

.. .. ..

१७-१०-४०, वम्वई से वर्धा

जानकीदेवी से मिला। पू० बापू से इजाजत लेकर मोटर से पवनार गया।

पवनार—विनोबा के सत्याग्रह का प्रथम भाषण हो रहा था और बरसात भी हो रही थी। करीब १०-१५ मिनिट भाषण सुना। उसके वाद विनोवा के साथ जमना-कुटीर मे देर तक बातचीत और विचार-विनिमय।

कृपलानी, सुचेता, किशोरलालभाई, गोपालराव के साथ सेगाव गया।

बापू से विनोबा के कार्यक्रम आदि की चर्चा हुई। विनोबा का भाषण महादेव-भाई ने जो लिखा था, उसे पूरा पढ़ा।

पवनार—बापू के साथ हुई बातें विनोबा से कहीं। विचार-विनिमय होता रहा। छत पर प्रार्थना। बाद में वहीं सोया।

• •• •

१८-१०-४०, पवनार सुरगांव

सुबह जल्दी उठा। प्रार्थना की। कुंदर, विनोबा व मनोहरजी के भाई के साथ पैदल सुरगांव गया। बरसात के कारण रास्ता खराब था। जाते-आते ६॥ मील पैदल चलना हुआ। कुंदर से ठीक परिचय हुआ। सुर-गांव मंदिर में विनोबा का भाषण ९ बजे शुरू हुआ। करीब ७० मिनट बोले। भाषण अच्छा था। साफ सुनाई दिया। सुरगांव ठहरे, वहीं स्नान किया। पंजाबराव पटेल के घर चून-भाकरी का भोजन बहुत स्वाद लगा। आराम, चर्खा, स्त्रियों की प्रार्थना। भजन। नारायणशंकर ने भी भजन ठीक गाये। कोई सौ बरस के बूढ़े झीतराजी माली से मिलना हुआ, परशराम पटेल से भी। करीब ४ बजे रास्ते के खेत देखते-देखते वापस लौटे। श्री आशाबहन पवनार तक साथ थीं। महिला-आश्रम से शान्ताबहन और कमलाताई आये। देर तक बातचीत। विनोबा से महिलाश्रम तथा व्याख्यान वगैरह पर चर्चा हुई। शाम की प्रार्थना ऊपर छत पर हुई।

•• •• •

१९-१०-४०, सेलू-वर्धा-पवनार

सुबह प्रार्थना। विनोबा के साथ बातचीत। आशाबहन वगैरह के साथ सेलू गया। करीब दो मील पैदल यात्रा हुई।

सेलू में विनोबा का भाषण ९ से १०-१० तक हुआ। रचनात्मक कार्य व सफाई पर भी बोले। मैला भी भगवान का रूप है, इसका सुन्दर खुलासा किया। जानकीदेवी के पास फलाहार करके पवनार जाते हुए रास्ते में नालवाडी में मां से मिला। वहां से राधाकिसन को साथ लेकर पवनार गया। पवनार में विनोबा से विचार-विनिमय। भाषण की समालोचना।

२०-१०-४०, पवनार, देवली, वर्धा

सुवह विनोवा के साथ प्रार्थना। राधाकिसन से वाते की। पवनार से वर्धा। विनोवा मदिर गये व जानकीदेवी से वातचीत करते रहे। मैंने स्नान किया।

वर्धा से देवली—दहेगाव स्टेशन उतरकर मोटरलारी से देवली गये। विनोवा का भाषण ९-१० से १०-२० तक हुआ। आश्रम देखकर प्रेस मे गये। वहीपर भोजन हुआ। कोई बीस आदमियो ने भोजन किया। १॥ वजे की एक्सप्रेस से वर्धा आये—महादेवभाई कमला वगैरह के साथ।

• • ••

२१-१०-४०, वर्धा

सुवह ५॥ के करीव गोपालराव काले आये। उन्होने कहा कि विनोवा को रात के ३॥ वजे 'डिफेन्स आफ इडिया एक्ट' मे गिरफ्तार करके मोटर से वर्धा लाये है। सेवाग्राम, नागपुर वगैरह फोन किया। विनोवा वर्धा-जेल मे पहुच गये। वर्धा मे हडताल रखने की योजना, व्यवस्था की। अन्य खवरे मिली।

जेल मे विनोवा से मिलकर वापू से सेवाग्राम मे सारी हकीकत कही। वापू ने स्टेटमेट का मसविदा वनाया। वापू का मौन था। अन्य सूचनाए लिखकर दी। बापू से और बाते भी हुई। दुर्गाबहन के यहा भोजन। महादेवभाई व राजकुमारी के साथ जेल मे विनोवा से मिले। उन्होने जो स्टेटमेट तैयार किया था, उसमे कुछ सुधार करके सुनाया।

विनोवा का मुकदमा हुआ। श्री कुन्ते मजिस्ट्रेट ने तीन अपराधो पर तीन-तीन महीने की सादी सजा दी। तीनो सजाए साथ-साथ चलेगी।

•• •

१७-१२-४०, वर्धा

नालवाडी मे जाजूजी, काकासाहव, वालुजकर, राधाकिसन आदि से विचार-विनिमय। सब सस्थाओ का एक ही ट्रस्ट बने, इस विषय पर मैंने अपने विचार कहे।

२१-१२-४०, सेवाग्राम, वर्धा-जेल

सुबह ४ बजे उठा। पू० बापू से बातचीत हुई। इतने मे खबर आई कि पुलिस गिरफ्तार करने आ गई है। अधिकारियो की बात से मालूम हुआ कि मुझे 'डिटेन्शन' मे रखेगे।

कोर्ट का काम १२ बजे चला। मेरा स्टेटमेट वगैरह रेकार्ड हो गया। २। बजे जज ने ९ महीने सादी कैद, और पाच सौ रु० दड की सजा दी। दड वसूल न भी हुआ तो सजा ज्यादा नही। 'ए' क्लास की सिफारिश। मैंने धन्यवाद देते हुए कहा सजा कम दी गई है।

३ बजे के करीब मोटर से नागपुर श्री भरुचा के साथ मुझे भेजा गया। नागपुर-जेल मे ५।। के करीब पहुचा।

• •

२२-१२-४०, नागपुर-जेल

सुबह करीब ५ बजे उठा। रात को ठड ज्यादा पडी। परन्तु नीद ठीक आई। सुबह मित्र-मण्डली से मिला। पहले विनोबा से, बाद मे प्राय सभी राजनैतिक कैदियो से मिलना हुआ। विनोद, व्यवस्था।

विनोबा से घूमते समय ठीक बातचीत हुई।

• •

२३-१२-४०, नागपुर-जेल

नीद ठीक आई। सुबह घूमना हुआ। विनोबा आये, नाश्ता किया। कमिश्नर मि० राव व जेल-सुपरिटेडेट श्री गारीवाल आये। थोडी बाद बातचीत हुई।

•

२४-१२-४०, नागपुर-जेल

विनोबा के साथ प्राय एक घटा धूप मे घूमा। शाम को भी घूमना हुआ। विनोबा के साथ बातचीत। ब्रिजलालजी बियाणी के द्वारा जेल मे जमा हुए लोगो का परिचय मिला।

•

२५-१२-४०, नागपुर-जल

मालिश देखने विनोबा आये। आज प्यारेलाल के साथ ब्रह्मदत्त ने भी मालिश की।

विनोबा के साथ घूमना हुआ। सुबह गीताई वर्ग में गया।

• •• ••

२६-१२-४०, नागपुर-जेल

सुबह विनोबा के साथ घूम। बाद मे थोडी देर गीताई-वर्ग मे बैठा।

•• •• ••

२९-१२-४०, नागपुर-जेल

मौलवी प्यारेलाल को कुरान के उच्चारण बतलाने आये।

विनोबा भी हाजिर थे। शाम को श्री छोटेलालजी, काशीप्रसादजी पाण्डे वगैरह के आग्रह से कल से विनोबा के प्रवचन २।। से ३। तक रखने का विनोबा के साथ निश्चय किया।

• ••

३०-१२-४०, नागपुर-जेल

चर्खा कातते समय प्यारेलाल से काफी बातचीत हुई। विनोबा के तकली-वर्ग मे चर्खा काता। सुपरिंटेडेट आये, विनोबा वगैरह से बातचीत।

आज से विनोबा का भाषण शुरू हुआ। विनोबा ने बापू की ट्रस्टीशिप की कल्पना की सुन्दर व्याख्या की। कबीर का एक दोहा कहा।

•• ••

३१-१२-४०, नागपुर-जल

विनोबा का प्रवचन—'कजूस चोर का बाप' कल के इस विषय को आगे बढाया और हृदय-परिवर्तन के सिद्धान्त को ठीक समझाया।

तकली काती—बहुत ही धीमी गति से। सुपरिटेडेट व जेलर सुबह आये। जेलर शाम को भी आया। आज यह डायरी पूरी हुई। वन्देमातरम्।

•• •• ••

१-१-४१, नागपुर-जल

विनोबा का प्रवचन। हृदय-परिवर्तन के दृष्टान्त मे खुद अपना हृदय पलटने का प्रयत्न करने की आवश्यकता बताई।

•• •• •

२-१-४१, नागपुर-जल

विनोबा का प्रवचन। सात लाख गावो मे एक लाख कार्यकर्ता की

आवश्यकता । रचनात्मक कार्य का महत्व ।

शाम को विनोवा की प्रार्थना में गया ।

प्रार्थना के बाद विनोबा ने रामायण की चौपाई का अर्थ समझाया ।

• •

३-१-४१, नागपुर-जल

विनोवा का प्रवचन—तेरह रचनात्मक कार्य, सत्याग्रह की व्याख्या । शाम की प्रार्थना मे विनोबा ने तुलसी-रामायण की चौपाई मे लक्ष्मण की भक्ति की प्रशसा की । झडे के डडे की उपमा सुन्दर थी ।

•

४-१-४१ नागपुर-जेल

मुलाकात मे चि० शान्ता, मदालसा, श्रीमन्नारायण आये । चालीस मिनट तक राजी-खुशी के समाचार जान लिये । विनोवा के तेरह-सूत्री रचनात्मक-कार्य का नक्शा भिजवा दिया ।

५-१-४१, नागपुर-जेल

विनोवा से 'ए' और 'बी' वर्ग के खानपान और चर्खा व खादी का वातावरण वनाने के सम्वन्ध मे वातचीत तथा विचार-विनिमय हुआ ।

जेल-अधिकारी अगर खुले तौर से वाहर का सामान लेने या 'ए' वर्ग-वालो के लिए आया हुआ सामान लेने की इजाजत देते है तो नैतिक दृष्टि से लेने व खाने मे हर्ज नही । जहातक हो सके और स्वास्थ्य के लिए जरूरी न हो तो 'ए' वर्ग को भी खानपान का सामान वाहर से ज्यादा न मगाने का खयाल रखना ठीक रहेगा ।

विनोबा का प्रवचन—उत्पादक कार्य (मजूरी) का महत्व व आवश्यकता पर ।

•

६-१-४१ नागपुर-जेल

विनोवा का प्रवचन वहुत ही भावनापूर्ण व अन्तर मे प्रवेश करनेवाला हुआ । तकली-वर्ग, शाम की प्रार्थना, रामायण-वर्ग ।

७-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा का वर्ग २॥ से ३। तक। शुद्ध व्यापारी नीति का खुलासा किया। शाम को रामायण व प्रार्थना के बाद रामनाम-जप का महत्व समझाया। अगूठे मे खून आने की वजह से तकली-वर्ग मे आज बैठना नही हुआ।

• •　　　　•　　　　• •

८-१-४१, नागपुर-जेल

सुबह गोडे मे दर्द मालूम दिया। देर तक लेटा रहा, सेक किया।

धीरे धीरे चलकर पूनमचन्दजी के साथ विनोबा के पास गया। विनोवा से राष्ट्रीय-स्वयसेवक दल आदि के बारे मे विचार। नवयुवको के प्रति हम लोगो का उदासीन रहना ठीक नही। हमे उनके स्वभाव और प्रकृति के अनुकूल कार्यक्रम उन्हे देना चाहिए। उन्होने कहा कि यह बात तो ठीक है।

आज विनोवा के प्रवचन मे नही जा सका। बुरा मालूम दिया। शरीर टूटता था, विचार आते रहे, क्योकि बहुत देर तक अकेला रहना पडा।

शाम को विनोबा आये। प्यारेलाल भी साथ थे। मैने विनोद मे कह दिया, अगर मृत्यु आवे तो स्वाभाविक तौर से तो जहा मृत्यु हो वही जला देना अच्छा है, परन्तु मेरी इच्छा नागपुर के बदले पवनार या सेवाग्राम की टेकरी पर जलाये जाने की है, आदि।

•　　　　• •

१३-१-४१ नागपुर-जल

चर्खा। विनोवा के प्रवचन मे गया।

सुपरिटेंडेंट पहले राउड पर आ गये। स्वास्थ्य आदि के समाचार पूछ गये। बाद मे दुबारा फिर आये। सुपरिटेंडेंट की माताजी की मृत्यु हो गई, समवेदना प्रकट की। उनको बापू ने कमलनयन के मिलने पर मेरे बारे मे महादेवभाई के जरिये पत्र लिखवाया कि मुझे कहा जाय कि मैं ज्यादा दूध-फल ले रहा था, वह चालू रखू। यह पत्र मुझे पढाया। मेरे साथ देर तक चर्चा की। मुझे अपने खर्च से दूध-फल लेना चाहिए आदि समझाने लगे। उनसे पहले जो बात हुई थी, वह मैंने दोहराई, ब्रिजलाल, प्यारेलाल मौजूद थे। शाम को विनोवा से भी इस सम्बन्ध मे विचार-विनिमय

हुआ। उन्होंने भी कहा कि दूध-फल लेना शुरू कर देना ठीक रहेगा आदि।

.. .. ..

१४-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा १॥। से २॥ बजे तक आये। बातचीत। बापू को अपनी शारीरिक व मानसिक स्थिति का समाचार भेज दिया।

विनोबा कल जेल से जानेवाले हैं, इसके कारण कई मित्रो ने चर्खा-सघ के सूत-सदस्य होने का निश्चय किया।

१५-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा आज छूटनेवाले थे, इसलिए जल्दी ही उनके पास गया। करीब ८॥। बजे वह अन्दर के फाटक के बाहर चले गये। उनके साथ थोडा घूमा। साधारण बातचीत हुई। उन्हे दो अनार बाहर नाश्ते के लिए दिये। विनोबा का वियोग, जो कि थोडे ही समय के लिए मालूम देता है, बुरा मालूम हुआ।

विनोबा के प्रति दिनोदिन श्रद्धा बढती ही जाती है। परमात्मा अगर मुझे इस देह से इस श्रद्धा के योग्य बना सकेगा तो वह दिन (समय) मेरे लिए धन्य होगा। मुझे दुनिया में बापू पिता, व विनोबा गुरू का प्रेम दे सकते है—अगर मैं अपनेको उनके योग्य बना सकू तो।

•

१७-१-४१, नागपुर-जेल

गोपालराव की मुलाकात व नागपुर-टाइम्स अखबार से मालूम हुआ कि विनोबा को सेवाग्राम के युद्ध-विरोधी भाषण पर गिरफ्तार नही किया। शाम को गाधी चौक (वर्धा) में उनका भाषण ६॥ बजे होगा। नागपुर से लाउड स्पीकर भेजे गए है।

•

१८-१-४१, नागपुर-जेल

मुलाकात का दिन। चि० उमा, द्रोपदी, कृपालानी, डा० दास मिलने आये। जानकीदेवी के १६ उपवास ठीक तौर से पार पडे। तीन सतरे

शुरू किये है। प्रकृति ठीक है। विनोबा का आज नागझरी मे व्याख्यान है। कल वर्धा मे ठीक हो गया।

.. .. ..

१९-१-४१, नागपुर-जेल

'जन्म-भूमि' पढी। आज विनोबा की खास कोई खबर नही मिली।

.. .. ..

२१-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा वर्धा तहसील मे युद्ध-विरोधी भाषण जोर-शोर से दे रहे है। सेवाग्राम, वर्धा, नागझरी, पुलगाव, सोनेगाव वगैरा मे।

.. .. ..

२२-१-४१, नागपुर-जेल

विनोबा को वर्धा से १० मील दूर लोनी गाव मे गिरफ्तार करके वर्धा लाये। कल मुकदमा चलेगा।

'विनोबा के विचार' पुस्तक पढता रहा।

.. .. ..

२३-१-४१, नागपुर-जेल

रात को नीद प्राय नही आई। अच्छे-बुरे विचार आते रहे। बन्द हो ही नही सके। करीब दो घटे नीद आई होगी। विनोबा की गिरफ्तारी, आबिदअली का विवाह आदि प्रश्नो पर विचार चलते रहे।

'नवभारत', 'जन्मभूमि', 'नागपुर टाइम्स' पढा। विनोबा के मुकदमे का फैसला कल ता० २४ को ११ बजे होगा।

विनोबा को मेरे साथ रखने को पहले भी व आज भी जेल-अधिकारियो से कहा। उन्होने मजूर नही किया।

.. .. ..

२४-१-४१, नागपुर-जेल

सुपरिंटेडेट आये। विनोबा को उनके पुराने स्थान पर ही रखना होगा। उनका नैतिक असर ठीक रहता है इत्यादि कहा।

'विनोबा के विचार' पढा।

'नागपुर टाइम्स' देखा। विनोवा को ६ महीने सादी सजा हुई। वह ७ वजे के करीव नागपुर-जेल मे आ गये, ऐसा सुना।

.. .. ..

२५-१-४१, नागपुर-जेल

विनोवा से मिलना हुआ। वापू, जानकी आदि के समाचार जाने। दोपहर को व शाम को विनोवा मिलने आये। शाम को विनोवा की प्रार्थना मे गया।

.. .

२६-१-४१, नागपुर-जेल

चार वजे उठा। प्रार्थना। विनोवा के स्वतत्रता-दिवस के निमित्त दिये गए भाषण को आज दुवारा पढ डाला। स्वतत्रता की प्रतिज्ञा का अर्थ समझा। शाम को प्रार्थना मे विनोवा ने तुलसी-रामायण पढना शुरू किया। तुलसीदासजी का जीवन, जैसा कि उन्होने वताया है, पापमय होना सम्भव था, परन्तु सच्चाई से स्वीकार कर लेने व भक्ति के कारण उन्होने अपना मार्ग ठीक कर लिया।

आज से जेल मे रुई पीजन शुरू हुआ। विनोवा यहा आये थे।

'जन्म-भूमि' में स्वतत्रता-दिवस की घोषणा सुन्दर ढग से छपी है।

.. .. ..

२७-१-४१, नागपुर-जेल

शतरज एक वाजी, कन्हैयालालजी वालाघाटवालो से खेली। वह हारे। विनोवा ने भी थोडा रस लिया।

शाम की प्रार्थना में विनोवा ने अपने हिसाव से तुलसी-रामायण के जो भाग व खण्ड किये हैं, उन्हे समझाया।

.. .. ..

२९-१-४१, नागपुर-जेल

विनोवा व गोपालराव से वातचीत। छोटेलाल का स्मारक वनाने पर विचार करने के लिए उन्हे कहा। सुवह थोड़ा घूमा।

३१-१-४१, नागपुर-जल

विनोबा, गोपालराव, ब्रिजलालजी, पूनमचन्द आय। उर्दू पढना और जेल-समाचार भी।

.. .

२-२-४१, नागपुर-जल

सुबह रुलप्पा[1] के साथ शतरज की एक बाजी खेली, वह हार गये। शाम को तिवारी के साथ खेली, वह भी हारे। बाद मे विनोबा मिलकर खेले, मैं हारा।

३-२-४१, नागपुर-जेल

आज से तीन पाव गाय का दूध मेरे खर्चे से आना शुरू हुआ। आज प्रथम बार चार छटाक दूध, विनोबा के पास से जामन लाकर, जमाया है। शाम को दाल नहीं ली।

.. .

५-२-४१, नागपुर-जेल

खास मुलाकात—चि० राधाकृष्ण व मेहता चीफ इजीनियर (इम्प्रूवमेट ट्रस्ट) लक्ष्मीनारायण-मदिर के नक्शे वगैरह लेकर आये थे। मैंने उन्हे सूचना दी है कि श्री बुद्ध भगवान व भरत की मूर्तिया दोनो कोठरियो में या बाजू मे रखी जा सकती हो तो जरूर विचार करे। रुपये दस-पन्द्रह हजार खर्च हो जाते दीखते हैं।

विनोबा से भी राधाकृष्ण व बालुजकर मिले। विनोबा को बुद्ध भगवान व भरत की मूर्ति की कल्पना ठीक मालूम हुई।

.. . .

६-२-४१, नागपुर-जेल

वर्तमान युद्ध-वार्ताओ से हमारे मन पर जो असर होता है, उसपर विनोबा से घूमते समय चर्चा व विचार।

. .. ..

७-२-४१, नागपुर-जल

शाम की प्रार्थना मे विनोबा के पास बैठा। प्रार्थना के बाद तुलसी-

---

[1] नागपुर के श्रमिक नेता।

रामायण पर विनोवा का सुन्दर प्रवचन हुआ ।

८-२-४१, नागपुर-जेल

रोज के मुताविक प्रार्थना, 'गीताई', 'एकनाथ', 'विनोवा के विचार' पढने के वाद चर्खा काता । एक गुडी ६४० तार काते । आज एकादशी थी ।

विनोवा से घूमते समय वातचीत ।

शाम की प्रार्थना के वाद विनोवा ने वापू का सन्देश सुनाया ।

९-२-४१, नागपुर-जेल

कल विनोवा ने जेल मे जितने राजनैतिक सत्याग्रही है, उनको वापू के विचार सुनाये । उसपर से आज विचार-विनिमय, टीका-टिप्पणी व विनोद होता रहा । सुना ।

विनोवा को 'सी' वर्ग के राजनैतिक कैदियो से मिलने देने व उपदेश चर्चा आदि का वातावरण निर्माण करने के वारे मे जेलर व सुपरिटेडेंट से वातचीत हुई थी । उसके सन्तोषजनक परिणाम की आशा हो गई थी । परन्तु आई० जी० पी० गारीवाल ने वह स्वीकार नही की ।

१०-२-४१, नागपुर-जल

विनोबा, गोपालराव आये । विनोवा के साथ फिरते हुए वातचीत—जेल व भावी कार्यक्रम-सम्वन्धी ।

११-२-४१, नागपुर-जल

'विनोवा के विचार' पुस्तक आज पूरी की—इस प्रार्थना के साथ कि "हे प्रभो, तू मुझे असत्य मे से सत्य मे ले जा । अधकार म से प्रकाश मे ले जा । मृत्यु मे से अमृत मे ले जा ।"

विनोवा व गोपालराव से शाम को घूमते हुए वाते ।

१२-२-४१, नागपुर-जल

एकनाथ के भजन और 'विनोवा के विचार' दूसरी वार पढना शुरु किया ।

आजादी की लडाई की विधायक तैयारी। वर्धा तहसील के काग्रेस-सदस्यो मे कताई का सघटन करने का विचार ठीक मालूम दिया।

विनोवा के तकली-वर्ग मे जाने की इच्छा होते हुए भी समय व स्वास्थ्य आदि की स्थिति के कारण जाने का निश्चय नही कर सका। मन मे विचार तो वना ही रहता है।

आज से प्रतिदिन स्वाध्याय के रूप मे श्री एकनाथ के भजन पढना शुरू किया।[1]

. . . . .

१३-२-४१, नागपुर-जेल

एकनाथ के भजन 'करितां कीर्तन श्रवण। अंतर्मळाचे होळक्षालन।' का मनन करता रहा। 'विनोवा के विचार' मे 'बूढा तर्क' पढा।

"जो आज तक नही हुई, ऐसी बहुत-सी बाते आगे होनेवाली है, अवतक मैं मरा नही, इसीलिए आगे मरना है, मेरे मनीराम! आज तक मैं मरा नही इससे आगे नही मरना है, ऐसे बूढे तर्क का आसरा मत लो, नही तो फसोगे।"

. . . . .

१४-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे 'सर्व-धर्म-समभाव' पढा।

"जिस चीज को हम अपने श्रद्धेय पुरुषो के मुह से सुनते है, उसका अधिक असर होता है।" तकली-वर्ग मे गया। सवा घटा लग जाता है। विनोवा से वातचीत। 'एकनाथ अभग', उर्दू वगैरह पढा। विनोवा का जन्म सन् १८९५, ता० १२ सितम्वर का है, मिति भाद्रपद शुक्ल ६।

. . . . . .

१५-२-४१, नागपुर-जल

'विनोवा के विचार' मे 'स्वाध्याय की आवश्यकता' अध्याय पढा।

"ज्ञान और उत्साह का स्थान शहर नही है। आत्मा का पोषण-रक्षण आजकल शहरो मे नही होता। अपनेको और अपने कार्य को विल्कुल भूल

---

[1] यह सिलसिला ८ मार्च तक नियमित चला। हर रोज जो भजन (अभग) पसंद आये, उन्हें खुद ही डायरी में सुंदर व स्वच्छ अक्षरो में लिख लिया है।

जाना और तटस्थ होकर देखना चाहिए 'फिर उसीमे से उत्साह मिलता है, मार्ग-दर्शन होता है, बुद्धि की शुद्धि होती है ।"

आज तकली-वर्ग मे नही जा सका । शाम की प्रार्थना मे गया था । विनोवा ने श्रद्धा-अश्रद्धा का ठीक-ठीक खुलासा किया ।

• •

१६-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' में 'दरिद्रो से तन्मयता' अध्याय पढा ।

"जैसे नदिया समुद्र की ओर वहती है, उसी प्रकार हमारी वृत्ति और शक्ति गरीवो की ओर वहती रहे, इसीमे कल्याण है ।"

तकली-वर्ग मे गया । विनोवा की शाम की प्रार्थना मे व राष्ट्रीय प्रार्थना मे भी गया ।

श्री छेदीलाल, विलासपुरवालो से वातचीत । उन्होने वातचीत के सिलसिले मे कहा कि मैंने तो अपने भावी जीवन के लिए विनोवाजी को गुरु मान लिया है । आपको अव कोई शिकायत नही रहेगी, इत्यादि ।

•• •• ••

१७-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' में 'भिक्षा' का प्रकरण पढा ।

"चोरी, अर्थात समाज की कम-से-कम सेवा करके या सेवा करने का नाटक करके या विल्कुल सेवा किये विना और कभी-कभी तो प्रत्यक्ष नुकसान करके भी समाज से ज्यादा-से-ज्यादा भोग लेना ।"

तकली-वर्ग, राष्ट्रीय, प्रार्थना, व विनोवा की प्रार्थना मे गया ।

•• •• ••

१८-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' में 'तरणोपाय कौन-सा' पढा ।

"जिन हाथो ने पिछले महायुद्ध मे फ्रान्स को विजय प्राप्त करा दी, शरण-चिट्ठी लिख देने के लिए भी उसे उनके सिवा दूसरे उपलव्ध नही हुए । असगठित हिंसा और सुसगठित हिंसा, नही-नही, अति सुसगठित हिंसा वेकार सिद्ध हो चुकी है ।"

तकली-वर्ग । शाम को विनोवा की प्रार्थना मे गया ।

१९-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे 'गावो का काम' पढा।

"इतने वर्षो के लबे अनुभव के बाद हमे सूझा कि तेरा साईं तेरे पास, तू क्यो भटके ससार मे ? लेकिन लोगो से खूब जान-पहचान होनी चाहिए। हमारे शरीर मे कोई ऐसा पारस पत्थर नही चिपका हुआ है कि किसीका किसी तरह भी हमसे सबध जुडा नही कि वह सोना हुआ नही।"

तकली-वर्ग मे गया। आज वर्षा हुई थी, इस कारण शाम को प्रार्थना मे नही गया। विनोवा से देर तक वर्धा की सारी सस्थाए एक ट्रस्ट के अतर्गत रहे, इस बारे मे विचार-विनिमय हुआ, उन्हे मेरे विचार ठीक मालूम हुए।

.. .. ..

२०-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' में 'व्यवहार मे जीवन-वेतन' पढा।

"औसत आयु हिदुस्तान की इक्कीस साल, इग्लैण्ड की बयालीस साल। लडकपन के पहले चौदह साल छोड देने से हिन्दुस्तानी सात वर्ष व इग्लैण्डवाले अट्ठाइस साल, याने चौगुना जीते है।

"समाजवाद का मत्र, जो धनिक अपने आस-पास के लोगो की परवा न करता हुआ धन इकट्ठा करता है, वह धन प्राप्त करने के बदले अपना वध प्राप्त करता है।

"सायणाचार्य ने इस मत्र का भाष्य करते हुए 'वध' और 'मृत्यु' के भेद की तरफ ध्यान दिलाया है।"

.. .. ..

२१-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे 'त्याग और दान' पढा।

"मन-ही-मन यह सोचने लगा, "मेरी तिजोरी मे भी ऐसा ही एक टीला है, उस अनुपात से किसी और जगह कोई गड्ढा तो न पड़ गया होगा ?"

"मा, मेरा पाप धो डाल !" कहकर उसने वह सारी कमाई गगा-माता के आचल में डाल दी।

"त्याग तो बिल्कुल 'मूले कुठार' करनेवाला है। दान ऊपर-ही-ऊपर

से कोपले नोचने के जैसा है। त्याग पीने की दवा है, दान सिर पर लगाने की सोठ है। त्याग मे अन्याय के प्रति चिढ है, दान मे नामवरी का लालच है। त्याग से पाप का मूल-धन चुकता है, दान से पाप का व्याज। त्याग का स्वभाव दयापूर्ण है, दान का ममतापूर्ण। धर्म दोनो ही है। त्याग का निवास धर्म के शिखर पर है, दान का उसकी तलहटी मे।"

घुटने में दर्द के कारण घूमने व तकली-वर्ग मे जाना नही हो सका। विनोवा से विनोद, दिमागी व्यायाम, वातचीत।

••

२२-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे 'श्रम-जीविका (ब्रेड लेवर)' पढा।

"दुनिया मे सबसे अधिक श्रीमान कौन है? वह जिसकी पचनेन्द्रिय अच्छी है। भूख भगवान का सन्देश है। जिसको दिनभर में तीन दफा अच्छी भूख लगती है, उसे अधिक धार्मिक समझना चाहिए। भूख लगना जिन्दा मनुष्य का धर्म है।"

• ••

२३-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे 'ब्रह्मचर्य की कल्पना' पढा।

"जनता की सेवा, यह उसका ब्रह्म हो गया। उसके लिए जो आचार वह करेगा वही ब्रह्मचर्य है। विशाल ध्येयवाद और उसके लिए सयमी जीवन का आचरण, इसको मै ब्रह्मचर्य कहता हू।"

•• •• ••

२४-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे 'स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा का अर्थ' पढा।

"व्यचिष्ठे बहुपाय्ये यतेमहि स्वराज्ये, इस वेद-वचन में स्वतत्रता की प्रतिज्ञा व्यक्त की गई है।"

•• •• ••

२५-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे 'सिर्फ शिक्षण' पढा।

मनुष्य को पवित्र जीवन विताने की फिक्र करनी चाहिए। शिक्षण की

फिक्र करने को वह जीवन ही समर्थ है, उसके लिए 'सिर्फ शिक्षण' की हविस रखने की जरूरत नही।"

आज तकली-वर्ग मे गया। विनोबा आये। विनोबा से विनोद, मराठी पुस्तक मे से उमर बताना आदि।

.. . ..

२६-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे 'अस्पृश्यता-निवारण का यज्ञ' पढा।

"सासारिक कामो मे कोशिश करनी चाहिए और धार्मिक को भाग्य के भरोसे छोड देना, इसका क्या मतलब है ? यह धर्म को धोखा ही देना तो हुआ ? धर्म के मामले मे 'हो ही रहा है', 'हो ही जायगा', यह भाग्यवादिता भी बुरी है।"

विनोबा के तकली-वर्ग मे गया।

. .

२७-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे 'खादी और गादी की लडाई है' पढा। लगोटिये ही सबसे बडभागी है। "कौपीनवन्त. खलु भाग्यवन्तः।"

आज चर्खे की गति घटे मे तीन सौ तार, आघ घटे मे (१६०) तार। आज सवा दो घटे मे (६४०) तार हुए, मन को समाधान रहा। पूनी का प्रताप भी था। तकली मे भी सुधारणा हुई। आधा घटे मे ३८ तार—हाथ मे दर्द तो हो ही जाता है।

विनोबा से विचार-विनिमय।

. ..

२८-२-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे 'निर्दोष दान और श्रेष्ठ कला का प्रतीक खादी' पढा।

"दुनिया मे आलस्य को पोसने जैसा दूसरा भयकर पाप नही है।"

"दान सविभाग—दरिद्रान् भर कौन्तेय, मा प्रयच्छेश्वरे घनम्"

"श्रीमानो के भरण की जरूरत नही है। दरिद्री है, उनके पेट के गढे को पाटना है।

१-३-४१, नागपुर-जल

'विनोवा के विचार' म 'श्रमदेव की उपासना' पढा ।

"हिमालय से निकलनेवाली गगा गगोत्री के पास छोटी और शुद्ध है। प्रयाग की गगा मे नदिया, नाले और गटर मिलकर वह वैभवशाली वन गई है। द्वारकाधीश होने के वाद भी श्रीकृष्ण ग्वालो के साथ रहने आया करते थे, गायें चरातेथे, गोबर उठाते थे।

"कराग्रे वसते लक्ष्मी—अगुलियो के अग्र भाग मे लक्ष्मी है। 'तीन साल पहले मेरे प्राण पखेरू उड गये थे, सो कताई के भाव वढते ही फिर इस शरीर में लौट आये।"

•• ••

२-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' में 'राष्ट्रीय अर्थशास्त्र' पढा।

"घायल की गति घायल जाने। मै श्रद्धापूर्वक, ध्यानपूर्वक कातता हू। आठ घटे इस तरह काम करने पर भी मेरी मजदूरी सवा दो आने पडती थी। रीढ में दर्द होने लगता था। लगातार आठ घटे काम करता था। मौनपूर्वक कातता था, एक वार पालथी जमाई कि चार घटे उसी आसन में कातता था। तो भी सवा दो आने ही कमा सका। सच्चे अर्थशास्त्र मे प्रामाणिक मनुष्यो के लिए पूरी सुविधा होनी चाहिए। आलसी याने अप्रामाणिक लोगो के पोषण का भार राष्ट्र के ऊपर नही हो सकता।

•• ••

३-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' में से 'वृक्ष-शाखा-न्याय' पढा।

"काग्रेस और किसान सभाए। 'जिमि बालक करि तोतरि वाता, सुनहि मुदित मन पितु अरु माता।'"

•• ••

४-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' में से 'राजनीति या स्वराज्य नीति (एक भिखारी का स्वप्न)', पढा।

"हिन्दुस्तान की जनता अहिसक, अहिसक और अहिमक ही है।

'नत्वंह कामय राज्यम्' । स्वराज्य-साधना और राज्य-कामना, याने हम स्वराज्य-साधक है। हमे राज्य-कामना का स्पर्श न हो ।"

• • • • •

५-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'सेवा व्यक्ति की, भक्ति समाज की' पढा ।

"व्यक्ति की भक्ति मे आसक्ति बढती है। इसलिए भक्ति समाज की। सेवा समाज की करना चाहे तो कुछ भी नही कर सकते। समाज तो एक कल्पना मात्र है। कल्पना की हम सेवा नही कर सकते। माता की सेवा करनेवाला लडका दुनियाभर की सेवा करता है, यह मेरी कल्पना है।"

• • • •

६-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'ग्राम-सेवा और ग्राम-धर्म' पढा ।

"मेरी सलाह तो यह है कि हमे देहात मे जाकर व्यक्तियो की सेवा करने की तरफ अपना ध्यान रखना चाहिए, न कि सारे समाज की तरफ।

"बापूजी के लेख मुझे कम ही याद आते है, लेकिन उनके हाथ का परोसा हुआ भोजन मुझे हमेशा याद आता है। और मै मानता हू कि उससे मेरे जीवन मे बहुत परिवर्तन हुआ है।"

" मै उसे एक लाख का चर्खा कहता हू। लेकिन मेरे पास तो एक सवा लाख का चर्खा है और वह है तकली।

• • • •

७-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'साहित्य की दिशा-भूल' पढा ।

"विरोधी विवाद का बल, दूसरो का जी जलाना, जली-कटी या पैनी बात कहना, मखौल (उपहास), छल, (व्यग) मर्म-भेद (मर्म-स्पर्श) आडी-टेढी बाते सुनाना (वक्रोक्ति), कठोरता, पेचीदगी, सदिग्धता, प्रतारणा (कपट) ये ज्ञानदेव ने वाणी के अवगुण बतलाये है।

" 'हे प्रभो, अभी तक मुझे पूर्ण अनुभव नही होता है तो क्या मेरे देव, मै केवल कवि ही बनकर रहू ?' —तुकाराम ने कहा ।"

विनोबा व डाक्टर का कहना है कि पूरा आराम लेना जरूरी है।

• •

८-३-४१, नागपुर-जेल

"'विनोबा के विचार' से 'लोकमान्य के चरणो मे' पढा।"

"साधू-सतो का नाम लेते ही मेरी ऐसी स्थिति हो जाती है कि मानो गद्‌गद् हो उठता हू। वही स्थिति तिलक के नाम से भी होती है। जैसे—

"'शबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्ह रघुनाथ।

नाम उधारे अमित खल बेद बिदित गुन गाथ।'

"हमे यहा पुरुषो के चारित्र्य का अनुसरण करना चाहिए, न कि उनके चरित्र का। चरित्र उपयोगी नही। चारित्र्य उपयोगी है। गहराई से देखें तो आज भी 'राम का अवतार' हो चुका है। यह जो रामलीला हो रही है, इसमे कौन-सा हिस्सा लू, किस पात्र का अभिनय करू, यही मै सोचने लगता हू।"

• • • • •

९-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'निर्भयता के प्रकार' पढा।

"'विज्ञ' निर्भयता वह है, जो खतरो से परिचय प्राप्त करके उनके इलाज जान लेती है। 'ईश्वर-निष्ठ निर्भयता' मनुष्यको पूर्ण निर्भय बनाती है। 'विवेकी निर्भयता' मनुष्य को अनावश्यक और ऊटपटाग साहस नही करने देती।"

बापू का दृष्टात, निर्भय सेवक का कर्तव्य—हमे सुकरात की तरह जीना और मरना सीखना चाहिए।

सुबह विनोबा के स्थान तक घूमने गया। बाद मे शतरज एक बाजी खेली। शाम को थोडी देर विनोबा भी शामिल हुए।

• •

१०-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'तुलसी-रामायण' का लेख पढा।

"भरत तुलसीदास की ध्यान-मूर्ति थे। भरत का मागना—

धरम न अरथ न काम रुचि, गति न चहउ निरबान।

जनम-जनम रति राम-पद, यह बरदान न आन।"

सिय-राम-प्रेम-पियूष-पूरन होत जनमु न भरत को ।
मुनि-मन-अगम-जम-नियम-सम-दम विषम व्रत आचरत को ।
दुख, दाह, दारिद, दम्भ, दूषन, सुजस-मिस अपहरत को ।
कलिकाल तुलसी से सठहिं हठि राम सनमुख करत को ।

विनोबा का स्वास्थ्य भी कल से ठीक नही है । थोडा ज्वर हो गया है। आज उन्हे कोशिश करके मतरे का रस पिलाया। मन को समाधान मिला।

• •   • •   • •

११-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'कवि के गुण' पढा।

"ईशोपनिषद् से—कविर्मनीषी परिभ स्वयंभूः । यथातथ्यतोऽर्थान व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः ।

अर्थ—कवि (१) मन का स्वामी (२) विश्व-प्रेम से भरा हुआ (३) आत्मनिष्ठ (४) यथार्थ भाषी और (५) शाश्वत काल पर दृष्टि रखनेवाला होता है ।

मनन करने के लिए नीचे लिखे अर्थ सूचित करता हू ।

(१) मन का स्वामित्व—ब्रह्मचर्य
(२) विश्व-प्रेम—अहिंसा
(३) आत्मनिष्ठता—अस्तेय
(४) यथार्थ भाषित्व—सत्य ।
(५) शाश्वत काल पर दृष्टि—अपरिग्रह ।"

• •   •

१२-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'फायदा क्या है ?' पढा।

"फायदा ढूढने की लत—सूत कातने से फायदा, स्वराज्य हासिल करने से फायदा आदि ।

" 'समूची सृष्टि मनुष्य के फायदे के लिए ही है', इस बेकार की गलतफहमी मे हम न रह जाय, यही इसका फायदा है ।" घनश्यामदासजी बिडला की 'डायरी के कुछ पन्ने' किताब पूरी की। ३९ प्रकरण, १३४ पृष्ठ। डायरी लिखी

तो बहुत ही अच्छे ढग से है। पर कई लोग जीवित है, व बहुत-सीबाते खानगी है। उसे उनके जीवित रहते प्रसिद्ध करना कहातक उचित है ? मुझे तो सन्देह है ही, विनोवा को भी है।

• • •

१३-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे से 'आत्म-शक्ति का भान' पढा।

"गाधीजी का जन्म-दिन है। आइये हम ईश्वर से प्रार्थना करे कि हमारे देश मे सत्पुरुषो का ऐसा ही अखड प्रवाह चलता रहे।

"निश्चय छोटा-सा ही क्यो न हो, मगर उसका पालन पूरा-पूरा होना चाहिए।"

विनोवा की प्रार्थना मे शामिल हुआ। विनोबा ने सुन्दर भजन गाया।

• • •

१४-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे से 'कौटुम्बिक शाला' पढा।

"जीवन-क्रम के सम्बन्ध मे चौदह सूचनाए इस लेख मे दी है, वह सब मनन करने योग्य है।"

• •

१५-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोवा के विचार' मे से 'पुराना रोग' पढा।

"हमारे जो अच्छे काम है, उनका अनुकरण करो, बुरे कामो का नही।"

• • • •

१६-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'सेवा का आधार-धर्म' पढा।

"देहाती लोग आलसी हो गये ? दर असल आलसी तो हम है।

"स्त्रियो की सेवा करो। मा की साडी धोने मे भी हमे शर्म आती है तो पत्नी की साडी धोने की तो वात ही कौन कह सकता है।"

गोपालराव, विनोबा और कन्हैयालालजी वालावाटवालो के साथ शतरज खेली।

विनोवा की शाम की प्रार्थना में शामिल हुआ। श्री शकर भगवान

का निश्चय—सती पार्वती के कपट पर जो किया वह मननीय था ।

• • • • •

१७-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'साक्षर या सार्थक' पढा ।

"बातो की कढी और बातो का ही भात खाकर पेट भरा है किसीका, यह सवाल मार्मिक है। कवि के कथनानुसार पोथी का कुआ डूबाता भी नही है, और पोथी की नैया तारती भी नही है ।"

• • • • • •

१८-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'दो शर्तें' पढा ।

"हमे उनसे इतना ही कहना चाहिए कि 'जग का ज्ञान' या 'जगने का ज्ञान', यह हमारे सामने पहला सवाल है ।"

• • • • •

१९-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे से 'कृष्ण-भक्ति का रोग' पढा ।

"निंदा स्तुति जन की, वार्ता वधू-धन की ।' भगवान ईसा ने कहा, 'जिसका मन बिल्कुल साफ हो, वह पहला ढेला मारे ।'

बुरा जो देखन मे चला, बुरा न दीखा कोय ।
जो दिल खोजा आपना मुझ-सा बुरा न कोय ।"

विनोबा से मनस्थिति के बारे मे बाते ।

• • • • • •

२०-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे गीता-जयन्ती लेख पढा ।

"गीता-मैया के यहा छोटे-बडे का भेद नही है । बल्कि खरे-खोटे का भेद है । गीता के प्रचार का मतलब है भक्ति का प्रचार, त्याग का प्रचार । मनभर चर्चा की अपेक्षा कनभर आचरण श्रेष्ठ है । कुरुक्षेत्र का मतलब है कर्म की भूमि ।"

आज सुबह इस जेल मे दो सगे भाइयो को एक साथ फासी दी गई । परमात्मा इनको सद्गति प्रदान करे। यह सजा तो जल्दी-से-जल्दी बन्द हो

जानी चाहिए । ये भाई शायद नागपुर जिले के हो । छोटा भाई कबूल करता था कि उसने खून किया है । बडा भाई निर्दोष है । बडा भाई भी कहता था कि मै निर्दोष हू । छोटा तो राम का नाम भी जोरो से लेना था । बडा कहता था कि राम है ही कहा ? अगर राम होता तो मुझ निरपराधी को क्यो फासी दी जाती । यह सब सुनकर तो ऐसा मालूम देता है कि बडा भाई सचमुच निर्दोप हो ।

विनोबा, गोपालराव, गुप्तजी से आज की फासी पर देर तक विचार-विनिमय होता रहा ।

.. .

२१-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'श्रवण और कीर्तन' पढा ।

"वही भक्त-वत्सल, प्रभु वही पतितपावन नाम ।'

विनोबा, गोपालराव, घनश्यामसिंहजी गुप्त, पूनमचन्द राका, व महोदय के साथ 'मृत्यु' आदि पर विचार-विनिमय होता रहा । मैंने जल्दी मे श्री घनश्यामसिंहजी के विचार पर थोडी समालोचना कर दी, वह ठीक नही थी । इसपर बाद में विचार चलता रहा । श्री गुप्तजी ने तो उसे ठीक ही तौर से उदारतापूर्वक लिया ।

.. .

२२-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' में से 'जीवन और शिक्षण' पढा ।

"तत किं ? तत किं ? तत किं ? यह शकराचार्यजी का पूछा हुआ सनातन सवाल अब दिमाग मे कसकर चक्कर लगाने लगा था । पर पास जवाब था नही । ...

"सामने खभा है । यह बात अन्धे को, उस खम्भे का छाती मे प्रत्यक्ष धक्का लगने के बाद मालूम होती है । आखवाले को वह खभा पहले दिखाई देता है ।"

.. .. ..

२३-३-४१, नागपुर-जेल

'विनोबा के विचार' मे 'रोज की प्रार्थना' पढा ।

"हे प्रभो मुझे असत्य मे से सत्य मे ले जा। अन्धकार मे से प्रकाश मे लेजा। मृत्यु मे से अमृत मे ले जा।"

* * *

२५-३-४१, नागपुर-जेल

'घरीं एकच पठ्ती मिठामिठाती। म्हणुं नको, उचल, चल लगवगती।' खाडेकर की इस रचना को विनोवा ने भली प्रकार गाकर वतलाया। अर्थ भी समझाया। आज की चर्चा का विषय था अगर मेरे सरीखा मनुष्य गरीब होकर मरना चाहे तो व्यवहार मे यह किस प्रकार आ सकता है ? चर्चा पूरी नही हो पाई। मेरी इच्छा है कि "गरीव व पवित्र" होकर मृत्यु को प्राप्त होऊ तो शाति से शरीर छूटेगा। वैसे भी मृत्यु का स्वागत करने की तो हमेशा ही तैयारी है। परन्तु उसमे कमजोरी का कारण विशेष है।

प्रार्थना मे विनोबा ने जेल मे दावतो आदि का विरोध किया। 'अ' 'ब' 'क' वर्ग की स्थिति समझाई।

* *

२८-३-४१, नागपुर-जेल

पूनमचन्दजी से बातचीत। नागपुर मे केसरवाई जैन (विधवा) ने, उम्र ४५-४६ वर्ष पांच-छ वर्ष पहले आमरण उपवास (सन्यास) करके पैंतालीस दिन मे शरीर छोड दिया। केवल गरम पानी लेती थी। केसरवाई के सन्तान वगैरह कोई नही थी।

उपवास के जरिये शरीर छोडने की प्रथा के वारे मे विनोबा से अच्छी तरह विचार-विनिमय हुआ। इन्हे यह प्रथा पसन्द नही है। वह इतना अवश्य मानते है कि शरीर छोडने की इच्छा ही हो यह तरीका सबसे अच्छा समझा जा सकता है। त्याग, तपश्चर्या के वारे मे विनोवा का कहना था कि हम लोग अभी जो जीवन विता रहे है, वह तपश्चर्या का जीवन समझा जा सकता है, गीता के १७वे अध्याय के मुताविक।

३१-३-४१, नागपुर-जेल

विनोबाजी, गुप्तजी, गोपालराव से धार्मिक विचार-विनिमय। उमा के पास सप्त-ऋषी का जाना व उसकी परीक्षा लेना कहातक उचित था, यह प्रश्न मैंने किया था।

१-४-४१, नागपुर-जेल

विनोवा से पुनर्जन्म, कर्म, पाप, पुण्य पर विचार-विनिमय हुआ।

• • •

२-४-४१, नागपुर-जेल

शाम को विनोवा के साथ उनकी जीवनी लिखने के वारे मे चर्चा होती रही।

•

४-४-४१, नागपुर-जेल

विनोवा, गोपालराव से वाते। मैंने विनोवा से कहा कि अगर आप मेरी सपूर्ण जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार है तो आपकी देखरेख मे मै काम करने को तैयार हू। मेरी कमजोरिया, योग्यता, अयोग्यता आदि देखकर मुझे काम सौप दिया जाय। उन्होने कहा, "मुझे भी तो वापू ने खूटे से वाध रखा है, मै भी उडना चाहता हू। याने वन्धन से मुक्त होना चाहता हू।" आदि

• • • • •

६-४-४१, नागपुर-जेल

पू० जाजूजी ने अखिल भारतीय चर्खा सघ की ओर से नालवाडी या सेवाग्राम मे सस्था, विद्यालय वगैरह के वारे मे मेरी व विनोबा की राय पुछवाई थी। विचार-विनिमय के वाद हम दोनो की यही राय हुई कि जाजूजी की इच्छा पर ही यह सवाल छोड दिया जाय। वर्धा तालुका का भी वही विचार कर ले। महाराष्ट्र चर्खा सघ का व अ० भा० चर्खा-सघ का भी।

• • • • • •

८-४-४१, नागपुर-जेल

आज सुबह पूनमचन्द राका को समझाने की कोशिश की, उपवास न करने के वारे मे। सतरे का रस भी उनके पास भेजा। उन्होने नही लिया। विनोवा व मुझसे विना कहे उपवास शुरू कर दिये।

• • • •

९-४-४१, नागपुर-जेल

आज उत्साह मालूम देता था। शाम को थोडी देर शतरज भी खेली।

विनोबा, ब्रिजलाल, गोपालराव, महोदय आदि न भी भाग लिया।

.. .. ..

१०-४-४१, नागपुर-जेल

विनोबा से मित्र-धर्म, मित्र-परिचय व उसकी आवश्यकता पर विचार-विनिमय। वही मित्र सच्चा मित्र हो सकता है, जो आध्यात्मिक उन्नति मे व कमजोरिया निकालने में मदद करता रहता हो।

आज शाम को विनोबा की प्रार्थना मे गया। श्री महावीरस्वामी (जैन तीर्थंकर) की आज जन्मतिथि थी। विनोबा ने उनपर सुन्दर प्रवचन दिया।

.. .

११-४-४१, नागपुर-जल

विनोबा से, जेल से पत्र न भेजकर लेख के रूप मे पुस्तक लिखकर भेजने के सम्वन्ध मे चर्चा की। उन्हे पसन्द तो आई।

.. ..

१३-४-४१, नागपुर-जेल

पूनमचन्द राका ने शाम को राष्ट्रीय सप्ताह का व्रत सतरे के रस से छोड़ा। वहा जाकर आया।

विनोबा से हाथ-चर्खे की रुई आदि पर विचार-विनिमय। धूप मे उघाडे बदन सिर पर कपडा रखकर दो बजे बाद घूमना ज्यादा हितकर है, ऐसी विनोबा की राय थी।

.. .. ..

१४-४-४१, नागपुर-जेल

.. .. ..

विनोबा से बापू के गीता-सम्बन्धी विचार पर बातचीत।

१५-४-४१, नागपुर-जेल

जेल-अधिकारी व सत्याग्रही मिठाई ले या नही, इस विषय पर बाते हुई। मुझे तो अभी तक के व्यवहार से कोई खास शिकायत नही मालम दी। विनोबा की राय भी मेरी राय से मिलती हुई है।

आज मेरा मन किससे किस प्रकार का सबध मानना चाहता है ?

पिता—बापूजी (गाधीजी), गुरु—विनोबा।
माता—मा व बा (कस्तूरबा)
भाई—जाजूजी, किशोरलालभाई
बहन—गुलाब, गोमतीबहन
लडके—राधाकिशन, श्रीमन्नारायण, राम
लडकिया—चि० शान्ता (रानीबाला) मदालसा।
मित्र—श्री केशवदेवजी नेवटिया, हरिभाऊ उपाध्याय
लडके के समान—चिरजीलाल वडजाते, दामोदर मूदडा, जगन्नाथ महोदय।

.. .. .

१७-४-४१, नागपुर-जेल

विनोबा व गोपालराव आये।

रामकृष्ण को पहली बार १०० रुपया जुर्माना करके छोड़ दिया। दूसरी बार उसने फिर नालवाडी मे सत्याग्रह किया तो गिरफ्तार कर लिया गया। गोपालराव ने बताया।

.. .. .

१८-४-४१, नागपुर-जेल

विनोबा से गो-सेवा-सघ के बारे में सुगनचन्द लुणावत की उपस्थिति में देर तक विचार-विनिमय होता रहा।

.. ..

२२-४-४१, नागपुर-जेल

विनोबा के आश्रम तक जाकर आये। आज-जाते समय काफी थकावट मालूम दी। इतनी पहले नही मालूम दी थी। विनोबा से 'टाइम्स ऑफ इडिया' के लेख व बापू के वक्तव्य पर विचार-विनिमय हुआ।

.. . ..

२३-४-४१, नागपुर-जेल

आज सुबह जल्दी तैयार हुए। एनिमा, मालिश, स्नान वगैरह से निपटकर सात बजे तैयार हो गये। पचास रोज के प्रयोग के बाद आज से खान-पान मे परिवर्तन किया गया।

२६-४-४१, नागपुर-जेल

बापू के तीन दिन के उपवास व अहमदाबाद, बम्बई के दगो के बारे मे बापू की व्यथा आदि जानकर चिन्ता होना स्वाभाविक था। ईश्वर सहायक है।

• : •

२७-४-४१, नागपुर-जेल

कल बापू न एमरी के उत्तर मे जो वक्तव्य दिया, वह विनोबा के साथ सुना। थोडी चर्चा की। हम सभीको बहुत पसन्द आया। बापू के हृदय का दु ख प्रकट होता था। बहुत ही स्पष्ट था।

चि० राम से भावी कार्यक्रम पर ठीक विचार-विनिमय देर तक होता रहा। उसकी इच्छा सेवा-कार्य की ओर दिखाई दी। मैंने भी उसी ओर उसका उत्साह बढाया है।

विनोबा की प्रार्थना मे, श्री कुलकर्णी (कम्युनिस्ट) से इन तीन दिनो में बातचीत व परिचय ठीक हो गया।

•• •• ••

२९-४-४१, नागपुर-जेल

श्री गारिवाल आई० जी० पी० व सुपरिंटेंडेट गुप्ता आज भी आये।

जेल मे राजनैतिक कैदियो को सूत कातने का काम तीनो वर्गो को देने की चर्चा। विनोबा का 'सी' वर्ग के राजनैतिक कैदियो से सम्बन्ध रखने के बारे मे मैंने कहा। 'सी' वर्ग की मुलाकात के लिए झोपडी (हाल) बनाने को भी कहा। मुझे सिवनी जाना हो तो २४ घटे मे जा सकता हू। यरवदा (पूना) जाना हो तो दर्खास्त देनी होगी। शायद सरकार छोड़ दे, वहां न भेजे ऐसा उन्होने कहा। तब मैंने कहा कि दर्खास्त मै नही दूगा। मुझे छूटना नही है, इत्यादि।

•• •• ••

११-५-४१, नागपुर-जेल

दूध से बुखार बढना शुरू हुआ। १०४° तक बढा। पेशाब मे जलन व रुकावट बहुत ही ज्यादा बढ गई। बेचैनी बहुत बढ गई। इतनी ज्यादा तकलीफ मेरी याद मे पहले कभी नही हुई।

१४-५-४१, नागपुर-जेल

सारी रात प्राय नीद नही आई। विचार चालू हो गये। प्रयत्न करने पर भी नीद नही आई। वर्धा-जेल मे भेज देवे तो मुझे थोडी तकलीफ रहेगी, परन्तु डा० दास, बापूजी, जानकी आदि की तकलीफ और चिता कम हो जायगी।

आज दिन मे स्वास्थ्य ठीक रहा। बापूजी इतना प्रेम क्यो करते है ? विनोबा भी ! बापूजी को मेरी इस बीमारी के कारण दो-तीन रोज बहुत बेचैनी रही। डा० दास कहते थे कि वह यहा मुझे देखने आने के लिए भी तैयार थे, परन्तु मेरे मना करने और डा० दास के कहने पर कि जरूरत नही है, नही आये।

रात को बहुत देर तक मेरे मन मे यही चलता रहा कि मै पापी हू, मै विश्वासघाती हू क्या ? मैंने मेरा असली रूप बापू-विनोबा को अभी तक नही बताया ? एक मन कहता था, बता तो कई बार दिया है। दूसरा फिर कहता था, नही, बिल्कुल साफ तौर से सामने नही रखा है। रखने के विचार से बापू के पास कई बार जाना हुआ, परन्तु वहा पूरा मौका न मिलने से अधूरा ही रख पाया। जो पत्र बापू को पवनार से तीन वर्ष पहले भेजा था, वह भी पेशावर मे उन्हे नही मिला, ऐसा वह कहते थे। बाद में पत्र की नकल तो उन्हे वर्धा आने पर देदी थी इत्यादि। अब जब मौका लगेगा तब एक बार आत्महत्या के विचार की बात व मन की असली स्थिति खूब स्पष्ट रूप से कहूगा तभी मानसिक शान्ति मिलेगी, अन्यथा हृदय व मन का युद्ध चलता रहेगा। मैंने यह प्राकृतिक चिकित्सा का उपचार भी मुख्यत मानसिक शाति को दृष्टि मे रखकर ही स्वीकार किया है, अन्यथा ज्यादा उत्साह इस समय नही था। क्योकि पूना मे एक प्रयोग हो चुका था। परमात्मा से प्रार्थना तो की है, देखे क्या परिणाम होता है। इस जन्म मे सद्बुद्धि प्रदान हो जायगी व स्वच्छ, पवित्र और सेवामय जीवन बिताते हुए देह छूटेगा तो ही समाधान हो सकेगा, अन्यथा जैसे कर्म किये है, वैसा फल भोगना ही भाग मे है। ईश्वर की माया अपरपार है। विनोबा से तो जल्दी ही यहा बात कर लूगा। देखे कोई राजमार्ग निकलता है क्या ? कोई शुद्ध अत करणवाला भाई या बहन—बहन हो तो

मुझसे बडी उमर की—इस दुनिया मे मिल सकती है, जो मुझ अपन आश्रय मे लेकर वालक की तरह प्रेम-भाव से मेरा इस समय जो व्यथित हृदय हो रहा है, उसमें कुछ जीवन पैदा कर सके ? ईश्वर की इच्छा होगी तो यह भी सभव हो जायगा ।

रात को प्राय इसी प्रकार के विचार कई घटो चलते रहे । बीच-बीच मे नेत्र से जल भी बहता रहा । बालकपन का, तरुण अवस्था का मेरा सकोची, शरमीला, डरपोकपन का स्वभाव पूरी तौर से आज तक कायम रखता तो कितना अच्छा होता ? बुरी सगत का अच्छा परिणाम व अच्छी सगत का बुरा परिणाम, क्या ईश्वरी माया है ?

मैं तो 'मातृवत्परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्; न त्वहं कामये राज्यं, न स्वर्गं न पुनर्भवम् ।' यही चाहता हू ।

.. .. ..

१७-५-४१, नागपुर-जेल

डा० दास वर्धा से आये । उन्होने जाच की । वजन १४० पौड, नाडी ७२, टेम्प्रेचर ९७॥, पेशाब मे दर्द कम, नीद ठीक आई, आज से मगलवार तक ४४ औंस फलो का रस, चार रतल दूध फाडकर लेने को कहा व एक आम, यह खुराक तय की, रोज एनिमा, दो बार टब-बाथ लेने को कहा । बापू की इच्छा है कि मैं वर्धा-जेल मे आ जाऊ तो ठीक रहेगा, यह भी कहा ।

.. .. ..

२२-५-४१, नागपुर-जेल

सुपरिंटेंडेंट गुप्ताजी आये । स्वास्थ्य के बारे में कहने लगे कि आप बहुत कमजोर हो गये हैं । बम्बई के श्री भरुचा व डॉ० जीवराज को दिखाना चाहिए । डा० दास का उपचार थोडा वजन घटे वहांतक ठीक था, अब ज्यादा हो रहा है । मैंने महादेवभाई का नोट उन्हे दे दिया ।

.. .. ..

२५-५-४१, नागपुर-जेल

शतरज—सुबह बालाघाटवाले कन्हैयालालजी के साथ, शाम को विनोबा, गोपालराव, महोदय तीनो मिलकर ।

२९-५-४१, नागपुर-जेल

नीद साधारण आई। आज विनोवाजी के स्थान तक सुबह जाकर आया। वापस आने के वाद थकावट मालूम दी, वाद मे चक्कर भी आया। कमजोरी ज्यादा थी। शायद कल से दस्त नही लगा, इसलिए या कोई और कारण हो।

• • •

१-६-४१, नागपुर-जेल

श्री अग्निभोज, महोदय से समझाकर कह दिया कि भूख-हडताल वगैरह के वारे में विनोवा के कहने के मुताविक ही चलना उचित है।

विनोवा की आख मे पानी बहना शुरू है। सु० डे० से तो कहा ही है, आख के इलाज के लिए थोडी चिन्ता है।

• •

२-६-४१, नागपुर जेल

सुपरिंटेंडेट श्री इन्द्रदत्त गुप्त साढे बारह बजे के करीव आये व पचमढी के चीफ-सेक्रेटरी का तार वताया। उसमे मुझे मेडिकल ग्राउन्ड पर रिहा करने की सूचना थी। लिखा है, पत्र भेज रहे है। बाद मे सुपरिंटेंडेट कहने लगे उन लोगो को मेडिकल जानकार की हैसियत से, मेरी इच्छा न होते हुए भी, अपनी जिम्मेदारी के ख्याल से ऐसी सिफारिश करनी पडी। देर तक वातचीत। शाम को भी देर तक वैठे रहे। कल सवेरे ५॥ बजे जाने का निश्चय रहा।

• • • • •

३-६-४१, नागपुर-जेल

पू० विनोवा तथा अन्य मित्र लोग मिलने आये। ५॥ बजे के करीव जेल-फाटक पर मित्रो से मिलकर जेल के कागजो पर सही करके भारी हृदय से जेल के फाटक से वाहर आया। वर्धा से जानकीदेवी, दामोदर राधाकिशन आये थे। सुपरिंटेंडेट श्री गुप्ता के घर, उनकी माता व लडकियो से मिला। उन्होने हार वगैरह पहनाये। सुपरिंटेंडेट से जेल की वहनो, विनोवा की आख गुप्ताजी, व्रिजलालजी, व नागो के बारे मे कहकर मोटर से वर्धा रवाना हुआ। वर्धा, नालवाडी, बगले पर होते हुए सेवाग्राम मे बापू को प्रणाम, विनोद किया। जेल के समाचार कहे।

१४-६-४१, सेवाग्राम

स्वास्थ्य साधारण। मानसिक स्थिति पर विचार-विनिमय। घूमते समय जानकीदेवी, चि० शान्ताबाई से मनस्थिति कही। जेल मे ता० १४ मई को डायरी मे नोट किया था। वह वापस आने पर पढकर समझा दिया।

जेल जाने के बाद बापूजी से आज पहली बार खानगी बातचीत, किशोरलालभाई, राजकुमारी अमृतकौर, गोमतीबहन, डा० सुशीला वहा थे। मैंने अपनी मानसिक स्थिति कही। ता० १४ मई को नागपुर-जेल मे डायरी म जो नोट किया था, वह पढकर सुनाया। और भी विचार-विनिमय। बापू को डायरी सुनाने के बाद मन थोडा हलका हुआ।

.. .. ..

१९-६-४१, सेवाग्राम

पू० बापू से स्वास्थ्य, प्रोग्राम, मन स्थिति पर थोडी देर बात। उनकी इच्छा यह है कि फिलहाल मुझे यही रहना चाहिए। सम्भव हुआ तो कुछ समय तक मुझे एकान्त मे कम-से-कम १५-२० मिनट रोज देने का कहा—समय जो बापू को अनुकूल हो वह।

.. .. ..

२२-६-४१, सेवाग्राम

पू० बापू के साथ चर्खा-सघ की सभा मे आया। आज की सभा बहुत ही गभीर हुई। पू० जाजूजी को अपना दु ख कहते-कहते रोना आ गया। पू० बापूजी को भी और मुझे भी कल देशपाण्डे के कथन व व्यवहार से चोट पहुची। चर्चा, विचार-विनिमय देर तक।

.. .. ..

२५-६-४१, सेवाग्राम

पू० बापूजी से घूमते समय मन स्थिति पर ठीक विचार-विनिमय हुआ। कल फिर बातचीत होगी।

.. .. ..

२६-६-४१, सेवाग्राम

पू० बापूजी से आज घूमते समय व बाद म १० से ११ तक एकान्त मे मन स्थिति पर साफ-साफ बाते। मैं अपनी स्थिति ज्यादा स्पष्ट तौर से

समझा सका। अब मुझे आशा हो गई कि वह मेरी स्थिति पूरी तौर से समझ गये हैं। परमात्मा ने चाहा तो मार्ग निकल आयगा।

• •

१३-७-४१, वर्धा

बापू के पास। विनोबा व काकासाहब के साथ अखाडे के खेल व लाठी, तलवार आदि सिखाने के सम्बन्ध मे चर्चा हुई। बम्बई हिन्दी-प्रचार के बारे में काकासाहब व नानावटी की भूल पर बापू ने उलाहना दिया।

• •

१४-७-४१, वर्धा

विनोबा का सत्याग्रह नालवाडी मे ६ बजे शाम को हुआ। पौन घटा ठीक भाषण हुआ। बाद में विनोबा गिरफ्तार कर लिये गए।

• • • • • •

१५-७-४१, वर्धा

वर्धा-जेल मे पू० विनोबा से एक घटे तक ६-१० से ७-१५ तक मुलाकात। खूब बाते हुई। उनसे अभग सुना। मदालसा से बाते।

• • • • •

८-८-४१, शिमला

पू० विनोबा से बात हुई। उन्हें तुम्हारे व्यवहार आदि से सतोष था। मैंने सुना, वह तुमसे विशेष प्यार करते हैं। पढाने के वास्ते समय भी खूब देते हैं। तुम सचमुच भाग्यवान हो। अन्य नवयुवको को तुमसे ईर्ष्या होनी चाहिए।

(रामकृष्ण को लिखे पत्र से)

• • •

११-८-४१, शिमला

सुबह घूमते समय सरदार उमरावसिह शरगिल से बापू की गीता व विनोबा का परिचय कराया।

शाम को तारादेवी की ओर घूमने गया। मुशीजी नही आ सके। मिस बेरिल साथ आई। सुबह बापू के परिचय का हाल कहा। बाद मे अहिंसा व विनोबा का परिचय कराया। मेरे विचार पर चर्चा होती

रही। बहुत ही अच्छे हृदय की दयालु लडकी है।

• • • • •

२०-८-४१, रायपुर ग्राट, देहरादून

मा आनन्दमयीजी से एकान्त मे मन स्थिति पर विचार-विनिमय। मा पर श्रद्धा खूब बढती जा रही है। परमात्मा की वडी दया है।

बापू सरीखे 'बाप' व आनन्दमयी माता से 'मा' का प्रेम पाने का सौभाग्य मुझे इसी जन्म मे प्राप्त हो रहा है। अब भी मैं नालायक रहा तो मेरा ही दोष समझना चाहिए। अब सम्भव है कि जीवन ठीक शुद्ध हो जायगा।

•

२१-८-४१, रायपुर-ग्राट-देहरादून

मा से एकान्त में बातचीत। जो १४ मई की डायरी नागपुर-जेल में लिखी थी और बापू को वर्धा मे सुनाई थी, वह उन्हे पढकर सुनाई व समझाई। वैसे सार तो पहले कह चुका था।

• • • •

२५-९-४१, वर्धा-नागपुर

एक्सप्रेस से नागपुर गया (जेल मे) जानकीदेवी, कमल, राधाकृष्ण के साथ। चि० रामकृष्ण से, मुझे, कमल व जानकीदेवी को मिलने दिया। वह राजी है। विनोबा से मुझे नही मिलने दिया।

• •

३०-९-४१, वर्धा

आज पू० बापूजी ने गो-सेवा-सघ के कार्य का उद्घाटन किया। सुन्दर विचारणीय भाषण व आशीर्वाद द्वारा मेरी जिम्मेवारी पर प्रकाश डाला। नालवाडी के इधर के भाग का नाम गोपुरी जाहिर हुआ।

• • • • •

१९-१०-४१, वर्धा

चार बजे उठा। निवृत्त हुआ। ब्रिजलालजी बियाणी ने विनोबा की जीवनी लिखी है। रात्रि को वह श्री घोत्रे को देखने को दी। बापू से भी बात की।

२५-१०-४१, वर्धा

सेवाग्राम जाते समय बैल-रथ में 'विनोवा-जीवनी' के कुछ पन्ने पढे। बापू के पास मै, राजाजी, राजेन्द्रबाबू, कृपलानी, गोविन्द वल्लभ पत, गगाधर राव देशपाण्डे, सरदार, महादेवभाई, किशोरलालभाई गये। राज-नैतिक विचार-विनिमय होता रहा।

• • •

१-११-४१, पवनार

सुवह प्रार्थना। विनोवा की जीवनी पूरी पढ डाली। थोडे मे ठीक ही है। ऊपर की कोठरी मे रहना व सोना शुरू किया। अच्छा लगा।

• • • • •

३-११-४१, पवनार

पवनार नदी पर घूम आने के वाद मालिश करके पू० राजेन्द्रवावू के साथ सात-धारा मे स्नान किया। राजेन्द्रवावू के मन मे जो थोडी चिन्ता है, वह शाम को छत पर घूमते हुए सुनी।

• • • • •

४-११-४१, पवनार

विनोवा की जीवनी (वियाणीजी की लिखी) वल्लभस्वामी ने पढकर सुनाई। कई लोगो ने सुनी व नोट भी किया।

•

५-११-४१, पवनार

सुवह तीन बजे उठा। प्रार्थना के वाद नामदेव से देरतक गो-सेवा-सघ के वारे मे वातचीत होती रही। महादेवी वहन भी थी। नामदेव के वारे मे अच्छा असर हुआ। महादेवी के साथ टेकडी तक घूमकर आया। महादेवी मे एक प्रकार की वीरता (वहादुरी) तो अवश्य है। भक्त भी है। मेरे साथ रहने के वारे मे श्री वल्लभस्वामी की राय लेकर निश्चय करना ठीक समझा गया, क्योकि विनोबा तो (जेल मे) मुलाकात लेते नही है।

• •

६-११-४१, पवनार

सुवह प्रार्थना के वाद श्री वल्लभ व महादेवी के साथ छत पर घूमते हुए

देर तक बाते होती रही। वल्लभस्वामी की राय रही कि कुछ समय साथ रखकर देखिये।

नानाजी से महाराष्ट्र के बारे मे राजेन्द्रबाबू, जाजूजी के प्रोग्राम की चर्चा हुई। पवनार के बगले के बारे में नामदेव की वृत्ति वल्लभ ने समझाई।

.. .. ..

१०-११-४१, गोपुरी, पवनार

सुरगाव व पवनार से पैदल आना-जाना करीब छ मील। यहा श्री वल्लभस्वामी के साथ वसन्तकुमार बिडला, सरला, कमला, शान्ति, ओम, श्रीनिवास, गोरी, दिलीप के साथ गाव का निरीक्षण। बहुत-से घरो में चर्खे, वगैरह चलते थे। बाद में वहा की स्थिति समझी। दो लडको के भजन देर तक हुए। भोजन-पार्टी—बसन्त, सरला की सगाई के निमित्त खासकर जवारी की रोटी व चून (बेसन) दिया गया। मस्तक-व्यायाम, चर्खा। बहनो के चर्खा कातते-कातते गाये हुए भजन बहुत अच्छे लगे। जवारी के भुट्टे अच्छे लगे। एक जड भरत को देखा। उसकी स्थिति ऊंचे दर्जे की मालूम दी। नानाजी से बातचीत हुई।

५-१२-४१, गोपुरी

नालवाडी मे विनोबा से मिलना। वल्लभ स्वामी से सुरगाव के बारे मे बातचीत।

पू० विनोबा व गोपालराव के साथ बैलगाडी मे सेवाग्राम गया। विनोबा ने गो-सेवा-सघ के व सचालक-मण्डल के सदस्य होना स्वीकार कर लिया। जाते-आते उनसे ठीक बाते हो गई। पू० बापूजी से भी विनोबा व खेरसाहब के प्रोग्राम के बारे मे ठीक-ठीक बाते हुई।

वरोरा मे बालकोबा-विनोबा का दो वर्ष बाद आदर्श मिलन हुआ। बालकोबा ने उनसे सस्कृत के उच्चारण व अर्थ पर ही देर तक पूछताछ की। आदर्श बन्धु व्यवहार।

.. .. ..

६-१२-४१, गोपुरी

प्रार्थना। अग्निभोज व महेश से बात। विनोबा के पास नालवाडी

म विनोद। इतवार को शाम को ६॥ बज जाहिर सभा, राजन्द्रबाबू सभापति, गो-सेवा-सघ आदि की चर्चा।

७-१२-४१, गोपुरी

विनोवा के साथ वैलगाडी मे सेवाग्राम गया-आया।

जाते समय गो-सेवा-सघ की चर्चा हुई। आते समय राजनैतिक परि-बापू ने अपना वक्तव्य बताया। प्यारेलाल की जेल की घटना कही।

रवीन्द्रनाथ टैगोर, उनकी स्त्री आदि कलकत्ता से आये। गाधी-चौक में सभा हुई। विनोवा सुन्दर बोले। प्रफुल्लबाबू साधारण, राजेन्द्रबाबू ने ठीक खुलासा किया।

• •• •

११-१२-४१, गोपुरी

४ बज प्रार्थना। विनोबा से गो-सेवा-सघ की योजना के बारे मे देर तक चर्चा-विचार हुआ।

श्री लक्ष्मीनारायण मन्दिर के ट्रस्ट की मीटिंग हुई। ट्रस्टी—जमनालाल, बाबासाहब, बालुजकर, राधाकृष्ण, शान्ताबाई, पुडलीक। निमत्रित—पू० विनोवा, गुलाटीजी, चिरजीलाल, धोत्रे, काले, गगाबिसन, शिवनारायण, गोकुल।

देर तक विचार-विनिमय होता रहा। जिम्मेवारी से काम अभी तक नही हुआ, इसका दु ख भी हुआ। बाद मे विनोबा व गुलाटीजी की राय निजी मदिर हटाने की नही रही, मेरी भी।

•• •• •

१५-१२-४१, गोपुरी

४ वजे उठा। प्रार्थना, राधाकृष्ण के साथ नालवाडी गया। मेरी विचार-पद्धति मे व विनोवा की कहो, व राधाकृष्ण की, मे जो मतभेद है, उसपर विनोवा से विचार-विनिमय होता रहा। उसपर विनोवा विचार करके बाद मे खुलासा करके समझावेगे।

•• •

१६-१२-४१, गोपुरी-पवनार-सुरगाव

सुरगाव को रवाना, वैलगाडी से। हरीरामजी जोशी, महादेवी साथ मे।

पवनार—विनोबा से हरीराम जोशी का परिचय कराया। उनकी स्थिति पर विचार। विनोबा ने वल्लभस्वामी से कहा पैसा यह लवाड (दगाबाज) है। मजूरी अनाज मे देने का रिवाज चालू करने को कहा। मैने उसके दोष कहे। बाद मे विचार हुआ। मुझे भी यह पसन्द आया। खाने जितना अनाज, बाकी के लिए चिट्ठी या पैसे। महादेवी बहन के बारे मे मेरी, विनोबा की व वल्लभ स्वामी की राय हुई कि वह महिला-आश्रम मे सेवा का कार्य करे। वह अभी तैयार नही होती है। कहती है कि वह विनोबा के पास या सुरगाव वल्लभस्वामी के पास ही रह सकती है।

पवनार मे भोजन-विश्राम। सुरगाव मे कताई, बहनो के सुन्दर, भावपूर्ण भजनो से सुख मिला। हरीराम जोशी से ठीक-ठीक बाते हो गई।

• •• •

१९-१२-४१ गोपुरी-वर्धा

इन दिनो पू० विनोबा के प्रवचन बहुत ही भावपूर्ण हो रहे हैं। सुरगाव मे भी ठीक सगठन जम रहा है। (जानकीदेवी को लिखे पत्र से)

••

२१-१२-४१, गोपुरी

श्री बालुजकर न हरिजन-मदिर-प्रवेश की योजना पढकर सुनाई। उसपर विनोबा की व मेरी सही होगी। श्री भागवत व देशपाण्डे ने इस कार्य के लिए आज प्रात मुहूर्त कर दिया।

• ••

२२-१२-४१, गोपुरी

दक्षिण भारत मे बापू की दृष्टि लोगो को समझाने के लिए विनोबा, की राय मे ज्यादा दिन ठहरने की आवश्यकता नही। मकर-सक्राति के दिन १४ जनवरी को गो-सेवा-संघ व गोरक्षण मडल की ओर से सार्वजनिक सभा मे भाषण देना विनोबा ने स्वीकार किया। गाय के घी के सबध मे देर तक विचार-विनिमय होता रहा। राधाकृष्ण, रिषभदास, रामनारायणजी से गो-सेवा-सघ के बारे मे विचार-विनिमय।

वियोगी हरि से बातचीत व विनोद। तिलक-हाल मे विनोबा का प्रवचन।

२३-१२-४१, सेवाग्राम, गोपुरी, धानोरा, भानखेड ।

चार बजे प्रार्थना। गो-सेवा-सघ के बारे मे राधाकृष्ण, बालुजकर, रामनारायणजी आदि से बातचीत । महादेवीबहन को विनोबा की सलाह पर दृढ रहकर काम करने को समझाया ।

८ बजे विनोबा के साथ बैलगाडी पर रवाना हुए । भानखेड अन्दाजन १०॥ बजे पहुचे ।

भानखेट मे देहाती जीवन का निरीक्षण किया । भोजन, आराम, चर्खा, तेलघानी, छोटा-सा बाजार । जवारी १० पायली, साग-तरकारी आदि के भाव पूछे । हरिजनो के लिए मदिर खुलवाने के बारे मे विनोबा ने व मैने वहा के मुखियो से देर तक बाते की । मेघराजजी, जीतमल, धानोरे-वाले भी आये । उन्होने भी खेती की हालत समझी । कहा कि ६ आना ब्याज आ सकता है । जवारी के भुट्टे का चूटा, दूध, फल लिये । चावजी पुलिस-इन्स्पेक्टर भी आया । विनोबा का रचनात्मक कार्य, हरिजन-समानता व्यवहार पर सुन्दर व मननीय भाषण हुआ । महादेव बुवा से बातचीत ।

२४-१२-४१, बरवडी, गोपुरी, सेवाग्राम, भानखेड

४ बजे उठे । निवृत्त होकर प्रार्थना । विनोबा ने सुन्दर भजन गाये । श्री महादेव बुवा वगैरह के साथ तालाव की खुदाई देखने पैदल गया-आया । तालाव हो जाने से यहा भानखेड, यशम्भा, सोनेगाव के ढोर-गाये आदि पानी पीने आवेगे । श्री महादेव बुवा से ठीक-ठीक परिचय हुआ । उमर अन्दाज २८ वर्ष की है । वणी तालुका मे जन्म हुआ है । जात के कुनबी है ।

विनोबा के साथ बैलगाडी से बरवडी के रास्ते वर्घा । १० बजे पहुचे । रास्तेभर बाते होती रही । खेती, गाय, उद्योग-धन्धे आदि के सबध मे ।

• • •

३१-१२-४१, गोपुरी

मनोहरजी की दत्तपुर मे महारोगी सस्था देखने जाजूजी के साथ गया । डि. की के शिक्षक आज इस विषय का अपना कोर्स पूरा कर विदा हुए ।

श्री भागवत, देशपाण्डे से हरिजन-मदिर व कुए की रिपोर्ट सुनी।

.. ..

१-१-४२, गोपुरी

पू० बापू काग्रेस से अलग हुए, वह सब पढा। थोडा बुरा मालूम दिया। परन्तु विचार करने पर लगा कि ठीक ही हुआ।

.. .. ..

६-१-४२, गोपुरी

विनोबा से मिला। थोडी बातचीत। वहा गद्रेजी मिले। जेल से छूटकर आये ह। उन्होने जेल मे जो उपवास किया, वह समझ मे नही आया।

. .. ..

७-१-४२, गोपुरी

विनोबा से डेयरी-एक्सपर्ट श्री कोठावाला के पत्र पर काफी विचार-विनिमय। राजेन्द्रबाबू का स्टेटमेट, वर्किंग कमेटी का प्रस्ताव, बापू का स्टेटमेट व मैने जो स्टेटमेट दिया, इन सबपर विचार-विनिमय। वही नालवाडी मे प्रार्थना।

.. .. ..

९-१-४२, गोपुरी

गोपुरी मे ग्राम-सेवा-मण्डल की साधारण महत्व की सभा हुई। मैने भी भाग लिया। गो-सेवा-सघ के बारे मे राधाकृष्ण की पूरे समय के लिए माग की गई। मजूर नही हुई। गद्रेजी व शिस्त, जीवन-निर्वाह, रुपयो के बदले जीवन-यात्रा का सामान, तपेदिक (टी० बी०), खादी व रेशम, ग्राम-सेवा मण्डल के सदस्यो का भत्ता, आदि पर विचार।

... .

२०-१-४२, गोपुरी

सुरगाव—महावीरप्रसादजी पोद्दार और मै यहा से पवनार तक बैल-गाडी मे गये। पवनार से सुरगाव पैदल जाना-आना ६ मील। सीतारामजी सेकसरिया, मृदुलाबहन, जानकीदेवी, कमला (रेवाडीवाली), नर्बदा, अर्जुन साथ मे थे। सुरगाव की स्थिति इन लोगो ने समझी। भोजन, विश्राम, मदिर मे चर्खे के साथ बहनो के सुन्दर भावपूर्ण भजन हुए। यहा मन को ठीक

शान्ति मिलती है। कुछ समय यहा आकर रहने की इच्छा भी होती है। यहा जो 'जड-भरत' रहता है, उसका अभी पूरा पता नही चल पाया। उसकी अवस्था विचारणीय है। मृदुला साराभाई ने कुछ कहा। मैंने भी युद्ध की परिस्थिति व वस्त्र तथा अन्न-स्वावलम्बन का महत्व समझाया।

गोपुरी—शिवाजी भावे व बालूभाई मेहता से विनोबा के साहित्य व जीवनी के सबध मे तथा गो-सेवा-सघ के बारे मे काफी बाते हुई।

• • ••

२२-१-४२, गोपुरी

विनोबा से मिले, राधाकृष्ण व महावीरप्रसाद पोद्दार के साथ। महावीरप्रसादजी का परिचय करवाया। शिवाजी, गो-सेवा-सघ, विनोबा-आत्मकथा, बापू की इजाजत आदि के बारे मे विचार। श्री लक्ष्मीनारायण निज-मदिर (गर्भगृह) हटाने का प्रश्न श्री मेहता इजीनियर ने फिर उठाया। राधाकृष्ण की इच्छा भी हुई। विनोबा की राय रही कि नही हटाना चाहिए। नक्शे वगैरह भी देखे।

• • •

२६-१-४२, गोपुरी

गाधी चौक मे सुबह ८। बजे पूनावाली श्रीमती लक्ष्मीबाई वैद्य के हाथ से झडा-वन्दन हुआ। शाम को ५। बजे चर्खा-तकली की सामूहिक कताई। पू विनोबा, जाजूजी, जानकीजी वगैरह के साथ मैंने भी काता। श्री दादा धर्माधिकारी ने स्वराज्य की प्रतिज्ञा लिवाई।

•• •• ••

२९-१-४२, गोपुरी

विनोबा से मिला। उनकी आखे डॉ० मथुरादास को दिखाने को उन्हे राजी किया व शाम को दिखाई भी। चश्मे के सिवा दूसरा इलाज नही बताया। गो-सेवा-सघ-सबधी की बाते।

• ••

३०-१-४२, गोपुरी

गो-सेवा-सघ की बैठक २॥। से ५ तक। विनोबा भी आये। काफी अच्छी तरह विचार-विनिमय हुआ।

३१-१-४२, गोपुरी

सेवाग्राम—विनोवा, राधाकृष्ण के साथ गो-सेवा-सघ की बाते करते हुए वैलगाडी मे गया-आया। वापू से बाते, गो-सेवा-सघ-काफ्रेस के सबध मे, घनश्यामदासजी बिडला से सेवाग्राम के आस-पास खेती व कुए की योजना पर बाते। उन्होने अपने विचार कहे।

नागपुर प्रातीय काग्रेस कमेटी की सभा। विनोवा बोले।

• •• ••

१-२-४२, गोपुरी

वजाजवाड़ी—गो-विशारद (एक्सपर्ट) की सभा मे ठीक विचार-विनिमय हुआ।

काफ्रेस ठीक २ बजे शुरू हुई।

वापू का भाषण भावपूर्ण और दु ख से भरा हुआ, विस्तार के साथ हुआ। सदस्य बनने पर जोर।

विनोवा का भाषण विद्वत्तापूर्ण। गो-सेवा-सघ के नामकरण का खुलासा व महत्व। सदस्यो की शकाओ का तथा अन्य बातो का स्पष्टीकरण।

• • ••

२-२-४२, गोपुरी

गो-सेवा-सघ काफ्रेस २ से ५ तक, विनोबाजी के सभापतित्व मे हुई। सभा का कार्य समाप्त हुआ। प्रथम सभा के हिसाब से ठीक रही।[1]

[1] ११ फरवरी १९४२ को जमनालाल बजाज का देहावसान हो गया।

तीसरा खण्ड

संस्मरण

जमनालाल बजाज के परिवार के सदस्यो के विनोबा-संबधी

: १ :

'विनोबा—छोटे भाई जैसे'

जानकीदेवी बजाज

विनोबाजी को पहले-पहल मैने साबरमती मे देखा था। वह तथा उनके भाई बालकोबा दिनभर गड्ढे आदि खोदते रहते थे। हमने सुन रखा था कि वे श्रम करके डेढ-दो आने मे अपना खर्च चलाते थे। कम बोलते थे। गीता का वर्ग लेते थे। उनके इस वर्ग मे स्त्रिया भी जाती थी। विषय को समझाते वह बहुत अच्छा थे। समय के बडे पाबद थे। कोई विद्यार्थी एक मिनट भी देरी से आता तो उसे वर्ग से बाहर खडा रहना पडता था।

पढाते समय वह जोर से बोलते—इतनी जोर से कि पसीना-पसीना हो जाते थे।

इस पहली बार की मुलाकात मे ही हमारे परिवार पर, और खासकर मुझपर, उनका असर पड गया—यहातक कि एक दिन जब हमारे बडे लडके कमल की शिक्षा आदि की बात जमनालालजी ने उठाई और मुझसे पूछा कि तुम कमल को कैसा बनाना चाहती हो तो भावुकता मे मेरे मुह से निकल गया—

"मै तो उसे विनोबा जैसा फकीर बनाना चाहती हू।"

पर जमनालालजी तो बडे गभीर विचार के थे। वह योही भावुकता मे थोडे आनेवाले थे। मै जो बोल गई, उसके गभीर अर्थ को समझाते हुए उन्होने कहा—

"शब्द तो बडे-बडे बोलना सीख गई है, पर उनके अर्थ भी तुम्हे पता है ?"

हमारे परिवार मे तीन पीढी के बाद लडका हुआ था। उसपर सबो-का बडा लाड-प्यार होना स्वाभाविक था। यद्यपि मैने भावुकतावश ही बालक को फकीर बनाने की बात कही थी, तथापि मेरे मन मे जरूर ऐसा लगता था कि मेरे बच्चे भी भीष्म जैसे ब्रह्मचारी और विद्वान बने। इसी

कारण जब समय आया तो हमने अपने सब बच्चो—कमलनयन से राम-कृष्ण तक को विनोवा के पास पढने के लिए रख दिया। लडको को ही नही, पन्द्रह-सोलह वरस की लडकियो को भी नि सकोच विनोवा के हवाले कर दिया। विनोबाजी के कडे अनुशासन मे, जहा लडको तक का रहना कठिन होता था, लडकियो को रखना आसान नही था और विनोबाजी तो लडके और लडकियो मे कोई भेद रखते भी नही थे।

•• •• ••

मेरे जीवन पर जिन तीन महापुरुषो की गहरी छाप पडी, उनमें जमनालालजी और बापूजी तो अब रहे नही। विनोबाजी है। जमनालालजी और बापूजी के चले जाने के बाद जो रीतापन अनुभव हुआ, उससे विनोबाजी के और निकट जाना आवश्यक हो गया। वह तो छोटे भाई के जैसे लगते है। उनके पास जाने मे मुझे जरा भी सकोच नही होता। मै उनके साथ अनेक स्थानो पर घूमती रही। विनोवा का खान-पान, रहन-सहन, चलना-फिरना, सब मुझे मनभाता लगता है। उनके साथ रहने से मुझे जीवन मे सार्थकता महसूस होती है।

•• •• ••

एक बार मैंने सपने मे देखा कि मेरा छोटा भाई, जिसे गुजरे काफी अरसा हो गया था, मुझे हाथ हिला-हिलाकर बुला रहा है। जागने पर मुझे ऐसा लगा कि भाई के रूप मे मौत ही मुझे बुला रही है। मेरे मन मे यह वहम घर कर गया कि इन बारह महीनो मे ही मै मर जाऊगी। तब मैंने तय किया कि विनोबाजी के पास ही रहना चाहिए ताकि अगर मौत आई तो विनोबाजी के सामने मरते समय शाति से उसका सामना कर सकू। और अपने बीमार पोतो और बहू के मना करते-करते मैं विनोबा के पास चली गई। बारह महीने विनोबाजी के साथ बिताये। बारह महीने बीत जाने के बाद मुझे ऐसा लगा मानो मैं मृत्यु से बच गई।

•• •• ••

शादी के बाद मेरी छोटी लडकी ओम लाल-पीले कपडे पहनकर विनोवाजी को नमस्कार करने गई तब वह बोले, "आओ होलिकाजी!"

मैने कहा, "यह शादी के वाद आई है । आपने इसे होलिका कैसे कहा ?"

वोले, "लाल रग तो होलिका का है न ?"

मैने पूछा, "फिर अच्छा रग कौन-सा है ?"

"हरा रग अच्छा है, क्योकि इसमे सृष्टि का स्वाभाविक सौन्दर्य भरा है ।" उन्होने कहा ।

मुझे बात जच गई । मैने अपनी तकली पर कते सूत के ढाई गज लवे दुपट्टे बनवाये । कोई चालीस बने । उन्हे मैने हरा रगवाया और वापूजी के भस्मी-प्रवाह के दिन, यानी १२ फरवरी को, एक दुपट्टा विनोबाजी को तथा एक तुकडोजी महाराज को भेट किया । विनोवाजी ने उस हरे दुपट्टे को दुपहरी की धूप मे सिर पर ओढ लिया । जब मैने तुकडोजी से उस दुपट्टे के हरे रग तथा तकली के सूत का इतिहास वतलाया तो उन्होने उस दुपट्टे को गले मे लपेट लिया । विनोबाजी ने तो अपनी सर्वोदय-यात्रा तथा तेलगाना की यात्रा मे उस दुपट्टे का अच्छी तरह से उपयोग किया । मुझे ऐसा लगता है कि फुरसत मे तकली से काते सूत, विनोबाजी के सुझाये हुए रग और मेरे प्रेम से भेट करने के कारण उस दुपट्टे ने यह स्थान पाया । बाद मे तो विनोबाजी की चद्दर आदि सब हरे रग के हो गये ।

• •

एक बार जमनालालजी ने विनोबाजी से कहा कि राम-लक्ष्मण की तो सब पूजा करते है, पर तपश्चर्या तो भरत की ही अधिक थी, लेकिन भरत का मदिर कही देखने मे आता नही । इसके कुछ समय वाद जमनालालजी जेल चले गए । पवनार मे एक दिन विनोबाजी को गढा खोदते-खोदते वहा भरत-भेट की मूर्ति मिल गई । विनोवा को जमनालालजी की इच्छा का स्मरण हो आया । उन्होने वही एक छोटे-से मकान मे उस मूर्ति की स्थापना करदी और स्वय वहापर रामायण का पाठ करने लगे । पाठ इतनी तन्मयता से और वुलद आवाज मे करते कि पसीने मे तर हो जाते । उस अद्भुत दृश्य को देखने के लिए गाव तथा आस-पास तक के लोग इकट्ठे हो जाते ।

• •

'काचन-मुक्ति'-आदोलन के दौरान एक वगाली लडकी ने मुझे एक अगूठी

लाकर दी। मैंने वह अगूठी विनोवाजी की अगुली मे पहना दी। एक वहन ने मगल-सूत्र भेजा। जव मैने उसे भी विनोवाजी के गले में पहनाया तो वह उनकी दाढी मे उलझ गया। सब हँसने लगे। कइयो को तो यह बात अचरज-भरी लगी कि इतने गम्भीर सत से विनोद करने की हिम्मत भी किसीको हो सकती है! जयप्रकाशजी ने कहा कि मै यह नही जानता था कि विनोवाजी से आप इतना मजाक कर लेती है। वहा करीब २८ तोला सोना इकट्ठा हुआ। विनोवाजी से पूछा कि इसका क्या किया जाय ? वह बोले, "बहनो के प्रेमपूर्वक दिये हुए दान का उपयोग जीवन की कमी को पूरा करने के लिए किया जाय। इसलिए कुओ का निर्माण जरूरी समझा गया, क्योंकि मनुष्य तो जैसे-तैसे पानी प्राप्त कर लेता है, लेकिन पशु विना पानी के वहुत कष्ट पाते है। इसीलिए उनकी सेवा कुओ के द्वारा अधिक होगी और भूमि भी हरी-भरी बनेगी। इस तरह तभी से यह कूपदान का विचार चल पडा। विनोबा का सुझाव था कि प्रत्येक शादी मे एक कुएं के बजाय दो कुए दान मे दिये जाय, क्योंकि इस अवसर पर दो कुटुबो का सबध जुडता है।

उन्ही दिनो विनोबाजी काचन-मुक्ति की बात पर बहुत जोर देते थे, इस कारण उन्हे पैसो का आकर्षण नही था। जब कोई उनको रुपया-पैसा देता तो वह वापस कर देते। बिहार मे भूदान-यज्ञ मे किसी वहन ने आकर एक रुपया और दूसरी ने पाच रुपये दिये तो उन्होने वापस कर दिये। नवादे मे जयदयाल डालमिया की बहन सौ रुपये का नोट लाई तो वह भी वापस कर दिया। लेकिन जव बहने जेवर देती तव वह मुझे कूपदान के लिए सौंप देते। कहते, बहनो का यह सच्चा त्याग है। पर सब बहनें जेवर दे, यह सभव नही था। तव क्या किया जाय ? राची में एक वहन सात तोला सोना और दूसरी बहन पाचसौ रुपये लाई। मैंने सोचा कि विनोवाजी रुपये तो लेगे नही, फिर क्या करे ? पर मन मे आया कि एक वार देकर तो देखे। मैं उन वहनो को लेकर गई। विनोवाजी ने रुपये लेकर मेरे हाथ मे रख दिये। इस तरह मैं कूपदान मे अव रुपये भी लेने लगी। जब कृष्णदासभाई गाधी मिले तो वोले कि आप तो जवर्दस्त निकली जो उनको पैसा लेना सिखा दिया। लेकिन मै सोचती हू कि मेरा सिखाना-विखाना कुछ नही। यह तो परिस्थितियो के अनुसार अपने विचारो को ढालना विनोवाजी की अपनी विशेषता है।

विनोबाजी भक्तो की याद करके हमेशा भावावेश मे आ जाते है। जमनालालजी को भी वह भक्त ही मानते थे। जमनालालजी की मृत्यु से सबको असह्य दुःख हुआ, किंतु विनोबा ने दूसरे दिन के ही भाषण में कहा, "मुझे खुशी है कि जमनालालजी जैसे थे वैसी ही मृत्यु उन्होने पाई। ऐसी मृत्यु भक्तो को भी मिलनी कठिन है। वह रहते तो अपने लिए तो अच्छा था, पर फिर ऐसी आदर्श मृत्यु मिलती ही, इसका क्या पता!"

• • • •

अपने पिछले राजस्थान के दौरे के समय विनोबाजी जमनालालजी के जन्मस्थान कासीकावास भी गये। हवेली मे उनके स्वागत के लिए बजाज-परिवार की बहू-बेटिया जाटनियो की पोशाक पहने सिर पर घडे लेकर खडी थी, मेरे हाथ मे आरती की थाली थी। जैसे ही विनोबाजी द्वार पर आये, मैंने कुकुम की जगह नीचे से बालू उठाकर उससे उनके माथे पर तिलक किया। मैंने कहा कि इसी बालू मे जमनालालजी खेले थे। विनोबाजी एकदम गभीर हो गये। ऊपर के कमरे मे जमनालालजी का एक चित्र लगा था—उसे देखते ही वह गद्गद हो गये। ढेवरभाई, हरिभाऊजी, श्रीमन्‌जी, आदि सब वहा उपस्थित थे। हमारी इच्छा थी कि मौन सभा ही हो, पर विनोबाजी से न रहा गया। बडे ही धैर्य के साथ अपनेको सम्हालते हुए वह बोले, "जानकीबाई ने कहा कि मै उनके परिवार का ही आदमी हू। यह जमनालालजी की ही विशेषता थी कि वह मुझे अपने परिवार का बना सके। राजेन्द्रबाबू के साथ वह ही मुझे सीकर लाये थे और तभी कासी-कावास भी ले गये थे। यह दूसरी बार यहा आना हुआ है।"

• • • •

एक चारण बहन को जमनालालजी के पिता कनीरामजी ने मुह-बोली बेटी बनाया था। जमनालालजी उसे बहन मानते थे। राधाकृष्णजी विनोबाजी को उस बहन से मिलाने ले गये। विनोबाजी से मिलकर वह बोली, "जमनालाल भागवान हो जो ईं गाव में जन्म्यो। कासीकावास का भाग जाग गया जो ऐसा-ऐसा लोगा का ई गाव मे पग पड्या।"

●

: २ :

विनोबा : मेरे गुरु

राधाकृष्ण बजाज

सन् १९२२-२३ की बात होगी। पूज्य काकाजी (जमनालालजी बजाज) मुझे मगनवाडी में पूज्य विनोबाजी के पास ले गये। गीता का अध्ययन करने की मेरी वडी इच्छा थी। गीता के सबध मे मै इतना ही जानता था कि वह वहुत अच्छा ग्रथ है। काकाजी ने कहा कि विनोबाजी गीता वहुत अच्छी तरह सिखा सकेंगे। विनोवाजी ने कहा कि गीता अवश्य पढायेगे, परतु एक शर्त रहेगी। रोज आधा घटा कताई करनी होगी। मेहनत करने से तो मैं नही घबराता था, काफी श्रम कर सकता था, किंतु मेरे सम्मान को यह शर्त ठीक न लगी। गीता पढाने और कताई करने मे क्या सबध? पहले तो मुझे यह सब जचा नही, लेकिन गीता तो मुझे सीखनी ही थी और विनोवाजी से अच्छा व्यक्ति हमे मिलता कहा? आखिर मैंने यह शर्त मान ली। लेकिन मेरी भी एक शर्त थी। मैंने विनोबाजी से कहा कि मैं आपके यहा का पानी नही पीऊगा। उस समय जात-पात व छुआछूत के सस्कार मेरे अदर प्रवल थे ही और विनोबाजी के यहा तो ऊच-नीच का या जाति-पाति का कोई भेद नही होता था। मुझे वह ठीक नही लगता था। मैं अपना पानी अलग रखना चाहता था। विनोवाजी ने यह शर्त स्वीकार कर ली और मेरा काम शुरू हो गया।

काकाजी की इच्छा मुझे समाज-सेवा के लिए तैयार करने की थी। वह चाहते थे कि मैं विनोबाजी के पास ही रहू। मेरा मन डगमगाता रहता था। लेकिन एक दिन विनोवाजी ने शाम की प्रार्थना के वाद "यह वहारे वाग दुनिया" भजन गाया। जिस तन्मयता और हार्दिकता से उन्होने यह भजन सुनाया और उसका विश्लेपण किया, उसका मुझपर इतना गहरा प्रभाव पडा कि मैंने दूसरे ही रोज से आश्रम मे रहना तय कर लिया। आश्रम मे मैं रह तो गया, किंतु भोजन मैं घर आकर ही करता था। पानी भी अलग ही

रखता था। दो-तीन महीने वाद एक दिन वर्षा का मौका देखकर विनोवाजी ने कहा, "अरे, वर्षा मे कहा जाते हो ? यही खा लो।' उन्होने कहा तो इन्कार करते नही वना और वहा खा लिया। जव खा ही लिया, तो घर जाना भी छूट गया और फिर तो आश्रम मे पाखाना-सफाई से लेकर रसोई आदि के सब कामो मे हिस्सा लेने लगा।

विनोवाजी की खास बात यह थी कि खाना वह सवको अपने हाथो से परोसते थे। किसको किस चीज की कितनी जरूरत है, किसकी प्रकृति कैसी है, इसका वह पूरा ध्यान रखते थे। प्राय देखा जाता है कि भोजन को लेकर हर जगह तनाव, खिचाव, राग-द्वेष और मनोमालिन्य हो जाता है। लेकिन विनोवाजी के सान्निध्य मे उनके 'मातृहस्तेन भोजन' से सब तरफ सतोष था।

बुनाई के लिए ताना करने और माडी लगाने के काम को पाजन कहते है। आश्रम मे सवसे कठिन काम पाघन का ही था। उसमें सवके धीरज और सहनशक्ति की कसौटी हो जाती थी। कातने मे लोग टूटे तारो को साधते नही थे और ऐसे ही चिपका देते थे। इससे वडी परेशानी होती थी। जिस दिन पाधन करना होता था, उस दिन सब आश्रमवासियो को सूचना कर दी जाती थी। सुबह से लगाकर दोपहर और फिर शाम तक विनोवाजी उसमे लगे रहते थे। एक दिन तो उन्होने कह दिया कि यह काम पूरा होने पर ही भोजन करेगे। उस दिन वह लगभग बाहर घटे उसमे लगे रहे।

विनोवाजी का जीवन दृढता, सूक्ष्मता और सहनशीलता का प्रतीक रहा है। जो भी काम उन्होने किया उसमे वह पूरी तरह जुट गये, अतिम सीमा तक उसे पहुचाया और एक आदर्श प्रस्तुत किया। एक दिन परधाम पवनार मे उन्होने कुए पर रहट चलाया। आश्रम के तीन-चार साथी मिलकर चलाने लगे। बैल वहा कहा था। विनोवाजी ने तय किया कि रहट चलाते हुए सपूर्ण गीता का पाठ करेगे। उस दिन उन्होने पूरे सातसौ चक्कर लगाये। विना किसी काम के भी अगर आदमी गोल-गोल घूमता रहे तो सातसौ चक्कर नही लगा सकेगा और उसे चक्कर आने लगेगे। किंतु विनोवाजी ने तो रहट चलाते हुए चक्कर लगाये। स्पष्ट है कि शरीर का भान रखकर ऐसा काम नही हो सकता। परमेश्वर की भक्ति का स्रोत जिस हृदय

से वहता हो और जिसकी आत्मा विश्व के साथ समरस हो, वही शरीर से ऊपर उठकर शरीर को कस सकता है। उस दिन विनोवाजी ने स्वय कहा, "ऐसा लगता था कि चक्कर खाकर गिर पड़ूगा। लेकिन भगवान ने सभाला। अव विष्णु सहस्रनाम पूरा करने की इच्छा है।"

• •• ••

सन् १९३४ मे मैं जेल से छूटकर आया। उस समय बिहार मे भूकप का सकट था। काकाजी बिहार गये हुए थे। मैंने काकाजी को पत्र लिखा कि मै जेल से छूटकर आ गया हू, अव क्या करना है ? मै सोचता था कि काकाजी मुझे बिहार बुला लेगे। मेरी भी इसके लिए तैयारी थी। उसी समय आश्रम के प्रचारक-मडल की एक सभा हुई। मेरा उससे प्रत्यक्ष सबध नही था। साथियो के कहने से मै सहज ही सभा मे चला गया। वहा अध्यक्ष और मत्री का चुनाव होना था। अध्यक्ष वावाजी मोघे वनाये गए। मत्री के लिए कई नाम आये। विनोबाजी वहा बैठे ही थे। काफी चर्चा के वाद उन्होने एकाएक मुझसे पूछा, "तुम क्या करते हो ?" मैंने बताया कि अभी तो जेल से छूटकर आया हू और आगे क्या करू, इसके लिए काकाजी से पूछा है। हो सकता है कि वह बिहार बुला ले।

विनोबाजी ने कहा "ठीक है, अभी तक तो कोई काम तय नही किया है न ?" मैंने कहा "जी नही !" वह बोले, "तो इसीको मत्री वना दो।" और मै मत्री बना दिया गया। बाद में काकाजी का बिहार आने के लिए पत्र आया तो इकार लिखना पडा। कहा तो मै एक दर्शक मात्र था, और कहा मुझपर मत्रीपद की जिम्मेदारी आ पडी। तवसे अवतक ग्राम-सेवा-मडल की अनेक प्रवृत्तिया शुरू हुईं, उसका विस्तार हुआ, आरोहण-अवरोहण हुए। पच्चीस वर्ष वाद, पिछले वर्ष ही उसकी जिम्मेदारी के पद से मुक्त हो सका हू। विनोवाजी की पकड इतनी मजबूत होती है, उसका यह एक नमूना है। इस सस्था मे जो साथी आये और जुटे वे भी पकडे ही गये। सस्था के वाहर के काम मे लगने पर भी छूट नही सके। ग्राम-सेवा-मडल में जो-जो प्रवृत्तिया शुरू हुईं, उनके पीछे कोई योजनाए नहीं थी। जैसे-जैसे साथी जुटते गये और सुझाव आते गये, काम होता गया। व्यक्तियो और उनके अनुभवो से ही यह सस्था विस्तार कर सकी है।

१९४९ की वात है। गो-सेवा-सघ ने वनस्पति यानी जमाये हुए तेलो के खिलाफ आवाज उठाई थी। काग्रेम की वर्किंग कमेटी से निवेदन करने पर वर्किंग कमेटी ने उसमे रग मिलाने की सिफारिश की और यह भी कहा कि नई फैक्टरियो के लिए नये लाइसेस न दिये जाय। इस सिलसिले मे उस समय के कृषि-मत्री श्री जयरामदास दौलतराम ने भारत सरकार की ओर से वनस्पति के प्रश्न को हल करने के लिए दिल्ली मे एक मीटिंग वुलाई। उसमे पाच प्रतिनिधि वनस्पति उद्योगवालो के, पाच प्रतिनिधि गो-सेवा-सघ के और सरकार के सारे सवधित अधिकारी थे। यह मीटिंग श्री जयरामदासजी के सभापतित्व मे हुई। गो-सेवा-सघ की ओर से श्री विनोवाजी, श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू, श्री सतीशचन्द्र दासगुप्त, लाला हरदेवसहाय और मैं—ये पाच प्रतिनिधि उपस्थित थे। दोनो ओर से अपनी कठिनाइया और अपना पक्ष रखा गया। पूज्य विनोवाजी ने सक्षेप मे गो-सेवा-सघ की दृष्टि रखी। मीटिंग से उठकर हम लोग नीचे आये। आते ही उन्होंने कहा, "मेरा यह स्थान नही है। मेरा स्थान जनता मे है। मै यहा सेक्रेटेरियेट मे पहली वार आया हू और इसे अतिम ही मानना चाहिए।"

इस घटना के वाद काग्रेस वर्किंग कमेटी ने वनस्पति में रग मिलाने की अनिवार्यता की सिफारिश की। काग्रेस-महासमिति ने भारी वहुमत से वनस्पति पर रोक लगाने का प्रस्ताव किया। मत्रिमडल मे चर्चाए हुई, लाखो लोगो ने वनस्पति के खिलाफ विरोध पत्र भेजे, लेकिन डिब्बो पर "जमाया तेल" शब्द लिखने के अलावा कुछ भी नही हो सका और दिन-दिन वनस्पति का उत्पादन वढता ही जा रहा है। आज जव मै इस विपय पर सोचता हू तो स्पष्ट प्रतीत होना है कि वारह साल पहले की सत की भविष्यवाणी आज भी ज्यो-की-त्यो अपनी जगह पर कायम है।

• • •

१९२४ की वात है। श्री गोभक्त चौण्डे महाराज ने वेलगाव मे गो-रक्षा-परिषद का अधिवेशन किया। उसका अध्यक्ष पूज्य वापूजी को वनाया। वापूजी ने उस काम को उठाया और आश्रम मे आकर गो-

रक्षा मडल की स्थापना की । कहा कि इसके सदस्य वे ही हो जो केवल गाय के ही दूध, घी के इस्तेमाल करने का व्रत ले । उस समय के व्रतधारियो मे से पूज्य विनोवाजी एक है । पू काका-साहव कालेलकर और पू जानकीदेवी वजाज के व्रत भी उसी समय के लिये हुए है । वर्धा मे उस समय गाय का घी-दूध मिलने मे काफी कठिनाई होती थी । इसलिए उन्होने अपने एक भक्त को पन्द्रह-वीस गाए आश्रम की ओर से खरीद दी । विनोवाजी सदा से ही प्रयोग-प्रधान रहे है । आश्रम मे जो दूध बचता, उसका मक्खन निकाला करते और उसमे कितना प्रतिशत घी निकला, इसका हिसाब रखते । उन्होने देखा कि कभी सेर भर दूध मे ४ तोला, ६ तोला, और कभी ३ तोला मक्खन निकलता, और वह भी कभी सफेद तो कभी पीला । ऐसा क्यो होता है, इसका कारण ढूढने के लिए जाच शुरू हुई । श्री रामदासभाई ने एक दिन रगे हाथो उस भाई को भैस के दूध मे पानी मिलाते पकडा और विनोवाजी को वताया कि यह दूध आश्रम को दिया जाता है । विनोवाजी को बडा दु ख हुआ और उन्होने वाहर का दूध लेना बद कर दिया । उनकी इस वेदना के फलस्वरूप आश्रम मे गाए वढने लगी और आज वढते-वढते गो-सेवा-सघ एव गो-सेवा का प्रधान केद्र वर्धा वना । वहा स्थानीय नस्ल-सुधार का प्रयोग और गोरस-भडार का प्रयोग चल रहा है । वछडी-पालन, साड-निर्माण, देशी पशु-चिकित्सा, कृपि-औजार आदि अनेक प्रयोग हुए । उन सवका प्रेरणा-स्रोत पूज्य विनोवाजी का वह गो-व्रत रहा, जो आज भी पदयात्रा के अनेक सकटो के वीच अखड चल रहा है ।

दिल्ली मे सविधान-सभा का अधिवेशन चल रहा था । भारत का सविधान वनाया जा रहा था । सविधान में गो-रक्षा के मूलभूत अधिकार की धारा स्वीकार करने का प्रश्न था । पूज्य वापूजी कानून से गोवध-वदी के पक्ष में नही थे । ऐसे समय मे गोवध-वदी के प्रश्न पर पूज्य विनोवाजी की राय ली गई । उन्होने स्पष्ट और निश्चित शब्दो में सलाह दी कि गोवध-वदी का कानून आवश्यक है । उनकी राय इतनी असदिग्ध थी कि हमारे चित्त मे किसी तरह का सकोच नही रह गया । उनकी प्रेरणा से

सैंकडो तार दिल्ली पहुचे और पूज्य दादा धर्माधिकारी, जो उस समय सविधान-सभा के सदस्य थे, वता रहे थे कि करीब-करीब हरेक के हाथो मे यह तार था और उसे गो-सेवा-सघ तथा विनोवाजी का आदेश मानकर हम सब लोगो ने उस धारा के पक्ष मे मत दिया और उसे स्वीकार किया। मैंने एक नही अनेक प्रसगो पर देखा है कि गो-वध-वदी के सवध मे उनके मन मे वहुत तीव्रता है। गो-सेवा के प्रति इतनी लगन और गहराई से उसकी आवश्यकता महसूस करनेवाला अन्य व्यक्ति मैंने नही देखा। उनके द्वारा ईश्वर-स्मरण की जो नाम-माला वनी है, उसमे भी गो शव्द आया है। सर्वोदय की अर्थ-रचना को भी गो-केंद्रित अर्थ-व्यवस्था कह सकते हैं। मेरे चित्त मे गो-सेवा की जो कुछ भावना है, वह उन्हीकी देन है। पूज्य ढेबरभाई की गो-सेवा के प्रेरणा-स्रोत भी पूज्य विनोवाजी ही है। उनका गो-सेवा का चिंतन आज भी सतत चालू है।

: ३ :

बाबा : तब और अब

अनसूया बजाज

इसी वर्ष फरवरी मे मै पू० बाबा के पास गई थी। बहुत दिनो बाद मिलना हुआ। बाबा ने पूछा, "तुम्हारी उमर कितनी है ?" मैने कहा, "बयालीस।" वह बोले, "अरे, इसको दो साल की उमर से देख रहा हू और देखते-देखते बयालीस साल की हो गई। कितना समय निकल गया !"

इस बात को पू० बाबा ने चार-पाच बार दोहराया होगा। मुझे भी एक-एक करके वे पुराने दिन याद आने लगे।

पू० काकाजी (श्री कृष्णदासजी जाजू) ने वकालत छोडी, शहर का मकान छोडा और परिवार समेत वर्धा के आश्रम के पडोस मे रहने आ गये। बच्चो को अच्छे सस्कार मिले, आश्रम-सहवास मिले, यही उनका इरादा था।

शुरू के पाच-सात साल की बाते ठीक-ठीक याद नही है। उसके बाद की एक-एक याद है। आश्रम के नित्य-जीवन को मै कौतूहल से देखा करती और उसमे शामिल होने का प्रयत्न करती। इस प्रकार मै सपूर्ण आश्रम-परिवार के सपर्क मे आई। सुबह-शाम पू बाबा, बालकोबाजी, गोपालरावजी, बाबाजी मोघे, धोत्रेजी आदि वर्ग लेते थे, तब मै पीछे जाकर बैठ जाती। इस बुद्धि मे जितना आजाय वह मेरा। इस तरह दिन बीतते थे।

. .. .

माता-पिता के सादगीपूर्ण सस्कारो का मुझपर सदा प्रभाव रहा। पू० बाबा से उनकी पुष्टि मिलती रही। पू० बाबा की विधिवत् शिष्या मै कभी नही बनी। बस यही कि दो वर्ष की उम्र से आश्रम के आगन मे पली, बडी हुई, रही, आज भी हू। समय-समय पर जो भी अवसर मिले, उनका लाभ उठाया। मिला भरपूर, लेकिन लिया जा सकता था पात्रता के अनुसार ही, सो उतना ही ले पाई।

एक घटना याद आती है। इस घटना ने मेरा जीवन सुखी बना दिया। मैं तब आठ-दस साल की थी। 'गीताई' का वर्ग था। हम पाच-सात लडकिया वर्ग मे थी। उस दिन मैंने हरे रग का छीट का पेटीकोट पहन रखा था। वैसे घर में पू काकाजी सादे कपडे ही सिलवाते थे, लेकिन मेरी जिद के कारण यह हरा पेटीकोट काकाजी ने मेरे लिए सिलवा दिया था। बडे चाव से उसे पहनकर मैं वर्ग मे गई। बस, वह हरा रग पू बाबा के लिए अपनी बात कहने का निमित्त बन गया। बोले, "हा कोणल्या जगल चा जनावर आका आहे ?"[१] मुझे बडा सकोच हुआ। मन खट्टा हो गया। बुरा भी लगा। सबके सामने पू० बाबा से यह सुनने को मैं तैयार नही थी। मेरे बाल-मन को ठेस लगी।

फिर बाबा कुकुम आदि को लेकर बोले, "आखिर कुकुम क्यो लगाते है ? छोटी उम्र मे टीका लगाने के पीछे यह भाव है कि हमने स्नान आदि कर लिया है। इससे तो अच्छा है, एक चिट्ठी माथे पर चिपका दी जाय। शादी के बाद टीका इसलिए लगाया जाता है कि उसे सौभाग्य-चिन्ह माना गया है। टीका लगाने का अर्थ है कि मेरे पति है, मैं सौभाग्यवती हू। लेकिन पति के माथे पर पत्नीवाला होने का टीका रहता है क्या ? पति को यह दरसाने की जरूरत क्यो नही ? सारा जिम्मा बहनो ने ही लिया है क्या ? रग वे पहने, चूडिया वे पहने, कुकुम वे लगावे, ये सब तो बधन है। चूडिया बेडिया है। सौभाग्य यह सब करने मे ही है क्या ? पुरुष के लिए यह सारे सौभाग्य कहा गये ? कुकुम लगाना ही है तो आनद के लिए लगाये। और फिर रग विदेशी होते है, कुकुम कीडे मारकर बनाया जाता है, चूडिया कारखानो मे बनती है। दूसरे लोग उन्हे बनाते है। पराये हाथो पर अपना सौभाग्य निर्भर हो—कैसी अजीब बात है ! अपना सौभाग्य तो अपने हाथ मे होना चाहिए। बनाओ हाथ-कते सूत की चूडिया, मगल-सूत्र। हमारा सौभाग्य कारखानेवाला कैसे सभालेगा ?"

इसके बाद मिर्च-मसाले, गाय के दूध-घी आदि पर भी बाते होती रही। इन सबका मनपर तात्कालिक प्रभाव क्या पडा होगा, ठीक याद नही। बस घर आते ही सबसे पहले वह पेटीकोट निकाल फेंका, कुकुम पोछ

---

[१] यह किस जंगल का जानवर आगया है ?

डाला, चूडिया टुकडे-टुकडे कर दी। रेशम पहनने का सस्कार था ही नही। गाय के दूध-घी का नियम ले लिया। धीरे-धीरे समझ बढी, दुनिया देखी, देख रही हू, लेकिन जो चीजे छोडी उन्हे फिर अपनाने को मन कभी राजी ही नही हुआ। इस प्रकार आज की मौज-शौक की भयकर दुनियादारी से मै मुक्त रह सकी, यह पू० वावा की ही प्रेरणा थी। डगमगाने के मौके जीवन मे आते ही है और वे आये भी। मा को वहुत मानसिक कष्ट सहना पडा, मा घी खाय, बेटी घी न खाय, सब बच्चिया पहने, ओढे, शृगार करे, मै कुछ न करू, मा के दिल मे कैसा लगता होगा, तनिक कल्पना कीजिये। विवाह के वाद ससुराल मे भी कहनेवालो ने कहा ही। मुझे ढोर-गवार भी वताया। वह तो मेरी दादी-सास और सास ही थी, जिन्होने यह सवकुछ सहन करके मुझ जैसी सफेद कपडे और विना चूडी-कुकुम-गहनेवाली बहू को इतने स्नेह से अपनाया। पुराने बुजुर्गों के लिए यह कोई मामूली बात नही है, नही तो शादी के वाद लडकी को ससुरालवालो के सामने, पति के सामने सव तरह से हार खानी पडती है। वहा कौन सुनता है उसकी ? उसके जीवन के लक्ष्य और सिद्धात जहा-के-तहा धरे रह जाते है। लेकिन इस सबध में मै वहुत ही सौभाग्यशाली रही।

.. .. ..

उस समय वावा मुझे विशेष महान नही लगते थे। कुछ नीरस ही लगते थे। वह हमसे बोलते नही थे। वर्ग मे भी आठ-दस हाथ दूर बैठते, और कभी प्रणाम करने का मौका आता तो वह भी दो-चार हाथ दूर से ही। स्पर्श की तो मै कल्पना भी नही कर सकती थी। इसलिए अव जव महादेवीताई को वावा के पैर पोछते देखा तो वडा अजीव-सा लगा। अव तो लडकिया वावा के पैर छूकर प्रणाम करती है, वावा पीठ ठोंकते है। मै देखती रह जाती हू। मुझे कभी ऐसा स्नेह करते है तो विजली दौड जाती है। उस समय तो उनके स्नेह की भाषा विल्कुल अलग थी, मूक थी। हां, वर्ग में पू० वावा एकदम खुल जाते थे, खूव बोलते थे। अपनी मा के मधुर स्मरण कहते-कहते वह सवकुछ भूल जाते थे। ४० मिनट का वर्ग कई वार २-२॥ घटे चलता।

जीवन-दीक्षा के साथ-साथ मेरा बौद्धिक विकास कैसा हुआ, इसका

मुझे विशेष स्मरण नही । लिखाई-पढाई की दृष्टि से मै 'गवार' रही, यह मै मानती हू और इसका मुझे रज भी है । एक बात याद आती है । बाबा ने मुझे 'गीताई' का एक अध्याय नित्य कठस्थ करने को कहा था। यह काम मै खूब तल्लीनता से करती और रोज सुबह एक अध्याय बाबा को सुनाती । लेकिन लबे अध्याय के समय घबराहट होती । मन-ही-मन प्रार्थना किया करती— "हे भगवान्, पाठ सुनाते समय कोई मेहमान या मिलनेवाला विनोबाजी के पास आ जाय या कोई गपशप ही छिड जाय, ताकि पाठ पक्का करने को एक दिन और मिल जाय मुझे ।" बाबा के उलाहने का इतना डर बना रहता था मन मे ।

• • • •

वैसे मेरे बाल-मन को उनका परिचय इस रूप मे हुआ कि 'यह विनोबाजी भले आदमी है ।'

घर का, बाजार आदि का सारा काम मै ही किया करती थी। आश्रम से शहर काफी दूर था और रास्ता एकदम सुनसान । बाजार से लौटते समय मेरे पास काफी सामान हो जाता था । मै रास्ते मे रुक-रुककर आराम से घर पहुचती । विनोबाजी अक्सर मुझे घूमते हुए मिलते, और सामान उठाने मे थोडी-बहुत सहायता कर दिया करते । लेकिन बाद मे तो यह नियम-सा बन गया कि यह 'भले आदमी विनोबा' मुझे रास्ते मे जरूर मिलते और मेरा बोझ काफी हलका कर देते । मै भी आशा से निश्चित जगह उनकी राह देखती । मुझे लगता है कि वह मेरा बोझ हलका करने की सोचकर ही आया करते थे । आज जब इस बात को सोचती हू तो मेरा दिल गद्गद् हो जाता है । मै अर्जुन तो हू नहीं, लेकिन फिर भी स्मरण हो आता है कि अर्जुन को भी भगवान का विश्व-रूप देखने पर कहना पडा था—

"समान मानी अविनीत भावें, कृष्णा गड्या हाक अशीचि मारीं ।
न जाणता हा महिमा तुझा मी । प्रेमें प्रमादें बहुबोल बोलें ।"[१]

●

---

[१] आपकी महिमा को न समझकर प्रेम तथा प्रमाद में आपको कृष्ण, सखा आदि नामो से सबोधन करना मेरा अविनय ही था ।

: ४ :

अगर आज बापूजी और काकाजी होते !

कमला नेवटिया

पूज्य विनोवाजी से परिचय तो कम-से-कम पैंतीस-चालीस वर्षो से है । वह तब वजाजवाड़ी के पीछे घास के बगले मे रहते थे। छोटी-सी इनकी सस्था चलती थी। इनके चेले अधिकतर ब्रह्मचारी थे । मुझे बराबर ख्याल है कि विनोवाजी तव बहुत गभीर रहते थे । हंसी मुह पर झलकती ही न थी। फिर चेले भी ऐसे ही गंभीर चेहरो से रहते थे। जैसे गुरु वैसे ही चेले हो, तभी उनका साथ निभता है । उन दिनो मेरा तो भूलकर भी विनोबाजी के पास जाने का मन नही होता था ।

• •　　　　• •　　　　• •

आज जहा महिला-आश्रम है, वहा विनोवाजी दस-बारह साल रहे होगे । वहा छत के ऊपर प्रार्थना होती थी। काकाजी अक्सर विनोवाजी की प्रार्थना मे चलने को कहते थे । परतु शाम को मेरी तो बगीचे मे जाने की इच्छा होती थी। काकाजी जब भी वर्धा रहते और शाम को कोई खास कार्यक्रम न रहता, तो विनोबाजी की प्रार्थना मे ही जाने का उनका मन होता । पहले पहुचते तो उनके पास बैठने का मौका मिलता। बहुत कम लोग उस समय विनोवाजी के पास जाते थे। विनोबाजी को शायद किसीका आना-जाना अच्छा भी नही लगता था । जहा भी विनोवाजी रहते, काफी गभीर वातावरण रहता । मुझे लगता कि आखिर ये वर्धा क्यो रहने लगे ? और जब देखो तब शाम को घूमने-फिरने के समय भी काकाजी ऐसी जगह ले जाते है, जहा कोई वोल भी न सके। उस समय तो मुझे विनोवाजी ज़रा भी अच्छे नही लगते थे। काकाजी ने कई वार मुझे समझाया कि विनोवाजी के पास दस-पाच महीने रहो, तो इनसे काफी सीखने को मिलेगा। ये वहुत विद्वान तथा सस्कारी व्यक्ति है। पर मैंने तो साफ इन्कार कर दिया । वहा पाच मिनट भी रहना मुझे जेल से भी अधिक भारी लगता था। भाई कमल काकाजी के कहने से विनोवाजी के

चक्कर मे आ गया था। कोई चार-पाच साल उनके आश्रम मे रहा होगा। चक्की पीसना, पानी भरना, रोटी बनाना, अनाज चुनना आदि सभी कार्य हाथ से करो तब खाओ, यह उनका ध्येय था। ८॥-९ बजे सोना, ४-४॥ बजे उठना। हिमालय मे रहकर तपस्या करने जाय, वैसे कठिन नियम थे। ये नियम सन्यासियो को लागू होते है, पर विनोबाजी ने तो बच्चो को भी ऐसे कठोर नियम दिला दिये—शहर मे न जाओ, मा-बाप से न मिलो, यह मत करो, वह मत करो आदि। बच्चे आखिर ये नियम कैसे पाल सकते थे? विनोबाजी को उस समय सासारिक ज्ञान, मेरी समझ से, थोडा भी नही था।

• •

सच बात यह है कि जबतक मनुष्य गृहस्थ न हो, वह व्यावहारिक रूप से कुछ नही सोच पाता। बीवी-बच्चो के चक्कर मे फसे रहने से मनुष्य का दिमाग ठीक से रहता है। ब्रह्मचारी लोगो मे तो एक प्रकार की अकड रहती है। सीधी भाषा मे उसे 'मिरजापुरी लकडी' ही कहिये। गृहस्थ मनुष्य कितना भी कडक क्यो न हो, समयानुसार अपने नियमो को बेत की तरह झुका लेता है।

दुनिया के साथ कैसे बोलना-चालना, यह व्यावहारिक गुण बापूजी मे थे। मनुष्य की खूबी इसीमे है कि वह ऐसे विचारो का प्रचार करे जो अधिक-से-अधिक व्यावहारिक हो। बापूजी हंसने के समय हंसना, काम के समय काम करना, गभीरता के समय गभीर रहना, डाट के समय खूब कडक, यानी जैसा समय, वैसा रूप बदल लेते थे। पर विनोबाजी तो उस समय मेरी समझ मे चौबीसो घटे गभीर ही रहते थे। पत्थर पिघले तब इनके विचार पिघले। ऐसे व्यक्ति के पास जाने को किसका मन करे?

• •• ••

पूज्य काकाजी हमेशा विनोबाजी से कहा करते थे कि आप बहुत विद्वान हैं, आपमे काफी शक्ति है। यदि आप सार्वजनिक सभाओ मे भाषण दे तो उससे लोगो को काफी लाभ होगा। लेकिन वह वर्षो तक शहर मे ही नही आये। एकात मे अध्ययन करते रहे। जो साथ रहते थे, उनको पढाते रहे। लोगो मे आना-जाना उन्हे पसद न था। जगल मे सन्यासियो की तरह ही रहते थे।

पर अब तो उनका स्वभाव बिल्कुल ही बदल गया है। चेहरे पर मुस्कुराहट रहती है और समय पर हँसी-मजाक भी कर लेते है। बच्चो से प्यार रहता है। वह सर्वगुण-सपन्न हो गये हैं। इतना बडा भूमिदान-यज्ञ आरभ किया कि उसकी आजतक किसीको कल्पना भी न थी। पैदल चलकर देहातो मे भूमि-दान का इतने अच्छे ढग और इतनी तेजी से काम किया कि किसी-ने कभी सोचा भी न था कि ऐसा हो भी सकता है। किसानो को तो उन्होने जीवन-दान ही दे दिया।

पता नही एकदम यह परिवर्तन कैसे हो गया ? अब तो वह हिंदुस्तान के सरताजो मे है। आज पू० बापूजी और काकाजी होते तो उनकी खुशी का ठिकाना न रहता। उनके सामने विनोबाजी काफी रूखे-सूखे से रहे, पर अब भूमिदान का जो चमत्कार इन्होने करके दिखाया, शायद ही कोई दूसरा कर सकता। काफी बडी शक्ति इनके अदर छिपी हुई थी। उसका अच्छी तरह से उपयोग हो रहा है।

हरेक मनुष्य को अपनी शक्ति का जितना भी हो सके, अच्छे-से-अच्छा और ज्यादा-से-ज्यादा सदुपयोग करना चाहिए। इसमे अपना जीवन तो सार्थक है ही और न जाने कितनो का भला हो सकता है। हमेशा अपने जीवन की दृष्टि अच्छी बनाये रखने की कोशिश करते रहना चाहिए। इसमे अपना भला होगा और देश का भी, यही विचार पूज्य विनोबाजी के जीवन से ग्रहण किये जा सकते है।

: ५ :

ज्ञान-गंगा का पावन प्रवाह

कमलनयन बजाज

विनोबाजी के सपर्क मे आने का मुझे बचपन से ही अवसर मिला है। इस लबे अरसे मे उनका मुझपर जो असर पडा, उसीसे सबधित कुछ प्रसग यहा देता हू।

सन् १९३०-३१ की बात होगी। एक दिन विनोबाजी चर्खा कातते-कातते मेरा वर्ग भी ले रहे थे। इसी बीच किसीने डाक से आया हुआ एक लिफाफा उनके हाथ मे दिया। उस लिफाफे के आकार, कागज के प्रकार और पत्र के पीछे से दिखाई देती हुई लिखावट से मैंने ताड लिया कि यह पत्र बापूजी का लिखा हुआ है। विनोबाजी ने उसे एक बार पढा और फाड दिया। जितने भी पत्र उनके पास आते, उन्हे एक बार पढ जाते और दोपहर को दुबारा पढे बिना सबका जवाब दे देते। आश्रम से सबधित पत्रो को वह कार्यालय मे भिजवा देते, शेष को फाड देते। अपने पास कुछ भी न रखते। मैं उनकी इस आदत से परिचित था। लेकिन यह पत्र तो बापू का था, और उसका जवाब देने के पूर्व ही उन्होने उसे फाड दिया, इससे मेरे मन मे कुछ कौतूहल और शका हुई।

मैंने फाडे हुए पत्र के टुकडो को साथ मे रखकर पढा। किसी सदर्भ मे बापू ने विनोबाजी को कुछ इस प्रकार लिखा था—"तुम्हारे जैसी किसी महान् आत्मा से मेरा सपर्क नही हुआ।" बापू के साधारण पत्रो को भी लोग सभालकर रखते थे। यहातक कि उनके हस्ताक्षर तक को मढवा लेते थे। लेकिन विनोबाजी ने बापू का लिखा हुआ यह पत्र इस तरह फाड दिया, इससे मुझे बहुत रोष हुआ। मैं कुछ आवेश मे उनसे पूछ बैठा, "आपने इस पत्र को क्यो फाड डाला?"

उन्होने सहज भाव से कहा, "अपने आत्मीय और गुरुजन से भी, गफलत या स्नेह के कारण कुछ भूल हो गई हो तो उसको कायम रखना

ठीक नही। उसमें मोह है, और हिंसा भी।"

मैंने उसी आवेश म कहा, "बापूजी ने भूल की है, यह कहनेवाले आप कौन ?"

उन्होने उसी सहजता से जवाब दिया, "बापू को लाखो लोग मिले है, तथा एक-से-एक महान् विभूति और आत्माए मिली होगी। यदि बापू उन्हे नही पहचान पाये, या पहचानकर भी लिखते समय भूल गये हो, तो उससे उन लोगो की महानता कम तो नही हो जाती। हमे इतना ही समझना चाहिए कि बापू ने स्नेह या मोह के कारण, मेरे प्रति काफी कुछ लिख दिया है। उसमे भूल है, उसे सहेजकर रखने की जरूरत क्या ?"

मैंने दोहराया, "भूल क्यो कहते है ? बापू ने समझ-बूझकर ही लिखा होगा।"

विनोबाजी ने धीरज के साथ कहा, "मान लिया, उन्होने जो लिखा वह सत्य ही है तो उससे मुझे लाभ क्या ? यदि कुछ हो सकता है तो घमड ही, जिससे अपना कुछ लाभ न हो, उसे रखने से मतलब ?"

मैंने फिर कहा, "बापू जैसे महापुरुप की लिखी हुई चीज, भले ही वह आप ही के बारे में क्यो न हो, वह केवल आपके लिए नही, दुनिया के लिए है—उसे फाडने का आपको क्या अधिकार ?"

विनोबाजी ने कुछ अधिक समझाते हुए फिर कहा, "ऐसा कहने मे हमारा मोह ही है। उसमें काम की चीज जो स्नेह है, उतना हमने ले लिया। बाकी को नष्ट कर देने ही मे लाभ है। यदि वह सच भी हो तो मेरे उस पत्र को फाड डालने से वह बात मिट नही जाती। सत्य तो सत्य ही रहेगा, फाडने से फटेगा थोडे। लेकिन यदि वह मोह है तो उसे रखने में नुकसान ही होगा। इसलिए उसे फाड डालने मे कोई जोखिम नही, न रखने से कोई लाभ।"

विनोबाजी की बात मेरे दिल मे पैठती ही चली गई। मेरा रोप काफूर हो गया। इस घटना ने मेरे जीवन को एक मोड दिया। कुछ 'दुर्गुण' भी इसकी वजह से मुझमे आ गये। अच्छी-से-अच्छी चीजो और पत्र-व्यवहार के प्रति सग्रह की आदत नही रही। कुछ लापरवाही भी आ गई।

लेकिन जीवन मे एक बहुत बडा समाधान और सतोष इस घटना से मुझे मिला, जिसे मै अपने जीवन की एक बडी कमाई मानता हू।

•

दूसरा प्रसग लीजिये—

गीता, ज्ञानेश्वरी, रामायण आदि ग्रथो मे से किसी विशेष प्रसग या विचार को लेकर विनोबाजी चर्चा छेड देते थे। जिस छद मे मूल श्लोक हो, उसी छद मे हिंदी, मराठी, या गुजराती मे उसका सरल भाषातर अथवा भावार्थ कर देते। यह भी उनके पढाने का एक तरीका था। इस प्रकार तत्काल रूपातर करने के बावजूद कई बार वह मूल से भी अधिक स्पष्ट और अच्छा हो जाता था। यह सब अक्सर वह कागज के टुकडो या पट्टी पर लिखते और काम हो जाने पर फाड देते अथवा मिटा देते थे।

अहिसा के विषय को समझाते हुए मराठी मे एक श्लोक उन्होने बनाया। उसकी शब्दावली तो मुझे याद नही, लेकिन उसका भावार्थ मेरे दिल पर ज्यो-का-त्यो अकित हो गया। वह कुछ ऐसा था—पत्थर ने फूल से कहा, "मै तुझे कुचल डालूगा।" फूल ने जवाब दिया, "मेरी सुगध को दुनिया मे फैलाने का मौका देकर मुझपर तुम अनत उपकार करोगे।" पत्थर का घमड चूर-चूर हो गया। नम्रता और दृढता के साथ फूल न दोनो तरह से जीत प्राप्त कर ली। कुचला जाता तो उसकी जीत थी ही, और बच गया तो उसने किसीको दुखाये बिना अपने शील की रक्षा की। अहिसा का इससे अधिक सरल, सुदर तथा गहन विश्लेषण आज तक मेरे देखने मे नही आया—ऐसा विश्लेषण जो सीधा मानस में उतरता चला जाय।

लेकिन कागज के टुकडो को फाड देने से मुझे बहुत वेदना होती। अत मे जब मुझसे नही रहा गया तो एक दिन पूछ ही बैठा, "आप इन कागजो को फाड क्यो देते है? यदि इन्हे जमा करके प्रकाशित किया जाय तो साहित्यिको के अलावा अनेक विद्यार्थियो को भी इनसे लाभ मिलेगा।"

उन्होने कहा, "मनुष्य अमर नही है। जब वह स्वय अमर नही तो किसी अमर कृति का निर्माण उससे हो ही कैसे सकता है? फिर भी यह सभव है कि जीवन की अनुभूति और विचार-मथन के बाद ऐसी कोई कृति बन जाय, जो लगभग अमरत्व को प्राप्त कर सके। लेकिन यदि वह कृति

ऐसी न हो तो उसके रखने से क्या लाभ ? अंत में तो समाज अथवा काल उसे नष्ट कर ही देगा । यह नष्ट समाज या काल को क्यों दिया जाय ? इसमें हिंसा है और एक तरह का अपमान भी । अपमान इसलिए कि मैं तो रचना करूं और दूसरे उसे नष्ट करें । इससे तो अच्छा यही है, और इसमें हमारे स्वाभिमान की रक्षा भी होती है कि जबतक ऐसी कोई अच्छी चीज न बन जाय, हम स्वयं ही उसे नष्ट कर दें । अच्छा रसोइया तो वही माना जायगा, जो अच्छी बनी रसोई ही परोसे ।"

मैंने कहा, "आपने यह कैसे पता किया कि जो कुछ लिखा गया, वह इस तरह की अमर कृति नहीं है ? हमें तो वे बहुत अच्छी लगती हैं । जो मर्म आप समझाना चाहते हैं, वह आसानी से हृदय में उतरता चला जाता है । इस तरह हमारे लोगों को उससे लाभ मिले तो कितना अच्छा हो ?"

वह बोले, "आखिर मैं जब कुछ लिखता हूं, तो जानता भी हूं कि उस चीज की क्या कीमत है । यदि वह अमरत्व को प्राप्त कर सकनेवाली कृति है, तो नष्ट करने से भी मिट कैसे सकती है ? वह तो जमाने के साथ ही प्रवाहित होती रहेगी—मुझसे तुममें, तुमसे और किसीमें—इस तरह उसका चलन होगा । उसमें सत्य है तो अमरत्व है, और अमरत्व है तो जमाने पर हमेशा असर करता रहेगा, सारे वातावरण में फैल जायगा ।"

कितना गहरा विचार, कितनी सरलता से कहा गया है ! दूसरों को कष्ट भी न दूं, समाज के सामने अधकचरी चीज भी न लाऊं और मेरे स्वाभिमान की भी रक्षा हो । एक विचार यदि बन गया है, और वह शक्ति रखता है, तो वह नष्ट नहीं हो सकता । यही सत्य की कसौटी है । ऐसी श्रद्धा और विश्वास से हम जैसे सामान्य लोगों को भी, भले ही क्षणभर के लिए ही क्यों न हो, आभास तो हो ही जाता है कि सत्य अमर है, अटल है ।

विनोबाजी की 'गीताई' यद्यपि गीता का मराठी अनुवाद ही है, फिर भी कहीं-कहीं वह मूल से भी अधिक सुंदर बन पड़ी है । 'गीताई', को उनके इसी तरह के पूर्व-प्रयत्नों का संकलित फल समझना चाहिए ।

... .

हरिजन-सेवा का चिंतन करते हुए विनोबाजी के मन में कोई संकल्प उठा और वह प्रातःकालीन प्रार्थना के बाद स्नानादि से निवृत्त होने के बाद

कधे पर फावडा रखकर प्रतिदिन सुरगाव जाने लगे। पवनार से वह स्थान लगभग दो-तीन मील की दूरी पर है।

एक दिन जब वह फावडा उठाकर कधे पर रख कुछ मत्रादि गुनगुनाते हुए चले तो मै भी साथ हो लिया। दो-एक विद्यार्थी और थे। सुबह का सुहावना समय था। हम हरे-भरे खेतो मे से होते हुए जा रहे थे। रास्ते मे कुछ वृक्षो और पक्षियो का वे वर्णन करने लगे। एक पेड पर किसी पक्षी का घोसला था। वह पक्षी रोज किस तरह नियमित रूप से अपना काम करता है, उसकी सुरीली आवाज से कितनी प्रसन्नता होती है आदि कई बाते उस पक्षी के सबध मे उन्होने बताई।

बीच-बीच मे मुक्त-मन और प्रसन्न-चित्त से भजन और अभग भी गाते जाते थे। गाने मे तो मग्न हो ही जाते थे, किंतु एक प्रकार की मस्ती भी उनकी चाल मे आ गई थी। किसी भी कार्य को इसी तरह मस्त होकर एकाग्रता से करने की उनकी सहज आदत हो गई है।

भजन या अभग पूरा हो चुकने पर यदि अवकाश मिलता तो मै बीच-बीच मे एकाध प्रश्न पूछ लेता था। मैने पूछा, "जब आप नित्य सफाई के लिए इसी गाव मे जाते है तो फावडा साथ क्यो ले जाते है? इसी गाव मे किसीके यहा रख दिया जाय और काम के समय ले लिया जाय तो रोज लाने-लेजाने की मेहनत बच सकती है।"

वह बोले, "पहले मै ऐसा ही, करता था। लेकिन फिर अनुभव से जान लिया कि वह गलत काम था। जब हम फावडा गाव मे किसी के यहा छोड देते है तो दूसरे दिन उसके यहा से लेकर आने तक हम अपना काम चालू नही कर पाते, जबकि मैला तो गाव मे प्रवेश करते ही शुरू हो जाता है। इसलिए जिस काम के लिए मै यहा आता हू, उसका औजार भी मेरे साथ ही होना चाहिए। इससे समय की बचत तो होती ही है, लेकिन उससे भी अधिक महत्व की बात समझने की यह है कि जिस प्रकार फौज का सिपाही मोर्चे पर जाते समय अपनी तलवार या बदूक साथ लेकर चलता है, उसी प्रकार एक 'सफैया' को भी अपने औजार सदा अपने साथ लेकर ही चलना चाहिए। फिर तो जैसे सिपाही को अपने हथियारो से मोह हो जाता है, वैसे ही हमे भी अपने साधनो से मोह हो जाता है, और उन्हे उठाकर ले चलने मे एक

प्रकार का आनंद और ज्ञान अनुभव होती है। जिस प्रकार मोर्चे पर कोई सिपाही यह नहीं कह सकता कि मैं अभी लड़ने को तैयार नहीं हूं, क्योंकि मेरे पास हथियार नहीं हैं, उसी तरह एक 'भंगिया' भी सफाई के समय यह नहीं कह सकता कि सफाई के औजार मेरे पास नहीं हैं, इसलिए अभी मैं सफाई नहीं कर सकता।"

शायद यही कारण था कि विनोबाजी अपना फावड़ा आदि अन्य किसी-को उठाने भी नहीं देते थे। सिपाही अपना हथियार किसी और को कहां उठाने देता है?

विविध कर्म करते हुए ज्ञान प्राप्त करने का विनोबाजी का अपना अनुपम तरीका रहा है। चलते-फिरते, खाते-पीते और खेती-खादी के अनेक प्रयोग करते हुए उनका सारा व्यवहार मानो 'ज्ञान-गंगा का पावन प्रवाह' ही है, जिसकी जितनी पात्रता हो, उतना ज्ञान वह अपने पात्र में ले सकता है।

●

: ६ :

साधक जीवन का नया पहलू

श्रीमन्नारायण

अपने स्वर्गवास के कुछ दिनो पहले पूज्य काकाजी (जमनालालजी बजाज) ने पवनार के बगले मे एक सप्ताह का उपवास किया था। जिस दिन उन्होंने उपवास छोडा, वह पवनार के मकान की सबसे ऊची छत पर चुपचाप बैठे थे और कुछ प्रार्थना कर रहे थे। उन्होने मुझे ऊपर बुलाया और थोडी देर बाद पूछने लगे, "क्या तुम विनोबाजी के सपर्क मे आये हो ?"

"कई बार उनसे मिला तो हू, लेकिन अभी तक उनसे मेरा कोई घनिष्ठ परिचय नही है।" मैने धीरे-से उत्तर दिया।

काकाजी ने फिर कहा, "मैने इस समय एक हफ्ते का उपवास पवनार मे इसलिए किया कि मै पूज्य विनोबाजी के सान्निध्य मे रह सकू। उनके लिए मेरे मन मे बहुत गहरी श्रद्धा है। मै मानता हू कि भारतवर्ष के बडे-बडे प्राचीन ऋषियो की अपेक्षा उनकी प्रतिभा और श्रेणी किसी तरह कम नही है।"

पूज्य काकाजी के ये वाक्य मुझे अभी तक स्पष्ट रूप से याद है। तभी मेरे मन मे पूज्य विनोबाजी के अधिक निकट आने की प्रेरणा हुई और ज्यो-ज्यो मै उनके अधिक सपर्क मे आया, पूज्य काकाजी के इन शब्दो की गहराई को सार्थक पाया।

•

शायद १९३८ की बात होगी। उस समय मै वर्धा के नवभारत-विद्यालय का आचार्य था। एक दिन कुछ शिक्षको व विद्यार्थियो के साथ मै विनोबाजी के दर्शन करने के लिए पवनार गया। वह उस समय वेदो का अध्ययन कर रहे थे। कताई और बुनाई के नये प्रयोग तो उनके चलते ही रहते थे। जैसे ही विनोबाजी ने हम लोगो को आते देखा वह पीठ फेरकर बैठ गये और अपना अध्ययन चालू रखा। हम लोग थोडी देर चुपचाप

खड़े रहे और फिर उनके अध्ययन में किसी प्रकार दखल देना उचित न समझकर वापस चले आये। सब लोगों को बड़ा आश्चर्य-सा हुआ। किन्तु उस समय विनोबाजी का जीवन अध्ययन-परायण था और वह वस्त्र-स्वावलंबन तथा खादी के प्रयोगों में तन्मय रहते थे। इसलिए बाह्य जगत से उनका बहुत कम संबंध रहता था। १९४० में जब पूज्य बापूजी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह के दौरान उनको पहला सत्याग्रही चुना तब दुनिया ने पहली बार उनका नाम सुना। इसके बाद भी उनका जीवन मुख्यतः अध्ययनशील ही बना रहा और वह अपने आश्रम के उद्योगों और प्रयोगों में ही लगे रहे।

* * * *

राष्ट्रपिता गांधीजी के महानिर्वाण के पश्चात विनोबाजी के जीवन का एक नया दौर शुरू हुआ। वह पवनार-आश्रम में शाम को सामूहिक रूप से प्रार्थना करने लगे। उन दिनों उनका 'कांचनमुक्ति' का प्रयोग चलता था। विनोबाजी आश्रमवासियों के साथ प्रतिदिन तीन-चार घंटे कुदाली चलाकर कड़ी धूप में खेती का काम करते थे। सिंचाई के लिए एक कुआं भी खोदना शुरू किया था, जिसमें वर्धा की कई संस्थाओं के कार्यकर्ता पवनार आकर अपना श्रमदान देने लगे थे। कुछ दिनों तक तो आश्रम की सायंकालीन प्रार्थना कुएं के रहट को चलाते हुए ही चलती थी। बैलों की जगह विनोबाजी तथा अन्य आश्रमवासी स्वयं रहट चलाते थे और साथ में मंत्रोच्चार तथा गीता-पाठ भी करते थे। उन दिनों विनोबाजी कहा करते थे कि हमारी प्रार्थना भी श्रममय होनी चाहिए और हमें प्रतिक्षण काम करते-करते ही भगवान का स्मरण करना चाहिए। आगे चलकर जब कुएं की खुदाई का काम बहुत तेजी से बढ़ गया तब यह प्रार्थना सामूहिक रूप से आश्रम के सामने होने लगी। विनोबाजी तथा सब आश्रमवासी खड़े होकर प्रार्थना करने लगे। जो लोग बाहर से विनोबाजी के दर्शन करने के लिए आते थे, वे भी प्रार्थना में खड़े-खड़े शरीक हो जाते थे। उन दिनों प्रार्थना के बाद विनोबाजी उच्च स्वर से गायत्री-मन्त्र का तीन बार उच्चार करते थे। संतों के विविध भजन और अभंग भी मधुर कंठ से खुद गाते और बाद में सामूहिक रूप से राम-धुन बुलवाते थे। उस समय हाथों से ताली बजाते-बजाते वह

नाचने भी लग जाते थे। यह मार्मिक दृश्य देखने के लिए काफी लोग वर्धा शहर से आया करते थे। जिस समय प्रार्थना चलती थी सूर्य भगवान धीरे-धीरे अस्ताचल की ओर जाते हुए दिखाई देते थे और पवनार की धाम नदी का शातिपूर्ण प्रवाह भी मानो प्रार्थना के स्वर मे अपना सुमधुर स्वर मिला देता था।

• •

जवाहरलालजी के निमत्रण पर जिस दिन विनोबाजी पवनार-आश्रम से दिल्ली पदयात्रा के लिए रवाना हुए, मै भी उनके साथ था। रास्ते मे वह मुझसे कहने लगे, "कुमारप्पाजी का ख्याल है कि भूदान-यज्ञ द्वारा मै देश की भूमि-समस्या को अधिक जटिल बना रहा हू। भारतवर्ष मे पहले ही जमीन छोटे-छोटे टुकडो मे बटी हुई है और कुमारप्पाजी की राय है कि भूदान-यज्ञ से यह समस्या और भी बेढगी बन जायगी। किंतु क्या चीन मे भी जमीन के टुकडे नही किये जा रहे है ?"

"जी हा, साम्यवादी शासन आने पर चीन मे बेजमीन किसानो को बहुत बडी सख्या मे जमीन बाटी जा रही है। उनका इरादा है कि एक बार जमीन बट जाने पर फिर उसका समूहीकरण किया जायगा।" मैंने कहा।

विनोबाजी बोले, "हमारे देश मे भी यदि इसी प्रकार जमीन तेजी से बट जायगी तो हरेक गाव मे बेजमीनो को बडा सतोष मिलेगा और उससे देश मे शाति फैलेगी। किन्तु मुझे तो जमीन के टुकडे हो जाने का इतना भय नही है, जितना लोगो के दिलो के टुकडे हो जाने की चिंता है। भूदान-यज्ञ द्वारा मै तो करोडो टूटे हुए दिलो को जोडना चाहता हू।"

• •

२८ फरवरी १९५६ को हैदराबाद राज्य के तेलगाना जिले मे स्थित महबूब-नगर नामक एक छोटे-से कस्बे मे, जहा विनोबाजी का शिविर था, मै पहुचा और उनके साथ लगभग एक सप्ताह पैदल-यात्रा का मौका मुझे मिला। दिल्ली मे कई महीनो के व्यस्त वातावरण के बाद विनोबाजी का यह अल्पकालिक साथ मुझे बहुत ही सुखद प्रतीत हुआ। आज दुनिया के सामने जितनी भी महत्वपूर्ण समस्याए पेश है, उनमे से प्राय सभीके बारे मे विनोबाजी के ताजे, मौलिक व तर्कपूर्ण विचारो से कोई भी व्यक्ति विशेष

रूप से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। भविष्य के बारे में वह बिल्कुल वैज्ञानिक की तरह सोचते हैं। उनके विचारों में कहीं भी अस्पष्टता नहीं। उनके साथ पैदल चलना एक जंगम विद्यापीठ के चिन्तापूर्ण वातावरण में विचरण करने जैसा है।

इस पदयात्रा के दौरान कई विषयों पर उनसे वार्तालाप हुआ और उनके विचार जानने का मौका मिला। सरकार और जनता के संबंधों की चर्चा करते हुए वह बोले, "राज्य एक बाल्टी है और जनता कुआ। बाल्टी कुए में से सिर्फ थोड़ा-सा ही पानी ले पाती है। इसी तरह सरकार के पास जनता की क्षमता और शक्ति का बहुत ही कम अंश होता है। मैंने अक्सर यह बात कही है कि सरकारी शक्ति एक शून्य (०) के समान है, जबकि जनता की शक्ति पूर्णांक (१) की तरह है। जब ये दोनों इकट्ठे कर दिये जाते हैं तो हमें '१०' की संख्या मिलती है। इस तरह जनता और राज्य की शक्तियां जब एक में जोड़ दी जाती हैं तो एक महान् शक्ति का विकास होता है। लेकिन जब हम उनमें से किसीको भी अलग-अलग महत्व देंगे, जनता के पास केवल १ की शक्ति रह जायगी और सरकार की शक्ति केवल शून्य बनकर रह जायगी।"

\.\.   \.\.   \.\.

एक दिन प्रातःकाल पैदल चलते हुए बातचीत के सिलसिले में विनोबाजी ने मुझसे ग्राम और कुटीर-उद्योगों के संबंध में अपने विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा, "कुछ लोगों का ख्याल है कि मैं प्रतिगामी हूं। किंतु प्रगतिशील होने के अलावा मैं एक आधुनिक वैज्ञानिक भी होने का दावा करता हूं। यह सोचना गलत है कि मैं ग्रामोद्योगों की टेकनीक सुधारने में आधुनिक विज्ञान के उपयोग का पक्षपाती नहीं हूं। दरअसल मेरा मत है कि आधुनिक विज्ञान संतोषजनक और पर्याप्त प्रगतिशील नहीं है। उदाहरण के लिए, मेरी समझ में यह बात नहीं आती कि हमारे हवाई जहाज अधिक तेज और ज्यादा आरामदेह क्यों न हों। मैं आमतौर पर पैदल चलना इसलिए पसन्द करता हूं कि जनता से मेरा सजीव संपर्क बना रहे और मेरी बातें हवाई न होने पावें। लेकिन यदि किसी वजह से मुझे हवाई सफर करना पड़े तो मैं ऐसे जहाज से यात्रा करना पसंद करूंगा, जो दिल्ली या लंदन या न्यूयार्क

तक मुझे कुछ ही मिनटो में पहुचा दे।"

• • • •

शहर और गावो की चर्चा करते हुए एक दिन गाववालो को उन्होने एक बहुत ही दिलचस्प मिसाल दी। एक शहर मे एक बडे जमीदार ने, जिसने भूदान में कुछ जमीन दी थी, अपने परिवार को आशीर्वाद दिलाने के लिए विनोवाजी को निमंत्रित किया। जमीदार ने बडे गर्व से उन्हे उगते हुए सूरज का एक चित्र दिखलाया, जो उसने कोई १०० रुपये मे खरीदा था। विनोवाजी मुस्करा पडे और बोले, "सौ रुपयो मे उगते हुए सूरज का चित्र खरीदने की वजाय क्या यह ज्यादा अच्छा नही कि गाव मे रहकर रोज सवेरे उगते हुए सूरज का मुफ्त दर्शन किया जाय ? रहन-सहन के उच्चतम स्तर का उपभोग कौन करता है ? वह तथाकथित धनी व्यक्ति, जो शहर की घनी बस्ती मे रहता है और अपनी दीवारो पर प्राकृतिक दृश्योवाले अनेक चित्र टाग रखता है, या वह जो गाव के स्वस्थ वातावरण मे रहता है और प्रकृति के प्रत्यक्ष सपर्क का सुख भोगता है ?"

अपने बारे मे वह एक दिन बोले, "लोग समझते है कि भूदान के लिए गाव-गाव घूमने के कारण मुझे बहुत शारीरिक बोझ उठाना पडता है। लेकिन वात ऐसी नही है। मुझे पद-यात्रा मे बडा आनद आता है। दिनभर परिश्रम के वाद रात मे जब नीद आती है तो मै लक्कड की तरह निश्चित सो जाता हू। स्वप्न मेरी नीद मे वाधा नही डालते। नीद इतनी मजेदार आती है कि शहरवालो को क्या नसीब होती होगी ! मेरा सौभाग्य है कि हर दिन मुझे नया घर मिलता है। मै खुले आकाश और तारो के नीचे सोता हू। वास्तव मे सारी दुनिया ही मेरा परिवार है।"

• • • • • •

नेहरूजी और विनोवाजी की भेट के दृश्य बहुत ही मार्मिक होते है। दो-एक वार मैने देखा है, नेहरूजी से मिलते ही विनोवाजी गदगद् हो जाते है और उनकी आखो से प्रेमाश्रु बहने लगते है। नेहरूजी भी भावनावश काफी देर तक स्तब्ध-से बैठे रह जाते है। ऐसे भावुकतापूर्ण क्षणो मे मुझे ही कोई सवाल छेड देना पडता था, ताकि दोनो मे वार्तालाप शुरू हो सके।

निजामाबाद की यात्रा के अवसर पर नेहरूजी ने विनोवाजी से एक

गांव में भेंट करने का निश्चय किया। यह गांव हैदराबाद से सौ मील की दूरी पर है। विनोबाजी का विशेष आग्रह रहा है कि जब नेहरूजी उनसे मिलने आयें उस समय मैं भी हाजिर रहा करूं। मुस्कुराकर वह अक्सर मुझसे कहते थे, "मैं तो श्रवण-भक्त हूं। इसलिए जो कुछ नेहरूजी कहेंगे वह गौर से सुनता रहूंगा।"

इस बार की भेंट में राष्ट्रीय महत्व के विभिन्न मसलों जैसे बुनियादी शिक्षा, विद्यार्थियों की अनुशासनहीनता, पंजाब का पुनर्गठन आदि पर विनोबा और नेहरूजी की बातचीत हुई। लगभग दो घंटे यह वार्ता चली, फिर वे पास के मैदान में गये। वहां लगभग पांच हजार व्यक्ति उनके दर्शनों के लिए आये थे। नेहरूजी कुछ जल्दी में थे, अतः उन्होंने कुछ ही मिनट उपस्थित भीड़ के सामने भाषण दिया और फिर वह विनोबाजी के साथ-साथ अपनी कार की ओर लौट पड़े। विनोबाजी से विदाई लेते समय नेहरूजी ने विनोबाजी के हाथों को अपने हाथों में ले लिया और भावनापूर्ण स्वर में बोले, "अपनी तन्दुरुस्ती का जरा ख्याल रखिये। हद से ज्यादा मेहनत न कीजिये।"

विनोबाजी की आंखें भर आईं।

नेहरूजी से हुई बातचीत पर विनोबाजी की प्रतिक्रिया जानने के लिए मैं एक घंटे और वहीं रुका रहा। विनोबाजी भावनाओं में डूबे हुए थे। वह कुछ क्षण चुप रहे। फिर उन्होंने धीरे-से मुझसे कहा, "यह सही है कि मैं हद से ज्यादा काम कर रहा हूं। दिनों-दिन मेरी शारीरिक शक्ति घटती जा रही है। पहले मैं रोजाना १० से १५ मील तक पैदल चला करता था। अब मैं प्रतिदिन ८ मील से ज्यादा सफर नहीं कर सकता। मैं किसी तरह १२०० कैलरी तक का भोजन कर पाता हूं और वह भी लगभग बारह बार में। लेकिन जिस समय मैं दूसरे विषयों की चर्चा करता हूं, उस समय भी मेरा दिमाग लगातार भूदान के लक्ष्य को हासिल करने पर ही टिका रहता है।"

और फिर उन्होंने भाव-विह्वल होकर कहा—

"मेरे लिए तो यह 'करो या मरो'-जैसा मिशन हो गया है।"

कुछ समय पहले मैं विनोबाजी से 'कस्तूरबा सेवा मंदिर' राजपुरा

(पजाब) मे मिला था। उस समय उनका एक नया रूप मैने देखा। वह अधिकतर अपना समय छोटे-छोटे कार्यकर्ताओ से मिलकर उनके घरेलू जीवन-सवधी जानकारी प्राप्त करने मे लगाने लगे थे। वेद-कुरान आदि के अध्ययन का क्रम करीब-करीव समाप्त हो गया था और वह देश के बहुत-से रचनात्मक कार्यकर्ताओ से विस्तारपूर्वक व्यक्तिगत चिट्ठी-पत्री भी करने लगे थे। मैने विनोवाजी से पूछा, "आजकल आपने अपना अध्ययन बहुत कम कर दिया है और पूज्य बापूजी की तरह आपका व्यक्तिगत सपर्क कार्यकर्ताओ से बढ रहा है। क्या यह आपका कोई नवीन प्रयोग है ?"

इसपर विनोवाजी ने गभीर होकर कहा, "हा, मै आजकल फिजिकल प्लेन (भौतिक स्तर) के वजाय सुपरमेटल प्लेन (अतिमानस स्तर) पर काम करने लगा हू। इसके लिए यह जरूरी है कि मै कार्यकर्ताओ के दिल एव दिमागो मे गहराई से उतरने की कोशिश करू। इसी दृष्टि से मै उनसे व्यक्तिगत चर्चाए करता हू और उनके भीतर प्रवेश करने का प्रयत्न करता हू। मै समझता हू कि इस प्रकार जो मेरा काम होगा वह व्याख्यानो की अपेक्षा अधिक कारगर होगा।" फिर थोडी देर वाद मुस्कराकर वोले, "तुम शायद नही जानते कि आजकल पडितजी से भी मेरा सपर्क मेटल प्लेन (मानसिक स्तर) पर ही अधिक होता है और मानसिक स्तर का सपर्क भौतिक स्तर के अनुभव से कम यथार्थ नही है।"

इन दिनो भी विनोवाजी बापू की तरह कार्यकर्ताओ के सुख-दु ख, उनकी घरेलू कठिनाइया और व्यक्तिगत समस्याए जानने की अधिक कोशिश करते है और उनका पत्र-व्यवहार पहले से वहुत अधिक वढ गया है। विनोबाजी के जीवन का यह नया पहलू वापू की आत्मीयता और वात्सल्य का स्मरण हमेशा ताजा करता रहेगा।

: ७ :

प्रेमात्मन् बाबा

मदालसा

सन् १९३२ में पश्चिम खानदेश की धूलिया-जेल में पू० काकाजी और पू० विनोबाजी दोनों काफी दिनों तक साथ रहे थे। तभी एक मुला-कात के मौके पर काकाजी ने विनोबाजी से मुझे पहली बार व्यक्तिगत रूप से मिलाया और उन्हें बताया कि मेरी इच्छा उनके पास अध्ययन करने की है। विनोबाजी ने बात मंजूर करली।

जेल से छूटकर आते ही उन्होंने सुबह सात बजे से आठ बजे तक मेरा वर्ग लेना शुरू कर दिया। वह वर्धा स्टेशन के निकट काटन-मार्केट में रहते थे और मैं आश्रम के निकट कन्याशाला में। मुझे पढ़ाने के लिए प्रतिदिन विनोबाजी स्वयं तीन मील पैदल चलकर आते थे। पढ़ाने के बाद जब वह अपने निवास-स्थान पर लौटकर जाते तब मैं अक्सर करीब आधी दूर तक उनके साथ जाया करती थी। उस समय खुले मन से बातचीत करने का मौका मुझे मिलने लगा और अपने मन के सवाल और संदेह का समाधान भी मैं सुगमता से पाने लगी। मुझे ऐसा महसूस होने लगा कि मेरे मनोभावों को जितनी आसानी से और अच्छी तरह विनोबाजी समझ लेते थे, उतना अभी तक पू० बापूजी, काकाजी या मां भी नहीं समझ पाये थे।

.. .. ..

विनोबाजी के साथ अध्ययन करते हुए मेरे मन में यह इच्छा जागृत हुई कि कभी अवसर मिला तो मैं उनके साथ पैदल-यात्रा करूंगी।

१९५१ में भूदान-यज्ञ का आरंभ हुआ। तब वर्धा से हैदराबाद और हैदराबाद से तेलंगाना होते हुए वापस सेवाग्राम तक की भूदान-यात्रा में पू० बाबा के साथ पैदल चलने का अवसर मुझे मिला और मैं एक पैर में कष्ट होते हुए भी लंगड़ाती हुई दस से पन्द्रह मील तक

प्रतिदिन चल सकी। इसे मै किसका अनुग्रह मानू ? एक दिन तो मई-जून के महीने मे सूर्य-नारायण की तीनो लोको को तपा देनेवाली तीव्रतम कृपा के सहारे अठारह मील तक जो चलना हुआ, वह तो मेरे जीवन का एक 'रेकार्ड' ही बन गया है।

इस यात्रा के पूर्व सन् १९४९ मे मुझे अपने पति श्रीमन्नारायणजी के साथ हवाई जहाज से विश्व-प्रदक्षिणा करने का मौका मिला था। उसी के बाद यह पैदल-यात्रा का सुअवसर प्राप्त हुआ। उस समय मेरा परिचय कराते हुए बाबा प्राय कहते, "यह मेरी लडकी अभी तो आसमान मे उड-कर आई है, पर अब मै इसे धरती पर चलना सिखा रहा हू।"

• •

इसी पद-यात्रा मे एक दिन एक पहाडी चढाई पर मै पू० बाबा के साथ अकेली आगे चल रही थी। बाबा का साथ छूट जाता और कभी दो-चार कदम भी मै पीछे रह गई तो फिर पडाव पर पहुचना मेरे लिए पहाड बन जाता था। इसलिए अपने तन-मन की हर सावधानी से मै सदा बाबा के साथ ही रहने की कोशिश करती थी, बल्कि वह मेरी साधना ही बन गई थी।

पर उस दिन का रास्ता बडा साफ-सुथरा, लबा-चौडा और पक्का होते हुए भी वह चढाई चढना मेरे लिए भारी हो गया और एक जगह तो मेरे पैर ऐसे लडखडाये कि बाबा से बात करते-करते ही मै अपने दाहिने पैर पर एकदम लुढक पडी। यह देखकर बाबा एकदम ठिठककर खडे रह गये। कुछ देर बाद जब मै कुछ सभली तो मैने बाबा से पूछा, "आप रुक क्यो गये, बाबा ?" वह बोले, "अगर तुझे कुछ हो जाता तो मुझे रुकना ही पडता न ?"

उनके इस तरह रुकने और बोलने मे कितनी ममता भरी थी ?

•• ••

एक दिन एक वन-प्रात से बाबा गुजर रहे थे। केवल महादेवीताई और मै ही उनके साथ चल रहे थे। वह वनजारो का प्रदेश था। जहा भी जानकारी पहुच जाती, आस-पास के गावो के लोग बाबा के दर्शनो के लिए मार्ग पर आ खडे होते। मार्ग मे मैने एक वनजारिन को देखा। उसकी

जाता है, यह तो हम माताए ही जान सकती है ।"

बाबा मेरा भाव समझ गये। पालने में सोये हुए बालक को उन्होंने देखा । अपने हाथो से शहद-पानी की घूटी दी और न जाने किस गहराई से कैसे आशीर्वाद दिये कि दवाखाने से घर पहुचते-पहुचते नवजात बालक माता की ममता से दूर होता गया और गाय के दूध पर ही उसकी परवरिश होने लगी । वर्षों तक बाबा उससे यही कहा करते थे, "तुम तो गाय के बछडे हो न ?"

दवाखाने से घर आते ही मेरी तबीयत खराब हो गई । छाती मे गाठे पड गई, जिनका आपरेशन कराना पडा । सुशीला बहन की एलोपैथी की तीव्र दवाइया चली और निसर्गोपचार का आहार, नियत्रण मेरी मा का । नतीजा जो होना था, वही हुआ । पोषण तो हुआ नही, शोषण ही हो गया । बापूजी रोज ड्रेसिंग के समय मेरे पास आ जाया करते थे और श्री प्रभाकर-भाई सुमधुर कठ से बापू के दो प्रिय भजन मुझे सुनाया करते थे । एक था "आया द्वार तुम्हारे रामा, आया द्वार तुम्हारे", दूसरा था "और नहीं कछु काम के, मैं भरोसे अपने राम के ।"

बापू तो फिर नोआखाली चले गये । तभी एक दिन पू० बाबा मुझे देखने आ गये । देखकर मेरा मन आनद और प्रेम से गद्गद् हो गया । बाबा ने कहा, "हमारी बेटी क्या कहती है ? आनद मे तो हो न ? ईश्वर का जो जितना लाडला होता है, वह उसकी उतनी ही अधिक कसौटी करता है । घाव तो भर रहा है न ?" मैने कहा, "बाबा, ड्रेसिंग के समय बहुत हिम्मत रखनी पडती है । प्रभाकरजी भजन गाते है तब ड्रेसिंग के लिए धीरज धर पाती ह, नही तो फजीहत ही होती है ।"

बाबा बोले, "यह तो अच्छा है । इसमे क्या हर्ज है ?" मैने कहा, "बाबा, मुझे कुछ खाने के लिए दीजिये न ? बहुत भूख लगी है । मा तो भरपेट कुछ देती नही है ।" बाबा ने पूछा, "क्या चाहिए तुझे ?" मैने कहा, "बाबा आपके भजन और अभग सुनने की बहुत इच्छा होती है ।" बाबा पलग पर मेरे पास बैठ गये । उन्होने तुलसीदासजी की 'विनयपत्रिका' के कई मधुर भजन और सत तुकारामजी के कई सुदर अभग गाकर सुनाये ।

उनका वह भक्तिभाव से भरा सुमधुर स्वर सुनकर मुझे जो तृप्ति

और आनंद प्राप्त हुआ, उसका वर्णन शब्दों में करना संभव नहीं।

.. .. ..

तेलंगाना की भूदान-यात्रा की परिसमाप्ति मनिरियाल में हुई। इस सारी यात्रा में श्री लक्ष्मी मां हमारे साथ थीं। ठिगना कद और कुछ स्थूल-सी देह। पर उनके मानस में सबके प्रति मधुर स्नेह का सागर लहराता ही रहता था। पूज्य बाबा के प्रति उनके भक्ति-प्रेम की सीमा नहीं थी। उनके मन में एक अनोखा सपना उठा कि मनिरियाल-सम्मेलन में प्रेमावतार बाबा का "सूत-तुला-दान" समारंभ किया जाय। इसीलिए सुगमता से उन्होंने घर-घर से ढेर-सा सूत इकट्ठा किया। भांति-भांति के पताकाओं से छोटा-सा सुंदर मंडप सजाया गया, उसमें एक बड़ी तराजू खड़ी करवाई और एक पलड़े में सूत की लच्छियां भर दीं। दूसरे पलड़े में बाबा को बिठाने के लिए वह अत्यंत प्रेम और लगन से उनकी प्रतीक्षा करने लगीं।

सायंकालीन प्रार्थना और प्रवचन के पश्चात् वे बाबा समारंभ-स्थान पर पधारे। रास्ते में ही उन्हें लक्ष्मी मां की भक्तिपूर्ण भावना का थोड़ा आभास दे दिया गया था। फिर भी वह तुला आदि के आडंबर को देखकर एकदम लौट न जाएं, इसकी सावधानी भी हम रख रहे थे। बाबा मंडप के नीचे मंच पर पहुंचे। बड़ी कठिनाई से उन्हें तुला के निकट आसन पर बैठने को राजी किया गया। सूत-तुला-समारंभ की यह भव्य तैयारी बाबा ने देखी। उनका मन भगवद्-स्मरण में मग्न हो गया। गोपियों की भक्तिपूर्ण भूमिका के स्मरण से वह आत्म-विभोर हो उठे। उनकी आंखों की कोरों से अविरल अश्रुप्रवाह बह निकला। स्वस्थ चित्त होने पर वह अंतर की गहराई में से एकदम गा उठे—

"दयाघन भक्ति आकळिला
दयाघन भक्ति आकळिला।
रुक्मिणी ने एका तुळसी दलाने।
गिरिधर प्रभु तुळिला।"

—दयाघन भगवान भक्ति से वश में कर लिये गए। रुक्मिणी ने एक तुलसी-पत्र रखकर प्रभु को तोल लिया। गोवर्धन-पर्वत को धारण करनेवाले प्रभु एक हलके से तुलसी-पत्र से तोल लिये गए।

वावा उस दिन केवल इतना ही वोले, "भक्त की भूमिका तो रुक्मिणी वनकर भगवान को एक तुलसी-पत्र मे तोलने की हो सकती है। कृष्ण वनकर तुलाने की नही।"

पुन उनके नेत्रो मे प्रेमाश्रु वह चले। सारा वातावरण एकदम मुग्ध-गभीर हो गया। लोग जहा-के-तहा स्तव्ध वैठे रहे।

पर मा का वेचैन मन नही माना। उन्होने 'गीता-प्रवचन' की एक प्रति वावा के हाथ मे थमा दी, उसपर वावा से हस्ताक्षर करवा लिये और पू० वावा के हाथो ही तुला के दूसरे पलडे मे वह प्रति धरवा दी। न जाने क्या नजरवदी की-सी वात हुई कि तुला के निकट वैठे हुए हम सवो-ने यह महसूस किया कि तुला उसीसे समतोल हो गई।

• • •

प्रेमात्मन् वावा के मन-मुग्ध कर देनेवाले सान्निध्य के ऐसे अगणित प्रसगो का स्मरण करती हू, तव सत तुकाराम महाराज का एक भजन मुझे सदा याद हो आता है। उसका भावार्थ इस प्रकार है—

"सतजनो के उपकारो का वर्णन मै किस प्रकार करू? वे निरतर मेरी याद करते है। उन्हे क्या दिया जाय, और कैसे उनसे उऋण हुआ जाय? चरणो मे ये प्राण अर्पण कर दिये जाय, फिर भी कमी रह ही जाती है। उनका सहज वोलना ही हितभरा उपदेश होता है। वे कितने यत्नपूर्वक मुझे सिखलाते है। तुकाराम कहते है कि जैसे गाय का ध्यान हमेशा अपने वछडे मे लगा रहता है, वैसे ही वे मुझे सभाला करते है।"

●

: ८ :

चिरस्मरणीय

उमा अग्रवाल

मेरी उम्र सात-आठ साल की रही होगी। हम सब साबरमती से वर्धा रहने आये और वहा बजाजवाडी मे रहने लगे। तबका पू० विनोबाजी का मुझे कुछ-कुछ स्मरण है। वह उस समय सत्याग्रह-आश्रम में रहते थे। सारे आश्रम का वातावरण बडा ही शात और गभीर था। कुछ साधक और कुछ विद्यार्थी विनोबाजी के पास रहते थे। विनोबाजी एक बडे हाल मे पतले से कबल पर, जिसे मराठी मे घोंगडी कहते है, मुख्य द्वार के सामने, दीवार से बिना टिके, पाल्थी मारे सतत बैठे हुए बाहर से ही दिखाई दे जाते थे। पू० काकाजी के साथ अक्सर उनके पास जाने का मौका मिलता था। विनोबाजी हर समय ग्रथो के अध्ययन मे या किसी-न-किसीको पढाने मे मगन रहते थे। पढाते समय उनकी आवाज से सारा भवन गूज उठता था। वह इस कारण पसीने-पसीने हो जाते थे। जड-से-जड विद्यार्थी पर भी इतनी मेहनत करते थे कि आश्चर्य के साथ दुख होता था कि वह अपनी अमूल्य शक्ति ऐसो पर क्यो खर्च करते है। उन दिनो भाई कमलनयनजी वही आश्रम में रहकर विनोबाजी के पास पढते थे। दो-चार बार उनके वर्ग मे एक ओर चुपचाप बैठकर उनका यह अद्भुत पढना-पढाना देखने और सुनने का भी स्मरण है।

मुझे विनोबाजी का कभी भय लगा हो, ऐसा याद नही है। उनके वर्ग मे कुछ सुनने का आकर्षण हमेशा रहा। लेकिन मेरी जैसी वाचाल लडकी भी वहा जाकर गभीर हो जाती थी, यह सच है। पढाते, कातते, चक्की पीसते फावडे से उठाऊ पाखानो के लिए गड्ढा खोदते, खेत मे कुदाली चलाते या खाने के बाद रसोई के बरतन माजते समय हरेक क्रिया मे विनोबाजी इतने तल्लीन हो जाते थे कि उन्हे देखनेवाले को भी बरबस एकाग्र हो जाना पडता था। उपनिषदो का अध्ययन हो, गीता के श्लोको का पाठ हो,

गणित का अभ्यास हो, व्याकरण जैसा शुष्क विपय हो या कोई साधारण खत या लेख हो, प्रत्येक चीज मे वह इतने तन्मय हो जाते थे कि उन्हे किसी आगतुक के आने-जाने की या नमस्कार का जवाव देने की भी सुध नही रहती थी। भगवान के भक्तो की गाथा या महापुरुषो की जीवनी के स्मरण या भजन गाते समय तो वह इतने गद्गद् और विह्वल हो जाते कि उनकी अश्रुधारा रोके नही रुकती थी।

सवसे पहले विनोवाजी के पास रहने का मौका मुझे नालवाडी मे मिला। वर्धा से करीव ढाई-तीन मील पर यह एक हरिजनो की एक वस्ती है। शुरू मे कुछ रोज मैं वहा वजाजवाडी से साइकल पर आती-जाती थी। फिर वही वावा के पास रहने लगी। वहा चटाइयो से वनी एक झोपडी थी। एक ओर वावा के वैठने के लिए घोगडी विछी थी और एक ओर हम सव—कृष्णदासभाई, दत्तोवा, मदालसा ओर मैं—रहते थे। मदालसा वाबा से 'ज्ञानेश्वरी' पढती थी। वाबा का 'ज्ञानेश्वरी' की ओवियो का अर्थ समझाने का वह दृश्य अद्भुत था। 'ज्ञानेश्वरी' के ज्ञान-भडार से वावा एक से-एक बढकर अमूल्य रत्न निकालते और अधे को भी प्रकाश दे सके, इस सरलता से विद्यार्थी के सामने रखते थे। मैं तो यह 'ज्ञानेश्वरी' का पढाना अक्सर वाहर से ही सुनती थी। पर कानो मे अभी भी उस ध्वनि की भनक मौजूद है। मुझे वावा 'गीताई' पढाते थे। पहले अठारहो अध्याय के उच्चा-रण ठीक करवाये, फिर रोज पूरे एक अध्याय को कठस्थ करती थी। उस समय की एकाग्रता पर अव तो ईर्ष्या होती है। वावा के सामने 'गीताई' के पाठ मे ह्रस्व-दीर्घ की गलती भी वडी लज्जास्पद मालूम देती थी। उनके ध्यान से वह वचती भी नही थी। शुद्धता के अभ्यस्त उनके कानो के लिए तो ये गलतिया असह्य ही होगी, यद्यपि उनके चेहरे से यह प्रकट नही होता था।

शाम की प्रार्थना होते ही वावा मौन ले लेते थे। वह एक बडी ही सकरी—शायद एक-डेढ फुट चौडी—लकडी की बेंच पर, एक ही करवट से गहरी नीद में काष्ठवत् सो जाते थे। इस वे-सहारे की पतली-सी वेच को तख्त भी कैसे कहे। शुरू-शुरू मे मुझे डर लगता रहता था कि कही वावा गिर न पडे। लेकिन ऐसा कभी नही हुआ।

कुछ सालों बाद बाबा पवनार रहने लगे थे। जब भी समय मिलता, काकाजी हमें लेकर बाबा के पास जाते थे। उनकी आपस की चर्चाएं सुनने लायक होती थी। पवनार के पास सुरगाव नामक एक बिल्कुल छोटे-से गाव मे बाबा कई दिनों तक रोज बस्ती की सफाई करने जाते थे। काकाजी हमें लेकर वहां भी पहुच जाते थे। बाबा पर शुरू से ही उनकी कितनी गहरी श्रद्धा और स्नेह था इसकी कल्पना जानकार ही कर सकते है। उन दिनों बाबा प्रार्थना मे कभी-कभी खुद भी भजन गाते थे। उस भाव-गभीर मधुर आवाज को सुनने का अहोभाग्य कितनों को मिला होगा।

एकाकी, सघन और तेज चलनेवाले बाबा की चाल भी आकर्षक थी। वह हमेशा पद्रह मिनट में एक मील की रफ्तार से चलते थे। उस जमाने में बाबा को दूर से चलते देखकर ही संतोष हो जाता था। लेकिन पू० बापूजी के तो साथ चलने में ही आनद आता था। गुरु और पितामह का यह फर्क तो अनादिकाल से चला ही आ रहा है।

सन् १९४० में, मेरी शादी मे पू० विनोबाजी उपस्थित नहीं थे। कुछ लोगों ने कहा कि तुमने बाबा से आग्रह नहीं किया, वरना वह शादी में जरूर आते। मेरे मन में आया कि बाबा को क्या तकलीफ देनी थी। इन सासारिक बातों के लिए उनका समय लेने मे सकोच भी होता था। वह इन बातों से परे है। पर शादी की विधि पूरी होते ही पू० काकाजी ने हमें सब बरातियो के साथ बाबा को प्रणाम करने पवनार भेजा। सुबह काफी बारिश हो चुकी थी। हम पवनार के पुल तक पहुचे। नदी चढी हुई थी। दोनो ओर से मोटर-गाडी-तागा आदि सब आवागमन बिल्कुल बद था। हम लोग पुल के इसी ओर उतर पडे। नदी के उस पार का लाल बगला बहुत सुदर दिखाई दे रहा था। इतने में स्वच्छ, सफेद उत्तरीय से ढकी हुई एक दुबली-पतली, लेकिन भव्य मूर्ति बगले के बरामदे में आकर स्थिर हुई। अपनी सुघड नाक व शुभ्र दाढी से महाभारत के ऋषि-मुनियो की याद दिलानेवाली यह आकृति बाबा की ही थी। वह भी हमारी ही प्रतीक्षा मे थे। हमने यहीं से झुककर उन्हें प्रणाम किया। बाबा ने भी वहीं से हाथ हिलाकर हमारा स्वागत किया और आशीर्वाद दिया। अब भी कई बार वह दृश्य आखो के सामने घूम जाता है।

१९४६ की बात है। मार्च का महीना था। पेडो पर शहतूत मीठा व गहरा रग पकड रहे थे। तोते और चिडियो के लिए यह दावत का निमत्रण था। इन्ही दिनो मे बाबा दिल्ली आये और अपने घर को उनके चरण-स्पर्श का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यहा बाबा करीब पद्रह दिन रहे। घर के सामनेवाली दूब के एक कोने में कागजी नीबू का बारहमासी पेड है। बाबा रोज उसके नीचे बैठते थे। एक दिन उन्होने सब जानकारी प्राप्त की— हम यहा कबसे रहते है, क्या भाडा देते है आदि। फिर बोले कि इतनी रकम तो इस बडे शहर मे यहा खुले मे इस पेड के नीचे बैठने की भी कोई मागे तो मै देने को तैयार हू।

• • • •

१९४८ मे हम लोग मसूरी मे थे। सितबर का सुहावना पहाडी मौसम था। बाबा के मसूरी आने की सभावना थी। उनको ठहरानेवाले तो स्वाभाविक ही बिरला-हाउस को पसद करते। वहा सब तरह का आराम भी था। मैने बाबा को लिखा कि मै मसूरी मे हू। हमारा मकान छोटा तो है पर खुले मे, काफी ऊचाई पर, बिल्कुल गनहिल के पास ही है। बाबा ने जवाब मे लिखा, "भली मेरी काली कमलिया"। सबकी खुशी का ठिकाना नही रहा। पहाड आने का बाबा का यह दूसरा मौका था। मसूरी पहुचने पर बाबा ने बताया कि पहली बार तो वह घर से भागकर हिमालय के लिए निकले थे, पर बीच मे ही हिमालय के समान बापूजी उन्हे मिल गये और वह वही रुक गये। अब करीब तीस साल बाद फिर से हिमालय मे आये थे। बाबा करीब पद्रह रोज यहा ठहरे। बडा आनद रहा। मेरी छोटी लडकी उस समय कोई आठ महीने की थी। उसका कोई नाम नही रखा गया था। उससे तीन साल बडी उसकी बहन उसे बग्गूगोशा कहती थी। मैने बाबा से उसका नामकरण करने को कहा। मुझे तो बिल्कुल नया ही नाम चाहिए था। उन्होने कहा कि पूर्णिमा तो सब रखते है तुम अमावस्या रखो। इस पर उनका वह छोटा-सा कमरा हँसी के वातावरण से गूज उठा। फिर उन्होने अमावस्या शब्द का अर्थ और महत्व भी समझाया। ओम (मेरा घर का नाम) की बेटी सोम का सुझाव भी उन्होने दिया। पर मै कहा माननेवाली थी। आखिर बाबा ने कहा, "तुम कुछ नामो की लिस्ट मेरे

सामने रखो फिर उनमें से तय करेंगे।" मैंने कुछ नाम छांटकर रखे थे। उनमें से 'विदुला' नाम सुन्दर लगता था, पर उसका अर्थ और महत्त्व कुछ भी नहीं मालूम था। नाम का महत्त्व जाने बिना नाम रखना पसंद नहीं था। बाबा ने बड़े सरल ढंग से उसका अर्थ बताया। विद् याने विद्वान, विदुला याने विदुषी। फिर महाभारत में आये हुए विदुला-आख्यान की पूरी कथा सुनाई। उसी समय से 'वणगोसा' का नाम 'विदुला' हो गया।

•

पू० बापूजी के निर्वाण के बाद सन् १९४८ के फरवरी में पहला अखिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन सेवाग्राम वर्धा में हुआ। हर साल सम्मेलन में जाने का आकर्षण तो रहता ही था, खासकर बाबा से मिलने और नये-नये स्थान देखने का। पर ऐसा मौका मिले तब न। एक साल शंकराचार्य की जन्मभूमि कालडी (केरल) में सम्मेलन होने का सुना। दिल तो बड़ा ललचाया। पर बच्चों को कहां छोडूं, यह सवाल सामने था। आखिर श्रीमन्नारायणजी ने जोर लगाया। बच्चों को वर्धा छोड़कर उन्हींके साथ मैं भी अरनाकुलम पहुंची। इस बार कई दिनों बाद मैं बाबा से मिली थी। उन्होंने बड़े स्नेह से बच्चों के, घर के, सबके हाल पूछे। दिल्ली के घर की वीथि का नाम भी उन्हें याद था। शंकराचार्य की पवित्र भूमि में मनोरम सृष्टि-सौंदर्य के बीच, बाबा के सान्निध्य में, यह कालडी-सम्मेलन अद्भुत रहा। मेरे लिए सबसे ज्यादा खुशी की बात तो यह थी कि कालडी से सात मील दूर अगले पड़ाव तक मैं बाबा के साथ-साथ पैदल चल सकी। इतनी दूर बाबा के साथ चलने का मेरा यह पहला ही मौका था। पैरों ने भी आशा से अधिक अच्छी तरह साथ दिया। गांवों में बाबा के पहुंचते ही बिखरा हुआ देहाती स्नेह उमड़ आता था। इस पद-यात्रा की स्मृति हमेशा रहेगी।

• • • • •

एक सर्वोदय-सम्मेलन अजमेर में था। राजस्थान का आकर्षण, मुसलमानों का ऐतिहासिक तीर्थ, गोकुलभाई भट्ट का अधिकारपूर्ण आग्रह, हटुंडी-आश्रम का मोह और दिल्ली से पास। भाग्य से फिर बाबा के पास पहुंचने को मिल ही गया। वहां दिनभर भाषण व चर्चाएं सुनने का सुअवसर मिलता था। मेयो कालेज के स्कूल के छोटे बच्चों को बाबा पैदल चलने का

महत्व समझा रहे थे। सब बच्चो से, कौन सबसे ज्यादा पैदल चल चुका है इसपर हाथ उठवाये। इस धीर-गभीर सत के पास से बच्चे भी हँसते-कूदते वापस लौटे। इन्ही दिनो एक रोज सुवह की प्रार्थना के वाद अधेरे मे ही वावा अपने पथप्रदर्शक की लालटेन के प्रकाश मे अजमेर की प्रसिद्ध दरगाह के दर्शन के लिए निकले। उनकी तेज चाल मे आज और भी तेजी थी। मानो दरगाह की श्रद्धा और वहा इकट्ठे भक्तगण उन्हे वरवस खीच रहे थे। सैकडो पैरो ने पीछा किया। भागते, टकराते, चप्पलो को सम्हालते, ठोकरो से बचते हम सब वावा का साथ न छूटे, इस फिकर मे दौडे चले जा रहे थे। इस पाच मील की पदयात्रा के वाद उस इतिहास-प्रसिद्ध मुसलमानो के पवित्र तीर्थ पर हम लोग पहुचे। वहा वावा का भव्य स्वागत हुआ। दरगाह के विशाल प्रागण मे जन-समुदाय मधुमक्खियो की तरह ठसाठस भरा था। प्रवचन के रूप मे वावा की वाणी से मधु की ही वर्षा हुई। इस प्रसग की भी स्मृति पर अमिट छाप है।

•• •• •

अमृतसर मे वावा के पास श्रीमन्नारायणजी ने सारे देश के साहित्यिको और खासकर कवियो के सम्मेलन का आयोजन किया था। दर्शक की हैसियत से मुझे भी इसमे सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। चद महीनो पहले काकासाहव की गुजराती किताव का मेरे द्वारा किया हुआ हिदी अनुवाद 'सूर्योदय का देश' मैंने वावा को भेजा था। बावा भूले नही थे। मुझे देखते ही श्रीमन्नारायणजी से बोले, "हा, अव तो यह भी लेखिका वन गई है न। इसे तो आना ही चाहिए था।" अमृतसर के वावा के पास के वे दो दिन सवके लिए वडे ही प्रेरणादायी रहे।

: ६ :

शिष्य में भगवान देखनेवाले !

रामकृष्ण बजाज

विनोबाजी के प्रति प्रारम्भ से ही इतना असंदिग्ध, पूज्य एवं आदर भाव रहा है कि कभी उनका विश्लेषण करने या उनके व्यक्तित्व का अंदाजा लगाने का प्रश्न ही नहीं उठा। उनकी प्रकांड विद्वत्ता और अपार ज्ञान के सामने बचपन में हमें वह जैसे लगते थे वैसे ही आज भी लगते हैं। ऐसी स्थिति में उनके संबंध में कुछ लिखना बहुत कठिन है। उनके संपर्क की कुछ घटनाएं याद आती हैं, जिनमें से कुछ नीचे दे रहा हूं।

व्यक्तिगत सत्याग्रह के दिनों की बात है। मुझे नागपुर-जेल भेजा गया और काकाजी और विनोबाजी के साथ रख दिया गया। मेरे लिए यह परम संतोष की बात थी। मेरे वहां पहुंचते ही काकाजी ने मुझे विनोबाजी के हवाले कर दिया और कहा, "यदि मेरे और विनोबाजी के विचारों में कभी मतभेद हो तो घरेलू मामलों में तुमको मेरी राय से चलना चाहिए, लेकिन सत्याग्रह और राजनैतिक मामलों में विनोबाजी की राय पर ही चलना तुम्हारा कर्त्तव्य है।"

जेल में विनोबाजी ने मुझे संस्कृत पढ़ाना शुरू किया। पहले दिन से ही मुझे वह संक्षिप्त वाल्मीकि-रामायण पढ़ाने लगे। उनके पढ़ाने का तरीका इतना रसभरा था कि उनसे पढ़ने में एक अजीब आनंद आता था। उनका अध्यापन आज की शिक्षा के समान बोझिल नहीं था। पढ़ाने में अक्सर वह इतने खो जाते थे कि जोर-जोर से श्लोकों का पाठ करने लगते थे। सारी बैरक में उनकी आवाज गूंज उठती थी। पर शाम को प्रार्थना के बाद उनका जो प्रवचन होता, उस समय वे इतने धीमे बोलते कि लोगों को सुनने में भी कठिनाई होती थी। लोग मजाक में मुझसे कहा करते थे कि सुबह इतने जोर से तुमको पढ़ा लेने के बाद शाम तक उनकी आवाज में जोर ही नहीं रह जाता। असल में बात यह थी और है कि प्रवचन के समय वह

एक-एक शब्द सोच-सोचकर वोलते है । उनके प्रवचनो मे प्रार्थना की तल्लीनता ही अधिक होती है, उपदेश की भावना कम । ऐसे वचनो का धीमे-धीमे निकलना स्वाभाविक ही है ।

•

१९४२ के आदोलन मे मुझे नागपुर-जेल मे फिर विनोबाजी के साथ ही रख दिया गया । इस वार उन्होंने गीता के द्वारा सस्कृत पढाना शुरू किया । सस्कृत भाषा के साथ-ही-साथ गीता का विषय भी वह मुझे समझाते । उस समय दूसरे लोग भी वहा आकर बैठ जाते । धीरे-धीरे श्रोताओ की यह सख्या बढने लगी । दो-ढाईसौ कैदी वहा रहे होगे । उनमे से आधे से अधिक मेरे साथ बैठने लगे । विनोवाजी की आवाज तो जोर की होती ही थी, सो सुनने मे लोगो को कोई कठिनाई नही होती थी । परेशानी होती थी तो मुझे, क्योकि वह अकेले मुझको ही सबोधित करके पढाते थे और मै सबसे छोटा था । मेरे सवाल बालोचित होते हुए भी विनोबाजी के उत्तर और उत्तर देने का ढग ऐसा होता था कि बडो तथा वद्वानो को भी उसमे रस आये बिना नही रहता था ।

•

जेल मे शाम की प्रार्थना के वाद नित्य नियमित रूप से प्रवचन होते थे । सत्याग्रह के अलग-अलग पहलुओ का विनोवाजी विवेचन करते और उनको समझाते । महीनो बीत गये, फिर भी उनके प्रवचन गगा की अखड धारा के समान चलते ही रहे । सुननेवालो को विचार के लिए नित-नई खुराक मिलती थी । हम लोग प्रवचन की राह देखते रहते और उसमें कभी नागा नही होने देते । विनोबाजी प्रतिदिन लगभग ४० मिनट बोलते थे । विचित्र वात यह थी कि विना घडी देखे ही उनके प्रवचन ठीक ४० मिनट पर समाप्त हो जाते थे । कभी एक मिनिट कम तो कभी एक मिनट ज्यादा, वस ! इससे ज्यादा अतर नही पडता था । विषय पर पूर्ण अधिकार होने पर ही यह सभव है ।

१९४२ के अगस्त मास से कोई आठ-दस महीने तक जेल के वातावरण मे बडी सनसनी रही । वाहर से उडती हुई कोई भी ताजा खबर भीतर पहुचते ही खलबली मच जाती । हमे अखवार नही मिलते थे । शुरू-शुरू मे तो पत्र, मुलाकात आदि सब वद थे । कई महीनो तक,

जब जापान युद्ध में बराबर जीतता हुआ हिंदुस्तान की सरहद तक आ गया था, वातावरण एकदम अनिश्चित-सा और आशंकाओं से भरा हुआ रहता था। जापान ने हिंदुस्तान पर हमला कर दिया तो? अंग्रेजों को "अपनी योजना" के अनुसार पीछे हटना पड़ा और हमारे देश पर भी जापानियों ने कब्जा कर लिया तो? यदि अंग्रेजों को [illegible] भारत छोड़ना पड़ा तो कांग्रेसी लोगों को वे गोली से उड़ा भी सकते हैं, क्योंकि वे तो जाहिरातौर पर उनके खिलाफ हैं। दुश्मनों के दुश्मन दोस्त, इस नाते हमें जापानियों का दोस्त समझा जायगा, ऐसे ही भांति-भांति के विचार हर शख्स के दिमाग को परेशान करते रहते। विनोबाजी ने उस सारे वातावरण को आध्यात्मिक धरातल पर ले जाकर लोगों के दिलों में डर को बहुत हद तक कम कर दिया। फलस्वरूप दिमागों में स्थिरता, दृढ़ता और चैन ने स्थान ले लिया और हममें हर परिस्थिति का सामना करने की हिम्मत आ गई। विनोबाजी के व्यक्तित्व का जेल के वातावरण पर कितना गहरा असर था, यह हमने तब अनुभव किया जब उन्हें नागपुर से वेलोर जेल भेज दिया गया।

.. .. ..

जेल से छूटकर जब मैं वर्धा पहुंचा तो स्टेशन पर अन्य लोगों के बीच विनोबाजी को भी देखा। उन्हें देखकर मैं मानो धन्य हो गया। प्रेमाधीन होकर गुरुजी स्वयं चलकर स्टेशन आये थे, अपने शिष्य की हिम्मत व प्रोत्साहन बढ़ाने। एक दिन बातचीत के दौरान उन्होंने कहा, "वेलोर में भी तुम्हारा गीता का वर्ग तो चलता ही रहा।" मैं चक्कर में पड़ गया। मैं तो नागपुर में था, फिर वेलोर में मेरा वर्ग कैसे चलता रहा? बात समझ में नहीं आई। पूछने पर विनोबाजी ने बताया, "कुछ मित्रों के आग्रह से वहां भी गीता का वर्ग चला। लेकिन मैं तो तुम्हारा ही स्मरण करके ऐसी भावना से वर्ग लेता था, मानो तुम्हें ही पढ़ा रहा हूं।" मैं गद्गद् हो गया। शिष्य में भगवान को देख पाना उन्हींके वश की बात है।

.. .. ..

विनोबाजी अपने शिष्य के लिए सब-कुछ त्यागने, सब-कुछ सहने को तैयार रहते हैं। ऐसे महान गुरु के लिए तो उनके शिष्य ही उनकी कसौटी

बन जाते है । इस सबध मे एक प्रसग याद आता है । जेल मे हमारे साथ हमारा एक और मित्र था । उसका मानसिक विकास पूरा नही हो पाया था। वह कई बार बेहूदी या पागलपनभरी बाते किया करता और हम लोग उसे हमेशा किसी-न-किसी बहाने चिढाया करते । हम उसे छेडते थे, इस लिए विनोवाजी ने उसका कुछ अधिक ख्याल रखना शुरू कर दिया । धीरे-धीरे विनोवाजी उसे सस्कृत आदि पढाने लगे । वह पढाई मे काफी कमजोर था, फिर भी विनोवाजी बडे धीरज से उसे पढाते और जरूरत से ज्यादा समय देते । हमने उन्हे उसपर कभी नाराज होते नही देखा, न धीरज खोते हुए । वह कोई चीज न समझता तो उसे वह बार-बार समझाते । उन्होने इसे भी अपनी कसौटी ही माना होगा ।

शायद उनके इसी गुण के कारण लोग अनजाने ही उनके नजदीक खिचते चले जाते है और उनके साथ न जाने किन आत्मिक सबधो मे बध जाते है ।

• • •

जेल की ही एक और बात याद आती है । विनोवाजी खुद सुबह बहुत जल्दी उठते थे और उनकी इच्छा रहती कि और लोग भी ब्राह्ममुहूर्त मे उठे। उस समय का अधिक-से-अधिक लाभ उठाया जाय, यह इच्छा उनकी रहती थी । मुझे भी जोश चढा और मैने उनमे कह दिया कि मै भी सुबह चार बजे उठा करूगा । उनका तो सुबह मौन रहता था, इसलिए वह पास मे आकर उठाने के लिए धीरे-से ताली बजाया करते और चले जाते । मेरी नीद अपने-आप ही खुलने लगी, क्योकि मुझे सदा यह ख्याल बना रहता था कि कही वह आकर और ताली बजाकर चले न गये हो ।

मै जितने भी व्यक्तियो के सपर्क म आया हू, विनोवाजी का-सा व्यक्तित्व किसीका नही देखा । उनका चिंतन जितना गहरा और दर्शन जितना स्पप्ट है, उतना शायद ही किसीका हो । एक बार मै अपनी कुछ व्यक्तिगत समस्याए लेकर उनके पास पहुचा । उन्होने मुझे गीता मे आये हुए 'स्वधर्म' का अर्थ विस्तार से समझाया । उनके कहने का सार था कि

आदमी के लिए ऐसा लगता है कि मानो उसके गले में वडा-सा पत्थर वाधकर उसको कुए में ढकेल दिया गया हो। मुझे तो उसके प्रति दया आती है, क्योकि उसे जीवन-भर कुटुव का कितना वोझ और चिंता उठानी पडती है। कितना प्रपच फैलाना पडता है उसे ? कुटुवीजनो की समस्याओ को हल करने में उसका कितना समय और कितनी शक्ति खर्च हो जाती है ?

"इसके विपरीत जिनको गृहस्थाश्रम मे सुख एव चैन मिला है, उन्हे मेरे सरीखो पर दया आती है। उनको लगता होगा कि देखो, इसका भी जीवन क्या है ? कही कोई सरसता या मिठास नही। इसके मु ख-दुख की परवा करनेवाला कोई व्यक्ति नही। जिनके प्रति यह अपनापन वता सके, ऐसा इसका कोई निकट का सवधी नही। इसका जीवन कितना शुष्क और कठोर होगा ?

"असल मे मनुष्य की दृष्टि हमेशा अपने गुणो के विकास की ओर होनी चाहिए। गृहस्थाश्रम मे त्याग, नि स्वार्थ सेवा, वात्सल्य आदि गुणो का विकास होता है। इसी तरह अलग-अलग आश्रमो मे अलग-अलग गुणो की वृद्धि होती है। यदि किसीमे उपरोक्त गुण पहले से काफी मात्रा में विद्यमान हो तो फिर उसे विवाह की आवश्यकता नही, ऐसा मानना चाहिए।"

• •

एक दिन काकाजी के वारे मे चर्चा चलने पर उन्होने कहा, "कई वडे-वडे व्यक्ति ऐसे होते है, जिनका देश पर वडा असर होता है, लेकिन उनका अपने कुटुवीजनो पर असर हो यह जरूरी नही। कुटुव पर तो उन लोगो का असर होता है, जिनका अपना जीवन सचमुच शुद्ध हो।" उन्होने एक उदाहरण देते हुए कहा, "वस्तुओ के विज्ञापनो से दूर के लोग तो भले ही प्रभावित हो, लेकिन निकट के लोगो को असलियत का पता रहता है। इसलिए उनपर उसका प्रभाव नही पडता। जिनका अपने निकट के लोगो पर भी प्रभाव पडे, ऐसे लोग मैने वहुत कम देखे है। वापूजी और जमनालालजी उनमे से थे।" यह कहकर उन्होने एक घटना सुनाई, "एक वावाजी थे। वडे मनस्वी। मुझपर और महादेवभाई पर भी उनका अच्छा असर पडा। एक वार महादेवभाई वापू को उनके वारे मे वहुत-सी वातें वता रहे थे। अत में उन्होने कहा कि उनकी स्त्री भी उनके कार्य मे पूर्णतया प्रभावित है

और उनके कार्य में प्रसन्नतापूर्वक सहयोग देती है। तब बापू के मुह से निकला कि तब तो वह व्यक्ति जरूर मनस्वी होगा।"

आगे उन्होंने कहा, "जमनालालजी का असर जो भी उनके कुटुम्ब पर था, उसकी वजह उनकी भद्रता थी। वह उसके बारे में बहुत सोचा करते थे और मौके-मौके पर मुझसे भी सलाह-मशविरा किया करते थे। लेकिन उनके जीवन के इस पहलू को लोग बहुत कम जानते हैं। एक बार मैंने जानकीदेवी से मजाक में कह दिया था कि आप तो जमनालालजी की अपेक्षा अच्छी मराठी बोल लेती हैं और भाषण भी उनसे अच्छा देती हैं। वह बोलीं, 'उसमें कौन-सी बड़ी बात है? मेरे तो मन में आवे, वह बोल देती हू, पर वह तो जो कहें, वैसा करें, यह बोझा हरदम साथ लिये रहते हैं। उन्हें हरेक शब्द जवाबदारी के साथ समझ-बूझकर बोलना पड़ता है।' जानकीदेवी ने जो कहा, इसमें भारी तथ्य है और जमनालालजी के बारे में यह बात बराबर लागू होती है।"

यह कहते-कहते उनकी पुरानी स्मृतिया जाग्रत हो उठी। अपने बचपन की बातो का उल्लेख करते हुए बोले—

"मैं बचपन में स्कूल में अधिक नही गया, यह मैं अपना सौभाग्य समझता हू। पहले पाच वर्ष कोकण में घर पर पढ़ा। चौथी कक्षा के बाद अंग्रेजी स्कूल में जा सकता था, पर मराठी अधिक सीखकर छठी कक्षा के बाद अंग्रेजी में जाऊं, ऐसी पिताजी की इच्छा थी। डेढ़ वर्ष में छठी का अभ्यास पूरा हुआ। फिर अंग्रेजी का चार वर्ष का अभ्यास तीन वर्ष में ही पिताजी ने घर पर करवा दिया। वह तो एक ही वर्ष में करवाना चाहते थे। पर मैं पढ़ाई के अलावा दूसरे भी कई काम करता था। पिताजी को मालूम था कि मैं अपना समय बरबाद नही करता। इसलिए अंग्रेजी के अभ्यास में समय कुछ अधिक लगा। बाद में बड़ौदा कालेज में भरती हुआ। स्वभाव से तो मैं एकदम निडर था। मुझे किसीका डर नही लगता था। शिक्षको से तो कतई नही डरता था। वे ही मेरे सवालो से डरते रहते थे। इसलिए मैं सवाल भी कम ही पूछता था। पर हा, वहा के लड़को की संगति से मैं जरूर डरता था। इतने दिन वहा रहकर भी घोत्रे, गोपालराव आदि चार-पाच मित्रो को छोड़कर वहा के पाच-छः सौ विद्यार्थियो में

से मेरा किसीसे परिचय नही हुआ। कालेज वद होते ही मै वाहर दूर-दूर घूमने चला जाता। कालेज मे स्त्री-पुरुप-सबघ के वारे मे वहुत खराव वातावरण रहता था। या फिर इस वारे मे पूरी उपेक्षा रहती थी। ये दोनो तरीके ठीक नही। आजकल की पढाई मे यह एक मौलिक दोष मै देखता हू। इस वारे में ठीक से ज्ञान देने के लिए अधिकारी शिक्षको की जरूरत है। यह वात सही है कि चाहे जो इसकी शिक्षा नही दे सकता, लेकिन इसकी व्यवस्था जरूर होनी चाहिए।"

• • • •

विद्यार्थियो और युवको से उनको हरदम प्रेम रहा है। इस सवध मे १९५२ के अत की एक हृदयस्पर्शी घटना याद आती है। एक विद्यार्थी-युवक-सम्मेलन आयोजित किया था। विनोवाजी उन दिनो राची में थे। सारे देश से करीव ११० विद्यार्थी-प्रतिनिधि वहा इकट्ठे हुए थे। अपने नपे-तुले और व्यस्त समय मे से दो घटे विनोवाजी इस सम्मेलन के लिए देगे, ऐसा तय हुआ था। पर वाद मे दूसरे दिन हमको छ-सात घटे और भी मिल गये। विद्यार्थियो ने उनसे दुनियाभर के सवाल पूछने शुरू किये। विनोवाजी उनके जवाव देते चले, एकदम स्पष्टता से। पीछे से सेक्रेटरी इशारा करते कि आठ से दस तक का समय था, अव ग्यारह वज गये हैं, खाने का समय हो गया है। किंतु वह तो विद्यार्थियो की हर कठिनाई को समझ लेना चाहते थे। महादेवीताई आई, खाना ले आई तो उनसे कह दिया, "अभी नही।" १२ वज गये। वाहर ही खुले मे बैठे थे। घूप तेज हो रही थी। पर बोले, एक भी सवाल वाकी नही रहना चाहिए। सव प्रश्नो के उत्तर देकर ही उठूगा। हम लोग तो उनकी वातो को सुनने-समझने के लिए ही वहा गये थे, पर हमको भी लगा कि अव उनको आराम करना चाहिए और हमे अव छुट्टी लेनी चाहिए। हमने वैसी कोशिश की, पर वह कव मानने लगे! फिर हम लोगो के पास जो लिखित सवाल आये थे उनमे से कुछ हम लोगो ने इघर-उघर छिपाये। तव भी १२॥ तो वज ही गये।

युवको के समाधान के लिए विनोवाजी की-सी तीव्र उत्कटा किसमें मिलेगी? चितन की इतनी गहराई और स्पष्टता और कहा मिल सकेगी?

●

: १० :

मानव-प्रेम से परिपूर्ण योगी

विमला बजाज

ग्यारह-बारह साल पहले जब बाबा पवनार मे रहते थे तबकी बात है। उनकी तेजस्विता और कर्मशीलता, एकाग्रता और लगन, ध्यान और चितन-मनन के बारे मे जो-कुछ भी सुना था, उससे मै बहुत प्रभावित थी। किंतु किसी महान हस्ती से मिलने के पहले जो एक प्रकार का भय और सकोच मन मे छाया रहता है, उससे मुक्त भी नही थी। ऐसे ही कुछ मिश्रित भावो के साथ मैंने पवनार मे कदम रखा। उस गोधूलि वेला मे धाम नदी के किनारे स्थित पवनार-आश्रम वहुत सुहावना लग रहा था। उस वातावरण मे वावा इसी प्रकार समरस थे, जैसे देह मे धडकन। वहा के शात, निस्तब्ध वातावरण मे उनके चेतन और चितनमय व्यक्तित्व का आभास होता था। उस समय वह किसीके साथ तेजी से घूम रहे थे। साथ-साथ वातचीत भी चल रही थी। दूसरा व्यक्ति बडी कोशिश के वाद उनके कदम-से-कदम मिला पा रहा था। कुछ देर खडी मै यही दृश्य देखती रही। एक कौतूहल-सा, एक आनद-सा मन मे छा रहा था। कुछ समय वाद वाबा ज़रा रुके तो हमने आगे वढकर उन्हे प्रणाम किया।

इन दिनो वर्धा से हमारा प्रनिदिन ही आना-जाना रहता था और वाबा को भी अभी फुरसत थी। उसका लाभ उठाने की दृष्टि से मैंने उनसे सस्कृत पढना शुरू कर दिया। कुछ लोगो ने वताया था कि वह वडे कठोर अध्यापक है। अगर कभी किसी भूल पर नाराज होते है तो जोर से डाट भी देते है। मैंने मन मे सोचा कि अव खैर नही, क्योकि काफी दिन पहले सस्कृत पढी थी और इसलिए भूले होना स्वाभाविक था। लेकिन मेरे आश्चर्य और खुशी का ठिकाना न रहा जव मैंने देखा कि वह मेरे साथ उसी तरह पेश आते थे, जैसे एक छोटे वच्चे के साथ। मैंने उन्हे स्नेह से ओत-प्रोत पाया। वडी नरमी से वह हरेक बात समझाते और महीनो में भी

दूसरे जो नही सिखा पाते, वह उन्होने हफ्तेभर मे सिखा दिया। वावा का पढ़ाने का तरीका वडा ही रोचक था। सस्कृत को मैं वहुत ही मुश्किल भाषा समझती थी। किंतु कुछ ही दिनो मे वह मुझे सरल महसूस होने लगी।

वावा के निकट आने का यह मेरा प्रथम अवसर था। फिर भी उनसे मुझे इतनी आत्मीयता अनुभव हुई कि अपने मन के कई सवाल मैं उनसे विना हिचक पूछने लगी। एक वार मैंने विवाहित जीवन के सवध में कुछ सवाल पूछे तो उन्होने वडे ही वैज्ञानिक ढग से उनका जवाव दिया। वालक का अपने माता-पिता के साथ किस तरह का सवध होता है, यह समझाते हुए उन्होने कहा, "वच्चा स्वय अपने मा-वाप का चुनाव करता है। वह अपने पूर्व-गुणो के विकास की गति के अनुरूप अपने मा-वाप चुनता है। अगर वालक गुणवान होता है तो इससे मा-वाप को अहकार नही होना चाहिए। लेकिन अगर वह वुरा निकला तो उन्हे अफसोस होना चाहिए कि उसके निमित्त वे वने। ऐसा समझ लो कि अगर कोई माता-पिता सुदर है, नीतिमान है और गणितज्ञ भी है तो वालक इनमे से एक या दो गुणो को ध्यान में रखकर भी अपने मा-वाप को चुन सकता है। चुने हुए गुणो के अलावा दूसरे गुण उसमे विल्कुल न हो, यह सभव है। ईश्वर का स्मरण करके हम अपने विवाहित जीवन का प्रारभ करे तो वह वालक के लिए वहुत गुणकारी सिद्ध हो सकता है और उसका असर उसके आगे के जीवन पर पडता है। वालक एक तीर के समान होता है और माता-पिता धनुष के समान। तीर की दिशा पक्की करना और उसे गति देना यह धनुष पर निर्भर है। इसलिए अगर माता-पिता अपने गुण, विकास और व्यवहार के सवध मे सदा सावधान रहे तो वालक पर अच्छा असर होता है।"

वावा का इस तरह समझाना मुझे वहुत अच्छा लगा। मेरे मन को इससे काफी समाधान और प्रोत्साहन मिला।

• •   • •   •

इसके वाद लखनऊ के पास गोला शुगर मिल में दुवारा वावा से मिलना हुआ। इस वीच कई साल वीत गये थे। उनकी भूदान-पद-यात्रा का श्रीगणेश हो चुका था। मैंने सोचा, मुझे कही फिर से अपना परिचय न देना पडे। सो सशकित मन से मैंने उन्हे प्रणाम किया। उन्होने तुरंत पूछा,

"तुम निर्मला हो न ?" मैंने समझा, वह शायद मुझे कोई और समझ रहे है। इसलिएं मैंने उनको अपना नाम बताया—'विमला' वह मुस्कराकर बोले, "अर्थ तो वही है।" फिर तो उनसे जितनी भी वार मिलती हू, वह मुझे जान-बूझकर निर्मला ही कहते है।

•• •• ••

एक बार मुझे उनके साथ एक पडाव से दूसरे पडाव तक पद-यात्रा मे शामिल होने का अवसर भी मिला। मध्य प्रदेश मे इदौर के निकट एक देहात में बाबा का पडाव था। वाबा जिस कमरे मे ठहरे थे, उसीमे हमने कई घटे विताये। उनका उठना-बैठना, लोगो से मिलना-जुलना, खाना-पीना बडी दिलचस्पी और कौतूहल से मैने देखा, क्योकि वे सब कार्य एक साधारण मानव के न होकर एक असाधारण साधक के थे। उनकी हर क्रिया मे वहुत-कुछ अर्थ रहता था।

शाम को टेकडी पर जो प्रार्थना और प्रवचन हुआ, उसमें शामिल हुई। रात को जल्दी ही सो गई, क्योकि सुवह पद-यात्रा में शामिल होना था। दूसरे दिन सुवह करीव तीन वजे से ही शिविर मे हलचल शुरु हो गई। ठीक चार बजे वावा अगले पडाव की ओर चल पडे। हमेशा की तरह पाच-सात लोग उनके साथ हो गये। वह समय ऐसा था, जव प्रकृति अमृत वरसाती है। जब वावा चले तव अधेरा ही था। एक व्यक्ति ने लालटेन ले ली। रास्ता समतल न था, इसलिए एक-एक कदम सम्हालकर उठाना पड़ता था। किंतु क्या मजाल जो वावा की चाल मे धीमापन आ जाय। धीरे-धीरे अधकार का गाढापन कम होता गया और ऐसा प्रतीत होने लगा कि शीघ्र ही सूर्योदय होनेवाला है। वावा ने हम सवको एक खेत के समीप रुकने का इशारा किया। वावा एक जगह वैठ गये और हम उनके इर्द-गिर्द। उस मगल-वेला मे हम सवने मिलकर प्रार्थना की। अरुणोदय की लालिमा अशुमाली के आगमन का सदेश दे रही थी। एक ओर खुले खेतो में वावा के नित-नूतन चितन से प्रवाहित विचारधारा वह रही थी, दूसरी ओर सुदूर क्षितिज से 'जयजगत' का उद्घोष करती हुई प्रकाश की किरणें फैल रही थी। ऐसे क्षणो की तो केवल अनुभूति ही हो सकती है।

प्रात कालीन प्रवचन समाप्त करके वावा उठ खडे हुए और लवे कदम

उठाते हुए फिर चल पडे। करीव ७ बजे तक हम एक छोटे-से गाव मे जा पहुचे। आज वावा का पडाव यही था। वहा नाश्ता आदि करने के बाद वावा के साथ फिर विचार-विनिमय हुआ। तदुपरात हम मोटर से वापस लौट आये।

• • • •

इन कुछ सालो मे वावा के व्यक्तित्व मे वहुत-कुछ परिवर्तन आ गया है। जव वह पवनार मे थे तब कई वार उनमे शुष्कता का आभास होता था। किंतु अब तो उनके वोलने-चालने मे पर्याप्त सरसता आ गई है। उनके समूचे जीवन-क्रम को ध्यान से देखने पर ऐसा लगने लगा, मानो एक योगी मे मानव-प्रेम से परिपूर्ण कोमल भावनाए हिलोरे ले रही है। पहले वह लोगो से वोलते भी वहुत कम थे, लेकिन अब तो उनके पास बैठकर ऐसा लगा मानो वे भी हम मे से ही एक है, वल्कि कभी-कभी तो हम यह भूल ही जाते कि वह एक वहुत वडे युग-प्रवर्त्तक है। वात-बात मे विनोद करना लोगो से वडी आर्द्रता और प्रेम से मिलना मानो उनका स्वभाव बन गया है।

मै अपने मन पर पडे वावा के इन प्रभावो का विचार करती हू तो मेरे लिए यह निश्चय करना मुश्किल हो जाता है कि वह वैरागी है या कर्म योगी, शिक्षक है या भक्त, या ये चारो ही रूप उनके है, क्योकि मैने उनके ऐसे कई रूप पवनार मे देखे थे। सुवह सूर्योदय के साथ-साथ हाथ मे फावडा लेकर वह घटो खेतो मे परिश्रम करते थे। नित्य-नूतन अध्ययन तो उनका नियमित चलता ही था। शाम को तेजी से घूमते हुए चितन और चर्चाए भी करते थे। वीच-वीच मे विशेष व्यक्तियो को पढाते भी थे। सुवह-शाम प्रार्थना यथा-समय होती थी। इधर कुछ दिनो से वह खडे रहकर प्रार्थना करने लगे थे और चैतन्य महाप्रभु की तरह नाचने भी लग जाते थे। यह सब देखकर ऐसा लगता था कि उनका हर प्रयास सत्य की खोज है और समस्त जीवन एक मगलमय प्रयोग।

●

: ११ :

मेरा सौभाग्य

सुमन जैन

विनोवाजी को देखने और उनसे मिलने का मौका मुझे हाल ही मे मिला । इससे पहले मैंने उन्हे देखा जरूर था, वात भी की होगी, पर कुछ खास ध्यान नही । जब मैं सात या आठ साल की थी, उस समय कुछ दिनो के लिए वह वम्बई मे हमारे घर पर ठहरे थे। उस समय की मुझे सिर्फ यही याद है कि वह पीछे के वरामदे मे खूब घूमते रहते थे। सुबह हो या शाम, जब देखो चहलकदमी करते हुए ही नजर आते । उनका पहनाव और दाढी को देखकर भी मुझे कुछ कम कौतुहल न होता था ।

पर उन दिनो मेरे मन मे यह बात कभी नही आई कि विनोवाजी के पास बैठू, उनसे कुछ पूछू या सुनू । अब लगता है कि वैसा अमूल्य समय व्यर्थ ही खोया ।

वर्धा मे भी बचपन मे मैंने वापूजी के साथ उन्हे देखा था, पर उस समय वहुत छोटी होने के कारण मुझे कुछ अधिक याद नही । सिर्फ इतना जरूर ध्यान है कि पवनार मे लाल बगले मे सब घरवालो के साथ मैं भी उनके पास जाती थी। कुछ ऐसा भी याद आता है कि उन्होने एक बार मुझसे विच्छू पकडने के लिए कहा, और वताया भी कि विच्छू कैसे पकड़ते हैं। पर यह सिर्फ ख्याल मात्र भी हो तो कोई आश्चर्य नही ।

• •• •

१९६० मे विनोवाजी जब अपनी पद-यात्रा के दौरे पर अमृतसर आये। उस समय मैं दिल्ली मे थी। उनसे मिलने और उन्हे देखने की उत्कण्ठा तो थी ही, सो मैं अपनी दादीजी, बुआजी, और भाइयो के साथ अमृतसर चली गई। जिस समय हम लोग वहा पहुचे, उनका भापण हो रहा था। थोडे-से लोग जमा थे, अधिकतर कवि व कथाकार। मैं भी चुपचाप एक तरफ जाकर बैठ गई ।

भाषण के वाद जव दादीजी और बुआजी मुझ उनके पास ले गई तव उनके सामने जाने मे मुझे सकोच-सा लगता था। मेरी दादीजी व बुआजी तो वहुत अपनापे से बातें कर रही थी, लेकिन मैंने तो सिर्फ जितना उन्होने पूछा उसका ही जवाब दिया और चुप वैठी रही।

फिर तो अमृतसर मे मेरा काम यही हो गया कि जहा भी वह हो, जाकर उनके पास वैठ जाना और उनकी बाते सुनना। उनके पास वैठने मात्र से एक आनन्द और खुशी-सी होती थी।

मैंने देखा कि विनोबाजी बहुत कम बोलते है और बोलते भी है तो बहुत धीमे। खाना भी बहुत कम खाते है—कहना तो यह ठीक होगा कि सिर्फ शहद दही और एकाध अन्य चीज पर ही वह रहते है। इसका कारण पूछो तो वह कह देते है कि आकाश को कितना खाता हू।

देखने मे मुझे वह कुछ कमजोर लगे, दुवले तो हमेशा से ही है। पर फिर भी उन्हे देखने से एक अजीव ताकत और दृढता का अनुमान होता है, मानो कोई उन्हे उठाये हुए हो। बैठने का ढग तो उनका अपना ही है। कभी भी झुके हुए वैठे मुझे नजर नही आये। हमेशा उन्हे मसनद के सहारे या वैसे ही सीधे वैठे हुए देखा। उनकी अगुलियो पर मेरी खास तौर पर नज़र पडी। नाजुक, लम्वी अगुलिया मानो स्वच्छता और सौंदर्य का प्रत्यक्ष रूप हो।

मैंने देखा कि सोते भी वह फर्श पर ही है। अमृतसर मे करीव नौ वजे उनका विस्तर लगा दिया गया था और ऊपर से मसहरी तान दी गई थी। अपना सारा सामान वह खुद उठाना पसन्द करते है और कम-से-कम चीजे इस्तेमाल हो, ऐसी उनकी इच्छा रहती है। इस वजह से उनका सारा सामान वहुत थोडा व हल्का रहता है।

विनोवाजी के पास से आने के वाद से मेरे मन मे तीव्र उत्कण्ठा होती है कि कभी उनके पास रहकर गीता पढू। अपनी पद-यात्रा समाप्त करने के वाद अगर वह वर्धा आये तव मै आशा करती हू कि मुझे ऐसा मौका मिल सकेगा। देखे यह आशा कव पूर्ण होती है?

विनोबाजी धन्य हैं, जिनके दर्शन मात्र से मन पुलकित हो उठता है, और एक अजीब शान्ति का अनुभव करता है। मेरा परम सौभाग्य है कि मेरा परिवार और थोडा-वहुत मै भी इनके सम्पर्क मे आ सके है।

●

: १२ :

विनोबाजी के साथ एक रोमांचकारी यात्रा

भरतकुमार

पूज्य वावा का हाथ तो जन्म से ही मेरे सिर पर रहा है, परतु मुझे उनकी पहली याद परधाम-आश्रम से ही है। मै मा और दादू (पिताजी) के साथ हफ्ते मे एकाध वार आश्रम हो आया करता था। मा तो वावा के पास ही ज्यादा समय विताती थी, पर मेरा अधिक समय नदी मे नहाने और आश्रम मे खेलने मे ही वीतता था।

जव पूज्य वावा ने काचन-मुक्ति का प्रयोग आरभ किया तो आश्रम मे कुछ और आकर्षण वढ गये। खाने मे मूगफली का 'मक्खन' और गुड का 'अमृत' मुझे अत्यत प्रिय थे। उनके साथ ज्वार के आटे को कूकर मे भाप कर बनाई हुई गरमागरम भाकरी मुझे वहुत अच्छी लगती थी। उन दिनो प्रात' सात वजे ही भोजन वन जाता था। एक मेज पर सव वस्तुए रख दी जाती थी, खडे होकर वावा खुद सवकी थालिया परोसा करते थे।

• • •

सन् १९५१ मे सर्वोदय-यात्रा का आरभ हुआ। तेलगाना के पोचमपल्ली ग्राम मे वावा को भूदान-यज्ञ की प्रेरणा मिली। वहा से लौटकर वावा पुन आश्रम मे आ गये। कुछ दिनो वाद वह दिल्ली की ओर रवाना हुए। कुछ साथी उनके साथ चले। मै भी नागपुर तक साथ रहा। पवनार से नागपुर कोई चालीस मील है। पाच दिन मे वहा पहुचे। वावा के साथ पदयात्रा मे रहने का यह मेरा पहला अवसर था। तवसे यह यात्रा अवतक चालू है। छुट्टियो मे, या जव भी मौका मिलता है, मै वावा के साथ पद-यात्रा मे शामिल हो जाता हू। अनेक स्मरणीय यात्राए हुई है, पर सवसे अधिक रोमाचकारी तो उनकी काश्मीर की यात्रा है। आज भी जव इस यात्रा का स्मरण करता हू तो शरीर रोमाचित हो उठता है। इस यात्रा मे मैंने वावा के जितने रूप देखे, वे मेरे हृदय पर अमिट छाप छोड गये है।

मैं कागडा जिले मे होशियारपुर से ही उनके साथ हो लिया था। पठानकोट मे बाबा तीन दिन रहे। वहा पजाब के कार्यकर्त्ताओ ने विदा ली। कुछ काश्मीर मे एक पडाव तक साथ भी आये।

काश्मीर एक अजीबोगरीब प्रदेश है। ज्यादातर जमीन पहाडो, पथरीले टीलो और नदी-नालो ने घेर रखी है। उपजाऊ जमीन बहुत ही कम है। वहा भूदान की चर्चा ही बेकार थी। गावो मे दस-पद्रह घर से ज्यादा नही होते। इसलिए यात्री-दल का पूरा बोझ गाववालो द्वारा न उठा सकने के कारण हमारा सारा सरजाम और रसद सरकार की ओर से साथ चलता था। इसके अलावा डाक्टरी के पूरे सामान की दो ट्रके और एक जीप भी साथ रहती थी। पुलिस की दो ट्रके, खाना बनानेवाले, फर्राश आदि भी सब जनरल यदुनाथसिंहजी के नेतृत्व मे बाबा की सेवा के लिए आये थे। बाबा को अपनी सुरक्षा के लिए पुलिस आदि रखना बिल्कुल नही सुहाता था, लेकिन विरोधियो की वजह से सरकार को बाबा की फिक्र थी। अत मे बाबा की ही जीत हुई। सारी पुलिस वापस भेज दी गई। यही हाल दवा-दारू की ट्रको का हुआ। केवल एक डाक्टर और दवाइयो की एक पेटी को साथ रहने का 'परमिट' दिया गया। बाबा ने अपनी निजी पार्टी की सख्या भी दस नियत कर दी।

इस प्रकार करीब तीस व्यक्तियो का हमारा दल पठानकोट से कठुआ होते हुए जम्मू पहुचा। बाबा वहा से उत्तर-पश्चिम की ओर नौशेरा होते हुए पुछ पहुचे। पुछ से श्रीनगर जाने के लिए बाबा को लगभग १५,००० फुट ऊची 'पीर पजाल' की पर्वतमाला पार करनी थी। रास्ता कैसा-क्या है, यह देखने के लिए श्रीनगर से उस तरफ एक दल भेजना निश्चय हुआ। मुझे भी उस दल के साथ पीर पजाल लाघने का मौका मिला। श्रीनगर से टनमर्ग तक हम एक फौजी ट्रक मे आये। वहा से हमने पैदल प्रस्थान किया और ४,००० फुट पर, सीमा की एक पुलिस चौकी पर रात बिताई। दूसरे दिन वहा से सुबह ६ बजे चले। मौसम बडा ही सुहावना था। जगली रसभरी खाते हुए हम ११ बजे १५,००० फुट ऊपर पीर पजाल पहुचे। यहा का दृश्य बहुत ही सुदर था। चारो ओर बर्फ, बीच मे कही-कही आधी जमी हुई झीलें। हम वहा से ७,००० फुट उतरे और फिर १,००० फुट

चढने के बाद करीब ३५ मील का सफर उसी दिन तय करके लोरेन पहुचे। वहा से मडी और मडी से बस द्वारा पुछ। वहा बाबा से जा मिले। रास्ता बिल्कुल साफ था।

किन्तु दैवयोग से पुछ मे मूसलाधार वर्षा होने लगी। लेकिन बाबा रुकनेवाले कहा थे ? दूसरे दिन सुबह ठीक चार बजे उसी बरसते पानी मे चल पडे। दो ट्रके और एक जीप हमारा सामान लेकर जा रही थी। उनमे से एक मोड पर जीप और एक ट्रक तो निकल गई। उसके बाद ही बडे जोर से जमीन धस गई। १५० गज पीछे आती हुई दूसरी ट्रक न जाने किसके प्रताप से उन पत्थरो की वर्षा से बची, जिनको सडक से हटाने मे बीस आदमियो को पूरे तीन दिन लगे। आगे हमे एक बरसाती नाला मिला, जो काफी वेग से बह रहा था। उसे पार करना खतरे से खाली न था। बाबा को जबरदस्ती रोका, पर वह न माने और मौका मिलते ही जयदेवभाई और बालभाई का हाथ पकडकर उस नाले मे उतर पडे। फिर हम क्यो रुकते ? करीब बीस लोगो ने हाथ से हाथ पकडकर साकल-सी बनाई और कमर तक पानी मे जैसे ही नाला पार किया कि ऊपर से एक तेज़ प्रवाह आया। पानी का स्तर एकाएक करीब चार फुट बढ गया। सोचता हू, यदि वही प्रवाह कुछ मिनट पहले आ गया होता तो क्या होता ? हम दो भागो मे विभाजित हो गये थे। एक टोली मे बाबा के साथ हम करीब दस जने थे। दूसरी मे सब सामान और रसद के साथ बाकी लोग। जब हम पाच मील बारिश में चलकर अगले गाव मे पहुचे तो पूरी तरह ठिठुर रहे थे। पानी अभी तक बरस ही रहा था। दोपहर का समय हो गया था। बाबा ने और हमने कुछ भी नही खाया था। गाववालो ने थोडा गुड और रोटी लाकर दी। वह हमे अमृत से भी प्रिय लगी। हमे बाबा की चिता थी। उनका दही नाले के उस पार रह गया था। उस दिन बाबा के लिए बडी कठिनाई से दलिया और दूध का प्रबध किया गया। प्रार्थना-सभा के समय बूदाबादी हो रही थी। श्रोता कम थे, परतु बाबा काफी बोले। शाम को किसी तरह एक फौजी ट्रक मे, जो भाग्यवश नाले के इस ओर खडा था, जनरल यदुनाथसिह ने हमारा कुछ सामान भिजवाया, अन्यथा उन गीले कपडो में हमे वह ठडी रात न जाने कैसे निकालनी पड़ती।

दूसरे दिन हम लोग मडी पहुचे। दो नालो के सगम पर स्थित यह कोई १५०० की आवादीवाला गाव है। यहा वावा का वडे जोरो से स्वागत हुआ। सारा गाव झडियो से सजाया गया था। सडको के दोनो ओर स्कूलो के वच्चे 'जयजगत' के नारे लगा रहे थे। साथ मे कुछ लोग ढोल बजाते हुए चल रहे थे। लोगो के स्नेह और स्वागत को देखकर वावा इतने भावविभोर हो गये कि उन्होने भी एक ढोल ले लिया और उन लोगो के साथ ही करीव दो फर्लांग तक उसी लय मे ढोल वजाते चले। वीच में मुझसे बोले, "दिनभर फिल्म खराव करता है। अव मेरी फोटो ले न!"

हम लोगो के ठहरने का प्रबघ 'बूढे अमरनाथ' के मदिर मे किया गया था। इघर वर्षा लगातार हो ही रही थी। उससे नालो मे पानी वढने लगा। दूसरे दिन सुवह तक हमारे पासवाले नाले मे पानी की सतह करीव २५ फुट वढ गई। किनारे के लोग घर खाली कर-करके ऊपर की ओर भाग रहे थे। नाला धीरे-धीरे किनारो को निगलता हुआ चौडा होता चला जा रहा था। दोपहर तक पानी का स्तर करीव २० फुट और वढ गया। इतने मे खवर मिली की मडी का पुल टूट गया, यानी पुछ की ओर से हमारा सपर्क समाप्त। अव एक-एक करके किनारे के घर पानी में विलीन होने लगे। चारो ओर हाहाकार मच गया। वर्षा उसी रफ्तार से जारी थी। थोडी देर में खवर आई कि ऊपर की ओर श्रीनगर के रास्ते का भी पुल टूट गया है। अव हम चारो ओर से पानी से घिर गये। एकदम प्रलय का-सा दृश्य दिखाई देने लगा।

शाम को अफवाह उडी कि प्रवाह ने मदिर के पास की जमीन को काटना आरभ कर दिया है। हम वावा को सोते से उठाकर वारिश मे ही ऊपर की ओर भागें। बावा जवतक कुछ कहे, तवतक तो हम उन्हे करीव ७०० फुट ऊपर के एक छोटे-से पचायत-घर मे पहुचा चुके थे। मदिर में वापस जाने की किसीकी भी हिम्मत नही हो रही थी। न जाने कव मदिर पानी मे समा जाय? महादेवीताई को वावा के सामान की चिंता थी। जनरल यदुनाथसिह ने मुझे अपने साथ चलने को कहा। हम दोनो ने जाकर स्थिति देखी तो लगा कि जिस गति से पानी मिट्टी काट रहा है, उससे पूरे

मदिर को पानी में जाने मे करीब एक घटा लगेगा। हमने बाबा का सामान पचायत-घर पहुचा दिया। नाले मे पानी की सतह बढती ही जा रही थी। जो नाला मदिर से करीब ४० फुट नीचे बह रहा था, वह अब बराबर मे बहता नजर आ रहा था। थोडी देर मे ही अधेरा हो गया। ऊपर पचायत-घर के दो छोटे-छोटे कमरो मे, जिनमे तीन खाटें भी एक साथ नही आ सकती थी, बाबासहित करीब ५० आदमी ठहरे हुए थे। एक कमरे मे बाबा का पलग और उनकी मडली के लोग थे, दूसरे मे बाकी के लोग और कुछ गाव-वाले तथा मिलिटरी के बीस जवान थे। पास ही एक तबू मे खाना बन रहा था। उस दिन एक-एक रोटी सबके हिस्से मे आई। रात मे सब लोग तो ऊपर सोये, पर जनरलसाहब के साथ मैं नीचे मदिर मे ही सोया। एकाएक मदिर से बीस गज पर आकर पानी ने मिट्टी काटनी बद कर दी। फिर तो हमारी देखा-देखी और भी दस-पद्रह लोग आ गये। हम बारी-बारी से पहरा देते रहे कि कही पानी और जमीन तो नही काट रहा है। हम लोग ऊपरवालो की अपेक्षा अधिक आराम से सोये।

सुबह पता चला कि आधे से ज्यादा मडी शहर को नाला निगल चुका था। दो दिन पहले जिस सडक से हम आये थे, अब वहा पानी के सिवा और कुछ दिखाई नही देता था। सडक के एक तरफ के सब घर और दुकाने पानी मे समा गई थी। जो लोग घर छोडकर भागे थे, उनके पास पहने हुए कपडो के अलावा कुछ न बचा था।

सुबह वर्षा बद हो गई। कैंप मे जनरलसाहब ने राशनिंग कर दी। दो रोटी सुबह, दो रोटी शाम। बाबा ने आदेश दिया कि सब अपनी चिंता छोडकर गाववालो की मदद में लग जाय। एक दस बरस का लडका दौडता हुआ आया कि कैंप से कोई डेढ मील दूर जमीन धसक जाने से एक घर दब गया है। उसका कहना था कि उसमे नौ आदमी थे। जनरल यदुनाथसिह के आदेश से तत्काल डाक्टर को साथ लेकर हम उस ओर रवाना हुए। वहा पहुचने पर हमे सिर्फ मिट्टी का एक टीला-सा नजर आया। हमने उसे खोदना शुरू किया। एक-एक करके चार आदमियो की लाशे निकली। फिर दो मरी हुई गाये, पाच मरी हुई और दो जिन्दा बकरिया। इतने मे मलबे में से किसीके कराहने की-सी आवाज आई। मिट्टी और

लकडिया हटाने पर एक बारह वर्ष के लडके को निकाला। उसके नाक, मुह, आख, कान में मिट्टी भरी हुई थी, पर सास चालू थी। डाक्टर ने उसे ग्लूकोज दिया और इजेक्शन लगाये। चेहरे पर से मिट्टी हटाई और उसे कैंप मे ले गये। बाद में चार और बच्चे निकले, लेकिन मरे हुए। सारा गाव शोक में डूबा हुआ था। सबको अपनी-अपनी पडी थी, सो हमे ही उनको दफनाना पडा। वही उनकी झोपडी के पास ही गढा खोदकर हमने पूरे परिवार को पूर्ण सस्कार के साथ दफनाया। शाम को प्रार्थना मे पू० बाबा ने ईश्वर से उस परिवार की आत्मा की शाति के लिए प्रार्थना की।

नाले का पानी बारिश बद होते ही उतरना शुरू हो गया। इस बीच एक दुर्घटना और हो गई। जब पानी का स्तर नाले से कम हुआ तो बहकर आई हुई लकडिया इधर-उधर पत्थरो से अटकी पडी थी। पचायत-घर का चौकीदार अपने तीन दोस्तो के साथ लकडिया बटोरने लगा। अचानक पानी का वेग बढ गया और वे बीच मे एक छोटे-से मिट्टी के टीले पर फस गये। उनकी सहायता के लिए रस्से फेके गए। चौकीदार के तीनो साथी तो किसी तरह आ गये, पर उस बेचारे की हिम्मत ने जवाब दे दिया। वह बोला कि रस्से से तो मैं बीच में ही मर जाऊगा। जरा पानी कम होने पर शायद आ सकू। पर पानी तो घटने के बजाय बढने लगा। उसने पूरी कोशिश की, परतु वह रस्सी को ठीक से न पकड सका। एक जोर का प्रवाह आया और हम सबके देखते-देखते उसे अपने साथ बहा ले गया।

दिल दहलानेवाली ऐसी कई घटनाए घटी। हमारा कैंप तो पूरा अस्पताल बना हुआ था। जिस लडके को हम दो दिन पहले मलबे से निकालकर लाये थे, उसके हाथ की हड्डी टूट गई थी और सिर में, दिमाग के पास, काफी बडा घाव था। डाक्टर ने बडी कुशलता के साथ उसका आपरेशन किया। उसकी हालत सुधरती दिखाई दी। हम बारी-बारी से बराबर उसके पास रहे। एक दिन वह कुछ बोला भी और अपने एक चाचा को शायद पहचाना भी; लेकिन उसके चाचा ने उसके होश में आते ही गलती से सब घरवालो के मरने की खबर उसे सुना दी। इस सदमे को वह सह न सका और चल बसा।

पुल तैयार होने की सूचना मिलने पर बाबा ने आगे चलने की इच्छा

प्रकट की। इसपर जनरल यदुनाथसिंह ने आगे जाकर एक वार रास्ता देखने की आज्ञा मागी। वावा ने उन्हे २४ घटे का अवकाश दे दिया। परतु उनके चल देने के वाद वावा ने मुझे बुलाकर कहा कि उनको वापस बुलाकर लाओ। मै तुरत दौडता हुआ गया। पर वह क्यो आने लगे। वह जानते थे कि यदि आगे रास्ता देखने नही गये तो वावा को कठिनाई उठानी पड सकती है। इसलिए उन्होने वावा की इच्छा टाली और २४ घटे मे करीव ५६ मील का चक्कर लगाकर वावा के पास खवर भिजवाई कि हमे जिस रास्ते से पीर पजाल जाना है, वह आगे एकदम टूटा है। पर एक दूसरा रास्ता देख लिया गया है। उससे भी कठिनाई तो होगी, पर जाया जा सकता है। वह हमको अगले पडाव, लोरेन पर मिलेगे।

वावा को जैसे ही यह सूचना मिली, वह वहा से चल दिये। सव समझे कि रोज की तरह घूमने जा रहे होगे। पर जब काफी देर हो गई और वावा वापस नही आये तो लोगो को चिता हुई। समाचार मिला कि वावा अगले पडाव लोरेन पहुच गये है। अव तो कैप मे भगदड मच गई। ताई वावा का सामान खच्चरो पर लदवाकर पहले चली, फिर वाकी के सामान के साथ हम। राशन की ऐसी हालत थी कि खच्चरवाले सिर्फ पैसो पर जाने को राजी न थे। वे साथ मे अनाज भी मागते थे। उनका कहना था, "हम आखिर रुपये खा थोडे ही सकते है। हमें अनाज चाहिए, नही तो हम नही चलते।" अत मे कुछ राशन भी उन्हे देना-तय हुआ।

लोरेन पहुचे। वहुत ही सुहावनी जगह है। दूसरे दिन कई पहाडी वस्तियो से होते हुए 'वोडपथरा' पहुचे। यहा सिर्फ दो झोपडिया थी। यह जगह, ११,००० फुट की ऊचाई पर थी। चारो ओर हिमाच्छादित पर्वत शिखर! पास मे ही पानी के झरनो का कलकल निनाद। घास ऐसी कि नरम-से-नरम कालीनो को भी मात कर दे। उसके वीच वहुरगी फूल एक विचित्र दृश्य उपस्थित कर रहे थे। आज हम काफी वडी चढाई चढकर आये थे, पर इस जगह पर पहुचते ही सारी थकान दूर हो गई।

वावा वहुत प्रसन्न थे। वह वरावर वेदो के मत्रो का उच्चारण कर रहे थे। वीच-वीच मे हमे भी कुछ वाते वता रहे थे—काश्मीर के अतीत के वारे मे।

विनोबाजी के साथ एक रोमाचकारी सफर

अगले दिन हमे पीर पजाल पार करना था, पर दल के लोगो को इसकी तनिक भी चिन्ता न थी। सब काश्मीर पहुचने की प्रसन्नता मे गा-बजा रहे थे। एक खास वात यहा देखी। रात के ग्यारह वजे भी हमे सूर्यास्त की लालिमा दिखाई दे रही थी। वैसे भी चादनी रात थी। चारो ओर के धवल हिम-शिखर हमारे साथ आख-मिचौनी खेल रहे थे। जैसे ही चाद वादल मे छिपता, चारो ओर अधेरा छा जाता। कभी कोई शिखर चमकता तो कभी कोई, और कभी एकदम प्रकाश हो जाता था।

रोज की तरह, सवके सो जाने पर, जनरलसाहव और मैं अगले दिन का कार्यक्रम तय करने लगे। मैं तो जनरलसाहव का असिस्टेंट-सा वन गया था। जहातक हो सकता था वह मुझे अपने साथ ही रखते थे। हम सुवह तीन वजे चलकर छह वजे सूर्योदय के पहले पीर पजाल पहुचने का विचार करके सोये। वावा प्रात छह और सात के बीच निकलनेवाले थे।

सुवह ठीक तीन वजे घोडेवाला आकर उठा गया और साढे तीन वजे कैंप से हम चले। क्षितिज पर अब भी हमे लाली दिखाई दे रही थी। जैसे-जैसे हम ऊपर चलते गये, लालिमा वढती गई। वर्फ सख्त थी, इसलिए हमे सभल-कर चलना पडता था। धीरे-धीरे टार्च से रास्ता देखते-देखते वढे। जनरल-साहव और मैं इस रास्ते से एक वार पहले आ चुके थे। अत हमे कोई खास परेशानी नही हुई। ठीक ६॥ वजे हम दर्रे पर पहुच गये। अव हम करीव १६,००० फुट की ऊचाई पर थे। अरुणोदय तो खैर तीन वजे से ही होता दिखाई दे रहा था, पर प्रात काल का वर्णन शब्दो से वाहर की वात है। जैसे ही पहली किरणें आईं, नगा पर्वत का शिखर स्वर्ण-मुकुट की तरह चमचमा उठा। शनै-शनै चारो ओर स्वर्ण मुकुटो की एक पक्ति खडी हो गई और फिर रग-विरगा आकाश—मानो अगणित इद्र-धनुप आकाश मे खिच गये हो। जनरलसाहव तो एक अच्छा-सा पत्थर देखकर अपनी रोजाना की पूजा मे वैठ गये, आम तौर पर वह करीव १५ मिनट से आधे घटे तक ध्यान करते थे, फिर रामायण, गीता, वाइवल या कुरान मे से कुछ पढते थे। किंतु उस दिन तो उनकी पूजा अढाई घटे चली। इस वीच मैं पास के ढालो पर से फिसलने का मजा ले रहा था।

इस दर्रे का रूप-रग कुछ ही दिनो में विल्कुल वदल गया था। सिर्फ नौ

दिन पूर्व ही तो हमने इसे पार किया था। उस समय चारो ओर बर्फ के सिवा कुछ भी दिखाई नही देता था। पर अब पत्थरो मे वर्फ ढूढने के लिए आखे दौडानी पडती थी। दर्रे का आकार बदल गया था। मैं समझता हू ४० से ५० फुट तक वर्फ पिघल गई होगी। वही मडी मे बाढ का कारण थी। लेकिन पहले जिन अध-जमी झीलो को मैं देख गया था, वे अब झरनो का रूप धारण कर चुकी थी।

वावा ११ वजे ऊपर पहुचे। वह बडी ही धीमी गति से आ रहे थे। हर ५० फुट के बाद १० मिनिट का विश्राम ले रहे थे। जनरलसाहव ने और मैंने उनका स्वागत किया। हमे वहा देखकर वह आश्चर्य मे पड गये, क्योकि रास्ते मे तो हमने उन्हे पार किया नही था। पर जब मैंने उन्हे बतलाया कि हम छह वजे से आपका यहा इतजार कर रहे है, तो वह वहा के बारे मे हमसे प्रश्न पूछने लगे। हमने उन्हे कुछ मुख्य चोटिया दिखलाई। काश्मीर घाटी का सक्षिप्त परिचय कराया। जनरलसाहव ने वूलर झील, श्रीनगर, डल-झील, अमरनाथ वगैरह वतलाये। जब मैंने सूर्योदय के दृश्य के वारे में उनसे चर्चा की तो वोले, "ऐसा मालूम होता तो मै भी तुम्हारे साथ ही आता।"

सब वही बैठे। प्रार्थना हुई। बावा एकदम ध्यान-मग्न हो गये। जगह ही ऐसी थी! हमारे मन मे एक अजीव-सा सतोष का भाव था, मानो हम ससार की सबसे ऊची चोटी पर बैठे हो।

दर्रा एक बजे से पहले पार कर लेना चाहिए। बाद मे ऐसी तेज़ हवा चलने लगती है कि लदे हुए खच्चरो तक को उछालकर फेक देती है। बादल घिरने शुरू हो गये। यही उस आनेवाली हवा की पूर्व-सूचना थे। हम चाहते हुए भी रुक न सके। अब तो उतार-ही-उतार था। गुलमर्ग दिखाई दे रहा था। पहला मुकाम हमने ८००० फुट पर 'तुगण' पर किया, दूसरा ४००० फुट पर। फिर गुलमर्ग आ पहुचे। वक्शीसाहव के साथ एक बडी भीड ने वावा का प्रेमभरा स्वागत किया। सबको हमारे सकुशल पहुचने की खुशी थी।

●

: १३ :

बाबा के प्रथम दर्शन

रुचिरा अग्रवाल

मेरा जन्म मेरे ननिहाल वर्धा मे हुआ। बचपन मे मा के साथ बाबा के पास जाने के कई मौके मिले होगे, परतु मुझे उनका स्मरण नही है। जहातक याद आता है, पहले-पहल उनके दर्शन वैजवाडा मे हुए।

घर मे बाबा के विषय मे काफी बात-चीत चलती रहती थी। जिस व्यक्ति की बात सुनते रहे, उसे देखने की इच्छा भी होती है। परतु बाबा को देखने की मेरी इच्छा कोई भावना-प्रधान नही थी। वह तो एक काले बाल और सफेद दाढीवाले बूढे बाबा को देखने की उत्सुकता मात्र थी। आखिर उनमे ऐसी कौन-सी शक्ति है, जिसके कारण सारा देश उनको पूजता है ? वे कैसे है, कैसे वस्त्र पहनते है, यह सब स्वय प्रत्यक्ष देखने की स्वाभाविक इच्छा होती थी। सन् १९५५ मे जब मुझे मदालसा मौसी के साथ बाबा के समीप जाने का अवसर मिला तो यह इच्छा पूरी हुई। उस समय मेरी उम्र कोई १० वर्ष की थी।

ट्रेन मे बाबा के बारे मे मन मे अनेकानेक भाव उठते रहे। मेरा बाल-मन सोचता था कि वह एक बडे-से गद्दे पर बैठे होगे। कई सेवक उनकी हाजिरी मे खडे होगे। एक महान्, तेजस्वी, ऋषि के समान वह ध्यान मे मग्न बैठे होगे। लोगो का आते-जाते उनको प्रणाम करने का सिलसिला चलता रहता होगा। इन सब कल्पनाओ के बीच एक प्रश्न मेरे दिमाग मे घूमता रहा कि अन्य ऋषि-मुनियो की भाति बाबा हिमालय मे न जाकर, सासारिक लोभो मे फसे मनुष्यो के बीच क्यो विचरते है ? इस प्रश्न का उत्तर मुझे उनके साथ रहने के बाद ही मिला। वह ऋषि-मुनियो से भी बहुत ऊचे है, और ससार मे रहते हुए भी वह सासारिक लोभो मे नही फस सकते है।

बैजवाडा मे हम सरकारी अतिथिगृह मे ठहरे। नहा-धोकर तत्काल

वावा के दर्शन के लिए गये। वावा एक सफेद चद्दर की वैठक पर सीधे वैठे हुए थे। वदन पर खादी की एक सफेद छोटी धोती थी। कधे पर एक दुपट्टा। चेहरे से तेज टपकता था। उस भव्य आकृति मे सादगी का कैसा अद्भुत समावेश था। गाव के कई लोग वावा से वातचीत करने आये थे। हम भी उन्हे प्रणाम कर उन्हीके वीच वैठ गये। वे जो वातचीत कर रहे थे, वह तो कुछ पल्ले पडी नही, लेकिन उनको देखने मे ही आनद आता रहा। फिर तो रोज सुवह तैयार होकर वावा की घास-फूस की गोवर से लिपी झोपडी मे जाते और रात होने पर लौटते। सुवह वावा कार्यकर्ताओ की वैठक मे वोलते और शाम को मैदान मे आम जनता के सामने भापण देते। ये दोनो भापण मेरे मौसेरे भाई रजत और मैंने लिखे थे। वीच-वीच मे काफी छूट जाता था। सध्या का भापण हमे खासतौर से पसद आता था, क्योकि वह वावा की भूमिदान से सवधित रोचक घटनाओ से भरपूर रहता था। उन घटनाओ को इकट्ठा किया जाय तो कहानी की अच्छी पुस्तक वन सकती है। आम जनता की समझ मे आ सके, इसलिए ये भाषण मीठा, सरल और स्पष्ट रहते थे। हर घटना के पीछे कुछ शिक्षा रहती थी।

•• •• ••

कई साल वाद सीकर के एक छोटे-से ग्राम काशीकावास मे मुझे पुन वावा के दर्शन हुए।। काशीकाबास पू० नानाजी की जन्मभूमि थी, इसलिए वावा वहा के प्रति खासतौर से आकर्षित हुए थे। वह एक पाठशाला मे ठहराये गए थे। पाठशाला के आस-पास का दृश्य मनोरम था। राजस्थान के सुनहरी वालू के टीलो की चकाचौध देखने लायक थी। पास ही कुआ था। रग-विरगे घाघरी-ओढने पहने और चादी के गहनो से लदी ग्रामीण औरते सिर पर मटका रखे, पानी भरने चलती चली आ रही थी। वावा उनके गाव मे आये है, इससे वे अपनेको धन्य मानती थी। मै वावा के हस्ताक्षर लेने के लिए अपने साथ ग्रामोद्योग के कागज की स्वाक्षरी कापी (आटोग्राफ बुक) ले गई थी। मुझे मालूम था कि बावा 'गीता-प्रवचन' के अलावा किसी और चीज पर हस्ताक्षर नही देते। परतु मैंने मौके का फायदा उठा लिया। जब हम उनके कमरे मे गये, वह दही-शहद

खा रहे थे। जैसे ही उन्होंने खाना समाप्त किया, मैंने उनसे हस्ताक्षर देने की प्रार्थना की। वह बोले, "मैं 'गीता प्रवचन' पर ही हस्ताक्षर करता हू।" किंतु यह कहते हुए भी उन्होंने हाथ-कागज की उस पुस्तिका पर हस्ताक्षर कर दिये, फिर मुस्कुराकर विनोदपूर्वक बोले, "देखो, किसीको बताना नही। यह तुम्हारे लिए अपवाद है।"

अपनी पद-यात्रा के दौरान बाबा दिल्ली के पास पट्टीकल्याण और मेरठ भी गये। मुझे इन दोनो जगह जाने का मौका मिला। बाबा के दर्शन हुए और उनके साथ रहने का अवसर भी मिला, परतु उनकी पद-यात्रा मे शामिल होने की चाह मेरे मन मे अबतक बनी है। भगवान ने चाहा तो वह भी पूरी होगी

: १४ :

बाबा की वत्सलता

रजतकुमार

जव मै चार-पाच साल का था आज से उस समय तक की पू० वावा के साथ की वाते मुझे याद है। वावा धाम नदी के किनारे परधाम-आश्रम, पवनार मे रहते थे। हम लोग कई वार शाम को वहा जाते, आश्रम के अन्य वालको की तरह रहट चलाते, कुए की खुदाई मे सहायता करते। पू० वावा स्वय भी खुदाई तथा मेहनत के दूसरे काम करते थे। रोज शाम को नदी के किनारे खुले मे प्रार्थना होती थी। प्रार्थना एक गोल चक्कर मे खडे-खडे ही होती।

१९५०-५१ में, जिस दिन वावा ने वर्धा से तेलगाना की यात्रा के लिए प्रस्थान किया, उस दिन का भी मुझे थोडा स्मरण है। सुवह के चार वजे होगे। हम लोग जल्दी उठकर तैयार हुए और पवनार पहुचे। वहापर सव लोग जगे हुए थे और कही जाने के लिए तैयार थे। काफी भीड जमा थी। जव बावा चलने को खडे हुए तव मैने और मेरे वडे भाई भरत ने एक-एक एकड़ भूमि के रूप मे दो गमले वावा को भेट किये। तत्पश्चात् शायद एक-दो मील तक हम लोग उनके साथ पैदल भी गये।

उसके वाद हैदराबाद सर्वोदय-सम्मेलन और तेलगाना की यात्रा मे मै कुछ दिन वावा के साथ रहा।

लेकिन पू० वावा के साथ मेरी पहली लबी यात्रा विहार और बगाल मे हुई। मै विहार मे धनवाद से उनके साथ हो गया था और बगाल में बलरामपुर तक रहा। मेरा वडा भाई भी साथ था। उस समय हम दोनो भाइयो की दिनचर्या वडी कठिन रहती थी। सुवह करीब तीन, साढे-तीन वजे उठ जाते और विस्तर वाधकर तैयार हो जाते। सर्दी के दिन थे, इसलिए गरम कपडे वहुत पहनने पडते थे। चार वजे सब बाबा के साथ चल पडते। बाबा इतने तेज चलते थे कि मुझे तो करीव-करीव भागना ही पडता था।

जिस दिन किसी भाई का हाथ न पकडता, उस दिन मैं अवश्य पीछे छूट जाता और फिर मुझे भागकर भीड़ मे से जाने का रास्ता मागते हुए आगे जाना पडता था।

रास्ते मे लोग वावा का शख-ध्वनि के साथ स्वागत करते थे। अगले पडाव पर पहुचकर वावा स्वागतार्थ आये हुए लोगो से दो शब्द कहते। हम लोग भी अपनी कापियो मे, दूसरे यात्रियो की देखा-देखी, वावा की कही हुई वातें जैसे-तैसे लिख लेते और वडे प्रसन्न होते।

दिनभर हम पद-यात्री कार्यकर्ताओ के साथ खेलते और उनके काम मे बाधा डालते रहते थे। उस कष्ट का वदला हम शाम को प्रार्थना-सभा के वाद 'गीता-प्रवचन', 'हमारी प्रार्थना' आदि वेचकर चुकाते। 'हमारी प्रार्थना—एक आना', 'गीता-प्रवचन—एक रुपया' आदि की आवाज लगाते और जब लोग हमसे पुस्तके खरीदते तो हमें वहुत खुशी होती।

इस तरह हमने बावा के साथ झरिया देखा, वहा की कोयले की खाने देखी, सिदरी का कारखाना देखा, दामोदर नदी पार की, बगाल में प्रवेश किया, वाकुडा जिले मे चले, मेदिनीपुर जिले मे पहुचे। श्री रामकृष्ण परम-हस के गाव विष्णुपुर मे भी ठहरे। आगे खडगपुर पहुचे। वहा का रेलवे स्टेशन देखा।

बगाल-प्रवेश का दृश्य मुझे अव भी अच्छी तरह याद है। विहार के अतिम पडाव से जिस दिन वावा चले उस दिन विहार के लगभग १५० कार्यकर्ता और ग्रामीण भाई साथ मे हो गये थे। विहार और बगाल की सीमा पर वावा कुछ देर रुके। विहार के कार्यकर्ताओ से कुछ वाते की और उन्हें विदाई का सदेश दिया। विहारवाले वही से वापस लौट गये। सीमा की दूसरी ओर वगाल के लोग स्वागत करने आये। उन्होंने वावा का जयघोष किया। उस समय वच्चो की वहुत भीड होने के कारण वावा ने वच्चो का हाथ पकड लिया और वच्चो की दोनो ओर दो पक्तिया वना दी और फिर तो वावा को ऐसा जोश आया कि वच्चो की तरह दौडने लगे। उस दिन करीव डेढ फर्लांग तक दौडे। वाकी के पदयात्रियो को दौडने मे पहले तो कुछ हिचकिचाहट हुई, परतु फिर पीछे छूट जाने के डर से वे भी दौडने लगे।

उन तीन सप्ताहो मे मुझे वहुत-कुछ सीखने को मिला। वावा के प्रेम

भरे सदेश ने साम्यवादियो के क्रातिकारी सदेश से अधिक असर दिखाया।

दो वर्ष वाद मुझे वावा के पास रहने का फिर सुअवसर प्राप्त हुआ। गर्मी की छुट्टिया थी। वावा पठानकोट मे थे। मुझे पता था कि इस वार का अनुभव अपूर्व होना है, क्योकि आगे का मार्ग पहाडी था। पिछली यात्राओ मे मै इतना छोटा था कि अनुभवो का पूरा आनद नही उठा पाया था।

काश्मीर प्रात मे प्रवेश करते ही हमारे नये अनुभव आरभ हो गये। पहले पडाव लखनपुर मे वावा के हाथो से मेरे भाई भरत, श्री देवदासजी गाधी के सवसे छोटे पुत्र गोपालकृष्ण और मेरा उपनयन सस्कार हुआ। हम तीनो को वावा ने अपने हाथ से लिखकर मुडकोपनिषद् का एक मत्र दिया

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येषात्मा, सम्यक् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्त' शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो य पश्यति यतयः क्षीणदोषाः ॥

इसके वाद उन्होने अपने हाथ से हमे एक-एक लड्डू दिया।

काश्मीर मे वावा की दिनचर्या वडी रोचक रहती थी। उठना तो नित्य की भाति सु॑ह तीन वजे ही होता। फिर प्रार्थना के वाद सव लोग अगले पडाव के लिए प्रस्थान करते थे। रास्ते मे वावा कुछ देर दूध और शहद लेने के लिए रुकते। काश्मीर प्रात तो दुग्ध-धवल सरिताओ से भरा पडा है। यद्यपि वावा अभी ऊचे हिमाच्छादित पर्वतो के पास नही पहुचे थे, तथापि छोटी-मोटी पहाडियो को हमे लाघना पडा। वावा तो प्रकृति के प्रेमी है ही। वचपन मे भी उन्हे अकेले ही वनो तथा पर्वतो मे भटकने का शौक था। अत जव कभी कोई सुदर स्थान दीखता था तो वावा रुक जाते और दूध-शहद वही लेते हुए उस स्थान की रमणीयता को निहारते। एक दिन रावी नदी के तट पर उसकी अलौकिक सुषमा से प्रभावित होकर वह ध्यानस्थ हो गये। उसी समय अवतारो के वारे मे उन्होने वहुत सुदर रूप से समझाया।

वावा मे वच्चो-जैसी साहसी वृत्ति भी कम नही है। कई वार वावा जोश मे आकर पर्वतीय स्थानो मे, पक्के रास्ते को छोडकर पहाड पर चढना शुरू कर देते थे। वावा के साथी स्वय डर जाते, परतु वावा तनिक

भी नही घबराते और उसी उत्साह के साथ चलते जाते ।

अगले पड़ाव पर पहुचने के बाद लगभग ग्यारह बजे कुरान शरीफ का पाठ बाबा स्वय करते । बाबा को अरबी का ही नही, बल्कि कई अन्य विदेशी भाषाओ का पर्याप्त ज्ञान है । भारत की तो लगभग सभी भाषाए वह अच्छी तरह जानते है । बाबा जिस प्रात मे जाते है, वहा की भाषा सीख लेते है । काश्मीर मे उन्होने एक भाई से कश्मीरी सीखी । कश्मीर मे प्रवेश करते ही बाबा ने कहा था कि कश्मीर मे वह केवल देखने, सुनने और प्यार पाने के लिए आये है, मागने या बोलने के लिए नही । वह कहते थे, प्रेम बिजली है, विश्वास बटन । उसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए बाबा की पूरी यात्रा चलती रही । शाम की प्रार्थना-सभा मे भी वह अधिक नही बोलते थे । अधिकतर तो वह स्थानीय लोगो को ही बुलाकर उनके दु ख-दर्द सुनते, गाव के बारे मे जानकारी लेते और सलाह मागी जाने पर सलाह देते । इस प्रकार उन्होने लोगो के हृदयो मे विश्वास उत्पन्न किया । फिर तो विश्वास का बटन दब जाने पर प्रेम की बिजली ने सबको चकाचौंध कर दिया । बिना मागे ही लोगो ने उन्हे भूमि दी । बिना बुलाये ही पुराने वैरी, बाबा के पास आये और अपने झगडे निपटाकर हँसी-खुशी वापस लौटे । बिना कहे ही स्त्रिया और पुरुष स्वेच्छा से शाति-सैनिक बनने के लिए आगे बढे ।

भूदान और ग्रामदान का कार्य करते हुए भी अध्ययन और अध्यापन मे बाबा को सबसे अधिक आनन्द आता है । इसलिए यह स्वाभाविक ही है कि बालक-बालिकाओ के लिए उनके हृदय मे अपार प्रेम हो ।

जम्मू मे प्रार्थना-सभा थी । भीड में अधिकतर बच्चे ही थे । गर्मी के कारण बच्चे बेचैन थे और उनका ध्यान पूरी तरह बाबा की ओर न था । यह देखकर बाबा ने बच्चो से कहा कि वे अभी अपनी कमीज उतार दे, जिससे गर्मी न लगे । सबसे पहले बाबा ने स्वय अपना उत्तरीय उतारा । फिर एक लडके ने हिम्मत की । धीरे-धीरे एक-दूसरे की देखा-देखी सभीने कमीजे उतार दी और बाबा के कहने पर सब अपनी-अपनी कमीजे हवा मे उछालने लगे । बाबा ने खूब तालिया बजाई और नाचने लगे । सब लडको ने उनका अनुसरण किया ।

यह छोटी-सी घटना वावा के वात्सल्य और प्रभाव को प्रदर्शित करती है ।

.. .. ..

विद्यार्थियो से सवधित एक और प्रसंग याद आता है। पिछले वर्ष मेरे स्कूल की कुछ वालिकाओ के उत्साह प्रदर्शित करने पर स्कूल की ओर से वावा के पास जाने का कार्यक्रम निश्चित हुआ। वावा उस समय दिल्ली से ४० मील की दूरी पर पिलाना नामक ग्राम मे थे। कडकती धूप में सब लोग एक वस मे चले। वहा पहुचकर हम सवका वावा से परिचय कराया गया। हमारे साथ दो अग्रेज नवयुवक भी थे, जो कुछ महीनो के लिए भारत में अध्यापक की हैसियत से आये हुए थे। परिचय के वाद हम सवने उनका प्रार्थना-प्रवचन सुना, जिसमे उन्होने हम लोगो से वहुत रोचक प्रश्न पूछे। प्रवचन के वाद हम सव वालक-वालिकाओ ने पूरे गाव को घूम-कर देखा। शाम को वावा की टोली के साथ ही सवने भोजन किया। रात को सव लोग गाव के ही एक घर में सोये। वडे आश्चर्य की वात थी कि वे विद्यार्थी, जिनका घर मे वडे ठाट-वाट से पालन-पोषण हुआ था, एक गाव के टूटे-फूटे घर में जमीन पर एक चादर डालकर सोये।

अगले दिन सव लोग तडके उठे और वावा के साथ अगले पडाव के लिए चल पडे। आकाश मे तारे टिमटिमा रहे थे और चद्रदेव चारो और शुभ्र चादनी विखेर रहे थे। चारो ओर सन्नाटा था। पौ फटने लगी। वावा की प्रार्थना के स्वर ने सन्नाटे को भग कर दिया। प्रार्थना शुरू हुई। जो प्रार्थना जानते थे, वे प्रार्थना मे शामिल हुए। प्रार्थना के वाद वावा ने स्वय अपने साथवालो से पूछा, "अरे, वे दिल्ली से कुछ वच्चे आये है न, उन्हे हमने समय दिया है, वे आ जाय।" एक-एक विद्यार्थी हिच-किचाता हुआ आगे वढता और अस्फुट स्वर मे अपना प्रश्न पूछता। वावा प्रेम से उसका हाथ पकड लेते और वडे सुदर ढग से प्रश्न का उत्तर देते। विद्यार्थी की हिचकिचाहट चली जाती और यदि उसे कोई और शका होती तो उसे भी वह वावा के सामने रख देता। सब विद्यार्थियो का पूर्ण समा-धान हो गया। विद्यार्थियो ने सर्वोदय के विचार से लेकर आत्मा और परमात्मा तक के विषय मे सवाल पूछे। वावा को वडी प्रसन्नता हुई कि

दिल्ली मे रहनेवाले विद्यार्थी भी ऐसे विषयो पर सोच सकते है।

अगले पडाव पर पहुचकर स्वागत-सभा मे दिल्ली के बच्चो की इस टोली का उल्लेख किया, उनकी प्रशसा की और अपना पूरा प्रवचन उन्हीको सबोधित करके दिया ।

हम सब बहुत प्रसन्नचित्त से बाबा के अपार प्रेम और ज्ञान से प्रभावित होकर दिल्ली लौटे । वे सब विद्यार्थी अभी तक उस अनुभव को याद करते है और एक बार फिर से बाबा के दर्शन करने की इच्छा प्रकट करते है ।

: १५ :

एक बालक की निगाह में

शिशिर वजाज

भारत मे कई सत हुए है—उनमे से एक है विनोवाजी। जैसे लोग गाधीजी को 'महात्मा' कहते थे, वैसे ही विनोवाजी को 'सत' कहते है। कई लोग उन्हे 'वावा' के नाम से भी पुकारते है।

मै पू० वावा से दो वार मिला हू—एक वार आगरा मे और दूसरी वार इन्दौर मे। आगरा में तो मै उनके साथ दो-एक घटे ही रहा, लेकिन इदौर मे एक सप्ताह उनके साथ रहने का मौका मिला। इन्दौर मे ओम् वुआजी और दादीजी (श्रीमती जानकीदेवी वजाज) के साथ गया था। हम लोग कस्तूरवा ग्राम मे विनोवाजी के साथ ही ठहरे थे। पहले दिन तो मुझे वहा रहने का मन नही हुआ, क्योकि मेरी उम्र का कोई साथी वहा था ही नही। लेकिन दूसरे-तीसरे दिन से मेरा मन लगने लगा। मै रोज सुवह चार वजे की प्रार्थना मे जाया करता। प्रार्थना के वाद विनोवाजी किसी खास विषय पर प्रवचन देते थे। प्रार्थना के वाद वह घूमने जाते और फिर लौट-कर कुछ काम करते। शाम को पाच वजे वावा पास की एक टेकडी पर जाते, जहा ढेर से लोग जमा होते। वावा उनके सामने भाषण देते। फिर रात को आठ वजे प्रार्थना होती। इस तरह मैने देखा वावा हमेशा काम मे ही लगे रहते है—थोडी भी फुरसत उन्हे नही मिलती।

शातिकुमारजी भी वहा आये हुए थे। जव उन्होने अपने आपरेशन की वात वावा से कही तो विनोद मे वावा ने कहा कि आजकल तो आपरेशन कराने का फैशन ही हो गया है।

इन सात दिनो मे मैने यह भी देखा कि वावा वहुत ही भावुक है। शातिकुमारजी ने एक पुस्तक वावा को पढने को दी। वावा उस पुस्तक को पढने लगे और पढते-पढते उनकी आखो मे आसू आ गये।

जव भी मै वावा की याद करता हू तो मुझे एक वात याद आ जाती है

जो मैंने कही पढी थी। जव वावा छोटे थे तव एक दिन स्कूल से आते ही वह अपने सार्टिफिकेट जलाने लगे। उनकी मा ने उनसे कहा, "विन्या, तुम ये सार्टिफिकेट क्यो जला रहे हो ? आगे चलकर ये तुम्हारे काम आयेंगे।" विनोवाजी ने कहा, "वे मेरे क्या काम आयेंगे ? मुझे आगे कोई नौकरी तो करनी नही।" अपने उद्देश्य की तरफ इतनी लगन कितने लोगो मे दिखाई देती है ?

हरी कनटोपी और ऊची धोती पहने विनोवाजी भारत के गाव-गाव मे घूमकर लोगो को प्रेम से रहने की शिक्षा देते है। वह चाहते है कि अमीर लोग गरीवो की मदद करे। वह जिस किसी गाव मे जाते है, वहा उनके आने की सूचना पद्रह-वीस दिन पहले दे दी जाती है। जव गाववालो को यह खबर मिलती है तो वे वहुत खुश होते है और उनके स्वागत का इन्तजाम शुरू कर देते है।

पेट मे अलसर होने के कारण वावा शहद और छाछ ही पीते है। डॉक्टरो ने उनसे कई वार कहा कि आप आपरेशन करवा ले, नही तो यह और वढ जायगा। उन्होने यह भी कहा कि हम आपका आपरेशन जीप मे चलते-चलते ही कर देगे ताकि आपकी यात्रा मे देरी न हो, परतु वह नही मानते। डॉक्टरो का तो आश्चर्य है कि वह इतना चल-फिर कैसे लेते है ? विनोवाजी इसके उत्तर मे कहते है, "मै रोज सुवह आकाश और हवा खाता हू, वह तुम्हारी दवाइयो से कही ज्यादा अच्छा है।" उनका कहना है कि सुवह के समय आकाश से अमृत वरसता है, इसलिए जल्दी उठकर कुछ देर घूमना चाहिए। वावा के पास रहकर मुझे वहुत सीखने को मिला। मुझे लगा कि वह सादा जीवन पसद करते है। वह चरखा कातते है और खादी पहनते है। उन्हे पद्रह-वीस भाषाए आती है, लेकिन सस्कृत का ज्ञान सवसे अधिक है। वहुत लोगो को वह पढाते भी है, लेकिन वगैर पैसे के।

इदौर मे मै वावा के साथ एक पडाव तक पैदल भी गया था, और भी वहुत-से लोग साथ मे थे। वीच मे एक जगह हम लोग रुके थे, जहा वावा ने प्रवचन दिया। वावा के साथ मेरा एक चित्र भी है। मेरे पास 'गीता-प्रवचन' की दो प्रतिया भी है, जिन पर वावा के हस्ताक्षर है।

❂

·

परिशिष्ट

1 शेष पत्र
2. महत्वपूर्ण तिथियां
3 परिचय

: १ :

शेष पत्र

[पुस्तक छपने के वाद कुछ आवश्यक पत्र फाइलो में और मिले। उन्हे यहा दिया जा रहा है।]

१

विनोबा के पत्र जमनालाल बजाज के नाम

नालवाडी-आश्रम,
२०-८-३६

श्री जमनालालजी,

साथ के सिद्धप्पा के पत्र को पढकर उसके विषय मे अपनी राय लिखे और पत्र भी लौटा दे। भागप्पा सिर्फ नौकरीपेशा व्यक्ति नही, वल्कि सार्वजनिक कार्य मे रुचि रखनेवाले व्यक्ति है और नासिक के सार्वजनिक काम मे कई वर्षों से (कम-अधिक) हिस्सा लेते आये है। ऐसी स्थिति मे उनके लिए नासिक छोडना कहातक सभव या उचित होगा, यह सवाल उपस्थित होता है। मेरी राय मे शायद यह उचित न होगा।

विनोबा के प्रणाम

२

नालवाडी, वर्धा
६-३-३८

श्री जमनालालजी,

साथ का पत्र जानकीवाई की इच्छानुसार आपके अवलोकनार्थ भेज रहा हू। उसे लौटाने की आवश्यकता नही।

महादेवी के पत्र मे मदालसा के स्वास्थ्य के सबध मे इस प्रकार उल्लेख है

"मदालसा का वजन ही नही वढता है। उसके प्रयोग को अव लगभग पौने तीन महीने होने आये, वह वैसी-की-वैसी है। अव वह उकता भी गई है।"

उस दिन आपके कहने से मै समझा था कि मदालसा का वजन बढ रहा है। वस्तुस्थिति क्या है ?

विनोबा

३

जानकीदेवी का पत्र जमनालाल बजाज के नाम

पवनार, १८-९-४०

पूज्य श्री,

विनोबाजी धूलिया-जेल मे दिये गए गीता के प्रवचनो का सुधार कुन्दर से कराते है। तब मुझे भी सुनने को मिल जाते है।

खाते समय रोज विनोबाजी थोडा-सा दही निकालते है तब दगडू कहता है कि कुछ खाओगे भी कि यह निकाल, वह निकाल करोगे। तब विनोबाजी कहते है कि तेरे कहने से खाता तो आज तक पवनार मे मेरी चिता (समाधि) बन जाती। मैंने कहा—यह तो आपकी स्त्री ही है, जो खाने का आग्रह करता है। खाने का मजा तो खानेवाले और खिलानेवाले मे होड हुए बिना आ ही नही सकता।

जानकी का प्रणाम

४

विनोबा का पत्र कमलनयन बजाज के नाम

पडाव कुरु (राची)
२५-११-५२

कमलनयन,

दिवगत किशोरलालभाई के स्मारक की जो बात सोचते हो, तो वह तो ठीक है। लेकिन उसके लिए पैसे इकट्ठा करना मुझे नही जचता। मै मानता हू कि किशोरलालभाई को भी न जचता। पैसे तो गाधी-स्मारक के लिए इकट्ठे किये गए, वह भी मुझे अच्छा नही लगा था। लेकिन उस समय नेताओ ने जाहिर कर दिया और उसका विरोध करना बेकार था। उस समय किशोरलालभाई की भी मेरे-जैसी ही राय थी। लेकिन हम दोनो चुप रह गये। फिर भी जहा-कही लोगो ने मुझसे सीधा सवाल उस बारे मे पूछा, वहा मैंने अपना मतभेद कह भी दिया।

वह बात तो हो गई। अब मैं चाहता हूं कि फिर से हम वैसी गलती न करे।

परन्तु किशोरलालभाई की वृत्ति को शोभादायक हो, ऐसा कोई स्मारक हमें सोचना चाहिए। उस बारे मे अधिक सोचो। आखिर वह भूदान-यज्ञ के विचार के साथ अत्यत एकरूप हो गये थे, उसका भी ख्याल रखना होगा। उस बारे मे कुछ सूझे तो मुझसे मिलकर चर्चा करना बेहतर होगा।

मै २९ ता को राची पहुच रहा हू। वहा विद्यार्थियो का सम्मेलन होने जा रहा है। वहा तो शायद नही पहुच सकोगे और उतनी उतावली भी नही है।

विनोबा

५

विनोबा के पत्र रामकृष्ण बजाज के नाम

पडाव अकबरपुर, फैजाबाद
२८-४-५२

चि रामकृष्ण,

अब तो जमनालालजी का पत्र-व्यवहार पूरा ही छाप दो। मुझे मेरे मन के मुताबिक लिखने की फुर्सत अभी मिलनेवाली नही है।[१] कही बारिश के दिनो मे स्थिर बैठ जाऊगा तब लिख सकूगा। वैसे ही चार लकीरे लिख देने मे सार नही है। जमनालालजी का मेरा सबध या तो अव्यक्त शोभेगा या सुव्यक्त शोभेगा, यथा-तथा व्यक्त नही शोभेगा। मेरी राय मे पहला उत्तम है, दूसरा मध्यम है, तीसरा कनिष्ठ। कनिष्ठ पक्ष का आश्रय तो हमे लेना ही नही चाहिए।

सर्वोदय-सम्मेलन मे सर्व-सेवा-सघ ने भूमि-दान का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। इसके बाद अब हममें से किसीको एक क्षण की भी फुर्सत लेने का अधिकार नही रहता। समितिया तो खैर बनेगी, लेकिन करने का काम समिति को समर्पित नही करना है, बल्कि किया हुआ काम समिति को

[१] विनोबाजी ने यह पत्र जमनालालजी का गाधीजी से हुआ पत्र-व्यवहार 'पाचवे पुत्र को बापू के आशीर्वाद' पुस्तक की भूमिका लिखने की प्रार्थना किये जाने पर लिखा है।

सम्मिप्रित्र करना है। तुम हो, कमलनयन है, माताजी है, सबके नाम मे नही लेता हू, और बहुत-से है, हरेक को इस कार्य की रोज चिंता करनी है।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। लोग कहते है,"देह दिन-ही-दिन दूबरी होई" लेकिन काम दिन-दिन अगर परिपुष्ट होता है तो कोई फिक्र नही है।

विनोवा

: ६ :

ग्राम, वेगनाभाडा (असम)
१९-१-६२

रामकृष्ण,

पत्र मिला। अखवार मैंने नही देखे थे। कमलनयन मिला तो था, लेकिन उसने उस विषय मे वात नही की थी। तुम्हारे पत्र और पत्रक से ही मालूम हुआ। दिल की वात पर कायम रहने की जो हिम्मत[1] तुमने दिखाई, उससे मुझे खुशी हुई। तुम्हारी आजकल प्रवृत्ति क्या चल रही है, कभी फुरसत से मुझे लिखो।

विमला को आशीर्वाद।

वावा के आशीर्वाद

---

[1]तीसरे आम चुनाव के अवसर पर एक व्यक्ति-विशेष को लोकसभा के लिए कांग्रेस का टिकट दिये जाने से मतभेद होने के कारण रामकृष्ण बजाज ने कांग्रेस से त्यागपत्र दे दिया था। उस सिलसिले में उन्होंने विनोबा-जी को एक पत्र लिखा था, जिसके साथ कांग्रेस के अध्यक्ष के नाम लिखे पत्र की प्रतिलिपि भेजते हुए अपनी मनःस्थिति प्रकट की थी। लिखा था, "मै जानता नहीं हूं कि इस बारे में आपकी क्या राय होगी, लेकिन यह जरूर आत्म-विश्वास है कि यदि दिल में कोई बात लगती हो तो उसे सच्चाई से जाहिर करना और उसीपर चलना चाहिए, फिर वह गलत ही साबित क्यो न हो, यह आप जरूर पसन्द करेंगे। इसी वजह से मुझे विश्वास है कि इस बारे में भी आपका आशीर्वाद मुझे प्राप्त होगा।" इसी पत्र के उत्तर मे विनोबाजी ने उपरोक्त पत्र लिखा था।

: २ :

जमनालालजी बजाज के जीवन से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण तिथियां

४ नवबर, १८८९	कासी का वास, (राजस्थान) मे जन्म।
जून, १८९४	गोद आये, वर्धा रहने लगे।
१ फरवरी, १८९६	विद्यारभ।
३१ मार्च, १९००	स्कूल छोडा।
मई, १९०२	जानकीदेवी से विवाह।
१९०६	कलकत्ता-काग्रेस मे भाग लिया।
दिसम्बर, १९०८	आनरेरी मजिस्ट्रेट बने।
१९१०	समाज-सुधारार्थ मारवाड का भ्रमण।
१९१२	मारवाडी हाईस्कूल की स्थापना।
१९१५	मारवाडी शिक्षा-मडल की स्थापना, महात्मा गाधी से परिचय और सपर्क।
१९१७	राजनैतिक जीवन मे प्रवेश, रायबहादुरी की उपाधि मिली।
१९१८	'राजस्थान-केसरी' का सचालन।
१९२०	महात्मा गाधी के पाचवे पुत्र बने, नागपुर-कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष तथा काग्रेस के कोषाध्यक्ष।
१९२१	असहयोग-आदोलन मे पूर्ण सक्रियता।
१९२१	सत्याग्रहाश्रम, वर्धा की स्थापना, विनोबाजी का वर्धा-आगमन, रायबहादुरी लौटाई।
अगस्त, १९२१	'हिन्दी-नवजीवन' का प्रकाशन।
१९२३	अखिल भारतीय खादी-मडल के सभापति, गाधी-सेवा-सघ की स्थापना।
१३ अप्रैल, १९२३	नागपुर मे झडा-सत्याग्रह का सचालन।

तिथि	घटना
[illegible]७ जून, १९२३	नागपुर मे गिरफ्तारी।
[illegible] जुलाई, १९२३	डेढ वर्ष की कैद और तीन हजार रुपये के जुर्माने की सजा।
३ सितवर, १९२३	नागपुर-जेल से रिहा।
१९२५	चरखा-सघ के कोषाध्यक्ष, 'सस्ता साहित्य मण्डल' की स्थापना।
जनवरी, १९२६	सावरमती-आश्रम मे वापू की उपस्थिति मे कमला-वाई का विवाह।
१९२६	अग्रवाल महासभा दिल्ली-अधिवेशन के सभापति।
१९२८	वर्धा का निजी लक्ष्मीनारायण-मदिर हरिजनो के लिए खोल दिया।
१९२९	हिन्दी-प्रचार के लिए दक्षिण-यात्रा।
१९३०	नमक-सत्याग्रह मे विलेपार्ले छावनी की स्थापना।
७ अप्रैल, १९३०	गिरफ्तारी, २ वर्ष की सख्त कैद और ३०० रुपये जुर्माने की सजा।
२६जनवरी, १९३१	नासिक-जेल से रिहा।
१४ मार्च, १९३२	वम्बई मे गिरफ्तारी १ वर्ष का सपरिश्रम कारावास तथा ५००) जुर्माने की सजा, 'सी' वर्ग के कैदी।
१५ मार्च, १९३२	बीसापुर-जेल मे।
२५ मार्च, १९३२	धूलिया-जेल मे।
२६नवम्वर, १९३२	यरवदा सेंट्रल जेल मे।
२५ मार्च, १९३३	यरवदा-मदिर से वम्बई आर्थर रोड जेल मे।
५ अप्रैल, १९३३	वम्बई-जेल से रिहाई।
१९३४	बापू को वर्धा मे वसाया।
१९३४	काग्रेस के कार्यकारी अध्यक्ष।
१९३७	हिंदी साहित्य सम्मेलन मद्रास-अधिवेशन के सभापति।
१९३८	जयपुर राज्य प्रजा-मडल के अध्यक्ष, महर्षि रमण के साथ वार्तालाप, योगिराज अरविंद के दर्शन।
२९दिसबर, १९३८	जयपुर-राज्य मे प्रवेश-निषेध।

१ फरवरी, १९३९	जयपुर-सरकार के हुक्म की अवज्ञा।
१२फरवरी, १९३९	जयपुर-सत्याग्रह मे गिरफ्तार।
९ अगस्त, १९३९	जयपुर से रिहाई।
३१दिसबर, १९४०	वर्धा मे गिरफ्तारी।
३ जून, १९४१	नागपुर-जेल से रिहाई।
१९४१	मा आनन्दमयी मे जगन्माता का साक्षात्कार।
२१सितबर, १९४१	सेवाग्राम मे बापूजी की सलाह से गो-सेवा के कार्य का निश्चय।
२२सितबर, १९४१	गो-सेवा-सघ का कार्य शुरू किया।
३०सितबर, १९४१	बापूजी के हाथो गो-सेवा-सघ का उद्घाटन, गोपुरी की स्थापना।
७ नवम्बर, १९४१	गोपुरी की कच्ची झोपडी मे रहना शुरू किया।
१ फरवरी, १९४२	वर्धा मे गो-सेवा-सम्मेलन, गो-सेवा-सघ के सभापति।
११फरवरी, १९४२	वर्धा मे देहावसान।

: ३ :

संस्मरण-लेखकों का परिचय

जानकीदेवी बजाज (जन्म माघ वदी ५, सवत् १९४९—७ जनवरी, १८९३)—श्री जमनालाल बजाज की धर्मपत्नी, पद्म विभूषण।

राधाकृष्ण बजाज (जन्म आषाढ शुक्ल १०, वि० स० १९६२)—श्री जमनालाल बजाज के भतीजे, विनोबाजी द्वारा स्थापित 'ग्राम-सेवा-मडल' और बापूजी द्वारा सस्थापित 'गो-सेवा-सघ' के प्रमुख कार्यकर्ता, 'अखिल भारतीय सर्व-सेवा-सघ प्रकाशन' के सचालक।

अनसूया बजाज (जन्म ३० अप्रैल, १९१८)—श्री राधाकृष्ण बजाज की पत्नी तथा स्व० श्री श्रीकृष्णदास जाजू की पुत्री।

कमला नेवटिया (जन्म २७ अगस्त, १९१२)—श्री जमनालाल बजाज की पहली पुत्री तथा श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया की पत्नी।

कमलनयन बजाज (जन्म २३ जनवरी, १९१५)—श्री जमनालाल बजाज के बडे पुत्र, लोकसभा के सदस्य।

श्रीमन्नारायण (जन्म १५ जून, १९१२)—श्री जमनालाल बजाज के दामाद, योजना-आयोग के सदस्य।

मदालसा (जन्म जुलाई, १९१७)—श्री जमनालाल बजाज की दूसरी पुत्री तथा श्री श्रीमन्नारायण की पत्नी।

उमा अग्रवाल (जन्म १२ अगस्त, १९१९)—श्री जमनालाल बजाज की तीसरी पुत्री तथा श्री राजनारायण अग्रवाल की पत्नी।

रामकृष्ण बजाज (जन्म २२ सितबर, १९२८)—श्री जमनालाल बजाज के दूसरे पुत्र, 'वर्ल्ड असेबली आफ यूथ' की भारतीय समिति के अध्यक्ष।

विमला बजाज (जन्म १७ अप्रैल, १९२३)—श्री रामकृष्ण बजाज की पत्नी तथा कलकत्ता के श्री लक्ष्मणप्रसाद पोद्दार की तीसरी पुत्री।

सुमन जैन (जन्म ७ अगस्त, १९३९)—श्री कमलनयन बजाज की पुत्री।

भरतकुमार (जन्म ३ अक्तूबर, १९४१)—श्री श्रीमन्नारायण के पहले पुत्र।

रुचिरा अग्रवाल (जन्म १८ फरवरी, १९४५)—श्री राजनारायण अग्रवाल की पहली पुत्री।

रजतकुमार (जन्म ३ नवम्बर, १९४५)—श्री श्रीमन्नारायण के दूसरे पुत्र।

शिशिर बजाज (जन्म १० दिसबर, १९४७)—श्री कमलनयन बजाज के दूसरे पुत्र।

●